बापूकी
प्रेम-प्रसादी

प्रेम

भारतीय

घनश्यामदास बिड़ला

बापू की प्रसादी

खण्ड २

गांधी-युग की
एक महत्वपूर्ण पत्रावली

• प्रकाशक भारतीय विद्या भवन बम्बई • प्रथम संस्करण १९७७
• मूल्य दस रुपये • मुद्रक रूपक प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा दिल्ली ३२

समर्पण

बापू की यह प्रेम प्रसादी बापू को समर्पण

बापू ने समय समय पर मुझे जो पत्र लिखे और मैंने जो उन्हें लिखा उन सबका यह संग्रह है। महादेव भाई इत्यादि ने भी जो मुझे लिखा या मैंने उन्हें लिखा उन सबका भी समावेश इसमें इसलिये है कि वे सब पत्र-व्यवहार बापू की प्रेरणा या सम्मति से ही हुआ है। मैंने भी जो इन लोगों को लिखा वह सब बापू के लिये ही था। उन सबको बापू के ही पत्र व्यवहार मानकर इस प्रकाशन में इसलिये स्थान दे दिया गया कि यदि मेरे पत्रों को निकाल दिया जाय तो सारी शृंखला टूट जाती है।

बापू के अधिकतर पत्र हिंदी में ही हैं। पर यदि कभी उन्होंने मुझे अंग्रेजी में लिखा, यानी)

प्रस्तावना

गाधीजी पत्र-व्यवहार मे बहुत ही नियमित थे। पत्र-व्यवहार के द्वारा ही वे असख्य लोगो से हार्दिक सम्बन्ध रख सकते थे और उन्हे जीवन के ऊचे आदर्श सिद्ध करने के लिए प्रेरित करते थे। जिसके साथ सम्बन्ध आया उसके व्यक्तिगत जीवन मे हृदय से प्रवेश पाना, उसकी योग्यता उसकी खूबी और उसकी गहराई को समझकर उसके विकास म मदद देना, यह थी उनके पत्र व्यवहार की विशेषता। गाधीजी का पत्र साहित्य उनके लेखो और भाषणो के जितना ही महत्व का है। उनके व्यक्तित्व को समझने के लिए उनका यह पत्र साहित्य बहुत ही उपयोगी है। मैंने देखा है कि पत्रो मे उनकी लेखन शैली भी अनोखी होती है। ससार म शायद ही ऐसा कोई नेता हुआ होगा जिसने अपने पीछे गाधीजी के जितना पत्र-व्यवहार छोड रखा हो।

गाधीजी का पत्र-व्यवहार पढते समय मुझे हमेशा यही प्रतीत हुआ है मानो मैं पवित्र गगाजी म स्नान और पान कर रहा हू। मुझे उसम हमेशा पवित्रता और प्रसन्नता का ही अनुभव हुआ है। उसके इर्द गिर्द का वायुमडल पावन प्राणदायी और प्रशमकारी है।

इसीलिए जब श्री घनश्यामदासजी बिडला ने गाधीजी के साथ का अपना पत्र-व्यवहार मेरे पास भेज दिया तो मुझे बडा आनन्द हुआ और उत्साह के साथ मैं उसे पढने लगा। जसे-जसे पढता गया, वस वस स्पष्ट होता गया कि यह केवल घनश्यामदासजी और गाधीजी के बीच का ही पत्र-व्यवहार नही है। इसम तो गाधीजी के अभिन्न साथी स्व० महादेवभाई देसाई और घनश्यामदासजी के बीच का पत्र-व्यवहार ही सबस अधिक है। इसके अतिरिक्त गाधीजी के अन्य साथियो, देश के कई नेताओ और कार्यकर्ताओ, अग्रेज वाइसरायो और कूटनीतिज्ञो के साथ का पत्र-व्यवहार भी है और उनकी मुलाकातो का विवरण भी।

सक्षेप म—हमारे युग का एक महत्व का इतिहास इसम भरा हुआ है।

यह देखकर मेरे मुह से उद्गार निकल पडा

काश! यह सारी सामग्री पाच साल पहले मेरे हाथो मे आती।

आज मेरी उम्र इक्यानवे वर्ष की है। विस्मरण ने अपनी हुकूमत मेरे दिमाग पर जोरों से चलाना शुरू कर दिया है। कई महत्व की बातें अब बड़ी रफ्तार के साथ भूलता जा रहा हूं। मुझे विषाद के साथ कबूल करना चाहिए कि पांच साल पहले यह सामग्री मेरे हाथ में आती तो जितनी गहराई में उतरकर मैं उसमें अवगाहन कर सकता उतना आज नहीं कर पाऊंगा। फिर भी मैं मानता हूं कि मूलभूत तत्वों के चिंतन की बैठक अब भी मुकम्मल साबूत है। उसी के सहारे मैं इस सागर में डुबकी लगाने का ढाढ़स कर रहा हूं।

सन १९१५ के पहले हमारे देशवासियों ने स्वराज्य प्राप्ति के तरह-तरह के प्रयोग आजमाकर देखे थे। हमने विद्रोह का प्रयोग करके देखा। प्रार्थना विनय का मार्ग भी आजमाया। औद्योगिक प्रगति में आगे बढ़ने के प्रयत्न किये। सामाजिक सुधार के आंदोलन चलाये। धर्म निष्ठा बढ़ाने की भी कोशिशें कीं। स्वदेशी और बहिष्कार के रास्ते से भी चले और बम पिस्तौल का मार्ग भी अपनाकर देखा। स्वराज्य के लिए जो जो इलाज सूझे या सुझाये गये सब लगन के साथ आजमा कर हम भारतवासियों ने देखे। फिर भी न तो स्वराज्य नजदीक आया, न आशा की कोई किरण दिखाई दी। हमारे चंद प्रयत्न तो अंग्रेजों का राज हटाने के बदले उसे मजबूत करने में ही मददगार हुए। देश बिलकुल घोर निराशा में पड़ा हुआ था जब सन १९१५ में गांधीजी दक्षिण आफ्रिका से भारत लौट आये।

दक्षिण आफ्रिका में जहां न हमारा राज था न वायुमंडल वहां गांधीजी ने अनपढ़, करीब-करीब असंस्कारी और दुर्दैवी भारतीयों की मदद से सत्याग्रह का एक तेजस्वी आंदोलन चलाकर उसमें सफलता पाई। दक्षिण आफ्रिका के इस अभिनव प्रयोग की और उसके नेता कर्मवीर गांधी की खबरें हमने यहां बड़े आदर के साथ पढ़ी थीं या सुनी थीं। भारत लौटते ही जब गांधीजी ने आसेतु हिमाचल यात्रा करके सत्याग्रह की अपनी जीवन-दृष्टि को समझाना शुरू किया तब स्वराज्य की जिन्हें सचमुच भूख थी वे सब लोग उनकी ओर आकर्षित हुए। देखते ही-देखते गांधीजी के हृदय का तार राष्ट्र हृदय के तार के साथ एकराग हो गया और सारा देश उनके पीछे निःसंकोच होकर चलने के लिए तैयार हुआ। गांधीजी भारतीय संस्कृति और भारतीय पुरुषार्थ के महान प्रतिनिधि बने। त्याग, संयम और तेजस्विता की भाषा बोलने लगे जो भारतीय लोकहृदय की भाषा थी। उनकी असाधारण विनम्रता और लोकोत्तर आत्मविश्वास को देखकर देश को विश्वास हुआ कि अवश्य ही यह कुछ 'करके दिखानेवाले' हैं।

और जिस प्रकार सभी नदियां अपना सारा जल लेकर समुद्र को जा मिलती हैं उसी प्रकार स्वराज्य की लालसावाले हम भिन्न भिन्न संस्कारों पृष्ठभूमियों

और जीवन प्रणालिया के सभी लाग गाधीजी से जाकर मिले। प्रसन्नता के साथ हमने उनके नेतृत्व को स्वीकार किया और उनके दिखाये हुए कार्यो मे अपना अपना हिस्सा अदा करने के लिए प्रवत्त हुए।

उस समय उनके निकट सपर्क म आये हुए उनके गिने चुने आत्मीय जनो मे श्री घनश्यामदासजी बिडला का स्थान अनोखा है।

यह ता सभी जानते हैं कि घनश्यामदासजी देश के गिने गिने धनिका मे से एक है। उनका मुख्य क्षेत्र तो औद्योगिक ही रहा है। लाग यह भी जानते हैं कि उन्होने खूब कमाया है और अनेक सत्कार्यो म मुक्तहस्त से खूब खच भी किया है। गाधीजी का जब भी धन की जरूरत महसूस हुई उन्होने बिना सकोच घनश्यामदासजी के सामने वह रखी और घनश्यामदासजी ने बिना विलब के उसकी पूर्ति की है।

गाधीजी की अनक शिक्षाओ म एक महत्व की शिक्षा थी कि 'धनिको को अपने-आपको अपनी सपत्ति के धनी नही मानना चाहिए बल्कि ट्रस्टी बनकर समाज की भलाई के लिए उसका उपयोग करना चाहिए।' 'यह समाज की ही सपत्ति मेरे पास है, मैं उसका धरोहर या विश्वस्त हू," ऐसा समझकर ही उसका विनियोग करना चाहिए। घनश्यामदासजी को यह शिक्षा तत्वत मान्य न होते हुए भी उन्होने वह अच्छी तरह से हृदयगम की है। देश म अनेक जगहा पर बिडला के नाम से जो शिक्षण सस्थाए धर्मशालाए अस्पताल आदि चल रहे हैं वे इसकी गवाही देते हैं। उनकी अपनी सस्थाओ के अलावा ऐसी अनेक सस्थाए देश मे हैं जो प्रधानतया बिडला के दान स चल रही हैं। गाधीजी की करीब करीब सभी सस्थाए घनश्यामदासजी के धन स लाभान्वित हुई है। स्व० जमनालालजी बजाज को छोडकर शायद ही दूसरा कोई धनिक होगा जिसने घनश्यामदासजी के जितना गाधी-कार्य का आर्थिक बोझ उठाया हो।

एक प्रसिद्ध किस्सा है

गाधीजी दिल्ली आये हुए थे। उन्ही दिनो गुरुदेव रवीन्द्रनाथ भी अपनी विश्वभारती के लिए धन सग्रह करने हेतु दिल्ली पहुचे। वे जगह जगह अपने नाटय और नृत्य का कायक्रम रखते थ और बाद म लोगो स धन के लिए प्राथना करते थे। गाधीजी का यह सुनकर बडा दु ख हुआ। इतना बडा पुरुष बुढापे मे धन इकट्ठा करने के लिए सो भी केवल साठ हजार रुपयो के लिए इस प्रकार अपने नाटय और नृत्य का प्रदशन करता फिरे यह गाधीजी को असह्य हुआ। उन्हे तुरत घनश्यामदासजी का ही स्मरण हुआ। महादेवभाई से उन्हे कहलवा दिया, 'आप अपने धनी मित्रो को लिखें और छह जने दस-दस हजार की रकम गुरुदेव को भेजकर हिन्दुस्तान को इस शर्म स बचा लें।'

वहन की आवश्यकता नही कि स्वय घनश्यामदासजी न यह पूरी रकम गुर न्व को 'गुप्तदान' के रूप मे भेजकर उनको चितामुक्त कर दिया।

गाधीजी ने अपनी सस्थाओ के लिए तो उनस रुपय लिय ही, दूसरो का भी इस तरह दिलाय। इस पत्र सग्रह म ऐसे कई प्रमाण मिलेंगे, जिनसे यह मालूम होगा कि गाधीजी ने किन किन लोगो को बिडलाजी के द्वारा आर्थिक सहायता पहुचाई थी और बिडलाजी न किस हद तक अपनी सपत्ति गाधीजी के चरणो म अर्पित की थी।

सचमुच एक तरह स यह एक अद्वितीय सम्बन्ध था।

लकिन इस पर से कोइ यह न मान बठे कि उदारता के साथ दान देना इतना ही केवल घनश्यामदासजी का गाधी काय के साथ सम्बन्ध रहा है।

स्वराज्य की जो साधना गाधीजी न हमारे सामने रखी उसके दो प्रमुख अग थ। एक था, रचनात्मक और दूसरा राजनतिक।

गाधीजी ने देखा कि सामाजिक प्रतिष्ठा का उच्च नीच भाव' और सास्कृतिक प्रणाली के लिए पसन्द किया हुआ आप-पर भाव इन दो तत्वो की नीव पर हमने अपना समाज विधान तयार किया है। परिणाम स्वरूप शान्ति स्वास्थ्य और सहजीवन के तत्व हमारे समाज जीवन मे होते हुए भी हम राष्ट्रीय एकता और स्वतत्रता का सभालने मे असमथ हुए हैं। भारतवप का पूरा इतिहास इस कमजोरी का प्रमाण देता है।

हमारी इस राष्टीय कमजोरी को हटाकर भविष्य के प्राणवान सर्वोदयी नव समाज का निर्माण करना गाधीजी के रचनात्मक कायक्रम का प्रमुख उद्देश्य था। इस उद्देश्य की पूर्ति क लिए उन्होने हिन्दू मुस्लिम एकता अस्पृश्यता निवारण खादी ग्रामोद्योग राष्ट्रभाषा प्रचार जस अठारह बोस कायक्रम देश के सामने रखे और कहा कि इस कायक्रम का पूरा अमल ही पूण स्वराज्य है।"

गाधीजी का यह कायक्रम केवल दया धम मूलक सेवा-काय का कायक्रम नही था, बल्कि बहुवशी बहुजाति बहुधर्मी बहुभाषी विशाल भारत को सघटित करने का एक दीघदर्शी प्रयास था। मानस परिवतन के द्वारा जीवन-परिवतन और जीवन परिवतन के द्वारा समाज परिवतन की सावभौम क्रान्ति का यह अभिक्रम था। इसम गाधीजी न पुरान सूत्रो का नया रूप देना प्रारम्भ किया था।

घनश्यामदासजी न इस कायक्रम की क्रातिकारी सभावनाओ को पहचानकर उस हृदय स अपनाया। हिन्दू मुस्लिम एकता और अस्पश्यता निवारण जैसे काय क्रमो म उनकी कितनी गहरी दिलचस्पी थी और उनको अमल म लान के लिए उन्होन क्या-क्या किया इसका प्रमाण इस सग्रह के कइ पत्र देत हैं। गाधीजी के

साथ उनका अगर कहीं मतभेद रहा हो तो वह कुछ अंश में खादी की अर्थनीति के बारे में रहा होगा। इस मामले में वे स्वतंत्र विचार रखते हैं। फिर भी ध्यान खींचनेवाली बात तो यह है कि स्वतंत्र विचार रखते हुए भी एक निष्ठावान सैनिक की भांति वे चरखा कातते रहे, यहां तक कि उन्होंने खादी का व्रत भी लिया। उनके इस अनुशासन प्रिय स्वभाव पर गांधीजी मुग्ध थे। उन्होंने अपनी खुशी व्यक्त करने के लिए घनश्यामदासजी को एक खास किस्म का चरखा भी भेंट में दिया था और उनके कते हुए सूत की सराहना करके "जिस पवित्र कार्य का आपने आरम्भ किया है उसको आप हरगिज न छोड़ें" इस प्रकार की नसीहत भी दी थी।

गांधीजी की एक विशेषता थी। वे मनुष्य के सद्गुणों को तुरंत परख लेते थे और देश हित के लिए उसका पूर्ण उपयोग कर लेते थे। हमारा अपने ऊपर जितना विश्वास होता है उससे कहीं अधिक विश्वास गांधीजी का हम पर था। हमको गलत समय वे 'हमारी कमजोर श्रद्धा को मजबूत बनाते थे' और अंत में हमारी सामान्य शक्ति से अधिक काम सहज ही हमसे करा लेते थे।

धनिक होते हुए भी धन की माया से अलिप्त रहने की घनश्यामदासजी की आकांक्षा को गांधीजी ने परख लिया था। उनकी व्यवहार कुशलता को भी परख लिया था। उनके विकास में मददगार होने के लिए गांधीजी ने जो उनका मार्ग दर्शन किया है, उसमें व्यापक मनुष्य जीवन के अनेक छोटे मोटे पहलुओं पर एक क्रांतदर्शी शिक्षा शास्त्री का प्रकाश हम देखने को मिलता है। गांधीजी के पत्रों की यह सबसे बड़ी विशेषता है।

इसमें भी विशेष बात तो यह है कि स्वयं घनश्यामदासजी के विनम्र और निर्मल जीवन का चित्र भी हम इस पत्र संग्रह में देखने को मिलता है।

घनश्यामदासजी गांधीजी के प्रति आकर्षित हुए, गांधीजी की धर्म परायणता, नेकनीयती और सत्य की खोज की उत्कटता को देखकर वह धीरे धीरे उनके परमभक्त बन गये। गांधीजी जो भी जिम्मेदारी उठाते थे उनका बोझ अपने सिर पर लेना घनश्यामदासजी ने अपना कर्त्तव्य माना और पूरे हृदय के साथ वह अमल किया।

मगर उन्होंने अपना पूरा हृदय उत्साह के साथ उंडेल दिया था गांधीजी के राजनैतिक कार्य में। गांधीजी और सरकार के बीच उन दिनों पर्दे की आड़ में जो कुछ चलता था उसका भीतरी इतिहास हम इस पुस्तक में पढ़ने को मिलता है। हमारे युग के वे दिन ही ऐसे थे कि प्रतिदिन कुछ-न-कुछ नया इतिहास गांधीजी के आस पास हुआ या बना करता था। घनश्यामदासजी को गांधी-कार्य के इसी अंग

म विशेष और गहरी रुचि थी। हर छोटी-बड़ी बात म गहराई के साथ ध्यान देते देते व धीरे धीरे उन गिने चुने व्यक्तियो म माने जाने लग, जो गाधीजी का राजनतिक मानस अच्छी तरह स समझते हैं। देखते-ही देखते वे गाधीजी क राज नतिक मानस क विश्वासी व्याख्याता के रूप मे अंग्रेज राजनीतिज्ञो के सामने आत्मविश्वास के साथ पश आने लगे। गाधीजी किस दिशा म सोच रहे हैं इसका खयाल अग्रेज राजनीतिज्ञो का करा देना और अंग्रेजो के मानस का खयाल गाधीजी का करा देना यह उन्होने अपनी जिम्मेदारी मानी। यह स्वेच्छा-स्वीकृत जिम्मेदारी थी जो उन्होंने असाधारण कुशलता और सफलता के साथ निभाई।

इस पुस्तक म घनश्यामदासजी का जो चित्र विशेष रूप से नजर के सामने आता है वह है एक कुशल राजनीतिज्ञ का, और वह कौरवो के दरबार म समझौते के लिए गये हुए श्रीकृष्ण का स्मरण हम करा देता है।

करीब बत्तीस साल तक चले हुए इस पत्र व्यवहार को देखकर प्रथम मेरे मन म आया कि मैं इसकी तीन स्वतत्र पुस्तकें बनाने की सलाह दू। एक म सिफ गाधीजी और घनश्यामदासजी के बीच का ही पत्र व्यवहार हो जिससे हमे इस बात का दशन हो सके कि कितने विविध विषयो की गहराई म उतरकर और प्रत्येक विषय का मम समझकर गाधीजी कसे अपने माने हुए आत्मीय जनो का मागदशन करते थे और किस प्रकार अपना वात्सल्य उन पर उडेलते थे।

दूसरी पुस्तक म सिफ महादेवभाई और घनश्यामदासजी क बीच का ही पत्र व्यवहार हो जिससे दो निकटतम स्नेहियो के विश्रब्ध वार्तालाप की खुशबू का हम अनुभव मिले।

और तीसरी म बाकी की सभी सामग्री हो जो ऐतिहासिक दृष्टि स महत्व रखती है।

मगर सोचने पर मुझे लगा कि नही जो सामग्री यहा है वह वसी ही एकत्र प्रकाशित की जानी चाहिए जसी वह क्रमश यहा दी गई है भले ही पुस्तक का आकार बढ जाय या उसे दो जिल्दो मे प्रकाशित करना पडे। यह कोई मनोरजन के लिए लिखी हुई पुस्तक नही है। यह तो एक सागर है जो खूब ऐतिहासिक महत्व रखता है। आनेवाली पीढ़िया जब हमारे जमाने को समझने की कोशिश करेंगी तब उन्हे यह सदभ ग्रथ बहुत ही उपयोगी और आवश्यक मालूम होगा। इतिहास के विद्यार्थियो के लिए इसम काफी महत्व की सामग्री भरी हुई मिलेगी। यह एक बहुत ही कीमती ऐतिहासिक दस्तावेज है जिसका पूरा महत्व भविष्य की पीढ़िया ही जानेंगी।

मेरे जसे गाधी भक्त को तो इमस लोकोत्तर प्रेरणा मिली है।

इस उम्र म और तबीयत की ऐसी हालत म यह प्रस्तावना तयार कर सका, उसका बहुत बडा श्रेय मरे तरुण साथी श्री रवीन्द्र केलकर की मदद को है।

स्नेहाधीन,

काका कालेलकर के

सादर वन्दे मातरम्

अनुक्रमणिका

१६३५

बिना तारीख के पत्र

१९३६

बिना तारीख का पत्र

१९३७

बिना तारीख के पत्र

वापू की प्रेम-प्रसादी

१९३५ के पत्र

१

निजी

इंडिया आफिस,
व्हाइट हॉल
४ जनवरी, १९३५

प्रिय श्री बिड़ला

पुनः आपका पत्र पाकर खुशी हुई। मेरी स्पीच के बारे में आपने जो भाव व्यक्त किये हैं उसके लिए आभारी हूं। विधान-सम्बन्धी प्रश्न पर हम दोनों के विचार मेल नहीं खाते, पर हम एक दूसरे को समझ पाये यह कुछ कम संतोष की बात नहीं है। आपके मन में संरक्षणों का प्रश्न जमकर बैठा है पर यहां जिस बात ने हमें विशेष रूप से प्रभावित किया है वह है स्वायत्त शासन की परिधि का विस्तार। सारी कठिनाई इस बात की है कि हम यहां लोगों को इस बारे में पूरा समाधान नहीं दे पाये हैं कि जो संरक्षण प्रस्तावित हैं वे महज कागजी न होकर सचमुच के संरक्षण साबित होंगे। यहां ऐसे लोग तो हैं ही जिनको इस बाबत पूरा समाधान करा देना असम्भव रहेगा। पर मेरी धारणा है कि हम अधिकांश समझदार व्यक्तियों को, जिनके लिए यह समस्या गम्भीर चिन्तन का विषय है और जो हृदय से चाहते हैं कि भारत के साथ न्याय किया जाय, अपने पक्ष में करने में सफल हुए हैं। हमारे अनवरत प्रयत्नों के फलस्वरूप इस समय जो धारणा व्याप्त है उसे हमारे एक प्रमुख राजनैतिक समीक्षक ने इन शब्दों में व्यक्त किया है 'भारत में स्वतंत्र संस्थाओं को अस्तित्व में लाने के साथ-ही-साथ जो संरक्षण दिये गये हैं, उनके द्वारा यहां ब्रिटिश राज के बारे में भावना का जन्म हुआ है। एक नया विचार जन्मा है। हम स्वतंत्रता भी प्रदान कर रहे हैं और आर्थिक उत्थान का उत्तरदायित्व भी ले रहे हैं।' आशा है, आपको यह अंतिम वाक्य विशेष रूपसे रुचिकर लगेगा क्योंकि यह व्यवसाय वाणिज्य की भाषा में व्यक्त हुआ है। मेरी अभिलाषा है कि आप और आपके मित्रगण भी इस मामले को इसी रूप में देखें। यहां आम धारणा सावधानी से काम लेने के पक्ष में बनी है पर आप इसे सतर्कता के नाम से पुकारेंगे। जो भी हो, इसे संकीर्णता का द्योतक कदापि नहीं कहा जा सकता। यह

बात भारत म हृदयगम नही की जा रही है, यह खेद की बात ह। पर मुझे भरोसा है कि अन्त म रूपरेखा एसी बन जायेगी कि आप भी अपनी धारणा बदल देंगे।

सदभावनाओ के साथ

आपका,
सेम्युअल होर

२

१६ जनवरी १६३५

प्रिय मर सेम्युअल होर

आपके ४ जनवरी के पत्र के लिए कृतज्ञ हू।

मुझको लगता है कि पिछले पत्र म मैं अपनी बात पूरी तरह स्पष्ट नही कर *पाया अ यथा आप यह न कहते कि सरक्षणो क प्रश्न ने मरे दिमाग म जड पकड* ली है। मैं सरक्षणा से तनिक भी भयभीत नही हू। स्वय भारत के हित म कुछेक सरक्षणा की आवश्यकता तो रहेगी ही। पर मैं यह मानन से इन्कार करता हू कि रिपोट म जिन सरक्षणो की व्यवस्था की गई है वे सवथा भारत के हित म हैं। साथ ही रिपोट की यह त्रुटि भी उल्लेखनीय है कि उसम उस अगले कदम की व्यवस्था नही की गई है जो भारत को अपने अतिम लक्ष्य की सिद्धि के लिए उठाना है। मैंने अपने पिछले पत्र म स्वीकार किया था और अब भी स्वीकार करता हू कि आपकी अपनी कठिनाइया भी कम नही हैं और जब जब कि बात इतनी आगे बढ चुकी है मेरे लिए वापस यह कहना कि भारतीय जनमत को सतुष्ट करने के लिए *अपनी योजनाओ म कुछ सशोधन कीजिए वास्तविकता की ओर स मुह मोडना* होगा। मैं अपने पिछले पत्र के द्वारा आपको यही बताना चाहता था कि सरक्षण जसे कुछ भी हैं यदि उनके पीछे सहानुभूति और सदभावना रहगी तो उनके बावजूद प्रगति म गतिरोध नही होगा। मैं आपके इस कथन को स्वीकार करना चाहता हू कि इन सरक्षणो म सावधानी प्रतिबिम्बित होना है सकीणता नहीं। पर आप *क्या यह नही चाहेगे कि भारत का उदारचेता वग आपके दष्टिकोण को अपनाय* और एक स्वर से कह सके कि हम जसा शासन विधान चाहते थे वसा तो यह नही है फिर भी हम रचनात्मक दष्टि स इस अमल म लाने को तयार हैं क्योकि जो बात शब्दो के माध्यम से व्यक्त नही की गई है वह भावना के रूप म विद्यमान

है।' मैं चाहूंगा कि आपने जिन भावी 'साझेदारों' की बात कही है, उन्हें ब्रिटेन में बसनेवाले साझेदार व्यक्तिगत रूप से यह आश्वासन दें कि ब्रिटेन भारत के साथ न्याय करना चाहता है और इसके लिए आवश्यक उदारता का अभाव कदापि नहीं है। और, जब मैं यह कहता हूं, तो मैं उन कतिपय लोगों की अस्पष्ट विचारधारा का नहीं, बल्कि ऐसे कामकाजी व्यापारी की नपी-तुली भाषा का उपयोग करता हूं कि यदि सद्भावना मौजूद रही, तो यह बात बन सकती है और बननी चाहिए। कभी-कभी तो मेरे मन में विचार उठता है कि मैं स्वयं लंदन आकर आपसे अपने इस दृष्टिकोण को अपनाने का आग्रह करूं कि यदि उभय पक्ष एक दूसरे को समझ लेंगे, तो बावजूद दोषपूर्ण संरक्षण के कुछ बात बन जाएगी, जबकि मानवीय भावनाओं के अभाव में दोषरहित संरक्षण भी शांति के मार्ग में रोड़ा बन सकता है और उस पर अमल करना असंभव हो सकता है।

आपकी स्पष्टवादिता मुझे यह आश्वासन देने को प्रेरित करती है कि इस समय भारत के वातावरण में जिस सौहार्द भाव का नितांत अभाव है, तथा जिस का होना दोनों देशों के हित में है, उसके बनाने में आप मुझसे जो भी योगदान चाहेंगे, वह आपकी सेवा में सदैव हाजिर है। हम दोनों के भाग्य को विधाता ने एक साथ बांध दिया है।

सद्भावनाओं के साथ,

आपका,
घनश्यामदास बिड़ला

राइट आनरेबल सर सैम्युअल होर, नाइट,
भारत सचिव,
लंदन

३

२२ जनवरी, १९३५

वाइसराय के साथ मुलाकात
समय प्रात १० बजे

वाइसराय ने मुलाकात का आरम्भ करते हुए कहा कि जो कहना हो, बेखटके कह सकते हो। मैंने अपनी बात बंगाल के गवनर के साथ हुई अपनी भेंट से प्रारम्भ की। बाद में बतलाया कि मैंने ज्वाइन्ट सलेक्ट कमेटी की पूरी रिपोर्ट दो बार पढ़ी है रिपोर्ट बहुत अच्छी एवं बहुत बुरी भी साबित हो सकती है। सब कुछ इस पर निर्भर करता है कि उसे अमल में लाने में किस भावना से काम लिया जायगा और यदि वातावरण ठीक रहेगा तो संरक्षणों का उपयोग करने की नौबत ही नहीं आयगी। पर यही संरक्षण गले में बंधे पत्थर की तरह भारी भी हो सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि वातावरण को स्वच्छ किया जाए। और यह साहस केवल एक ही व्यक्ति कर सकता है, अर्थात गांधीजी। पर यदि वातावरण ऐसा ही दूषित बना रहा तो संघर्ष जारी रहेगा और दोनो देशो की क्षति होगी। आपको अपना यह लक्ष्य बना लेना चाहिए कि भारत भूमि से विदा लेने से पहले यहां ऐसा वातावरण आप छोड जायें, जिसमें सुधारों का अमल में लाना सम्भव हो और उनके द्वारा भारत के लक्ष्य का मार्ग निष्कण्टक हो। इस पर वे बोले, *क्या आप सचमुच यह समझते है कि वैसा वातावरण तैयार हो सकता है?* मैंने उत्तर दिया, जी हां। तब उन्होंने कहा, मेरे मार्ग में कठिनाइयां है। मैं इस मामले पर काफी दिनों से विचार कर रहा हू पर मुझे कठिनाइयों का सामना करना पड रहा है। सबसे पहली कठिनाई तो यही है कि गांधी कानून की अवज्ञा करते हैं। मैंने उत्तर दिया, कदापि नहीं यों तो हर कोई कानून की अवज्ञा करने की शक्ति रखता है, पर जहां तक गांधीजी का सम्बन्ध है वह अन्याय के प्रतिकार को अपना धर्म समझते हैं। आप सविनय अवज्ञा का अंत निजी सम्पर्क *स्थापित कर सकते हैं। वाइसराय ने जिज्ञासा दिखाई कि 'साफ-साफ बताइये,* क्या सविनय अवज्ञा आन्दोलन नये सिरे से आरम्भ होनेवाला है? मैंने उत्तर में कहा मुझे तो वैसा कोई लक्षण दिखाई नहीं देते हैं, न मैं अगले कुछ वर्षों तक वैसी सम्भावना ही देखता हू। गांधीजी आन्दोलन को नये सिरे से शुरू करने की दिशा में कुछ भी तो नहीं कर रहे हैं। फिर प्रश्न हुआ कि क्या सचमुच आपका यही विश्वास है? मेरा उत्तर था कि 'जहां तक मैं समझता हू यही बात है।' साथ

ही मैंने कहा, 'गाधीजी धमपरायण व्यक्ति हैं। उनके लिए राजनीति लक्ष्य सिद्धि का साधन-मात्र है।" वाइसराय न कहा, "हा मैं जानता हू। जब हम दोनो शिमला म मिले थे तो मैंने उनसे कहा था कि हम दोनो ही बुड्ढे हो चल हैं, दोना साथ मिलकर क्यो न चलें ? बस आप यह मत भूलिए कि मैं सरकार का मुखिया हू।" साथ ही उन्होने यह भी कहा कि "एक कठिनाई और भी है। यदि भेंट से सम झौता नही हुआ, तो वसी अवस्था म हम अपने समथका के साथ विश्वासघात करनेवाले सिद्ध हागे।' मैंने कहा "तो अन्य प्रसगा पर भट करिए।" वे बोल, 'बहुत कठिन है।" मैंने कहा आप ही कोई विकल्प सुझाइए। आज स्थिति जसी है यदि उसे वसा ही रहने दिया गया तो क्रान्ति अनिवाय है।' वाइसराय ने कहा, 'काग्रेस ने मेरे लिए कितनी कठिनाइया पदा कर दी है यह तो सोचिए। उन लोगो (अर्थात एक्जीक्यूटिव क काग्रेसी सदस्या) न मेरा बहिष्कार किया, रजिस्टर मे हस्ताक्षर तक नही किये।' मैंने उत्तर मे कहा "इसम आपके प्रति अशिष्टता दिखाने की तो कोई बात ही नही है। वे लोग छत की बीमारी से बचना चाहते थे, बस।' इस पर वाइसराय ठहाका मारकर हस पडे। बोले 'मैं उन लागो के साथ राजनतिक चर्चा तो करन जा नही रहा था।" इसके बाद उन्हान सम्राटकी रजत-जयती की चर्चा छेडी कहा, "इससे इगलड म लोगा की भावनाओ का ठेस पहुचेगी।' मैंने कहा "आप इस पहलू पर काग्रेसिया के दृष्टिकोण का भी समझिए। उन्हाने जो कुछ किया है वे उससे भी अधिक कर सकते थ।" वे बोल, 'उन्हाने जो कुछ किया है उसका हानिकर परिणाम मौजूद है।' इसके बाद हम दोनान भूलाभाई की बात उठाइ। वाइसराय बोल, 'मैं उनसे परिचित नही हू। मैं व्यवस्थापिका का भग करके अपने लिए नई मुसीबत मोल लेता हू, और तिस पर भी इन लोगा ने मेरा बहिष्कार किया। मैं आज सुबह तक बडा बेचन रहा हू।" मैंने कहा, "आप इस घटना को दिमाग स निकाल दीजिए।' व बोल, मैं मन म मल रखनवाला आदमी नही हू।" इसके बाद व कहने लग, "अच्छा, देखिए मैं क्या करने का विचार कर रहा हू। मैं (सर जेम्स) ग्रिग और (सर हेनरी) क्रेक के साथ बात करूगा। आप उनसे परिचित हैं ?' मैंने कहा "नही तो।' वे बोल, अच्छा अच्छा ! तो उनके साथ मेरी मौजूदगी म बातचीत करने म आपको कोई आपत्ति ता नही है ? मैंन उत्तर दिया, "जरा भी नही।" उन्होने कहा, 'अभी यही ठहरिए। मैंने कहा जरूर ठहरा रहूगा। यह काम बडे महत्त्व का है।' वे बोल, 'बहुत-बहुत धन्यवाद। अच्छा अब देखना हू कि बगाल के गवनर क सामन भी हमारे लिए बात करना सम्भव है या नही।' व उठ खडे हुए अपनी डायरी देखी, तारीख नही मिली ए० डी० सी० को बुलाया। ए० डी० सी० न बताया कि

वह १२ ता० को आ रहे हैं। बोले, ' बहुत दिन हैं।" मैंने कहा, "मैं ठहरा रहूंगा, मेरी चिंता मत कीजिए।" उन्होंने कहा "अच्छी बात है, पहले मेरे सहकर्मियों के साथ विचार विमर्श कर लीजिए मैं भी मौजूद रहूंगा। उसके बाद बंगाल के गवर्नर से बातचीत हो जायेगी। (सर सयद) रजा अली की पार्टी के अवसर पर गांधी मिल पाते तो बड़ी बात होती।' मैंने उत्तर में कहा "गांधीजी आपको परेशानी में डालना नहीं चाहते थे।" उन्होंने कहा 'इसमें परेशानी की क्या बात है? हम कुत्ते बिल्ली की तरह भले ही लड़ते झगड़ते रहें पर मैं मन में मैल रखने वाला आदमी नहीं हूं। क्या ही अच्छा हो यदि गांधी मुझसे किसी औपचारिक अवसर पर मिलें। मैंने कहा 'पर वे व्यवस्थापिका सभा को असमंजस में नहीं डालना चाहते थे यह कहकर मैं चुप हो गया। मैं उनसे यह पूछना चाहता था कि यदि किसी औपचारिक अवसर पर लोगों का आमंत्रित किया जाए तो कैसा रहेगा, पर साथ ही मैं गांधीजी की सलाह लिये बिना यह प्रसंग छेड़ना नहीं चाहता था। वाइसराय ने स्वतः ही कहा, बेचारा हार मुसीबत में है। मेनचेस्टरवाले कह रहे हैं वह ५ प्रतिशत हटाओ नहीं तो हमारे ६० मत तुम्हारे खिलाफ जायेंगे। कितनी अनुचित बात है। और एक यह मिस्टर गांधी और उनके अनुयायी हैं जिन्होंने आफत खड़ी कर रखी है। पता नहीं औपनिवेशिक स्वराज्य को ऐसा हौआ क्यों समझा जा रहा है। होर तो इस बाबत मुंह खोलने को तैयार हैं पर पार्लियामेंट के अन्य सदस्यों तथा केबिनेट की धारणा भिन्न है। इसी सिलसिले में उन्होंने विधान सभाएं भंग करने तथा उसके कांग्रेसी सदस्यों द्वारा उनके बहिष्कार-कार्य का प्रसंग दुबारा उठाया। मैंने कहा आपने भी तो कांग्रेस के प्रधान पुरुष का बहिष्कार कर रखा है। उन्होंने उत्तर दिया मैंने उनका राजनैतिक बहिष्कार किया है, सामाजिक नहीं। पर इन लोगों ने तो मेरा सामाजिक बहिष्कार कर डाला।" मेरे आश्वासन पर उन्होंने कहा, 'ठीक है मैं यह बात भुला दूंगा।' इसके बाद उन्होंने सक्यूलर का जिक्र छेड़ा, कहा, 'उसमें कुछ भी तो नहीं था पर देखिए कृपलानी और कवीश्वर (सरदार शार्दूलसिंह) ने अपनी स्पीचों में क्या क्या कह डाला है। खुद गांधीजी के अनुयायियों ने अलग अलग अर्थ लगाये हैं। मैंने कहा आज के हिन्दुस्तान टाइम्स में गांधीजी की मुलाकात का विवरण निकला है पढ़ियेगा।" उन्होंने कहा, जरूर पढ़ूंगा। मैंने कहा इस सारी गलतफहमी की जड़ में पारस्परिक सम्पर्क का अभाव है। मिस्टर गांधी असेम्बली कक्ष में किसी भी प्रकार के प्रदर्शन के खिलाफ हैं। वह रचनात्मक कार्य में विश्वास रखते हैं। आप उनके सम्पर्क में रहेंगे तो वह सदस्यों पर अपना प्रभाव रख सकेंगे। वे पूछ बैठे क्या वह मिस्टर जिन्ना पर प्रभाव डाल सकते हैं?" और फिर खुद ही हंस पड़े। सम्भवतः

मिस्टर जिना के विषय म उनकी कोई बहुत अच्छी धारणा नही है। मैंने उत्तर मे कहा उनके लिए मिस्टर जिना को काबू म रखना सम्भव नही है। मैंने लेडी विलिग्डन से मिलने की इच्छा प्रकट की। वाइसराय ने कहा 'अवश्य मिलिए। मेविल से मिलकर समय ल लीजिए।' मैं मेविल के कमरे की आर कदम बढा ही रहा था कि लेडी विलिग्डन आ टपकी और उन्होंने अचानक मेरे ऊपर धावा बोल दिया। बोली, 'बहुत दिन बाद दिखाई दिये कहा थे ? अपनी पगडी के रूप रग का चमत्कार तो देखिए।" मुझे मुह खोलने का अवसर दिये बिना ही बोलती रही, रजत-जयती निधि के सग्रह-काय म मेरा हाथ बटाइये। अपने सारे नौकर चाकरो से कहिए, एक एक आना करके देंगे। मैंने कहा 'मैं भरसक चेष्टा करूगा।' मेरी उनसे दुबारा भेंट होगी।

४

चाटवैल,
वेस्टरहाम
कैंट
२३ जनवरी, १९३५

प्रिय श्री बिडला,

मैं सत्र के अत तक बडा कायव्यस्त रहूगा पर यदि आप उसके बाद किसी दिन दोपहर के भोजन के लिए आ सकें तो अनुगृहीत होऊंगा। यात्रा मुश्किल नही रहेगी। आप शायद मुझे यह बता सकेंगे कि इगलड म आप कब तक हैं ?

भवदीय,
विंस्टन एस० चर्चिल

श्री घनश्यामदास बिडला

६

३० जनवरी, १९३५

सर हेनरी क्रेक के साथ मुलाकात

समय ६॥ बजे अपराह्न

यह कोई ६० वर्ष का होगा। देखने में तो स्पष्टवादी और ईमानदार लगता है। शुरू में ही उसने भेंट के लिए आने पर मुझे हार्दिक धन्यवाद दिया तथा कहा कि वाइसराय ने उसे बता दिया है कि मैं उन लोगों में से नहीं हूं जो प्रस्तावित सुधारों को माण्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधारों से भी गया-बीता मानते हैं। मैंने कहा, 'हां, मेरी यह राय अवश्य है पर उसके साथ कुछ शर्तें भी जुड़ी हुई हैं। मैंने वाइसराय से कहा था कि अबतक मैं जितने लोगों से मिला हूं उनमें से एक की भी यह राय नहीं है कि ये सुधार माण्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधारों से बदतर हैं साथ ही मेरी अपनी यह धारणा भी है कि यदि दोनों पक्षों की ओर से सद्भावना और सहानुभूति बरती गई तो ये सुधार हमारे अंतिम ध्येय का मार्ग तैयार करने में सहायक सिद्ध होंगे।' मैंने यह भी कहा कि मैं रिपोर्ट की अच्छाई-बुराई का निर्णय उसके विषय के आधार पर नहीं बल्कि उसे व्यवहार में लाते समय बरती जानेवाली भावना के आधार पर करूंगा। यदि ब्रिटेन ने नेकनीयती से काम नहीं लिया तो जिन संरक्षणों की व्यवस्था है वे वास्तव में मार्ग के रोड़े साबित होंगे। पर यदि ईमानदारी और सहानुभूति से काम लिया गया तो यही संरक्षण बीमा बन सकते हैं।' क्रेक बोला, 'मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि हमारी ओर से सद्भावना और सहानुभूति की कमी नहीं है। मैं चर्चिल आदि लोगों की बात तो नहीं कहता पर अनुदार दल में अब ऐसे तरुण वर्ग की बहुतायत है, जो सहानुभूति की भावना से ओतप्रोत है तथा जिनका हार्दिक विश्वास है कि भारत को सचमुच भारी उत्तरदायित्व सौंपा जा रहा है। ये संरक्षण केवल जोखिम की स्थिति उत्पन्न होने पर ही काम में लाये जायेंगे। मेरी अपनी धारणा है कि वैसी नौबत कभी नहीं आयगी। भारत इस शासन विधान को मानने से इन्कार करके भारी भूल करेगा। यह सत्य है कि योजना में अवांछनीय पहलुओं का समावेश है। हम जो चाहते थे वह हासिल करने में थोड़े नाकामयाब रहे हैं। वस्तुस्थिति यह है कि अंग्रेज कांग्रेसियों के उद्गारों से भयातुर हो गये हैं और ये संरक्षण उसी भय का परिणाम हैं। पर आप कृपा करके मिस्टर गांधी को आश्वासन दीजिए कि हमारी ओर से भारत के प्रति सद्भावना और सहानुभूति प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। हम सच

मेथिल से चर्चा

मैंने उन्हें याद दिलाई कि मैं वाइसराय से मिलन का इन्तजार कर रहा हूं। उसने वाइसराय को याद दिलाने का और मुलाकात का समय निर्धारित करने का वचन दिया। उसने पूछा, "क्रेक से भेंट हुई या नहीं ? मैंने कहा नहीं। उसने सुझाया, पहले क्रेक से मिल लेना ठीक रहेगा।" उसने बताया कि असल मे गृह-विभाग से ही निपटना जरूरी है। आदमी भला लगा बडे सौजन्य से पेश आया। बोला "जब कभी आप समझें कि मैं किसी काम आ सकता हू, मुझे लिखने या फोन करने मे सकोच मत कीजियेगा।'

भोर से चर्चा

वाइसराय के साथ मेरी जो-जो बातें हुई, उनका इसे पता था। मैंने सारी बात फिर विस्तार के साथ बताई। वह बोला, 'सारी कठिनाई इस बात की है कि यदि समझौता नहीं हुआ तो क्या परिणाम होगा ? ' मैंने अपना सुझाव दुहराया कि सबसे पहले पारस्परिक सम्पर्क स्थापित किया जाए, उसके बाद गाधीजी इग्लैंड जाए। उसने जानना चाहा कि मि० गाधी का दिमाग किस दिशा मे काम कर रहा है। मैं बोला, ' यदि ईमानदारी और सदभाव से काम लिया गया तो मि० गाधी शासन विधान को अमल मे लाने के हेतु कोई-न-कोई फार्मूला अवश्य ढूढ निकालेंगे।" इसका उसपर बहुत प्रभाव पडा। वह बोला 'वाइसराय का सदस्या न बहिष्कार किया इससे वे बहुत चिढे हुए हैं। मैंने उससे कहा कि वह वाइसराय के दिमाग को इन सारी बातो से मुक्त रखने की चेष्टा जारी रखें। उसने सहायता करने का वचन दिया। उसने कहा कि ' मेरी धारणा है कि वाइसराय गाधीजी से मिलने की इच्छा रखते हैं और सम्भवत किसी सामाजिक समारोह की टोह मे हैं। लेकिन अभी विचार पक्का नहीं हुआ है।" मैं मानता हू कि इस सम्बन्ध मे मन की तयारी हो गई है—पहले किसी सार्वजनिक समारोह मे मिलेंगे।

५

२५ जनवरी, १९३५

लेडी विलिंग्डन के साथ मुलाकात
समय   १२ बजे मध्याह्न

वे बोली "मुझे वाइसराय के साथ आपकी मुलाकात का पता है पर माग म कठिनाइया है   मुख्य कठिनाई लदन के अनुदार दलवालो की तरफ से खडी की जाती है। अगर मैं गाधी स मिलने की बात सोचू तो वे लोग बिगड खडे होंगे। गाधी अब भी कानून भग करनेम विश्वास करते हैं। पर उनका कुछ प्रभाव भी है क्या?' बहुत बडा मेरा सक्षिप्त उत्तर था। उन्हे अचम्भा हुआ बोली,' कलकत्ते म मुझसे जब तक ७००० स्त्री पुरुष मिल चुके हैं, सबने उनकी खिल्ली उडाई।' उन्होने बताया कि जब वह कलकत्ते की एक कन्या पाठशाला म गई तो वहा की ७०० की ७०० लडकिया ने अपनी अरुचि व्यक्त की। मैंने कहा, "महोदया, आपको गलत खबर मिली है।   उन्होंने जिज्ञासा दिखाई   पर क्या वह सचमुच के महात्मा है? मैंने उत्तर दिया, इस शब्द स आपका क्या आशय है सो तो मैं नही जानता पर इसम तनिक भी सदेह नही कि वह एक पहुचे हुए सत पुरुष हैं। वे बोली   हमने उन्हे बम्बई म पाच वष तक देखा था, तब तो वे महात्मा नही थे। फिर वे कहने लगी   मुझे वे बहुत भाते हैं मेरे पति को भी। पर उनके साथ भेट करने से कोई प्रयोजन सिद्ध होगा? उन्होने पूछा, ' क्या देश म किसी तरह की कटुता फैली हुई है? मैंने कहा   हा, महोदया। इस बात स भी उन्हे आश्चर्य हुआ। बोली, आप कल असम्बली म नही आये। देखते जब वाइसराय विदा हुए तो किसी ने भी तालिया नही बजाई। कोई भी उठकर खडा नही हुआ। यह हद दर्जे की अशिष्टता थी। मैंने सारी बात बताई और कहा, उनका उद्देश्य किसी प्रकार की अशिष्टता दिखाने का नही था।' उन्होने बताया ' वाइसराय ने मिस्टर गाधी स मुलाकात करने का विचार छोडा नहा है। पर वे बराबर माग मे कठिनाइयो का ही बखान करती रही। वे इस पर भी बहुत चिन्ती हुई हैं कि काग्रेस ने रजत जयती का बहिष्कार करने का निश्चय किया है। उन्हे इसस बडी निराशा हुई कि गाधीजी रजा अली के सहभोज म शरीक होन नही आये। मेरी धारणा है कि यह इरादा पहले स ही कर लिया था। वे बोली, 'अगर मुझमे पूछा जाता तो मैं तो अवश्य कहती कि गाधीजी को लेकर कोई परेशानी नही होगी।

मेविल से चर्चा

मैंने उन्हे याद दिलाई कि मैं वाइसराय से मिलने का इंतजार कर रहा हू। उसने वाइसराय को याद दिलाने का और मुलाकात का समय निर्धारित करने का वचन दिया। उसने पूछा, "क्रेक से भेट हुई या नही ?" मैंने कहा, 'नही।' उसने सुझाया, 'पहले क्रेक से मिल लेना ठीक रहेगा।" उसने बताया कि अमल मे गृह विभाग से ही निपटना जरूरी है। आदमी भला लगा बडे मौजन्य से पेश आया। बोला "जब कभी आप समझें कि मैं किसी काम आ सकता हू, मुझे लिखने या फान करने मे सकोच मत कीजियेगा।"

मोर से चर्चा

वाइसराय के साथ मेरी जा जो वार्ते हुइ, उनका इसे पता था। मैंने सारी बात फिर विस्तार के साथ बताई। वह बोला, "सारी कठिनाई इस बात की है कि यदि समझौता नही हुआ तो क्या परिणाम होगा ?" मैंने अपना सुझाव दुहराया कि सबस पहले पारस्परिक सम्पर्क स्थापित किया जाए, उसके बाद गाधीजी इगलड जाए। उसने जानना चाहा कि मि० गाधी का दिमाग किस दिशा म काम कर रहा है। मैं बोला "यदि ईमानदारी और सदभाव से काम लिया गया, तो मि० गाधी शासन विधान को अमल मे लाने के हेतु कोई-न कोई फार्मूला अवश्य ढूढ निकालेंगे।" इसका उसपर बहुत प्रभाव पडा। वह बोला "वाइसराय का सदस्या ने बहिष्कार किया इससे व बहुत चिढे हुए हैं।' मैंने उसस कहा कि वह वाइसराय के दिमाग को इन सारी बातो से मुक्त रखने की चेष्टा जारी रखे। उसने सहायता करने का वचन दिया। उसने कहा कि 'मेरी धारणा है कि वाइसराय गाधीजी से मिलन की इच्छा रखते है और सम्भवत किसी सामाजिक समाराह की टोह म हैं। लेकिन अभी विचार पक्का नही हुआ है।" मैं मानता हू कि इस सम्बन्ध मे मन की तयारी हा गई है—पहले किसी सावजनिक समाराह म मिलेंगे।

६

३० जनवरी, १९३५

सर हेनरी क्रेक के साथ मुलाकात
समय ६॥ बजे अपराह्न

यह कोई ६० वर्ष का होगा। देखने में तो स्पष्टवादी और ईमानदार लगता है। शुरू में ही उसने भेंट के लिए आने पर मुझे हार्दिक धन्यवाद दिया तथा कहा कि वाइसराय ने उसे बता दिया है कि मैं उन लोगों में से नहीं हूं जो प्रस्तावित सुधारों को माण्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधारों से भी गया-बीता मानते हैं। मैंने कहा : हां मेरी यह राय अवश्य है पर उसके साथ कुछ शर्तें भी जुड़ी हुई हैं। मैंने वाइसराय से कहा था कि अबतक मैं जितने लोगों से मिला हूं उनमें से एक की भी यह राय नहीं है कि ये सुधार माण्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधारों से बदतर हैं साथ ही मेरी अपनी यह धारणा भी है कि यदि दोनों पक्षों की ओर से सदभावना और सहानुभूति बरती गई तो ये सुधार हमारे अंतिम ध्येय का मार्ग तैयार करने में सहायक सिद्ध होंगे। मैंने यह भी कहा कि मैं रिपोर्ट की अच्छाई-बुराई का निर्णय उसके विषय के आधार पर नहीं बल्कि उसे व्यवहार में लाते समय बरती जानेवाली भावना के आधार पर करूंगा। यदि ब्रिटेन ने नेकनीयती से काम नहीं लिया, तो जिन सरक्षणों की व्यवस्था है, वे वास्तव में मार्ग के रोड़े साबित होंगे। पर यदि ईमानदारी और सहानुभूति से काम लिया गया तो यही सरक्षण बीमा बन सकते हैं।" क्रेक बोला : "मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि हमारी ओर से सदभावना और सहानुभूति की कमी नहीं है। मैं चर्चिल आदि लोगों की बात तो नहीं कहता, पर अनुदार दल में अब ऐसे तरुण वर्ग की बहुतायत है, जो सहानुभूति की भावना से ओतप्रोत हैं तथा जिनका हार्दिक विश्वास है कि भारत को सचमुच भारी उत्तरदायित्व सौंपा जा रहा है। ये सरक्षण केवल जोखिम की स्थिति उत्पन्न होने पर ही काम में लाये जायेंगे। मेरी अपनी धारणा है कि वैसी नौबत कभी नहीं आयेगी। भारत इस शासन विधान को मानने से इन्कार करके भारी भूल करेगा। यह सत्य है कि योजना में अवांछनीय पहलुओं का समावेश है। हम जो चाहते थे वह हासिल करने में थोड़े नाकामयाब रहे हैं। वस्तुस्थिति यह है कि अंग्रेज कांग्रेसियों के उदगारों से भयातुर हो गये हैं और ये सरक्षण उसी भय का परिणाम हैं। पर आप कृपा करके मिस्टर गांधी को आश्वासन दीजिए कि हमारी ओर से भारत के प्रति सदभावना और सहानुभूति प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। हम सच

मुच मिस्टर गाधी का सहयोग चाहते है।' मैंने उत्तर म कहा ' मैं आपके आश्वासन को स्वीकार करता हू और मान लेता हू कि भारत के कल्याण के लिए आपकी ओर से सहानुभूति बरती जायेगी। उधर जब मैं गाधीजी के चरणो मे जाकर बठता हू तो देखता हू कि अपने देश के मगल के लिए वह भी सहयोग प्रदान करने को उतने ही आतुर हैं उनमे भी औचित्य की सीमा को लाघने की भावना जरा भी नही है। पर जब मैं देखता हू कि दोना ओर सदाशयता है फिर भी खाई बनी हुई है तो आश्चय होता है। आपको भी यह स्थिति अजीब लगती होगी। गाधीजी की ओर सहयोग का हाथ बढाने म आप जिस संकोच से काम ले रहे हैं उससे तो यही लगता है कि आपकी सदिच्छा में कहीं-न-कहीं कोई बाधा अवश्य है।' नेत्र बोला पता नही आपका क्या अभिप्राय है ? आप यह चाहते हैं न कि वाइसराय गाधी स मिलें। हिज एक्सीलेंसी उनसे मुलाकात करने को तयार हो जाते, पर काग्रेसी सदस्या ने उनका बहिष्कार करके एक जटिल स्थिति पदा कर दी है। मैं चाहूगा कि आप इस दिशा म कुछ करें उससे बडी मदद मिलगी।" इस पर मैंने कहा, इसके लिए तो आपको भूलाभाइ से बात करनी चाहिए पर काग्रेसी सदस्या के बारे म किसी प्रकार का निणय लेने म पहले आपको यह याद रखना चाहिए कि उन्होने जो कुछ किया उससे भी अधिक कर सकते थे। और इस प्रसग म मैंने उन कतिपय काग्रेसी सदस्या का जिक्र किया जो वाइसराय की स्पीच तक का बहिष्कार करने की बात सोच रहे थे। मेरे इस कथन का उस पर गहरा प्रभाव पडा। मैंने बात जारी रखी और कहा, 'गाधीजी औचित्य का कितना ध्यान रखते हैं, इसका एक और उदाहरण पश करता हू। उन्होने ६॥ प्रतिशत की कटौती मजूर कर ली उससे पता चलता है कि यह आदमी मिलकर चलने और रचनात्मक काय म कितना विश्वास रखता है। सर हनरी नेत्र मैं जानता हू कि जिस आदमी ने हजारा सिर फोडे, दजनो आर्डिनेंस जारी किये और हाथ मे तमचे और तलवारें लेकर गश्त लगाई वह कसा हो सकता है। पर आपसे साक्षात्कार हुआ है तो देखता हू कि आप एक ईमानदार और खरी बात कहनेवाले आदमी हैं। ठीक इसी तरह की बातें आपके काना म गाधीजी और उनके अनुयायिया के बारे म पडती रहती होगी, जिसके फलस्वरूप उनके प्रति आपके मन म सन्देह के बादल घने होते जाते होंगे। पर आपको यह नहीं भूलना चाहिए कि मनुष्य तो फिर भी मनुष्य ही है। आपने कभी गाधीजी का हृदय छूने की कोशिश की है ?' उसने उत्तर दिया मैं आपके कथन स सहमत हू। पर आप यह बताइये कि सुधारो के बार म गाधीजी का क्या दृष्टिकोण है ? उन्होने अपने दृष्टिकोण का खुले आम पूरी तरह स्पष्टीकरण अभी तक नहीं किया है। क्या उन्होने आपसी

बातचीत म भी वैसा किया है ?" मैंने कहा, "आपको यह जानकर आश्चय तो नही होगा कि उन्होने रिपोट पर किसी प्रकार का दृष्टिकोण अपनाना तो दर किनार उस पन्ना तक नही है। इससे आप अनुमान लगा सकते हैं कि आपको किस दढ सकल्पी आदमी से पाला पडा है। गाधीजी का यह स्वभाव है कि वह अपेक्षा कृत बडी बातो का निणय नगण्य-सी प्रतीत होनेवाली घटनाओ स करते हैं। यदि उन्हें छोटी मोटी बातो म सदाशयता नही दिखाई देती है तो वे यही कहेंगे कि रिपोट मे भी उदारता दिखाई पडनेवाली नही है।' पर मैं आपको उनके मानस की झाकी कराऊ। उनके पास लोग आते जाते रहते हैं व कहते हैं कि योजना माण्टेग्यू चेम्सफोड सुधारो स भी गई-बीती है। गाधीजी उनके कथन का अनुमोदन कर दते हैं फिर मैं उनके पास जाता और कहता हू कि यदि दोनो ओर सहानुभूति और सदभावना मौजूद रहे तो योजना को पूर तौर स और सतोपजनक ढग स कार्यान्वित किया जा सकता है तो वह मेरे कथन का भी अनुमोदन कर देते हैं। और इन दोनो म किसी प्रकार का विरोधाभास नही है। गाधीजी इस इस प्रकार समझाते हैं जब माण्टेग्यू न सुधार जारी किय थे तो कम स कम कुछ लोगो को अपना विश्वासभाजन बना लिया था और इस प्रकार उनका समथन प्राप्त कर लिया था। इससे पता चलता था कि उनम भारतीय लोकमत को अपने साथ लेने की आशिक अभिलापा अवश्य थी। पर इस योजना के लिए सरकार ने किसी भी प्रकार का समथन प्राप्त करने की चेप्टा नहीं की है। इसका यह अथ हुआ कि सरकार जनसाधारण का विश्वास प्राप्त करन के मामले म उदासीन है। फलत य सुझाये गये सुधार माण्टेग्यू चेम्सफोड सुधारो से भी गये-बीते हैं। आप लोग साझेदारी की बात तो करते हैं पर आप जिन लोगो को साझेदार बनाना चाहते हैं उनसे कन्नी काटते आ रहे हैं। यह रुखया अपनान से सदभावना तथा नेक नीयती कस प्रकट होगी ? यदि आप यह प्रमाणित कर सकें कि सदभावना और नकनीयती तो मौजूद है, पर कुछ परिस्थितिया ऐसी है, जो आपके काबू के बाहर हैं जिनके कारण प्रगति म बाधा पड रही है तो वह समस्या का हल ढूढ निकालेंगे और अपना सहयोग आपको प्रदान करेंगे। वसी अवस्था म वह इन सुधारो को यह समझकर अगीकार कर लेंगे कि व वतमान शासन विधान से तो थोडे अच्छे ही हैं। एक बार गाधीजी म स्वराज्य की परिभाषा करने को कहा गया तो उन्होंने काननी भाषा का प्रयोग न करके १० या १४ मुद्दे पेश किये, जिनस स्वराज्य की परिभाषा पूणरूप से सामन आती थी। इससे आपको पता चलेगा कि गाधीजी की तकशली क्या है। ग्रेक बोला ' इसस तो यही प्रकट होता है कि गाधीजी व्यवहार कुशल राजनेता नही हैं। मैंने उत्तर दिया नही नही इससे यह पता चलता है कि

वह अन्यतम व्यवहार कुशल राजनेता है। जिन लोगों में इस व्यावहारिक राजनैतिक ज्ञान का अभाव है, वे केवल शब्दाडम्बर का आश्रय लेना भर जानते हैं और उनके मुद्रण में अपनी राजनीतिमत्ता देखते हैं। गांधीजी उनसे बिलकुल भिन्न हैं। मैं एक व्यापारी के नाते यह दावा करता हूं कि प्रस्तावित सुधारों के बारे में और लोगों ने चाहे जो राय कायम की हो, यदि सदभावना और सहानुभूति से काम लिया गया, तो उनके द्वारा हमारे अंतिम ध्येय का मार्ग प्रशस्त होगा।" क्रैक को तुरंत अपनी भूल दिखाई पड़ी उसे लगा कि गांधीजी को अव्यावहारिक राजनेता कहना ठीक नहीं था। मैंने कहना जारी रखा गांधीजी के आगमन से पहले जन साधारण की राजनैतिक दीक्षा विध्वंसकारी ढंग की थी। हमें सिखाया गया था कि राजनीति का दायरा सरकार की विध्वंसात्मक आलोचना तक सीमित है। गांधीजी ने हमारे राजनैतिक शिक्षण को एक नया मोड़ दिया। उन्होंने कहा कातो और बुनो। छुआछूत का समूल नाश करो। अल्पसंख्यकों के साथ मिलकर चलो आदि। जनता के सामने पहली बार रचनात्मक कार्यक्रम रखा गया है। पर हम अभी तक सरकार की सराहना करना नहीं सीख पाये हैं क्योंकि आप लोगों ने हमें वैसा करने का अवसर ही नहीं दिया है। जो भी हो हमारा पुराना राजनैतिक शिक्षण बड़ा खतरनाक है। एक ऐसा वर्ग उत्तरोत्तर बलशाली होता जा रहा है, जिसका विश्वास है कि वैध उपायों के द्वारा अच्छी-से अच्छी चीज भी लेना उचित नहीं है। इस वर्ग की धारणा है कि वैध उपायों से प्राप्त किया गया स्वराज्य 'स्वराज्य' नहीं है। वे स्वराज्य की अपेक्षा क्रांति को श्रेयस्कर मानते हैं। सरकार विदेशी हो या स्वदेशी यह वर्ग अन्य वर्गों तथा सरकार के खिलाफ घृणा का प्रचार करता रहेगा। गांधीजी का संघर्ष इसी मनोवृत्ति के विरुद्ध है। वह जो भी कदम उठायेंगे, कटुता की भावना को एक ओर रखकर उठायेंगे। वह स्वराज्य से अधिक अहिंसा का महत्त्व देते हैं। उनके निकटस्थ अनुयायी उनकी नीति में आस्था रखते हैं। पर गांधीजी जितने दिन तक जीवित रहेंगे? यह नितांत आवश्यक है कि उनके जीवन-काल में ही सरकार और जनता एक-दूसरे के अधिक निकट आयें। बस यहीं से नये प्रकार की दीक्षा का आरम्भ होगा, जो जनता को यह बतायेगी कि सरकार उन्हीं की संस्था है जिसमें संशोधन की जरूरत है उसका अंत करने की नहीं। अब तक हमें जो शिक्षण मिलता रहा है यदि उसमें परिवर्तन तुरंत नहीं हुआ तो बड़ी क्षति होगी। तब रक्तपातपूर्ण क्रांति अनिवार्य हो जायेगी, और यह भारत तथा इंगलैंड दोनों ही के लिए बड़े दुर्भाग्य की बात होगी। अनुदार दलवाले भले ही कहते रहें कि यदि वैसा हुआ तो इससे भारत मौत के घाट उतरेगा। मेरा कहना है कि वैसा होने से दोनों ही मौत के घाट उतरेंगे। अकेले

हिमायती रहा हू, और आगे भी हिमायती रहूगा। मैं ईमानदार हू या नही, सो तो मैं नही जानता, पर मैं इतना जरूर कहूगा कि मैंने सदैव ईमानदारी और स्पष्टवादिता से काम लिया है। आपने जो कुछ कहा है उस पर मैं गम्भीरतापूर्वक विचार करूगा, पर आप मिस्टर गाधी को यह जरूर बता दीजिए कि हम प्रस्तावित शासन विधान की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ शासन विधान चाहते थे। हमने उसके लिए सघर्ष किया। होर ने सघर्ष किया। पर चर्चिल आदि लोगो ने कुछ ऐसी वास्तविक कठिनाइया पेश की, जिनकी उपेक्षा करना सम्भव नही था। अनुदार दल का तरुण वर्ग हृदय से भारत का मगल चाहता है। हम सभी सहानुभूति और नवनीयता से काम ले रहे हैं। आप इस भुलावे म मत रहिए कि मजदूर दल आपको कुछ अधिक प्रदान करेगा। मजदूर दल सरकार बनाने म सक्षम हो सकता है, पर वह अपनी साख जमाने मे भी सफल नही होगा।' मैंने कहा हम न मजदूर दल को जानते हैं न उदार दल को। गाधीजी अपने आप म स्पष्ट हैं कि उनका भुकाव किसी दल से पडा है तो वह अनुदार दल ही है।

इसके बाद वल्लभभाई की चर्चा छिडी। उसने उनसे मिलने का आग्रह किया। अब ६ तारीख को सध्या के ५ बजे मेरे निवास स्थान पर दोनो की भेंट होगी। वाइसराय ने मुझसे पहली फरवरी को मिलने का कहा है। भूलाभाई ने समाचार दिया कि भारत ब्रिटिश समझौते पर उनकी विजय के बाद होम मेम्बर उनके पास बधाई देने आये थे और कहते थे, "भले ही यह दावा करते रह कि हम जनता के सम्पर्क म हैं, वास्तव म ऐसी बात नही है। भूलाभाई, आप जनता से हमारा सम्पर्क कराइए न!" भूलाभाई मौन रहे।

मैंने जो सार-सर्वस्व ग्रहण किया है वह यह है कि य लोग पारस्परिक सम्पर्क स्थापित करने को आतुर तो हैं पर अभी हिचकिचा रहे हैं। यह बात उनकी समझ म आ गई है कि जनता उनके साथ नही है। य लोग यह भी समझ गये हैं कि गाधीजी साहसी हैं और ईमानदार भी हैं साथ ही यदि कोई व्यक्ति हिम्मत के साथ समझौता करने म सक्षम है, तो वह गाधीजी ही है। इससे इनमे नयी आशा का सचार हुआ है। मेरी समझ म इन लोगो का दिमाग ठीक दिशा म काम कर रहा है।

७

निजी

इंडिया आफिस,
ह्वाइट हाल
३० जनवरी १९३५

प्रिय श्री बिड़ला

आपके १९ फरवरी के इस दूसरे पत्र के लिए अनेकानेक धन्यवाद। पत्र में जो बातें कही गई हैं उन्हें पढ़कर आनंद हुआ। भारत के प्रति हम लोगों की सदभावनाओं के बारे में भारतवासियों को विश्वास दिलाने का काम कठिन अवश्य है, पर मुझे पूरा भरोसा है कि सद्भावनाएं प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं। जो लोग हमारी वर्तमान नीति का विरोध कर रहे हैं उनमें से भी अधिकांश की शुभकामनाएं भारत के साथ हैं यह बात दूसरी है कि वे भारत का मंगल कुछ जुदा ढंग से समझते हैं। इसका इतना ही मतलब है कि वे भारत के जनसमुदाय के कल्याण की हृदय से कामना करते हैं। हमारे सुझावों का वे जो विरोध कर रहे हैं वह केवल इस कारण कि उन्हें ये सुझाव उस उद्देश्य की पूर्ति में सहायक नहीं लग रहे हैं। यदि मेरा यह आश्वासन यथष्ट सिद्ध न हो तो हम लोग यही आशा करेंगे कि जब यह नया शासन विधान अमल में आयेगा तो आप और आपके मित्रगण स्वयं देख लेंगे कि उसे व्यवहार में लाने में किस गहरी सद्भावना से काम लिया जा रहा है। हमारे देश में यह मुहावरा लोकप्रिय है कि खीर का स्वाद उसे चखने पर ही जाना जा सकता है। हाल ही में आक्सफोर्ड में दी गई एक स्पीच में मैंने इस नये शासन विधान की रूप रेखा को कार्यान्वित करने का एक चित्र प्रस्तुत किया है उसे आप इस पत्र के साथ नत्थी किये विवरण में पढ़ पायेंगे। रोचक लगे तो पूरा पढ़ जाइए। आप देखेंगे कि मैंने अपने पिछले पत्र में जिन विचारों का उल्लेख किया था उनमें से कुछेक को किस प्रकार व्यक्त किया है। आप जिस मानवीय सम्पर्क की बात कहते हैं वह एक से अधिक क्षेत्रों में लागों के साथ व्यवहार में लाना है। पर मेरे दिमाग में जो बात है उसे मैं आगामी सप्ताह में बिल के द्वितीय वाचन के अवसर पर अपेक्षाकृत अधिक सहानुभूति के साथ व्यक्त करने की चेष्टा करूंगा।

भवदीय
सम्युअल होर

८

१ फरवरी, १६३५

वाइसराय के साथ मुलाकात
समय प्रात काल १०॥ बजे

इधर कुछ दिनो से वह बीमार थे इसलिए बडे उदास दिखाई पडे। बोले "बडी कडी मेहनत करता हू बूढा हो गया हू इसलिए थोडा कमजोर हू। श्रेक से मिले थ ? मैंने कहा मिला था। पूछा, 'कैसा प्रभाव छोडकर आये ?' मैंने उत्तर दिया 'यह तो बताना कठिन है, पर मैं तो समझता हू कि प्रभाव अच्छा ही छोडा होगा। वह अब वल्लभभाई से मिलेंगे।" बोले "बडी अच्छी बात है।' इसके बाद उन्होने भारत ब्रिटिश समझौतेकी चर्चा छेडी बोले, 'कल जो कुछ बीती, देखा ही होगा। (वास्तव म यह कल की नही परसो की घटना थी)। इससे पता चलता है कि ब्रिटन के खिलाफ भावना काम कर रही है। जब ऐसी बात है तो फिर कहने के लिए क्या रह जाता है?" मैंने कहा 'इसम ब्रिटेन के खिलाफ भावना की क्या बात है ? समझौता ठीक ढग से नही किया गया है। उधर रसीमन कदम-कदम पर मन्चेस्टर से परामश करता रहा, इधर भोर ने फेडरेशन के प्रतिनिधि मण्डल से मिलने तक से इकार कर दिया। हमने कडा विरोध किया। सारा देश मोदी लीस-समझौते के खिलाफ था, तिस पर भी सरकार ने समझौते पर सही कर दी। इससे तो यही प्रकट होता है कि लोकमत की अवहेलना की गई है।' वाइसराय बाले, "भोर ने मुझे सारी बात बताई थी कहा था कि भारत के हितो का बलिदान नही हुआ है। यदि हुआ होता तो मैं डटकर मार्चा लेता।' मैंने कहा, 'मैं यह मानता हू कि लकाशायर का दिलासा दिलाने के लिए ही यह लीपापोती की गई है वास्तव म उसे दिया दिलाया कुछ नही है पर जो प्रणाली अपनाई गई, वह ठीक नही थी। सब-कुछ जनता की रजामन्दी स किया जाता तो अच्छा रहता।" उन्होंने कहा होर न यह समझौता लकाशायरके ६० वोटा की खातिर किया था। भोर न सदन म जो स्पीच दी वह दलीलो से शराबोर थी। इसके बाद असेम्बली का समझ लेना चाहिए था कि मामला गभीर है, सावधानी से काम लेना चाहिए।' मैंने उत्तर म कहा, 'ऐसे भी अवसर आते है जब दलीला की अपेक्षा मनोवृत्ति और भावनाओ को ध्यान मे रखना पडता है। इस पहलू की उपक्षा की गई वह ठीक नही हुआ।' वह बोले 'यह भारतीय मनोवृत्ति मरी समझ मे नही आती। ओटावा पक्ट से भारत का काफी हित सधा है। तब फिर यह सब शोर गुल

किसलिए?" मैंने कहा "हमारी भलाई किसबात म है किसम नहीं, इसका फसला हम करना चाहिए सरकार को नहीं। पर यदि आपको यह लगे कि भविष्य म एसी घटनाए न हो, तो आपको पारस्परिक सम्पक साधना चाहिए।' इस पर वाइसराय ने वार्ता म कुछ अधिक रुचि लेते हुए कहा मैं क्या पारस्परिक सम्पक से बच रहा हू ? काग्रेसवाला को लान का श्रेय तो मुझे ही है। हार इसके खिलाफ थे। मैं जानता था कि काग्रेसवाला को लान स गडबडी होगी तो भी मैं उन्हें लाया। पर उन्होंने क्या किया ? उन्होंने हस्ताक्षर तक नहीं किय। मैंने उन्ह बताया कि वाइसराय की स्पीच के अवसर पर काग्रेसी सदस्यो की अनुपस्थिति के मामले म गाधीजी ने क्या कुछ किया है। वह बोल ' वे लाग गर हाजिर रहे इसकी मुझे कोई चिता नहीं। उन्होंने यह अशिष्टता बरती, बरतें, यह उनके देखने की बात है। मैंन कहा अशिष्टता तो गाधीजी के रक्त तक म नहीं है यही बात मि० पटेल और भूलाभाइ पर भी लागू हाती है। उपस्थिति के रजिस्टर म काग्रेसी सदस्या ने अपने नाम जिन कारणा स दज नहीं किये उन पर मैं प्रकाश डाल चुका हू।' वह बाले ' कारण जो भी रहे हा मैं ता इसमे अपना अपमान समझता हू। मैंने कहा आपको ऐसा नहीं समझना चाहिए। बोले पर मैं तो यही समझता हू।' मैंने कहा कि गाधीजी के साथ साक्षात्कार के द्वारा यह बोझ मन स उतर जायगा। वह बोले, ' रजत जयतीवाले प्रस्ताव के लिए मिस्टर गाधी नहीं तो और कौन उत्तरदायी है ?" मैंने कहा गाधीजी ! ' उन्होंने कहा, ' यह सम्राट का अपमान है। मैंन कहा कि मैं अपनी पिछली मुलाकात के दौरान यह सब बता चुका हू पर इसकी पूरी कफियत देने का काम मैं गाधीजी पर ही छोडना उचित समझता हू। उसने अपनी बात दोहराई कहा "मैं इन लोगो से कसे मिल सकता हू जब व मेरे साथ एक कोढी जसा व्यवहार करते हैं ? ' मैंने कहा "सम्भवत भूलाभाई आपस कामकाज के सिलसिले म मिलेंगे पर वे लोग किसी प्रकार के सामाजिक सम्पक से बचना चाहते हैं।' वह कह उठे भले आदमी सामाजिक अवसरा पर मुझस किस बात की आशका की जाती है ? मैं उनके दिमाग पर अपनी छाप तो बठाने से रहा। मैं बूढा आदमी हू सरकार का मुखिया हू सम्राट का प्रतिनिधि हू। मेरा इस तरह अपमान नहीं करना चाहिए था। उन्होंने मेरे कथन से यह समझा था कि भूलाभाई पहले हस्ताक्षर करेंगे बाद मे मिलने आयेंगे और इस गलतफहमी से वह थोडे प्रफुल्लित हो उठे थे। बोले कि अगर वह हस्ताक्षर नहीं करेंगे, तो मैं उनसे नहीं मिलूगा।" मैंने कहा कि इन आपसी झमेला को बीच मे आने देना ठीक नहीं है। राष्ट्रीय समस्याओ के समाधान के लिए व्यापक दृष्टिकोण की जरूरत है। यदि वतमान वातावरण बना

रहने दिया गया तो अंग्रेज विरोधी भावना को बल मिलेगा, जिसका एकमात्र परिणाम होगा—घृणा, जो दोनो ही देशा के लिए अहितकर साबित होगी। हम इस वातावरण को बढने देने से रोकने का तुरत यत्न करना चाहिए। शासक और शासित म एक-दूसरे को समझने की भावना बनी रहना आवश्यक है जिससे गाधी जी जसे नेताओ और उनके सहायको के लिए जनता को यह बताना आसान हो जाए कि सरकार स्वय उसी की है, इसलिए उस पर भरोसा करना चाहिए।" वाइसराय बोले, "आप ये सारी बातें खुले आम क्यों नही कहते ?" मैंने उत्तर दिया, 'मेरा काम आपके विचारो मे परिवतन करना है और यदि आपने अनुकूल वातावरण बनाया तो गाधीजी खुल्लम खुल्ला बहुत-सी अच्छी बातें कहगे। मैं खुद तो राजनेता हू नही।' इस पर वे बोले, पर जनता इस शासन का अत होने से पहले सरकार की सराहना नही करेगी। हा, यह बात दूसरी है कि नये शासन विधान के अमल म आने के बाद उसकी भावना म परिवतन होने लगे।' उन्होंने यह बात फिर दुहराई कि गाधीजी उन्हें बहुत प्रिय हैं। उन्ह वे समझते हैं और उनसे मिलना चाहते हैं। साथ ही साथ उन्होंने कहा "पर मैं उनसे कसे मिल सकता हू जब मेरा अपमान हो रहा हो राजा का अपमान हो रहा हो ? मैं बूढा आदमी हू। इग्लड म काफी अच्छा काम कर सकता हू। पर पिछले दो हफ्तो की घटनाओ का मेरे दिमाग पर बहुत बुरा प्रभाव पडा है। यदि मैं यह कहने को बाध्य हो जाऊ कि भारत मेरे साथ एक अच्छे खिलाडी जसा व्यवहार नही कर रहा है, तो यह कितनी बुरी बात होगी ?' मैंने कहा कि उनकी व्याकुलता पर मुझे बडा दुख है। बातचीत के अत म उन्होंने कहा कि व श्री हनरी नेक से तथा बगाल के गवनर से बात करेंगे और यदि उन्ह लगा कि मुझस और एक बार मिलना जरूरी है तो वह मुझे बुला भेजेंगे। आज तो वे बडे बेचन दिखाई दिये। सम्भव है, इसका कारण उनकी हाल की बीमारी हो। वे व्यथित थे, और व्याकुल थे। व बेतरह आहत से लगे क्योकि उनकी सचमुच यह धारणा है कि उनका जान-बूझकर अपमान किया गया है। उनकी धारणा है कि उन्होंने भारत के लिए बहुत कुछ किया पर उनके काय को सराहा नही गया। जब मैंने उनस पूछा कि जिन लोगो को वह साझेदार बताते हैं उनके साथ पारस्परिक सम्पक साधने स वह कब तक बचे रहेंगे, तो उन्होने कहा कि व नही दूसरे लोग भेंट करने से बच रहे हैं। उन्होंने टिप्पणी की कि 'लोग यहा झूठा प्रचार क्या इसलिए कर रहे हैं कि यह शासन विधान माण्टेग्यू चेम्सफाड सुधारो स भी गया-बीता है ?" मैंने उत्तर मे कहा वे लोग झूठा प्रचार नही कर रहे हैं यह उनका हार्दिक विश्वास है।' बोले, "क्या सचमुच यही बात है ?" मैंने कहा, "बिलकुल यही बात है।'

किसलिए ?" मैंने कहा, 'हमारी भलाई किसबात मे है, किसमें नही, इसका फसला हमे करना चाहिए सरकार को नही। पर यदि आपको यह लगे कि भविष्य म ऐसी घटनाए न हो, तो आपको पारस्परिक सम्पक साधना चाहिए।" इस पर वाइसराय ने वार्ता म कुछ अधिक रुचि लेते हुए कहा "मैं क्या पारस्परिक सम्पक से बच रहा हू ? काग्रेसवाला को लान का श्रेय तो मुझे ही है। होर इसके खिलाफ थे। मैं जानता था कि काग्रेसवाला को लाने से गडबडी होगी तो भी मैं उन्हे लाया। पर उन्होंने क्या किया ? उन्हाने हस्ताक्षर तक नही किय। मैंने उन्हें बताया कि वाइसराय की स्पीच क अवसर पर काग्रेसी सदस्या की अनुपस्थिति के मामल म गाधीजी ने क्या कुछ किया है। वह बोले, व लाग गर हाजिर रह इसकी मुझ कोई चिता नही। उन्होंने यह अशिष्टता बरती, बरतें, यह उनक देखने की बात है। मैंने कहा अशिष्टता तो गाधीजी के रक्त तक म नही है, यही बात मि० पटेल और भूलाभाई पर भी लागू हाती है। उपस्थिति के रजिस्टर म काग्रेसी सदस्या ने अपने नाम जिन कारणो स दज नही किये उन पर मैं प्रकाश डाल चुका हू।' वह बोले 'कारण जा भी रहे हा मैं तो इसम अपना अपमान समझता हू। मैंने कहा आपको एसा नही समझना चाहिए। बोले, 'पर मैं तो यही समझता हू। मैंने कहा कि गाधीजी के साथ साक्षात्कार के द्वारा यह बोझ मन स उतर जायगा। वह बोले, रजत जयतीवाले प्रस्ताव के लिए मिस्टर गाधी नही तो और कौन उत्तरदायी है ?" मैंने कहा गाधीजी ! उन्होने कहा, 'यह सम्राट का अपमान है।' मैंने कहा कि मैं अपनी पिछली मुलाकात के दौरान यह सब बता चुका हू पर इसकी पूरी कफियत देने का काम मैं गाधीजी पर ही छोडना उचित समझता हू। उसने अपनी बात दोहराई कहा "मैं इन लोगा से कसे मिल सकता हू जब वे मेरे साथ एक कोढी जसा व्यवहार करते हैं ?" मैंने कहा सम्भवत भूलाभाई आपसे कामकाज के सिलसिले म मिलेंगे पर वे लोग किसी प्रकार के सामाजिक सम्पक से बचना चाहते है। वह कह उठे 'भले आदमी सामाजिक अवसरा पर मुझसे किस बात की आशका की जाती है ? मैं उनके दिमाग पर अपनी छाप तो बठाने से रहा। मैं बूढा आदमी हू सरकार का मुखिया हू सम्राट का प्रतिनिधि हू। मेरा इस तरह अपमान नही करना चाहिए था।" उन्हाने मेरे कथन से यह समझा था कि भूलाभाई पहले हस्ताक्षर करेंगे बाद मे मिलने आयेंगे और इस गलतफहमी से वह थोडे प्रफुल्लित हो उठे थे। बोले कि 'अगर वह हस्ताक्षर नही करेंगे तो मैं उनसे नही मिलूगा। मैंने कहा कि इन आपसी झमेला को बीच म आने देना ठीक नही है। राष्ट्रीय समस्याओ के समाधान के लिए व्यापक दष्टिकोण की जरूरत है। यदि वतमान वातावरण बना

रहने दिया गया तो अंग्रेज विरोधी भावना को बल मिलेगा, जिसका एकमात्र परिणाम होगा—घृणा, जो दोनो ही देशा के लिए अहितकर साबित होगी। हम इस वातावरण को बढने देने से रोकने का तुरत यत्न करना चाहिए। शासक और शासित म एक-दूसरे को समझने की भावना बनी रहना आवश्यक है जिससे गाधी जी-जैसे नेताओ और उनके सहायका के लिए जनता को यह बताना आसान हो जाए कि सरकार स्वय उसी की है इसलिए उस पर भरोसा करना चाहिए।" वाइसराय बाले "आप य सारी बातें खुले आम क्यो नही कहते ? ' मैंने उत्तर दिया, ' मेरा काम आपके विचारो मे परिवतन करना है,और यदि आपने अनुकूल वातावरण बनाया तो गाधीजी खुल्लम-खुल्ला बहुत-सी अच्छी बातें कहगे। मैं खुद तो राजनेता हू नही।" इस पर व बोले, "पर जनता इस शासन का अत होने से पहले सरकार की सराहना नही करगी। हा यह बात दूसरी है कि नय शासन विधान के अमल मे आने के बाद उसकी भावना म परिवतन होने लगे।" उन्होंने यह बात फिर दुहराई कि गाधीजी उन्हें बहुत प्रिय हैं। उन्हें वे समझते हैं और उनसे मिलना चाहते हैं। साथ ही साथ उन्होने कहा, पर मैं उनसे कसे मिल सकता हू जब मेरा अपमान हो रहा हो राजा का अपमान हो रहा हो ? मैं बूढा आदमी हू। इग्लड म काफी अच्छा काम कर सकता हू। पर पिछले दो हफ्ता की घटनाओ का मेरे दिमाग पर बहुत बुरा प्रभाव पडा है। यदि मैं यह कहने को बाध्य हो जाऊ कि भारत मेरे साथ एक अच्छे खिलाडी जसा व्यवहार नही कर रहा है, तो यह कितनी बुरी बात होगी ?" मैंने कहा कि उनकी व्याकुलता पर मुझे बडा दुःख है। बातचीत के अन्त म उन्होंने कहा कि वे श्री हेनरी क्रेक से तथा बगाल के गवनर से बात करेंगे, और यदि उन्ह लगा कि मुझसे और एक बार मिलना जरूरी है तो वह मुझे बुला भेजेंगे। आज तो वे बडे बेचन दिखाई दिय। सम्भव है, इसका कारण उनकी हाल की बीमारी हो। वे व्यथित थे, और व्याकुल थे। व बेतरह आहत से लग क्योंकि उनकी सचमुच यह धारणा है कि उनका जान-बूझकर अपमान किया गया है। उनकी धारणा है कि उन्होने भारत के लिए बहुत-कुछ किया पर उनके काय को सराहा नही गया। जब मैंने उनसे पूछा कि जिन लोगा को वह साझेदार बताते हैं उनके साथ पारस्परिक सम्पक साधन म वह कब तक बचे रहेंगे, तो उन्होने कहा कि व नही दूसरे लोग भेंट करने से बच रहे हैं। उन्होंने टिप्पणी की कि ' लोग यहा झूठा प्रचार क्या इसलिए कर रहे हैं कि यह शासन विधान माण्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधारो से भी गया-बीता है ?' मैंने उत्तर मे कहा ' वे लोग झूठा प्रचार नहीं कर रहे हैं यह उनका हार्दिक विश्वास है। बोले ' क्या सचमुच यही बात है ?" मैंने कहा, "बिलकुल यही बात है।"

उन्होंने बताया कि होर बड़ा बेचैन है। मनचेस्टरवाले उसे बहुत परेशान करेंगे। बस, बातचीत यही समाप्त हो गई।

मेरी तो यही धारणा है कि पारस्परिक सम्पर्क स्थापित करने की नीति पर चारों ओर से दबाव डाला जा रहा है, पर वाइसराय को वृद्ध होने के कारण पग पग पर अपमान दिखाई देता है और फिलहाल यही अनुभूति मार्ग का काटा बनी हुई है। मेरी धारणा है कि उन्हें अपमान का बोध नहीं होने देना चाहिए। मैंने आरम्भ में ही यह सुझाव दिया था कि भूलाभाई को अपना नाम रजिस्टर में लिखने की छूट रहनी चाहिए। मैं अब भी यही कहता हूं कि अगर भूलाभाई वाइसराय के प्राइवेट सेक्रेटरी को लिख भेजें कि उनके प्रति किसी प्रकार की अशिष्टता दिखाने का कभी कोई इरादा नहीं था, तो इसका अच्छा प्रभाव पड़ेगा। तत्पश्चात केवल इस बात की पुष्टि करने के लिए कि वाइसराय का अपमान करने का उनका उद्देश्य कभी नहीं था उन्हें रजिस्टर में अपना नाम लिख देना चाहिए।

६

१ फरवरी, १९३५

पूज्य बापू

आपके जाने के तुरत बाद मुझे होम मेम्बर और वाइसराय की सूचना मिली। उनके साथ अपनी मुलाकात का विवरण इस पत्र के साथ भेजता हूं। मैं शब्दचित्र तयार करने मे, विशेषकर अंग्रेजी में पटु नहीं हूं इसलिए मैंने जो सार सर्वस्व ग्रहण किया उसकी झलक आपको शायद इस विवरण से मिल जाये। पर मैं इस विवरण के साथ यह और जोड़ना चाहूंगा कि होम मेम्बर के साथ जो मुलाकात हुई उसमें अधिकतर बातें मैंने कही जबकि वाइसरायवाली मुलाकात में अधिकतर वे ही बोलते रहे। होम मेम्बर बड़ी सहृदयता से पेश आये। अधिक चतुर तो नहीं है पर है स्पष्टवादी और खरा। वह विद्वेष की भावना से सर्वथा मुक्त है और मैं उसे भारत विरोधी तो कदापि नहीं कहूंगा। यदि उस पर कोई आरोप लगाया जाए तो इतना ही कहना काफी होगा कि वह शासन नियंत्रण का भक्त है पर यदि ऐसी बात हो तब भी उसकी नेकनीयती का कायल होना पड़ेगा। इसके विपरीत इस बार की मुलाकात के दौरान वह कुछ चिढ़ा हुआ सा

प्रतीत हुआ। काग्रेसी सदस्यो ने अपने हस्ताक्षर नही किये, इससे उसके दिल को ठेस लगी है। भूलाभाई विपक्षी दल के नेता की हैसियत से अपनी पोजीशन अन्य काग्रेसी सदस्यो से भिन्न क्या न मानें, यह मेरी समझ मे नही बठ रहा है। ठीक जिस प्रकार आप होम मेम्बर को सविनय अवज्ञा आदोलन की बाबत लिखने का विचार कर रहे थे, उसी प्रकार भूलाभाई को भी वाइसराय के निजी मत्री को पत्र लिखकर यह आश्वासन क्यो नही देना चाहिए कि वाइसराय का व्यक्तिगत रूप से अपमान करने का उनका कोई इरादा नही था। इसके बाद उन्हे हस्ताक्षर भी करने चाहिए, जिससे अपमानवाली धारणा का पूरे तौर से अत हो जाये। मैं कम से कम बगाल के गवनर से तो एक बार और मिल ही लूगा। उसके बाद घटनाए स्वत ही अपना रास्ता ले लेंगी। कुछ समय अवश्य लगेगा पर मेरी धारणा है कि यदि धय से काम लिया गया, तो स्थिति अपने आप ही सुधर जायेगी। आपकी क्या धारणा है लिखियेगा। होम मेम्बर वल्लभभाई से मिल रहे हैं यह भी अच्छा ही है।

स्नेह भाजन
घनश्यामदास

महात्मा गाधीजी
वर्धा

१०

भाई घनश्यामदास

तुमारा खत मिला। दोनो इटरव्यू का वणन अच्छा है। मुझे पूरा-पूरा ख्याल आ गया है अब तो कुछ करने का नही रहता है। हा, मैं कुछ विचार कर रहा हू कि सर हैनरी क्रेग को लिखु। यदि लिखुगा तो तुमको ही खत भेजुगा, अच्छा न लगे तो नही भेजना। भुलाभाई विजीटस बुक मे नाम नही लिख सकते हैं। इन बाता मे हम सुवण माग का छोडकर कोई लाभ हासिल नही कर सकत हैं। भुलाभाई का विनयी वचन काफी समजना चाहीये, समय अपना काम करगा।

होम मेबर का विनय और उनको शुभेच्छा व्यक्तिगत है। जे० पी० सी० के रिपोट की पोलिसी तन्त्र की है। तत्र की नीति मे कुछ विनय नही है। लेकिन इरादतन अविनय है। मैं इसमे से शुभ की कुछ आशा नही रखता हू। यो तो जब

ा की नीति वदलेगी तब कोई भी कान्स्टीटयूशन से एक मुद्दत तक निबाह
क्ते हैं। आज तो नयी चीज लादने की बात है और वह भी बलात्कार से।
से अच्छी चीज नही मानते हैं। तुमारी नीति जैसी है एसी भले बनी रहे।
ना लम्बा चौडा खत लिखता हू इतना ही बताने के लिये कि मैं वायुमण्डल
आशा के किरण नही पाता हू। स्वतत्र आशा मेरे मे नित्य है ही वह तो
अधेरा होत हुए भी है, उसका आधार हमारी सच्चाई के सिवा और कुछ
है।

भूलाभाई को कसी नीति ग्रहण करना चाहिये उसका निणय वल्लभभाइ स
लें।

इसी खत लिखते हुए होम मेंबर को खत लिखने का दिल कम हो रहा है,
ारण नही पाता हू।

खजूर मिल गया होगा।

वापु के आशीर्वाद

३५

११

६ फरवरी १९३५

होम मेम्बर से चाय पर मुलाकात
वल्लभभाई पटेल पहले से ही मौजूद थे

दोनो न भेंट का प्रारम्भ शिष्टाचार के साथ किया पर मुख्य विषय पर आन
ना सकोच करते दिखाई दिए। मैंने बीच म चर्चा छेडी और इसमे होम मेम्बर
ह सब दुहराने का अवसर मिला जो उसने मुझसे कहा था अर्थात अग्रेज
नेकनीयती से काम ल रहे हैं और यथासम्भव अधिक-से-अधिक दूर तक
को तयार हैं। वल्लभभाई ने कहा कि स्थिति म सुधार की काफी गुजाइश
उन्होंने बताया कि बारडोली म अनेक मकान, जिनम खुद उनका निवास
भी शामिल है अब भी सरकार के कब्जे म हैं। न उनकी मरम्मत की जा
है न उनकी सफाई का ही कोई प्रवध है। उन्होंने यह भी बताया कि ब्रिटिश
ा और बडौदा रियासत के अनेक ग्रामीणो को अपन इलाका म वापस नही
दिया जा रहा है। श्री मणिलाल कोठारी के प्रवेश पर प्रतिबध है। गाधीजी

के सक्रेटरी श्री जोशी के साथ भी यही सलूक किया गया है। उन्होंने कहा कि सारी बातो का लोगो पर गहरा प्रभाव पड रहा है जिसके परिणामस्वरूप स्थिति अपने साधारण स्तर पर लौट नहीं पा रही है। होम मेम्बर ने कहा कि उसे इन सारी बातो की जानकारी बिलकुल नही है और पूछा कि क्या बम्बई सरकार का इस स्थिति की ओर ध्यान दिलाया गया है? वल्लभभाई ने कहा, हा पर उसका कोई परिणाम नही निकला। उन्होने कहा कि कांग्रेसियो म अग्रेज विरोधी भावना लेशमात्र भी नही है और बताया कि युद्ध उन्हें आधी रात मे गिरफ्तार करके तीन साल तक बन्दीगृह म बन्द रखा गया। उनके भाई (श्री विट्ठलभाई पटेल) का असम्बली म कठोर परिश्रम करने के कारण निधन हुआ और स्वय उन्हे उनके दाह सस्कार के समय उपस्थित रहने की अनुमति नही मिली। उन्होंने कहा कि यह सारा ही अनुचित था फिर भी उनके हृदय मे कटुता की भावना नही है। यदि दोनो पक्ष एक दूसरे की नेकनीयती और ईमानदारी के कायल हो, तो कटुता कदापि उत्पन्न नहीं होगी। वल्लभभाई ने बताया कि टाइम्स मे जो लेख निकल रहे हैं, जहर से भरे रहते हैं। उन्होने इन लेखो के इस दावे का घोर विरोध किया कि भारतीय नेता अग्रेजो से जातिगत द्वेष रखते हैं। इसी प्रसग म खान अब्दुल गफ्फार खा की चर्चा छिडी। वल्लभभाई ने कहा कि उन्हें जो दण्ड दिया गया है वह बबरतापूर्ण है। होम मेम्बर सहमत हुए। उन्होंने जानना चाहा कि दण्ड के विरुद्ध अपील क्यो नहा दायर की गई। इसके बाद होम मेम्बर ने वतमान शासन-विधान के बार मे वल्लभभाई की राय जाननी चाही और पूछा कि वे उस माण्टेग्यू चेम्सफोड सुधारो से भी गया बीता क्यो समझते हैं। उन्होंने उत्तर दिया कि आर्थिक व्यवस्था को इस प्रकार गिरवी रख दिया गया है कि लगान मे कमी करने या मद्य पान की बुराई का अन्त करने की गुजाइश ही नही रह गई है। होम मेम्बर ने कहा कि इसे चीजो पर कर लगाकर पूरा किया जा सकता है। वल्लभभाई ने कहा कि जनता पहले से ही करो के भार से दबी हुई है। होम मेम्बर को वतमान योजना के विरुद्ध उनकी यह दलील ठीक नही जची। वह जाने की जल्दी मे थे क्याकि वाइसराय न अचानक कबिनेट की बठक बुलाई थी। बातचीत केवल ४५ मिनट चली। वातावरण सहृदयतापूर्ण रहा और दोनो ने अच्छे मित्रो के रूप म एक दूसरे से विदा ली। विदा लेने के कुछ ही क्षण पहले होम मेम्बर न कहा कि उन्हे इस बातचीत से बडी प्रसन्नता हुई, पर यह दुख की बात है कि बातें अधिक समय तक नही चली। आशा है वल्लभभाई की दिल्ली वापसी पर और अधिक बातें होगी। साथ ही उन्होंने वल्लभभाई से अनुरोध किया कि जो जो बातें हुई हैं उनका एक नोट बनाकर दे दें जिसस बम्बई के गवनर लाड ब्रेबान को लिखकर

कथित तलब की जा सके। जब वह जाने लगे तो मैंने उन्हे वाइसराय के साथ हुई अपनी भेंट की बात बताई। उन्होंने पूछा कि क्या कोई ठोस परिणाम निकला? मैंने कहा कि आकर सारी बातें कहूगा। उन्होने कहा कि १२ तारीख के बाद आना ठीक रहेगा। उनके जाने के बाद मैंने वल्लभभाई से कहा कि मैं वसे गाधीजी का यह कथन स्वीकार करता हू कि कोई ठोस परिणाम निकलनेवाला नही है, पर यह मानने को जी नही करता कि सरकारी अधिकारियो की ओर से यह जो विनम्रता और आतुरता दिखाई जा रही है वह खोखला शिष्टाचार मात्र है। छह महीने पहले होम मेम्बर वल्लभभाई से मिलने के लिए आने की बात स्वप्न म भी नही सोचता। अब वह बातचीत आगे बढाने को इच्छुक है और वल्लभभाई से नोट तयार करने को कह गया है। वाइसराय भी वार्तालाप करता है और बातें जारी रखने को कहता है। इसका अर्थ यही है कि पर्दे के पीछे कुछ हो रहा है, उसकी उपेक्षा करना युक्तिसगत नही होगा।

भूलाभाई ने अपने अनुयायियो और विपक्षियो को समान रूप से प्रभावित किया है। सभी उनकी भूरि भूरि प्रशसा कर रहे हैं। सरकारी सदस्यो तथा यूरोपियन सदस्यो पर उनके व्यक्तित्व की गहरी छाप पडी दिखाई देती है। कुछ लोग तो यहा तक कहते हैं कि उनका मोतीलालजी से भी अधिक आदर-सम्मान किया जाता है। उनके एक अनुयायी ने, जो एक कौतुकप्रिय आदमी है, कहा कि मोतीलालजी व्यर्थ ही लोगो को नाराज कर देते थे पर भूलाभाई सबकी भावनाओ का खयाल रखते हैं। इस प्रकार भूलाभाई अधिकाधिक लोकप्रिय होते जा रहे हैं। यह सब कुछ आशातीत है और बडा ही सतोषप्रद है।

मैं यह स्वीकार करता हू कि जो लोग वर्तमान बिल को माण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारो से भी गया बीता मानते है वे मेरे मत म परिवर्तन करने म समर्थ नही हुए हैं। जब वल्लभभाई ने भी होम मेम्बर से यही बात कही तो उनकी बात विश्वास करने योग्य नही लगी। मुझे आशका है कि जो लोग इस नतीजे पर पहुचे है, वे पक्षपात रहित नहीं हैं। सम्भव है व इस नतीजे पर यह सोचकर पहुचे हो कि यदि यह बिल त्याग दिया जायेगा, तो इसके स्थान पर बेहतर बिल आयगा। पर मुझे पूरा यकीन है कि न तो इस बिल को त्यागा जायगा, और न इसम कोई सशोधन ही होगा। मुझे एक विश्वस्त सूत्र से पता चला है कि वाइसराय की कबिनेट ने सर्व-सम्मति से भारत-सचिव से सिफारिश की थी कि बर्मा को भारत से पृथक न किया जाए क्योकि भारतीय और ब्रिटिश लोकमत समान रूप से उसके भारत से अलग किये जाने के खिलाफ है। पर भारत सचिव ने इस सिफारिश को मानने से इन्कार कर दिया। शायद इसका कारण यह रहा हो कि जहा एक बार

ज्वाइंट पार्लियामेंटरी कमेटी की रिपोर्ट में परिवर्तन का सिलसिला शुरू हुआ, फिर इसका अंत कहां जाकर होगा, कौन कह सकता है। सारा प्रश्न मान मर्यादा का है। पर मेरी यह भी धारणा है कि शासन विधान को भविष्य में कार्यान्वित करने के मामले में सरकार को एक-न-एक दिन कांग्रेस के साथ समझौता करना ही होगा—अब न सही, एक वर्ष बाद सही। इसलिए भविष्य में क्या कुछ होने जा रहा है, इस ओर आंखें खुली रखना ही उचित है। यदि हम किसी एक निर्णय पर कायम रहने का संकल्प कर लेंगे तो उसके विपरीत निर्णय करना हमारे लिए कठिन होगा। पर मैं आतुरता से काम नहीं ले रहा हूं और वस्तुस्थिति जो दिखाई देती है उसे दरगुजर करके देखने की चेष्टा नहीं कर रहा हूं।

वाइसराय ने व्यवस्थापिका सभा के कांग्रेसी सदस्यों के दस्तखत करने से इन्कार करने की बात को जो तूल दिया है वह उसी तक सीमित है। रजत-जयंती संबंधी प्रस्ताव की भी विशेष कड़ी आलोचना नहीं हो रही है। पर दूसरी ओर भारत ब्रिटिश पैक्ट को लेकर भारत-सचिव को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है और ऐसा लगता है कि सरकार ने व्यवस्थापिका सभा में जो-कुछ खोया है, उसकी पूर्ति वह ५ प्रतिशत अतिरिक्त चुंगी घटाकर लंकाशायर को हर्जाने के रूप में बजट की समृद्धि का बहाना लेकर अदा करेगी।

मैं तो नहीं समझता कि फिलहाल भूलाभाई को वाइसराय के रजिस्टर में अपने दस्तखत करने की जरूरत है, क्योंकि वाइसराय के गांधीजी से न मिलने का एकमात्र यही कारण कदापि नहीं है। सबसे बड़ा कारण चर्चिल का भय है, साथ ही यह भय भी है कि पता नहीं ऐसी भेंट का क्या परिणाम निकले। पर एक-न-एक दिन नाम लिखना जरूरी हो जायगा। मुझे वल्लभभाई और भूलाभाई से पता चला है कि यदि एकमात्र ये ही बातें बाधाएं उत्पन्न कर रही हैं, तो वे वाइसराय की इच्छा पूरी करने में संकोच नहीं करेंगे। फिलहाल इस दिशा में अभी और कुछ नहीं करना है।

१२

कांग्रेस आफिस
अहमदाबाद
७ फरवरी, १९३५

प्रिय सर हेनरी क्रेक

कल सध्या की बातचीत के फलस्वरूप मैं गुजरात म आर्डिनसो के शासन पर तयार किया गया नोट भेजता हू। साथ ही बम्बई के होम मेम्बर श्री मक्सवेल के साथ हुए पत्र-व्यवहार की नकल भी भेज रहा हू।

खान अब्दुल गफ्फार खा के मामले की बाबत आपको जबानी बता ही चुका हू। आशा है आप इस मामले पर अच्छी तरह विचार करेंगे।

भवदीय,
वल्लभभाई पटेल

आनरेबल सर हेनरी क्रेक
के० सी० एस० आई० आई० सी० एस०
नई दिल्ली

सलग्न १

१३

गुजरात मे आर्डिनेंसो के शासन पर तयार किया गया नोट

पिछले तीन वर्षों से जो-जो सस्थाए और इमारतें सरकार के अधिकार म है उनका विवरण इस प्रकार है

अ) १ बारडोली-आश्रम की इमारतें जिनम मेरा निवास-स्थान भी शामिल है खादी की तकनीकी सस्था औषधालय तथा इसी तरह की अन्य इमारतें।

२ बारडोली तालुके के सरभान नामक स्थान की वसी ही इमारतें।

३ बारडोली तालुके का खादी-आश्रम।

४ बारडोली तालुके म स्थित उन आदिवासियो के लडको के प्रशिक्षण के

काम म आनेवाला छात्रावास तथा विद्यालय जो वेडछी आश्रम के नाम से प्रसिद्ध है।

५ सूरत नगर मे स्वराज्य-आश्रम की इमारत।

६ सूरत नगर मे स्थित अनाविल छात्रावास तथा विद्यालय जो अनाविल बालको की शिक्षा दीक्षा के काम म आता है और जिसके श्री भूलाभाई देसाई एक ट्रस्टी हैं।

७ सूरत की पाटीदार जाति के बालको की शिक्षा के काम म आनेवाली इमारतें।

८ खेडा जिले के बोचासण नामक स्थान का वल्लभ विद्यालय जिसमे वहा की पिछडी हुई जातियो के बालका को तकनीकी शिक्षा दी जाती है।

९ खेडा जिले के सुनाव नामक स्थान म राष्ट्रीय विद्यालय की इमारतें।

१० खेडा जिले के रास नामक स्थान के राष्ट्रीय विद्यालय की इमारतें।

आ) १ अपनी रिहाई के तुरत बाद ही मेरे सेक्रेटरी श्री मणिलाल कोठारी को ब्रिटिश भारत छोडकर चले जाने का आदेश दिया गया। वे पिछले १५ वर्षों से प्रान्तीय काग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी रहते चले आ रहे हैं। वे बम्बई-बडोदा ऐंड सेंट्रल इडिया रेल कमचारी सघ तथा डाक कमचारी सघ के भी सेक्रेटरी हैं। इन दोना सस्थाओ को ट्रेड यूनियन ऐक्ट के अन्तगत मान्यता प्राप्त है। इन दोनो ही सस्थाओ का प्रधान कार्यालय अहमदाबाद म है। इन्हें यह आदेश एक वष पहले मिला था। तबसे यह बराबर ब्रिटिश भारत के बाहर रहते आ रहे हैं।

२ ठीक इसी प्रकार का निष्कासन-आदेश महात्मा गाधी के सेक्रेटरी श्री छगनलाल जोशी को दिया गया है। वे भी पिछले एक वष म ब्रिटिश भारत म प्रवेश नही कर सके ह।

३ इसी तरह के आदश मेरे अनक सहकर्मिया को दिये गये हैं। इनमे वे ग्रामीण लोग भी हैं जिनकी जमीनें ब्रिटिश भारत म भी हैं और पास की देशी रियासतो म भी।

इ) कई ऐसे व्यक्तियो को यूरोप-यात्रा का पासपोट नही मिला है, जो या तो सविनय अवज्ञा आन्दोलन के सिलसिले म दण्डित हुए थे या जिन पर उसम भाग लेने का सदेह है।

वल्लभभाई पटेल

नई दिल्ली,

१२

काग्रे
अ
७ फरवर

प्रिय सर हेनरी क्रेक

कल सध्या की वातचीत के फलस्वरूप मैं गुजरात म आर्डिनेंसो क
तयार किया गया नोट भेजता हू। साथ ही वम्बई के होम मेम्बर श्री म
माथ हुए पत्र-व्यवहार की नकल भी भज रहा हू।

खान अब्दुल गफ्फार खा के मामले की बावत आपको जबानी बता
हू। आशा है, आप इस मामले पर अच्छी तरह विचार करेंगे।

भवद
वल्लभ

आनरबल सर हेनरी क्रेक,
के० सी० एस० आई०, आई० सी० एस०
नई दिल्ली

सलग्न १

१३

गुजरात मे आर्डिनेंसो के शासन पर तयार किया गया नोट

पिछले तीन वर्षों से जो जो सस्थाए और इमारतें सरकार के अधिक
उनका विवरण इस प्रकार है

अ) १ बारडोली-आश्रम की इमारतें जिनम मेरा निवास स्थान भी शा
खादी की तकनीकी सस्था औषधालय तथा इसी तरह की अन्य इ
२ बारडोली ताल्लुके के सरभान नामक स्थान की वसी ही इमारतें
३ बारडोली ताल्लुके का खादी-आश्रम।
४ बारडोली ताल्लुके म स्थित उन जनजातियो के लडको के प्रशि

काम में आनेवाला छात्रावास तथा विद्यालय जो बेडछी आश्रम के नाम से प्रसिद्ध है।

५ सूरत नगर में स्वराज्य-आश्रम की इमारत।

६ सूरत नगर में स्थित अनाविल छात्रावास तथा विद्यालय जो अनाविल बालकों की शिक्षा-दीक्षा के काम में आता है और जिसके श्री भूलाभाई देसाई एक ट्रस्टी हैं।

७ सूरत की पाटीदार जाति के बालकों की शिक्षा के काम में आनेवाली इमारतें।

८ खेडा जिले के बोचासण नामक स्थान का वल्लभ विद्यालय, जिसमें वहां की पिछडी हुई जातियों के बालकों को तकनीकी शिक्षा दी जाती है।

९ खेडा जिले के सुनाव नामक स्थान में राष्ट्रीय विद्यालय की इमारतें।

१० खेडा जिले के रास नामक स्थान के राष्ट्रीय विद्यालय की इमारतें।

आ) १ अपनी रिहाई के तुरत बाद ही मेरे सेक्रेटरी श्री मणिलाल कोठारी को ब्रिटिश भारत छोडकर चले जाने का आदेश दिया गया। वे पिछले १५ वर्षों से प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी रहते चले आ रहे हैं। वे बम्बई-बडौदा ऐंड सेंट्रल इंडिया रेल-कर्मचारी संघ तथा डाक-कर्मचारी संघ के भी सेक्रेटरी हैं। इन दोनों संस्थाओं को ट्रेड-यूनियन एक्ट के अंतर्गत मान्यता प्राप्त है। इन दोनों ही संस्थाओं का प्रधान कार्यालय अहमदाबाद में है। उन्हें यह आदेश एक वर्ष पहले मिला था। तबसे यह बराबर ब्रिटिश भारत के बाहर रहते आ रहे हैं।

२ ठीक इसी प्रकार का निष्कासन-आदेश महात्मा गांधी के सेक्रेटरी श्री छगनलाल जोशी को दिया गया है। वे भी पिछले एक वर्ष से ब्रिटिश भारत में प्रवेश नहीं कर सके हैं।

३ इसी तरह के आदेश मेरे अनेक सहकर्मियों को दिये गये हैं। इनमें वे ग्रामीण लोग भी हैं, जिनकी जमीनें ब्रिटिश भारत में भी हैं और पास की देशी रियासतों में भी।

इ) *कई ऐसे व्यक्तियों को* यूरोप यात्रा का पासपोर्ट नहीं मिला है, जो या तो सविनय अवज्ञा आंदोलन के सिलसिले में दंडित हुए थे या जिन पर उसमें भाग लेने का संदेह है।

वल्लभभाई पटेल

नई दिल्ली,
७.२.३५

१४

१५ फरवरी, १९३५

बगाल के गवनर के साथ मुलाकात
समय प्रात काल ११ ३०

बडे काय-व्यस्त थे। मेरी भेंट के बाद अन्य मुलाकाती प्रतीक्षा कर रहे थे। मैंने उनका समय लेने की क्षमा मागी, पर कहा कि मैं वाइसराय से उनके ही द्वारा मिला था इसलिए यह बताना मैंने उचित समझा कि उस भेंट का क्या परिणाम हुआ। गवनर ने कहा 'मैं जानता हू कि आप सीधे काम की बात पर आ जाते है इसलिए आपसे मिलने म मुझे कोई पसोपेश नही होता।' मैंने बताया कि किस प्रकार मेरी वाइसराय से दो बार भेंट हुई। उन्होंने बीच ही म टोककर कहा मुझे यह भी मालूम है कि आप लेडी विलिंग्डन स भी मिले थे।' मैंने कहा,"जी हा उनसे भी मिला था। वह बोले, अच्छा ही हुआ।' मैंने बताया, मैं होम मेम्बर से भी मिला था। सबसे दिल खोलकर बातें हुइ। बातचीत का ठोस परिणाम यह हुआ कि होम मेम्बर ने वल्लभभाई से भेंट की और बातचीत आगे बढाने की इच्छा प्रकट की। पर इससे अधिक जो कुछ हुआ वह विशेष उत्साहवद्धक नही था। पहली भेंट के दौरान बडी मिलनसारी से काम लिया पर दूसरी बार वह खीज हुए मालूम पडे क्योंकि कांग्रेसी सदस्यो ने उनकी मुलाकात की किताब म दस्तखत नही किये थे। गवनर ने कहा "वह तब काम के भार से थक थे, पर अब ठीक हैं। किंतु आप जो धारणा लेकर आये हैं उससे मुझे आश्चर्य हुआ। मुझे तो यह मालूम हुआ है कि आपकी बातचीत स वे सब बहुत प्रभावित हुए हैं और हाथ-पर हाथ रखे नहीं बठे हैं। मैंने कहा 'किसी-न किसी प्रकार मेरी तो यही धारणा बन गई है कि वे लाग लाचार से हैं। वे नित्यप्रति के शासन सम्बन्धी काम-काज म फस हुए हैं पर अपक्षाकृत अधिक महत्व के प्रश्नो की ओर से उदासीन हैं। वाइसराय न सदस्या के हस्ताक्षर न करने की बात को तूल द रखा है पर उन सदस्या ने और भी अधिक करने स बाज रहने म जिस सयम से काम लिया उसकी ओर उनका ध्यान नहीं जाता। अशिष्टता बरतन का कभी कोइ इरादा नही था। वाइसराय को यह नही भूलना चाहिए कि इस मामूली-सी घटना के पहल उन्होंने गांधीजी का बहिष्कार कर रखा है। जबतक वातावरण स्वस्थ न हो जाय, तबतक कांग्रेसी लोग तथा अन्य भारतवासी उनके प्रति अधिक शिष्टता का बर्ताव करेंगे इसकी अपेक्षा वाइसराय को नही करनी चाहिए। भूलाभाई उनक साथ काम-काज सबधी बातें

करने का सदैव तैयार थे, हा, सामाजिक सम्पर्क बढाने से वह बचे रहे।' गवनर पर मेरी बात का असर पडा। उन्होंने कोई टिप्पणी नही की इससे पता चलता है कि वह मेरे कथन से सहमत थे। उन्होने अपनी यह बात दुहराई कि मैंने स्थिति का गलत अध्ययन किया है, फिर बाल कि काग्रेसियो का अपने व्यवहार मे सुधार करना चाहिए। उन्होने कहा कि काग्रेसियो के कथनानुसार नेक शब्द चबाकर बोलता है। उन्होने कहा कि वह (अर्थात फ्रेक) अपने बारे म काग्रेसिया के ऐसे वणन से खीज सा गया है। और जब सरकार उबल पडी तो काग्रेसियो ने उसकी अशिष्टता की शिकायत की। खुद काग्रेसी सदस्य भी हमेशा विनम्रता का व्यवहार नही करत हैं। मैंने कहा कि सरकार का साधारण सदस्या का नही भूलाभाई देसाई का अनुकरण करना चाहिए।" मैंने बताया कि सरकार के व्यवहार की सबको शिकायत है। मैंने श्री देसाई के बारे म जा बात कही उससे गवनर ने सहमति व्यक्त की और कहा कि उन्हें उनके बारे मे जो खबरें मिलती रहती है वे सब उनकी प्रशसा म है। वार्तालाप के दौरान सुधारो की चचा छिडी। मैंने कहा कि अब यह स्पष्ट हा गया होगा कि इस बारे म सारे दल एकमत है कि प्रस्तावित शासन विधान माण्टग्यू चेम्सफोड सुधारो से भी गया-बीता है। एक मैं ही ऐसा व्यक्ति हू जो इस धारणा पर कायम हू कि यदि मैत्री का वातावरण पदा किया जा सके, तो उसे अमल म लाना सम्भव है। गवनर बोले हा मैं ऐसे विचारा से बेखबर नही हू पर उनकी पुष्टि म जो दलील पश की जा रही है वह मेरी समझ के बाहर है।" मैंने कहा कि दलील जाहिर है। एस लोगा की धारणा है कि यदि इस बिल का परित्याग कर दिया जाए तो इसका स्थान कोइ बेहतर चीज ही लेगी। गवनर ने टोका और कहा, "यह तो एक राजनतिक दृष्टिकोण हुआ, पर शासन विधान की रचना के पीछे जो स्वस्थ मनावत्ति छिपी हुई है उस भी तो ध्यान म रखना चाहिए। मेरा हार्दिक विश्वास है कि यह शासन विधान अन्तिम ध्येय की दिशा म एक प्रगतिशील कदम है। मैंने कहा, एक आर गाधीजी है, जो सारी बात का निणय वतमान वातावरण का ध्यान म रखकर करते हैं। उनका कहना है कि यह शासन विधान प्रगतिशील कदम कदापि नही है।' गवनर बोल, 'यह गाधीजी के अनुरूप ही है पर यह भी तो एक राजनतिक दृष्टिकाण मात्र ही है।' मैंने कहा कि जब इग्लैंड म लोगा की यह धारणा है कि शासन विधान को अमल म लाना सम्भव है ता उन्हे यह भी ता समझना चाहिए कि उस अमल म लाने म किस ढग की मनोवत्ति से काम लिया जायेगा। दो प्रकार की अवस्थाआ का उत्पन्न हाना सम्भव है। एक अवस्था तो यह हो सकती है कि काग्रेस सारी सीटें जीत ले और सारे प्रान्तो म अपने मत्रि मण्डल बनाए। गवनर ने बीच ही

मे टोककर कहा "क्या आपका यह खयाल है कि काग्रेस सारे प्रान्तो म बहुमत प्राप्त करने म समर्थ होगी ? ' मैंने उत्तर दिया, ' हा, मेरी ता यही धारणा है । पजाब और बगाल की बात दूसरी है । तो इस प्रकार मन्त्रि मण्डल बनाकर काग्रेस या तो इस शासन विधान पर मत्री की भावना के साथ अमल करेगी और विकास की ओर कदम बढायेगी अथवा वह उसे ठप करने मे लग जायेगी । उसकी त्रुटिया को सामने लायेगी और उसका विध्वस करके असतोष का वातावरण उत्पन्न करेगी । जिसमे इग्लड का ज्यादा-से ज्यादा परेशानी हो और वह अधिक प्रगतिशील कदम उठाने के लिए बाध्य हो ।" मैंने जिज्ञासा प्रकट की कि वह इन दोना म से कौन-सी अवस्था पसन्द करेंगे ? गवनर ने कहा, प्रान्ता म रचनात्मक काय के लिए काफी बडा क्षेत्र मौजूद है । जब काग्रेसी लोग रचनात्मक काम म लगेंगे तब उन्हें पता चलेगा कि कितना कुछ करना है । उन्हें यह भी पता चलेगा कि उनके हाथो म कितनी शक्ति आ गई है तब व अपनी जिम्मेदारी भी महसूस करेंगे । ' मैंन उत्तर दिया यदि आपन यह धारणा बना ली है कि भारतीय नेताओ के साथ किसी प्रकार का समझौता करने की जरूरत नही है व भले ही विरोध की भावना लेकर काम शुरू करें आगे चलकर वे मित्र बन जायेंगे तो मुझे कुछ नही कहना है । जो कुछ स्वाभाविक रूप से होगा हो जायेगा । पर मैं इतना अवश्य कहूगा कि यदि आप यह समझे बठे हो कि जनता की रजामदी के बगर उस पर सुधार लादे जा सकते हैं जसा कि आपका इरादा मालूम पडता है और मत्री का वातावरण स्वत हा बन जायेगा तो आप अपने-आप को धोखा दे रहे हैं । वह बाले अगर वे सद्भाव के साथ काम आरम्भ नही करेंगे तो मैं तो कदापि सतुष्ट नही होऊगा ।' मैंने कहा ' जब ऐसी बात है और आप सतुष्ट नही होंगे, तो आपको काग्रेस के साथ समझौता अवश्य करना चाहिए । आप लोग साझेदारी की बात करते है पर वह साझेदार है कहा ? आप लोग अपने साझेदारो स मिलना तक नही चाहते । आप को उन पर भरोसा नही है । आप साझेदारी के अनुकूल वातावरण तैयार करने से इन्कार करते है । इस तरह से तो काम नही चलेगा । भारत ब्रिटिश व्यापारिक समझौते की ही बात लीजिए । उसकी अच्छाइयो अथवा बुराइया को एक ओर रखकर उसे केवल इस कारण रद्द कर दिया गया कि आप लोगो ने उसे हम लोगो पर लादने की चेष्टा की थी । इसलिए यदि आप लोग चाहते है कि दोना देशो के बीच विरोध की जो भावना इस समय काम कर रही है उसका अन्त हो तो आपको इस उद्देश्य सिद्धि के लिए प्रयत्न करना चाहिए और पारस्परिक सम्पर्क के माध्यम से समझौता करना चाहिए । गवनर बोल उठे, ' पर हम काग्रेसी सदस्यो के साथ पारस्परिक सम्पर्क तो इस समय भी बनाये हुए हैं और यदि आपकी यह

धारणा हो कि हम अन्य काग्रेसी नेताओ से नही मिलेंगे, तो आप बडी भूल कर रहे हैं।" मैंने प्रत्युत्तर मे कहा, सो तो ठीक है पर आपको काग्रेसी सदस्यों से मिलकर ही सतुष्ट नही हो जाना चाहिए आपको किसी-न किसी तरह के समझौते के लिए महत्त्वपूण लोगो से भी मिलना होगा।' उन्हे यह जानकर बडी दिलचस्पी हुई कि वल्लभभाइ काग्रेसी दल का दशको की गैलरी से पथ प्रदशन कर रहे हैं। मैंने उन्हें बताया कि एक बार तो मैं लन्दन तक जाने को तैयार हो गया था और इस विषय मे मैंने गाधीजी के साथ सलाह मशवरा भी किया था। मैंने बताया, 'वे मेरी लन्दन-यात्रा के विरुद्ध तो नही थे पर उन्हाने कुछ विशेष उत्साह नही दिखाया।' गवनर बीच ही म कह उठे, "आप जा रहे हैं क्या ?" मैंने कहा "आप की क्या सलाह है ? क्या मेरे वहा जाने से कुछ काम सधेगा ?" वह कुछ देर तक खामोश रहे, फिर बोले, जब तक बिल पार्लियामट मे है तब तक सब लोग इतने व्यस्त रहेंगे कि कुछ करना सम्भव नही होगा, इसलिए फिलहाल वहा जाना निरथक होगा। मैंने पूछा, 'क्या आपका यह अभिप्राय है कि बिल के पास होने के बाद मेरा वहा जाना साथक होगा ?' वह गम्भीरतापूवक बोले, 'हा, निश्चय ही।' 'तो क्या बिल पास होने के बाद आप कुछ करने का इरादा रखते हैं ?" हा, पर यह बात अपने तक ही रखिए।' मैंने पूछा 'बिल कब तक पास हो जायेगा, सितम्बर तक ?' 'इसस बहुत पहले जुलाई तक।' मैंने कहा 'इसका मतलब यह हुआ कि मुझे वहा एक महीना पहले ही पहुच जाना चाहिए न ?' उन्होने हामी भरी। मैंने कहा 'गाधीजी ने मित्रा के लिए परिचयात्मक पत्र देन का वचन दिया है। पर व सर सम्युअल हार के लिए पत्र नही देंगे क्योकि उससे भारत सचिव के लिए उलझन पैदा हागी। पर आप तो इन लागा को पहले स ही जानते हैं। हा, इनम से कई एक को जानता हू, पर गाधीजी के परिचय पत्रा का अथ यह होगा कि तब मैं उनम कुछ उत्तरदायित्व के साथ बात कर सकूगा। वह बोले बहुत खूब।' मैंन पूछा 'यदि मैं जान पर कमर कसू, तो आप भी दो एक पत्र देंगे न ?' गवनर बाले, 'जरूर दूगा।" तत्पश्चात मैं जाने के लिए उठ खडा हुआ और बोला 'मैं फिर दोहराता हू कि भारत के साथ समझौता किये बगर और उसकी मित्रता हासिल किये बगर उस पर शासन विधान थापने की कोशिश कभी मत कीजिए।' वह बोले "यह बात मेरे दिमाग म पहले से ही है। उनसे विदा लेते हुए मैंने कहा, 'तो मैं यह धारणा लेकर जा रहा हू कि बिल पास होने के बाद आप कुछ करेंगे, और आप चाहते है कि मैं उससे पहले ही वहा चला जाऊ और आप मुझे कुछ पत्र भी देंगे।' उन्होंने कहा, 'हा पर यह सब कुछ आप अपने तक ही रखिए। मैंने कहा, आप खातिर जमा रहिए सारी बात मुझ तक ही रहेगी।

गवनर ने बडी स्पष्टवादिता से काम लिया। यह स्पष्ट है कि इन लोगा ने कोई काय-योजना बना रखी है। एसा लगता है कि जबतक बिल पास न हो जाए, ये लोग चर्चिल के साथ झगडा मोल लेना नही चाहते, पर एक बार बिल पास हो जाये, फिर य लाग गाधीजी के साथ किसी न किसी प्रकार का समझौता अवश्य करगे। वह समझौते की क्या रूप रखा हागी, और वे किस ढग की कायप्रणाली अपनायेंगे, इस बार म केवल अटकल ही लगाई जा सकती है। पर इनके दिमाग इस दिशा म काम कर रहे हैं। यह कुछ कम सतोष की बात नही है। सर जान एण्डसन स बात करने के बाद म मुझ ऐसा लगने लगा है कि मुझे वहा मई तक पहुच जाना चाहिए पर अन्तिम निणय तो गाधीजी के साथ सलाह-मशवरा करने के बाद ही होगा।

+ + +

गवनर ने कहा कि उनके साथ मेरी जो बातचीत हुई है उसके बारे म वे वाइसराय से एक बार फिर बात करेंगे।

१५

१५ फरवरी १९३५

पूज्य बापू

इस पत्र के साथ अभी अभी आये सर सम्युअल होर के पत्र की मेरे उत्तर की तथा बगाल के गवनर क साथ हुई मुलाकात के नोट की नकलें भेजता हू। अब की बार गवनर ने निश्चित रूप स बता दिया है कि बिल के पास होने के तुरत बाद समझौते की दिशा म कुछ कदम उठाये जायेंगे। आपने भी यही कहा था कि यदि वे लाग कुछ करनेवाले होंगे, तो बिल पास होने के बाद ही करेंगे। पर फिलहाल तो तसल्ली क लिए यही काफी है कि इन लागा न वसी कोई योजना स्थिर की है। सर सम्युअल हार का पत्र भी स्पष्ट है और सहृदयता का प्रतीक है पर यह जाहिर है कि उस परिस्थितिया इससे अधिक कहने क लिए मुह खोलने की अनुमति नही देती। गवनर न जो कुछ कहा है होर उसे भी ध्यान म रखेगा। बिल पास होने के बाद काग्रेसी-जना के लिए समझौता करना कठिनाइयो से खाली साबित नही होगा पर आपकी सूझ ऐसे अवसर पर अवश्य सहायता करगी।

आज मैं गवनर के पास बातचीत का सिलसिला खत्म करने के लिए गया था,

पर अब लगता है कि यह सिलसिला स्वाभाविक ढग से जारी रखना ठीक रहेगा। शायद वल्लभभाई तथा सर हेनरी क्रेक के बीच और बातचीत हो। यह भेंट मेरे निवास स्थान पर भी हो सकती है या कही और भी, जैसा दोनो के बीच तय हो। होम मेम्बर ने इच्छा प्रकट की थी कि वल्लभभाई के दोबारा दिल्ली आने की उसे सूचना दे दी जाये। अब भूलाभाई इस बारे म उससे कल बातचीत करेंगे कि यदि वह वल्लभभाई से बात करने का इच्छुक हो तो मुलाकात के लिए कौन-सा दिन और समय ठीक रहेगा। इस प्रकार जबतक मामला आगे न बढ़े, तबतक के लिए बातचीत इसी स्वाभाविक ढग से चलती रहेगी। मैं न उतावली से काम ले रहा हू, न अन्यमनस्क ही हू। आशा है, आप मेरे रवये को पसद करेंगे।

आपने होम मेम्बर को पत्र लिखने के बारे मे अपनी मनोदशा का जो जिक्र किया है उसके सबध मे मेरा इतना ही कहना है कि जबतक यह सारा मामला कोई निश्चित दिशा ग्रहण न कर, तबतक आपका उसे लिखना निष्प्रयोजन ही होगा। फिलहाल तो भूलाभाई द्वारा विजिटर बुक म अपने हस्ताक्षर करने का प्रश्न ही नही उठता है पर यदि कभी दूसरे पक्ष न यह निश्चित रूप से बताया कि मार्ग में यही एक अडचन है, तो मेरा खयाल है कि कोई कठिनाई नही होगी। पर वातावरण म परिवतन होते ही इन गौण बातों को कोई तरजीह नही देनी चाहिए।

मैं अपने इस दृष्टिकोण को पहले की तरह ही अपनाये हुए हू और मित्रो के साथ हुई बातचीत से उसे बल मिला है कि यह कहना ठीक नही है कि प्रस्तावित शासन विधान माण्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधारो से भी गया-बीता है। हा, इसे वर्तमान स्थिति के कारण और अधिक अन्यायपूर्ण बनाया जा सकता है, पर साथ ही इसे और अच्छा बनाना भी सम्भव है। इसलिए मेरा आपसे यही अनुरोध है कि आप अस्थायी सधि की बाबत कोई अतिम निर्णय न लें। यदि आपके साथ कोई समझौता नहीं हुआ, तब तो यह प्रस्तावित योजना धिक्कार की सामग्री ही सिद्ध होगी। पर तबतक के लिए कोई खास रवया नही अपनाना क्या ठीक नही रहेगा ?

अब मेरे जाने की बाबत। गवर्नर के साथ बातचीत करने के बाद मुझे लगता है कि जाना ही ठीक रहेगा। पर अन्तिम निर्णय आप ही करेंगे।

खजूरें मिला। बडी स्वादिष्ट हैं। राजमर्रा खूब खूब खाता हू।

राजेन्द्र बाबू ने साम्प्रदायिक समस्या का एक हल तलाश किया है। जिना सहमत है। यह सयुक्त निर्वाचन पर आधारित है। सीटों में कोई हेर फेर नही होगा और मताधिकार विभिन्न निर्वाचन-क्षेत्रो म दोनो सम्प्रदायो की जन सख्या के अनुपात से प्रदान किया जायगा। राजेन्द्र बाबू मेरे साथ सम्पर्क बनाये हुए हैं,

और मैंने उन्हें सलाह दी है कि बगाल के बारे मे बातचीत करने के लिए रामानन्द चटर्जी तथा जे० एन० बसु को यही बुलाना ठीक रहेगा, खुद कलकत्ता जाना नहीं। बगाल का वातावरण अच्छा नही है इसलिए दिल्ली को ही विचार विनिमय का केन्द्र बनाना उचित लगता है। पर असली झमेला सिखो को लेकर होगा। हिन्दू तो पजाब म भी मान जायेंगे। हा, कठिनाई अवश्य होगी। मुझे आशका है कि पडित (मालवीय) जी सदा की भाति इस बार भी सहायक सिद्ध नही होंगे।

यदि आपको मैं किसी भी बात म गलती करता प्रतीत होऊ तो आप मुझे सही माग दिखान से मत चूकिए। मैं तो इस होड म नौसिखुआ हू। पर मैं आपके दृष्टिकोण तथा तक शैली से भली भाति परिचित होन का दम भरता हू।

स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

महात्मा गाधीजी
वर्धा (मध्य प्रात)

१६

हवाई डाक द्वारा

१५ फरवरी १६३५

प्रिय सर सेम्युअल

आपके पत्र के लिए तथा उसके साथ भेजी आपकी स्पीच की नकल के लिए अनेक धन्यवाद। आपका स्पीच मैंने यहा के स्थानीय पत्र हिन्दुस्तान टाइम्स म प्रकाशनाथ भेज दी है।

मैं आपकी दलील को खूब अच्छी तरह समझ रहा हू। वह इस प्रकार है 'हम भारत को ठोस प्रगति प्रदान कर रहे हैं पर अभी उस ठीक मात्रा म ग्रहण नही किया जा रहा है। खीर का स्वाद उसके खाने से ही जाना जा सकता है और जब भारत के लोग सुधारो को अमल म लायेंगे तो वे हमारी नेकनीयती के कायल होंगे और देखेंगे कि हमने कितनी ठोस प्रगति प्रदान की है। जब आपकी ओर से ऐसी भावना दीखेगी और पारस्परिक सम्पक की सम्भावनाए उज्ज्वलतर होती जायेंगी, तो एक दूसरे को समझने बूझने का काम और भी सहज हो जायेगा। पर यह स्पष्ट है कि वतमान परिस्थितिया आपको जितना कुछ कह सकने की अनुमति

देती हैं उससे अधिक कहना आपके लिए सम्भव नहीं है। इस सदभ म मुझे केवल यही कहना है कि साझेदारी एक ऐसा दस्तावेज है जिसपर दोनो पक्षा के हस्ताक्षर हो। वतमान बिल पर केवल एक पक्ष के हस्ताक्षर हैं। मेरा निवेदन है कि यदि इस दस्तावेज को कारगर बनाना है, तो आपको आज नहीं तो कल पर एक-न एक दिन अवश्य इस दस्तावेज पर दूसरे साझीदार के हस्ताक्षर लेने ही होंगे। लकाशायर-समझौते के खिलाफ सबसे बडी शिकायत यही थी कि वह जबदस्ती लादा गया था। उसपर उभय पक्षो की सहमति नही ली गई थी। मुझे आशा है कि सुधारो के मामले म इस भूल की पुनरावत्ति नही की जायगी। अब मैं अपने विचारो से आपको और अधिक "यस्त नही करूगा और इस प्रसग को यही छोड कर अधिक-से-अधिक मगल की कामना करके सतोष मानूगा।

मैं यह कहना अनावश्यक समझता हू कि आपका पत्र आपकी जिस लगन और नेकनीयती की गवाही देता है, उनसे मेरी आशाओ को बल मिला है।

सद्भावनाओ के साथ,

भवदीय,
घनश्यामदास बिडला

राइट आनरेबल सर सम्युअल होर, नाइट,
भारत सचिव,
लन्दन

१७

२१ फरवरी, १९३५

प्रिय महादेवभाई

आशा है, अपने कागज पत्र किसी सदेश-वाहक के द्वारा न भेजकर जाजूजी के हाथो भेजने का मेरा तरीका तुम्हे पसन्द आया होगा। मुझे मालूम हुआ है कि तुम कुछ समय पहले वर्धा मे नहीं कलकत्ते म थे। पर यदि तुम किसी अन्य डाकखाने का सुझाव दो, तो मुझे वह भी मजूर है। मुझे तो यही लगा कि इस काम के लिए जाजूजी सबसे अधिक उपयुक्त रहेंगे। पर शायद भविष्य म ऐसे सवाद भेजने की नौबत नही आयेगी, क्योकि वाइसराय से लगाकर गवनर तक सभी खास खास आदमियो के साथ मुलाकातें हो चुकी हैं। कलकत्ता पहुचने पर गवनर से एक बार फिर मिलूगा। इस बीच मैं अपने भावी कायक्रम के बारे म बापू के निर्देश की बाट

जोह रहा हू।

बिवाई के इलाज के लिए मैंने राल, मोम और घी की मालिश बताई थी।

मैं श्रीमती रायडन की स्पीच हासिल करने की कोशिश करूगा और खुद भी उसे पढना चाहूगा।

पडित (मालवीय) जी आजकल यही है। उन्होंने जिन्ना और राजेन्द्र बाबू का फार्मूला ठुकरा दिया है। मैंने राजेन्द्र बाबू को यह निजी सलाह दी थी कि यदि मुसलमान नेतागण फार्मूले को स्वीकार कर लें जिसकी मुझे आशा नही है तो हिन्दू नेताओ के विरोध के बावजूद हम हिन्दू जनता का समर्थन प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए। इससे मुझे सुखद परिणाम की आशा है। काग्रेस को इस बारे मे एक निश्चित रुख अपनाना चाहिए। यदि काग्रेस इस फार्मूले को कार्यान्वित करने में सचेष्ट होगी तो हिन्दू सभा भी उसपर सही कर देगी। आशा है बापू को यह तरीका पसन्द आयेगा। सम्प्रदायवादियो ने काफी उत्पात कर लिया। उसे तभी तक सहन किया जा सकता है जब तक मुसलमान लोग समझौते मे आनाकानी करते है। पर यदि वे समझौते के इच्छुक हो तो काग्रेसी नेताओ को हिन्दुओ को स्पष्ट रूप से बता देना चाहिए कि उनके हित किस मे हैं। ऐसी अवस्था मे हिन्दू जनता उनके साथ हो लेगी इस बारे मे मुझे तनिक भी सन्देह नही है।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
मारफत महात्मा गाधीजी,
वर्धा

१८

वर्धा
२४ २ ३५

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका पत्र मिल गया। आपने जो नया पोस्ट आफिस पसन्द किया है अच्छा है लेकिन उसका भी पत्र मे क्यो जिक्र किया? उससे तो उसका हेतु निष्फल होता है।

भावी कायक्रम के बारे म बापू कहते हैं कि जाने का समय आज नही आया। बिल के बाद आने का सम्भव है क्योकि अबतक जो परिश्रम उठाया है उसे जितना सफल कर सकें उतना करना चाहिए। लेकिन बापू की स्पष्ट राय है ही कि आज का वातावरण बिलकुल आशाप्रद नही दिखाई देता है। आज तो, उनके अभिप्राय मे, मीठी बातो की प्रथा पड गयी है। पद्धति (System) को बदलने की कोई इच्छा नही है। इसका अर्थ यह नही है कि आप अपना विश्वास बदलें, वह तो जब बुद्धिपूर्वक हो सके तभी हो सकता है। तबतक आप अपनी राय के मुताबिक ही करते रहे। बापूजी अपनी राय देते हैं उसका सबब सिफ यही है कि वे स्थिति (Situation) को (Sense) भाप लेते हैं। इसके यह मानी नही है कि उनके आखिरी आशावाद (Optimism) मे तनिक फक पडा है लेकिन आज आशाप्रद कोई चिह्न नही, यह चीज उनको स्पष्ट भासती है।

मालवीयजी का सब हाल जाना। राजेद्रजी का एक पत्र आया था, उसमे बापू अपनी राय दे चुके थे कि आप लोग जो करेंगे वह उन्हें पसन्द पडेगा ही और आपका जिक्र करके लिखा था कि मालवीयजी के साथ तो सफलता शायद आपके जरिये मिल सके। और अब तो वहा वल्लभभाई भी आ गये हैं। लेकिन आप जो लिखते हैं उससे बापू पूणतया सहमत हैं यह समझ लीजिए।

यह पत्र हिंदी म ही लिखना ऐसा बापू का कहना हुआ, इसलिए हिंदी मे लिखा है। मेरी हिंदी क्षमा करेंगे न ?

स्वास्थ्य अच्छा होगा।

आपका विनीत,
महादेव

१९

२५/२६ २ ३५

परम पूज्य बापू,

बेचारे राजेन्द्र बाबू बुरी तरह परशान है। यद्यपि राजा नरेन्द्रनाथ और प० नानकचद दोना ने राजेन्द्र बाबू के मसौदे को स्वीकार किया है, किन्तु बगाली हिंदुओ और सिखो के काफी मतभेद है। पडितजी कुछ इनको समझात हैं कुछ उनको। किन्तु यह साफ है कि जितना जिन्ना राजेन्द्र बाबू मसौदे म है उसके बाहर निकलना

असभव है। मेरा खयाल है कि प्राय लोग कायरपन के शिकार बने हुए हैं। मसलन बगाल के हिदू को यह चीज अच्छी लगती है पर हिम्मत नही कि उस पर दस्तखत कर दे। 'अमृत बाजार पत्रिका' के सम्पादक को अच्छी लगी तो 'आनद बाजार पत्रिका' के सम्पादक को रुचिकर नही है। और कुछ उग्र लडके आये हैं जो क्रातिकारी बताये जाते हैं। इनके सामने सब भीगी बिल्ली बन जाते हैं। कोशिश हो रही है। विधान तो आने से भी डरता है। नलिनी जा रहा है। पर पूर्व बगाल का होने के कारण सम्मिलित चुनाव के नाम से घबराता है। मगलसिंह और तारासिंह कुछ पसद करते हैं पर डरते हैं। मानी शेरसिंह तो छूना भी नही चाहता। गोकुलचद नारग वगैरह पसद करते हैं, पर सिखों से डरते हैं। यदि व्यक्तियों के दस्तखत से ही समझौता होनेवाला हो तो यह समझ लेना चाहिए कि यह आज के वातावरण म प्रलयकाल तक भी नामुमकिन है। कोशिश तो हम करते रहे हैं पर मैंने राजेन्द्र बाबू से कहा है कि अत म काग्रेस और लीग को समझौता कर लेना चाहिए और देश के सामने रख देना चाहिए। यह सही है कि सरकार इस पर फिलहाल अमल नहीं करेगी, पर यदि कोई तरीका है तो यही है और यदि राजेन्द्र बाबू ने ऐसा किया तो मेरा खयाल है कि समझौते का पक्ष समय पाकर अत्यन्त प्रबल हो जायेगा। राजेन्द्र बाबू और वल्लभभाई दोनो ही इस प्रस्ताव को पसद करते हैं। देखें क्या होता है ?

हरिजन-आश्रम के लिए नक्शे कमेटी के सुपुर्द हैं। पास होते ही काम शुरू होगा।

मेरी भेडें और मेढे आस्ट्रेलिया से आ गये हैं। मैं पिलानी सातेक रोज म जा रहा हू। आपके खत की प्रतीक्षा म हू।

फाइनेंस मेबर ने रिजर्व बैंक की सचालक समिति की मारफत मुझसे मिलने के लिए कहलवाया है। दो एक दिन मे उससे मिलूगा। किन्तु मेरा खयाल है कि उससे ज्यादा आर्थिक चर्चा ही होगी।

साम्प्रदायिक मामले म सर नृपेन सरकार काफी मदद कर रहा है।

आपका,
घनश्यामदास

श्री महात्मा गाधी
वर्धा (सी० पी०)

२०

२७ फरवरी, १९३५

प्रिय महादेवभाई

तुमने जो कुछ कहा है उसे ध्यान मे रखूगा, पर मैं तुम्हारी चिट्ठी के इस वाक्य का अर्थ ग्रहण नही कर सका हू "क्योंकि (आजकल) आपने जो परिश्रम उठाया है उसे जितना सफल कर सकें, करना चाहिए।"

जरा समझाकर लिखो तो अच्छा रहे।

मैंने व्यक्तिगत सम्बन्ध जोडे हैं, इसलिए मैं बगर किसी कठिनाई के जब कभी चाहू और जिस किसी से चाहू मिल सकता हू। पर मैं स्वाभाविक ढग से काम करता आ रहा हू इसलिए जब तक मेरे पास उनसे कहने के लिए कोई बात न हो तबतक पुरानी बातें ही दुहराता रहूगा तो वे लोग ऊब जायेंगे। मैं समझता हू कि साधारण तौर से भी मुझे अपनी बात पर जोर देने के अनेक अवसर मिलते रहेंगे। पर अगला कदम क्या होगा इस बारे मे बापू ने कुछ निर्णय किया है? अगर तुम कहो कि अगला और उसके भी आगे का कदम सिर्फ यही है कि गलतफहमी को दूर किया जाए तो मैं तुमसे सहमत होऊगा। मैं जानता हू कि इन लोगो को गलत खबरें मिलती रही है, पर मैंने यह भी देख लिया है कि ये लोग इस अज्ञान की अवस्था मे ही रहना पसद करते है, क्योंकि इसमे उन्हे सुविधा है।

मुझे पता चला है कि होम मेम्बर ने खान साहब की बाबत बम्बई को लिखा है। कुछ न कुछ नतीजा तो निकलेगा ही।

पडित (मालवीय) जी आज विदा हो गये। सदैव की भांति इस बार भी न तो कट्टर सम्प्रदायवादियो के साथ ही उनकी पटरी बैठ सकी, न जिन्ना राजेन्द्रप्रसाद फार्मूला ही उन्हे रुचिकर लगा। उन्होंने मुझे कुछेक सुझाव दिये हैं पर उनका वर्णन करना व्यर्थ होगा, क्योंकि जिन्ना फार्मूले के बाहर जाने को कभी राजी नही होगा। मेरी तो धारणा है कि अन्त मे हमे कांग्रेस-लीग समझौते का ही आश्रय लेना पडेगा। इस बात की पूरी सम्भावना है कि पडितजी इंग्लैंड जाए। वास्तव मे बम्बई के लिए रवाना होने से पहले उन्होंने मुझसे कहा था कि उनका इरादा १५ मार्च को जाने का है।

मैंने ये दिन बडी बेचैनी मे गुजारे। पडितजी बराबर हिन्दुस्तान टाइम्स की नीति की ही चर्चा करते रहे। उन्होंने तो यहा तक कह डाला कि मैं पत्र का सारा भार उन पर छोड दू। उन्होंने यह सुझाव भी दिया कि यदि मुझे उनकी

असभव है। मेरा खयाल है कि प्राय लाग कायरपन के शिकार बने हुए हैं। मसलन बगाल के हिन्दू को यह चीज अच्छी लगती है पर हिम्मत नही कि उस पर दस्तखत कर द। 'अमृत बाजार पत्रिका' के सम्पादक को अच्छी लगी तो आनद बाजार पत्रिका के सम्पादक को रुचिकर नही है। और कुछ उग्र लडके आये हैं जो क्रातिकारी बताये जाते हैं। इनके सामने सब भीगी बिल्ली बन जाते हैं। कोशिश हो रही है। किरण ता आने से भी डरता है। नलिनी आ रहा है। पर पूर्व बगाल का होने के कारण सम्मिलित चुनाव के नाम स घबराता है। मगलसिंह और तारासिंह कुछ पसद करते हैं पर डरते हैं। ज्ञानी शेरसिंह तो छूना भी नही चाहता। गोकुलचद नारग वगरह पसन्द करते हैं पर सिखो स डरते हैं। यदि व्यक्तियो के दस्तखत से ही समझौता होनेवाला हा तो यह समझ लेना चाहिए कि यह आज के वातावरण म प्रलयकाल तक भी नामुमकिन है। कोशिश तो हम करते रहे हैं पर मैंने राजेन्द्र बाबू से कहा है कि अन्त म काग्रेस और लीग को समझौता कर लेना चाहिए और देश के सामने रख देना चाहिए। यह सही है कि सरकार इस पर फिलहाल अमल नही करेगी, पर यदि कोई तरीका है तो यही है और यदि राजेन्द्र बाबू न एसा किया तो मेरा खयाल है कि समझौते का पक्ष समय पाकर अत्यन्त प्रबल हो जायेगा। राजेन्द्र बाबू और वल्लभभाई दोनो ही इस प्रस्ताव को पसद करते हैं। देखें क्या होता है ?

हरिजन-आश्रम के लिए नक्शे कमेटी के सुपुर्द हैं। पास होते ही काम शुरू होगा।

मेरी भेडें और मेढ़े आस्ट्रेलिया से आ गये हैं। मैं पिलानी सातेक रोज मे जा रहा हू। आपके खत की प्रतीक्षा में हू।

फाइनेंस मेबर ने रिजर्व बक की सचालक समिति की मारफत मुझस मिलने क लिए कहलवाया है। दो एक दिन म उससे मिलूगा। किन्तु मेरा खयाल है कि उससे ज्यादा आर्थिक चर्चा ही होगी।

साम्प्रदायिक मामले म सर नृपेन सरकार काफी मदद कर रहा है।

आपका,
घनश्यामदास

श्री महात्मा गाधी
वर्धा (सी० पी०)

२०

२७ फरवरी, १९३५

प्रिय महादेवभाई,

तुमने जो कुछ कहा है उसे ध्यान में रखूंगा, पर मैं तुम्हारी चिट्ठी के इस वाक्य का अर्थ ग्रहण नहीं कर सका हू "क्योंकि (आजकल) आपने जो परिश्रम उठाया है उसे जितना सफल कर सकें, करना चाहिए।"

जरा समझाकर लिखा, तो अच्छा रहे।

मैंने व्यक्तिगत सम्बन्ध जोडे हैं, इसलिए मैं बगर किसी कठिनाई के जब कभी चाहू और जिस किसी से चाहू मिल सकता हू। पर मैं स्वाभाविक ढग से काम करता आ रहा हू इसलिए जब तक मेरे पास उनसे कहने के लिए कोई बात न हो तबतक पुरानी बातें ही दुहराता रहूगा तो वे लोग ऊब जायेंगे। मैं समझता हू कि साधारण तौर से भी मुझे अपनी बात पर जोर देने के अनेक अवसर मिलते रहेंगे। पर अगला कदम क्या होगा, इस बारे में बापू ने कुछ निर्णय किया है? अगर तुम कहो कि अगला और उसके भी आगे का कदम सिर्फ यही है कि गलत फहमी को दूर किया जाए, तो मैं तुमसे सहमत होऊगा। मैं जानता हू कि इन लोगों को गलत खबरें मिलती रही हैं, पर मैंने यह भी देख लिया है कि ये लोग इस अज्ञान की अवस्था में ही रहना पसद करते हैं, क्योंकि इसमें उन्हें सुविधा है।

मुझे पता चला है कि होम मेम्बर ने खान साहब की बाबत बम्बई को लिखा है। कुछ-न-कुछ नतीजा तो निकलेगा ही।

पडित (मालवीय) जी आज विदा हो गये। सदैव की भांति इस बार भी न तो कट्टर सम्प्रदायवादियों के साथ ही उनकी पटरी बैठ सकी न जिन्ना राजेन्द्रप्रसाद फार्मूला ही उन्हें रुचिकर लगा। उन्होंने मुझे कुछेक सुझाव दिये हैं पर उनका पालन करना व्यर्थ होगा, क्योंकि जिन्ना फार्मूले के बाहर जाने को कभी राजी नहीं होगा। मेरी तो धारणा है कि अन्त में हम काग्रेस लीग समझौते का ही आश्रय लेना पडेगा। इस बात की पूरी सम्भावना है कि पडितजी इग्लैंड जाए। वास्तव में बम्बई के लिए रवाना होने से पहले उन्होंने मुझसे कहा था कि उनका इरादा ५ मार्च को जाने का है।

मैंने ये दिन बडी बेचैनी में गुजारे। पडितजी बराबर हिन्दुस्तान टाइम्स की नीति की ही चर्चा करते रहे। उन्होंने तो यहा तक कह डाला कि मैं पत्र का सारा भार उन पर छोड दू। उन्होंने यह सुझाव भी दिया कि यदि मुझे उनकी

असभव है। मेरा खयाल है कि प्राय लोग कायरपन के शिकार बने हुए हैं। मसलन बगाल के हिंदू को यह चीज अच्छी लगती है पर हिम्मत नही कि उस पर दस्तखत कर दे। 'अमृत बाजार पत्रिका' के सम्पादक को अच्छी लगी तो आनद बाजार पत्रिका के सम्पादक को रुचिकर नही है। और कुछ उग्र लडके आये हैं जो क्रातिकारी बताये जाते हैं। इनके सामने सब भीगी बिल्ली बन जाते हैं। कोशिश हो रही है। विधान तो आने से भी डरता है। नलिनी आ रहा है। पर पूर्व बगाल का होने के कारण सम्मिलित चुनाव के नाम से घबराता है। मगलसिंह और तारासिंह कुछ पसद करते हैं पर डरते हैं। ज्ञानी शेरसिंह तो छूना भी नही चाहता। गोकुलचद नारग वगैरह पसद करते हैं पर सिखो से डरते हैं। यदि व्यक्तियो के दस्तखत से ही समझौता होनेवाला हो तो यह समझ लेना चाहिए कि यह आज के वातावरण म प्रलयकाल तक भी नामुमकिन है। कोशिश तो हम करते रहे हैं पर मैंने राजेन्द्र बाबू से कहा है कि अत म काग्रेस और लीग को समझौता कर लेना चाहिए और देश के सामने रख देना चाहिए। यह सही है कि सरकार इस पर फिलहाल अमल नही करेगी, पर यदि कोई तरीका है तो यही है और यदि राजेन्द्र बाबू ने ऐसा किया तो मेरा खयाल है कि समझौते का पक्ष समय पाकर अत्यन्त प्रबल हो जायेगा। राजेन्द्र बाबू और वल्लभभाई दोनो ही इस प्रस्ताव को पसद करते हैं। देखें क्या होता है?

हरिजन-आश्रम के लिए नक्शे कमेटी के सुपुर्द हैं। पास होते ही काम शुरू होगा।

मेरी भेडें और मेढे आस्ट्रेलिया से आ गये हैं। मैं पिलानी सातेक रोज म जा रहा हू। आपके खत की प्रतीक्षा म हू।

फाइनेंस मेबर ने रिजर्व बैंक की सचालक समिति की मारफत मुझसे मिलने के लिए कहलवाया है। दो एक दिन मे उससे मिलूगा। किन्तु मेरा खयाल है कि उससे ज्यादा आर्थिक चर्चा ही होगी।

साम्प्रदायिक मामले म सर नृपेन सरकार काफी मदद कर रहा है।

आपका,
घनश्यामदास

श्री महात्मा गाधी
वर्धा (सी० पी०)

२०

२७ फरवरी, १९३५

प्रिय महादेवभाई,

तुमने जो कुछ कहा है उसे ध्यान म रखूगा, पर मैं तुम्हारी चिट्ठी के इस वाक्य का अथ ग्रहण नही कर सका हू ' क्योकि (आजकल) आपने जा परिश्रम उठाया है उसे जितना सफल कर सकें, करना चाहिए।"

जरा समझाकर लिखो तो अच्छा रहे।

मैंने व्यक्तिगत सम्बन्ध जोडे हैं, इसलिए मैं वगर किसी कठिनाइ के जब कभी चाहू और जिस किसी से चाहू मिल सकता हू। पर मैं स्वाभाविक ढग म काम करता आ रहा हू इसलिए जब तक मेरे पास उनसे कहने के लिए कोइ बात न हो तबतक पुरानी बातें ही दुहराता रहूगा तो वे लोग ऊब जायेंगे। मैं समझता हू कि साधारण तौर से भी मुझे अपनी बात पर जोर देने के अनेक अवसर मिलते रहेंगे। पर अगला कदम क्या होगा इस बारे मे बापू ने कुछ निणय किया है? अगर तुम कहो कि अगला और उसके भी आगे का कदम सिफ यही है कि गलत-फहमी को दूर किया जाए तो मैं तुमसे सहमत होऊगा। मैं जानता हू कि इन लोगों को गलत खबरें मिलती रही हैं, पर मैंने यह भी देख लिया है कि य लोग इस अज्ञान की अवस्था म ही रहना पसद करते है क्योकि इसम उन्हे सुविधा है।

मुझे पता चला है कि होम मेम्बर ने खान साहब की बाबत बम्बई को लिखा है। कुछ-न कुछ नतीजा तो निकलेगा ही।

पडित (मालवीय) जी आज विदा हो गये। सदैव की भाति इस बार भी न तो कट्टर सम्प्रदायवादियो के साथ ही उनकी पटरी बठ सकी, न जिन्ना राजेन्द्रप्रसाद फामूला ही उन्हें रुचिकर लगा। उन्होने मुझे कुछेक सुझाव दिये है पर उनका वणन करना व्यथ होगा, क्योकि जिन्ना फामूले के बाहर जाने को कभी राजी नही होगा। मेरी तो धारणा है कि अन्त म हमे काग्रेस-लीग समझौते का ही आश्रय लेना पडेगा। इस बात की पूरी सम्भावना है कि पडितजी इग्लड जाए। वास्तव म बम्बई के लिए रवाना होने से पहले उन्होने मुझसे कहा था कि उनका इरादा १५ माच को जाने का है।

मैंने ये दिन बडी बेचैनी मे गुजारे। पडितजी बराबर हिन्दुस्तान टाइम्स की नीति की ही चर्चा करते रहे। उन्होंने तो यहा तक कह डाला कि मैं पत्र का सारा भार उन पर छोड दू। उन्होने यह सुझाव भी दिया कि यदि मुझे उनकी

नीति अच्छी न लगे तो म इस्तीफा दे सकता हू। मैं उनका सुझाव मानने मे असमथ था क्योकि प्रश्न केवल मेरे इस्तीफे का ही नही था, पारसनाथ और दवदास को भी जाना पडता जिसके फलस्वरूप सारी व्यवस्था विश्रृखल हो जाती और आर्थिक दष्टि म पत्र बठ जाता। इसलिए मैंने दढतापूवक ना कर दी और सुझाव दिया कि सारा मामला डाइरेक्टरा और शेयर होल्डरो के समक्ष रखा जाये। इसस पडितजी कुछ देर के लिए खिन्न हो गये पर अत मे इस पर सहमत हुए कि पत्र किसी का पक्ष न ल। इस प्रकार हिदुस्तान टाइम्स' अब न तो पडितजी क पक्ष म कुछ कहेगा, और न उनके खिलाफ ही। परिस्थिति को देखते हुए मुझे यही ठीक जचा। मैं यह नही चाहता था कि उन्हे बोड से अलग करके उनका जी दुखाऊ।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादवभाई देसाइ,
मारफत महात्मा गाधीजी,
वर्धा

२१

२८ फरवरी, १९३५

प्रिय महादेवभाई

साम्प्रदायिक समझौते की बातचीत ठप होती दिखाई देती है। पजाब क हिदू सुझाव के विरुद्ध नही थे पर मुख्य कठिनाई सिखा और बगाल के हिदुओ की ओर से आइ। बगाली हिदुओ मे स जो लोग पश्चिमी बगाल के हैं वे सयुक्त निर्वाचन के पक्ष म है पर पूव बगाल सशक्ति है। सबसे अधिक दुर्भाग्य की बात यह है कि कोई जिम्मेदारी क साथ बात करनेवाला दिखाई नही दे रहा है। सब के-सब एक प्रकार की आशका अनुभव कर रहे है और जिन लोगा को प्रस्ताव अच्छा भी लगा वे भी खुल्लम खुल्ला यह स्वीकार करने का तयार नही हैं। सर नपन सरकार न सहायता अवश्य की पर जब मैंने उनस कहा कि कवीद्र रवीद्र का समथन भी हासिल कीजिए तो उन्होंने उत्तर दिया कि कवीद्र राजनीति म पडन के विचार मात्र से इतने भयभीत हैं कि दिल्ली आने तक को तैयार नहीं हैं।

म सरकार की सहायता करने की बात उठाई जायगी या नही। यदि मेरी स्मरण शक्ति धोखा नही दे रही है तो मुझे याद पडता है कि वल्लभभाई न गुजरात-काप और कष्ट निवारण कोष म आयोजन के द्वारा इन निमित्तो के लिए निकाली गई सरकारी रकम का लगभग अपने कब्ज म ले लिया था। बापू के सकल्प की देर है यदि वह चाहें तो प्रातीय सरकारो और मत्रियो के साथ नीतिपूर्वक पेश आकर इस एक करोड की रकम को अपने कब्जे म ले सकते हैं। यह केवल उनकी सूचनाथ है।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
मारफत महात्मा गाधीजी,
वर्धा (मध्य प्रात)

२२

४ माच, १९३८

प्रिय महादेवभाई,

इस पत्र क साथ एक पत्र की नकल भेज रहा हू जो डाक द्वारा अभी अभी पहुचा है। मैं इन सज्जन के साथ चिट्ठी पत्री बरतता आ रहा हू। यह खुद भी बडा प्रभाव रखते हैं और लकाशायरवालो के सम्पक म भी है। पत्र म जिन श्री किकपट्रिक का उल्लख है वह पार्लियामट के सदस्य है और लकाशायरवाले सदस्यो म से है। इन्होन हाल ही मे मचेस्टर गार्जियन मे यह सुझाव दिया था कि फेडरेशन आफ इडियन चेम्बस की ओर से एक प्रतिनिधि मण्डल ल दन आकर भारत लकाशायर व्यवसाय वाणिज्य पर बातचीत करे। मने इन सज्जनो को यह स्पष्ट बना दिया है कि आर्थिक समझौता असम्भव कल्पना है, हा, राजनतिक समझौता सम्भव है पर वह राजनेताओ और लकाशायर के हितो के बीच ही हो सकता है। अब यह सवाल है कि इस पत्र का क्या जवाब दिया जाए। हमार और उन लोगो के दष्टिकोण स औपचारिक प्रतिनिधि मडल को निमत्रण देन का प्रश्न एक अलग बात है, पर अनौपचारिक बातचीत हो सकती है बशर्ते कि उस प्रकाश म न लाया जाए। अतएव यदि इन लोगो की ओर से अनौपचारिक बातचीत के

२४

भाई घनश्यामदास,

इसे दखिये। इस भाई म कुछ है क्या ?

महादेव न खत लिखा उसका मतलब सिर्फ इतना था। इतने तक प्रयत्न किया। अब समय आन पर विलायत जाकर जो कुछ हो सके किया जाय। सफलता उसका नाम कि कुछ योग्य समझौता हो। आज सम्भव कम है, जब सच्चा हिन्दु मुस्लीम-समझौता नही होगा दूसरा असंभवित-सा प्रतीत होता है हम तो प्रयत्न के ही अधिकारी हैं।

राची के आश्रम का क्या हुआ ?

बापु के आशीर्वाद

वर्धा
७ ३ ३५

२५

भाई घनश्यामदास

यदि मलकानी और वियोगी हरि को हरिजन काय से असतोष है तो ठक्कर बापा के आफिस आने के बाद ये तीन मिलकर रिपोट देवें और उस पर सोचकर यथा सम्भव परिवतन कर स्कालरशिप अगर लडके लडकियो का पहुचती है तो मुझको यह खच योग्य मालूम होता है। हा इस प्रकार की तालिम हम भल नापसन्द करे लकिन हमार लडके यही पाते हैं। हमन अब तक और कोई चीज प्रजा क सामन अथवा हरिजनो क सामने नही रखी है। जब तक ऐसी कोई जीवित वस्तु हमारे पास नही है तब तक हमारे स्कालरशिप दना पडता है। हमारी निजी पाठशालाओ म सुधार के लिए काफी स्थान है। हमार पास अच्छे शिक्षक नही है इसलिय दिल्ली का प्रयाग और साबरमती का मुझे बहुत प्रिय है।

राजेन्द्रबाबू क बार म तार मिला था। हमारी चिन्ता दूर हुई। अब जमना लाल छपरा जाते है।

बापु क आशीर्वाद

वर्धा
२४ ३ ३५

२६

भाई घनश्यामदास,

हा, ठक्कर बापा ने मुझे लिखा था। काम ऐसा ही है। साथ मे पोल का खत भेजता हू। उसके रोकने से मैं रुक गया। राजाजी भी जाहर आदोलन नही चाहते थे। पोल के दूसरे खत की प्रतीक्षा करूगा।

जून के पहले हफ्ते म समुद्र बहुत तेज रहता है। क्या उसके पहले कुछ नही जा सकते हैं ? गुण्टर का खत अच्छा है। आदमी चाहता था बहुत कुछ करना लेकिन कुछ कर नही सका। उनकी आजकल की नीति म मैं नम्रता का अश तक नही पाता हू। जनता के अभिप्राय के बारे मे उन्हें कुछ भी फिकर नही है। शस्त्र बल पर निभर हैं।

बापु के आशीर्वाद

वर्धा
१० ४ ३५

२७

भाई घनश्यामदास

खुर्जा के शर्मा का नाम तो तुमको मैंने दिया है। वह नसर्गिक उपाय थोडा जानता है। मैं उसे वर्धा स पहचानता हू। उसका इरादा बेटलक्रीक मे जाकर अनुभव लेने का है और बाद म यूरोप के नैसर्गिक दवालय देखने का। उसने इसके लिये २।। वष की मुद्दत बना रखी है। वह त्यागी है। हुशियार है। कुछ विचित्र प्रकृति का है। सेवा भाव खूब भरा है। अपनी इस्पीताल रखता था सो फूक दी है किताबें छपाई थी वह भी जला दी क्योकि उसम अनुभव ज्ञान कम था। जो रुपये मुझे इस वष के लिये देने का तुमने इरादा कर रखा है उसम से खच निकालकर शर्मा को अमरीका यूरोप भेजने की इच्छा है। अगर इसम तुम्हारी सम्मति हो तो तलाश कर मुझे बताइय कि बेटलक्रीक जाने का क्या खच होगा। किस रास्ते से जाना सुभीता होगा वह तो थड या डेक जो मिलता होगा वही पसेज लेगा। गरीबी से रहने का खच वहा कितना लगता है, बेटलक्रीक म विद्यार्थी का लेते हैं ?

जापान के रास्ते से जाना ठीक होगा क्या ?

तुमारा शरीर अब कैसा रहता है ?

मैंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन का बोझ उठा लिया है सो देखा होगा।

बापु के आशीर्वाद

२७ ४ ३५

२८

वर्धा

२७ ४ १९३५

प्रिय घनश्यामदासजी

बगाल-सरकार ने बगाल की कई जातियो की गणना उनके विरोध के बावजूद अन्त्यजो म करते रहने की जो हठ पकडी है, उसकी बाबत 'माडन रिव्यू' ने 'मनु की प्राण प्रतिष्ठा शीषक के साथ एक टिप्पणी दी है। मेरी समझ म नहा आता कि जो लोग अस्पृश्य नही होना चाहते उन पर अस्पृश्यता क्यो थोपी जाए ? बापू कहते हैं कि प्रबन्धकारिणी की बठक के दौरान गवनर म आपको सघ के अध्यक्ष की हैसियत से मिलना और इस मामले की ओर उनका ध्यान आकर्षित करना ठीक रहेगा।

आपका

महादेव

२९

१ मई १९३५

बगाल के गवनर के साथ मुलाकात

समय १० बजे प्रात काल—बातचीत १ घटा २० मिनट चली

मैंने उन्हें बताया कि मैंने जाने का निश्चय कर लिया है और उनके पास सलाह और पथ प्रदशन के लिए आया हू। उन्होने कहा ठीक है। दोनों सदनो द्वारा बिल के पास न होने तक वहा जाना व्यथ-सा रहता। पर अब बात दूसरी

है।" मैंने सरकार के उदासीनता के रुख की चर्चा करते हुए बताया कि व्यवस्थापिका सभा के मत के प्रति कैसा रवैया अपनाया जा रहा है। गवर्नर ने कहा, 'सरकार अपनी सफाई मे यह कहेगी कि कांग्रेस के व्यवस्थापिका सभा मे आने का एकमात्र उद्देश्य काम मे रुकावटें डालना है, इसलिए वह वोटों का स्वीकार करने को बाध्य नहीं है।" मैंने उत्तर मे कहा कि अनेक अवसरों पर स्वतंत्र सदस्यों और यूरोपियनों तक ने कांग्रेस के साथ वोट दिये। उन्होंने यह बात स्वीकार की, पर कोई टिप्पणी नहीं की। उन्होंने कहा कि इंग्लैंड मे यह धारणा है कि भारतवासी अभी यह नहीं समझ पा रहे हैं कि उन्हें कितने बड़े अधिकार सौंपे जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि इस समय भी बंगाल में मंत्री लोग व्यापक अधिकारों से काम ले रहे हैं और खुद ही नीति निर्धारित करते हैं। जब नया शासन विधान लागू होगा, तब तो उन्हें पूरा उत्तरदायित्व मिल जायेगा। मैंने कहा यह बड़ी अच्छी बात है, पर कांग्रेसियों की धारणा दूसरी ही है। वे सुधारों को मात्र ढोंग समझते हैं पर यदि दोनों पक्ष एक-दूसरे को समझने लगेंगे तो इस धारणा मे परिवर्तन हो जायगा। यदि एक-दूसरे को समझने की प्रवृत्ति का अभाव बना रहेगा तो कांग्रेस का उग्र पंथी वर्ग सारे अधिकारों का उपयोग अपने हित मे करेगा।' उन्होंने बताया कि भूलाभाई पर किस प्रकार आक्रमण किया गया सो उन्हें मालूम है। उनकी राय मे समाजवाद एक बहुत बड़ा खतरा है। वह समझते हैं कि यह अराजकता की दिशा में पहला कदम है। प्रश्न यह है कि क्या कांग्रेस समाजवादियों को खुली चुनौती देगी? मैंने कहा यह तभी सम्भव है जब उसके हाथ मजबूत होंगे। पर कांग्रेसी लोग दो-दो मोर्चे एक-साथ नहीं संभाल सकते। यदि समझौता नहीं हुआ तो दक्षिण पंथी वर्ग मैदान से हट जायगा और उसका स्थान वामपंथी वर्ग ले लेगा। वह बोले "यह बड़े दुर्भाग्य की बात होगी।" मैंने उत्तर में कहा, 'यह सरकार के हाथ में है। यदि वह दक्षिण पंथी वर्ग के हाथ मजबूत करना चाहती है, तो उसे सक्रिय रूप से मेल मिलाप की बात चलानी चाहिए। इस समय तो गांधीजी का प्रभाव है और वह जब तक जीवित हैं, उनका प्रभाव कम नहीं होगा। पर उनके बाद क्या होगा? इस समय जो कुछ हो रहा है उससे असंतोष की भावना जोर पकड़ेगी और अंगारे उगलनेवाले वर्ग के हाथ मजबूत होंगे।' उन्होंने पूछा कि दोनों पक्षों के एक-दूसरे को ठीक-ठीक समझने का आधार मेरी सम्मति में क्या होना चाहिए? मेरा उत्तर था, 'मैंने यह अच्छी तरह समझ लिया है कि बिल में आमूल परिवर्तन परिवर्द्धन की कोई सम्भावना नहीं है। पर बिल चाहे जैसा हो उसे जन-कल्याण का साधन बनाया जा सकता है। वजवुड बेन की वह उक्ति याद आती है जब उन्होंने कहा था—व्यवहार में औपनिवेशिक स्वराज्य का

दर्जा—बग महत्व की बात एकमात्र यही है। यदि द्वितीय गोलमेज कान्फ्रेंस के अवसर पर सरकार गांधीजी को अपनी कठिनाइयां बताती, तो वह कहते—आप पार्लियामेंट से विधान पारित कराने की चिंता छोड दें—वह अब भी यही रुख अपना सकते है। चीज की शक्ल चाहे जो हो उसके वास्तविक मूल्य का निर्णय तो उसकी सामग्री के आधार पर ही होगा। यदि इन नये सुधारों को व्यवहार में औपनिवेशिक स्वराज्य के रूप में अमल में लाया गया और उसके द्वारा भारत को उसके ध्येय की ओर प्रगति करने दी गई तो यह एक बडी भारी उपलब्धि होगी। उदाहरण के लिए सेना को ही लीजिए। यह एक ऐसा विषय है जिस पर वोट नहीं दिये जा सकते। पर इस विभाग का अनौपचारिक रूप से भारतीय प्रभाव में रखा जा सकता है। विधान की चहारदीवारी के भीतर ही रहकर जन साधारण के उत्थान तथा राष्ट्रीय शक्ति सामर्थ्य के संगठन के निमित्त यथासम्भव बहुत कुछ किया जा सकता है जिससे देश को मुनासिब समय के भीतर औपनिवेशिक स्वराज्य के योग्य सिद्ध किया जा सके। गवर्नर को भी कोई कारण दिखाई नहीं पडा कि इस मुद्दे को दोनों ही पक्ष समान रूप से क्यों नहीं अपनायें। मैंने कहा, इसके लिए पारस्परिक सम्पर्क नितान्त आवश्यक है। मैंने बताया कि जब सर हेनरी क्रक ने मुझसे सवाल किया था कि पारस्परिक सम्पर्क बिल पारित होने के पहले स्थापित करना चाहूंगा या बाद में तो मैंने कहा था 'तत्काल।' और अब तो यह सम्पर्क स्थापित करने के काम में जरा भी देर नहीं होनी चाहिए। गवर्नर ने कहा जबतक बिल कामंस-सभा में पेश रहा भारत में कठिनाइयां रहीं पर अब वैसी बात नहीं है। कांग्रेस का पहले का इतिहास चाहे जो रहा हो पर इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि वह सबसे बडी और सुसगठित राजनैतिक संस्था है। इसलिए कैबिनेट का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह उसके साथ समझौते की बातचीत चलाये। इस दिशा में उसका पहला कदम यह हो सकता है कि भारत के अंतिम ध्येय की बात स्पष्ट कर दे और साथ ही सुधारों को अमल में लाने के लिए आवश्यक तौर-तरीकों की रूपरेखा बता दे। यदि समझौते की चेष्टा असफल रही तो भी क्या सरकार की क्षति होगी ? मैंने कहा, यह सुनकर मुझे बडा हर्ष हुआ पर उन तौर-तरीकों की रूपरेखा पर प्रकाश पडना आवश्यक है। (सर जेम्स) ग्रिग ने कहा था कि आपके वाइसराय बनकर आने की सम्भावना है। यदि वैसा हुआ तो मुझे भविष्य के बारे में आशावान होना चाहिए। (सर माल्कम) हेली भी इसके लिए एक योग्य व्यक्ति है और गांधीजी के साथ निपटने में सक्षम हैं पर वह अब भारत में नहीं हैं। वर्तमान वाइसराय तो इस कार्य के लिए सर्वथा अनुपयुक्त है। आप एक गवर्नर की हैसियत से कोई साधिकार प्रयत्न करने में

व्यक्तियो को बगर मुकदमा चलाये जेल म बद रख छोडना कोई रुचिकर काय नही है। मैंने उनके बारे म एक योजना सोच रखी है। मैं अपनी फाइलें उत्तर दायित्वपूण नेताओ के सामने रख दूगा और उन्हे यह मानने को बाध्य कर दूगा कि य दमनकारी धाराए क्यो आवश्यक हैं। पर मैं गर जिम्मेदार सुझाव स्वीकार करने को तयार नहीं हू क्योकि यदि मैंने जेलो क दरवाजे खोल दिये तो बगाल मे एक बार फिर आतकवादियो का दौर दौरा हो जायगा।" मैंने उत्तर मे कहा "हम दोनो ही आतकवाद को एक खतरा समझते हैं और मानते हैं कि उसका अत करना जरूरी है पर मुझे उम्मीद है कि आप इस बात की जिद नही पकडेंगे कि उसका अत करने का एकमात्र यही तरीका है। हम कहेंगे आइये इस काम मे हम आपका हाथ बटायेंगे और आप भी इसके लिए अवश्य तयार हो जायेंगे। वह मेरी बात से सहमत हुए पर बोले हम व्यावहारिक बात करनी चाहिए। मैंने कहा सिद्धात को लेकर हम दोनो म कोई मतभेद नही है। *क्या आपको यह आशा नही है कि समय आने पर इन धाराओ की कोई जरूरत नही रहेगी?'* उन्होंने जोर देकर कहा *मुझे पूरी आशा है। मैं बोला तब तो फिर हमारे* लिए कोई तरीका खोज निकालने म कोई कठिनाई नही होनी चाहिए।"

तत्पश्चात मैंने उनस परिचयात्मक पत्र मागे। उन्होंने होर को निजी तौर पर यह लिखने का वचन दिया कि मैं विश्वास का पात्र हू। उन्होंने चर्चिल को भी लिखने का वादा किया पर पूछा कि उससे क्या प्रयोजन सिद्ध होगा ? मैंने कहा कि "मैं उनस बातचीत करके पता लगाना चाहता हू कि क्या वह हमारे किसी काम आ सकते हैं। लॉयड जाज से मैं गाधीजी का पत्र लेकर मिलूगा। गवनर ने कहा, 'लायड जॉज हमशा बातचीत द्वारा समझौता करन क पक्ष म रहे है। मैंने कहा, 'मुझे मालूम हुआ है कि लॉयड जाज का कहना है कि कोई बडा आदमी भारत जाकर बातचीत द्वारा मामला तय करे तो अच्छा रहे— कोई स्मटस-जसा आदमी। गवनर को यह बात जची। मैंने कहा कि यह बात गुप्त रखनी चाहिए सरकार को *तबतक कोई कदम नही उठाना चाहिए जबतक उसे इस बात का ठीक ठीक पता न* लग जाय कि दूसरा पक्ष उसे किस रूप म ग्रहण करगा। वह सहमत होते हुए बोले *खुद वाइसराय की धारणा है कि पारस्परिक सम्पक स्थापित करना आव*श्यक है, पर वह इस बार म निश्चय नही कर पाय है कि उसके लिए अभी समय आया है या नही। पर अब हालत बदली हुई है। मैंने सुझाया यदि खुद होर ही किसी एक मिशन के मुखिया के रूप म आये तो कसा रहे ? ' उन्होने कहा वह नही सकता।' मैंने यह भी सुझाव दिया कि खुद गवनर ही अपनी गवनरी की गद्दी कुछ दिनो के लिए छोडकर ऐस किसी मिशन का नेतृत्व करें तो बडी बात हो।

३०

कलकत्ता
३ मई, १९३५

प्रिय महादेवभाई,

तुम्हारा पत्र मिला तब मैं दार्जिलिंग के लिए रवाना हो रहा था। वहा से आज सवेरे ही वापस आया हू, इसलिए तुमने जिस लेख की बात कही है उसे अभी तक नही देख पाया हू। मैंने गवनर से उसकी चर्चा तो की ही थी। उन्होने पूछा कि क्या मैंने यह लेख पढा है? मुझे कहना पडा नही। उन्होंने बताया कि आपत्ति केवल एक जाति के विषय म है। उन्होने यह भी सूचना दी कि अब उस जाति का परिगणित सूची से निकाल दिया गया है। तुमने जिस लेख का हवाला दिया है, उसे मैं अवश्य पढूगा, और यदि पढने के बाद मुझे लगा कि अब भी कुछ करने का बाकी है तो गवनर को जरूर लिखूगा। अपनी विदेश-यात्रा के सिलसिले म उनके साथ बडी सफल मुलाकात रही।

बापू ने डा० शर्मा के बारे म लिखा है। मैं पूछताछ करके कल उत्तर दूगा। मैं समझता हू उन्हें न्यूयाक अथवा सानफ्रासिसको तक किसी मालवाहक जहाज म नि शुल्क भेजना सम्भव होगा। मालवाहक जहाज जरा देर से पहुचते हैं पर है आरामदेह। हम लाग अमरीका को एक बडी मात्रा मे बोरा का निर्यात करते ह, इसलिए जहाज कम्पनी को भाडा लिये बिना एक आदमी को ले जाने के लिए राजी करना कठिन नही होगा। पर मैं और अधिक पूछताछ करके कल लिखूगा।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

३१

कलकत्ता
४ मई १९३५

पूज्य बापू,

आपकी चिट्ठी मिली उसी दिन मैं दार्जिलिंग के लिए रवाना हो रहा था। मैं यूरोप-यात्रा का प्रबंध करने से पहले गवर्नर से मिल लेना चाहता था। उनसे भेंट करने के बाद अब मैंने कोटेरोजियो जहाज में बर्थ का इन्तजाम कर लिया है। जहाज २३ मई को रवाना होगा। मैं यहां से ११ तारीख को चल पड़ने का विचार कर रहा हूं। कुछ समय बनारस में अपने माता पिता के पास बिताने के बाद १७ तारीख तक वर्धा पहुंचने की आशा करता हूं। वहां मैं केवल दो दिन ठहरूंगा। अपनी यात्रा से पहले आपके साथ विस्तारपूर्वक बातचीत करना चाहता हूं। इन दिनों मैंने जान बूझकर आपको चिट्ठी नहीं लिखी क्योंकि मैं वर्धा आने का विचार कर रहा था और सारी बातों पर मिलकर चर्चा करना ही मुनासिब समझा।

हरिजन सेवक संघ की प्रबंधकारिणी की बैठक सफल रही। इस बाबत भी आपका कुछ समय लूंगा।

अब डा० शर्मा के बारे में। उनके खर्चे पानी के लिए जितने की जरूरत हो मैं आपकी सेवा में हाजिर हूं ही। रही और बातें सो मैं यह बताने में असमर्थ हूं कि कितना खर्च होगा। मैंने जहाज कम्पनी से बात की थी। यह कम्पनी हमारा माल न्यूयार्क ले जाती है। कम्पनी का नाम है रूजवेल्ट स्टीमशिप कम्पनी। ये लोग डा० शर्मा को न्यूयार्क तक निःशुल्क पहुंचाने को राजी हो गये हैं। महादेव भाई को ब्रजमोहन को लिखना पड़ेगा जिससे जहाज का बन्दोबस्त किया जा सके। यह तभी सम्भव है, जब यह पता चले कि डॉ० शर्मा कब रवाना होना चाहते हैं। न्यूयार्क से बटिल क्रीक तक पहुंचने में १५ घंटे लगेंगे और खर्चा कुछ विशेष नहीं है। पर जहां तक मुझे मालूम है उन लोगों के यहां शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है। वह तो एक सैनिटोरियम मात्र है जहां रोगियों को अपनी देखभाल स्वयं करना सिखाया जाता है खाना पकाना भी सिखाया जाता है। रोज रात में स्वास्थ्य पर थोड़ा-बहुत व्याख्यान होता है। निर्धन रोगियों की विशेष व्यवस्था है। जहां तक मुझे याद है एक कमरे पर अधिक से-अधिक २ डालर प्रतिदिन का खर्च है। इसमें भोजन और डॉक्टरी देखभाल भी शामिल है। पर शर्त यह है कि उन लोगों को विश्वास हो कि रोगी उनकी चिकित्सा व शुश्रूषा का अधिकारी है।

३२

भाइ घनश्यामदास,

तुमारे खत मिले हैं। २७ २८ के नजदीक आ जाओग तो अच्छा होगा। २६ उससे भी अच्छा। २८ को हिंदी-सम्मेलन की स्थायी समिति की सभा होगी तो भी समय तो निकाल लूगा। २२ को मुझे भी मुबई जाना होगा। कमला नेहरु को मिलने के लिये। वह तुमहारी ही जहाज म जायगी।

सीधी न्ययाक जाती है ?

बापु के आशीर्वाद

६ ५ ३५
वर्धा

मीरा बहन की मधुमाखी की किताब वापस चाहिये।

३३

१४ जून, १९३५

लन्दन से गाधीजी के लिए भेजी गई टिप्पणी

फाइण्डलेटर स्टीवार्ट (इण्डिया आफिस के सचिवालय का बडा सुयोग्य प्रमुख अधिकारी) स डेढ घण्टे तक भेंट हुई। उसे परिचय क दो पत्र दिये—एक गाधीजी का दूसरा बगाल के गवनर का। जब मैंने कहा कि हम पहले कभी नहा मिल हैं, तो उसने कहा कि नहीं इसस पहल भी भेंट हुई थी। मैंने कहा कि गाधीजी और एण्डरसन के मन मे आपके लिए बडा आदर भाव है। उसने कहा कि दोनो ही व्यक्तियो क सम्बन्ध मे उसकी भी मधुर स्मृतिया है। उसने गाधीजी का पत्र पढा। मैंने कहा कि मेरी भेंट का उद्देश्य तो उसे ज्ञात ही होगा। उसन कहा, हा। मैंने कहा कि मैं सारी कहानी कह सुनाऊ। मैंने व्यापार वाणिज्य म अपनी शिक्षा-दीक्षा की बात कही, और कहा कि किस प्रकार मैं अग्रजो के सम्पर्क मे आया। उनमे से कोई एक दजन भारत म नौकरी म थे। बताया कि मैं अग्रज जाति के गुण दोषा से अवगत हू पर गाधीजी पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने मुझे उनस मत्री का सम्बन्ध स्थापित करने की सलाह दी। अब मैं देख रहा हू कि भारत की

प्रगति दोनो के एक-दूसरे को समझने और तदनुसार आचरण करने पर निभर है। मैं १९२९ से ही अर्थात गाधी-इर्विन-वार्ता और पैक्ट के पहले से दोनो मे मेल के लिए कोशिश करता आ रहा हू। उसके बाद काग्रेस का लाहौर का अधिवेशन हुआ फिर सविनय अवज्ञा आदोलन छिडा। उस आदोलन के साथ मेरी सहानुभूति तो थी पर मैंने उसम रुपया पैसा नही दिया क्योकि मैं उसका नतीजा भुगतने को तयार नही था। चाहता तो गुप्त रूप से आदोलन की आर्थिक सहायता कर सकता था पर मैंने ईमानदारी का आचरण करना सीखा था और सब कुछ खुल्लम खुल्ला करना चाहता था। इसलिए मैंने सहानुभूति प्रदान करने से अधिक कुछ नही किया। १९३० के व्यापारियो के सुप्रसिद्ध जलूस मे शरीक हुआ। तभी लाड इर्विन न मेरे पास सर ब्रजेन्द्रलाल मित्र को भेजा। इलाहाबाद गया। गाधी इर्विन समझौते मे भी मेरा कुछ हाथ रहा। द्वितीय गोलमेज-कान्फ्रेंस म शरीक हुआ। उस अवसर पर यहा कोई खास जान पहचान नही बढा सका क्योकि बडे आदमी बडे आदमियो स मिल रहे थे। गाधीजी भारत लौटे फिर जल गए। सयोगवश होर के सम्पक म आया। सम्भवत यह सम्पक एण्डसन के साथ सम्पक स्थापित करने का साधन बना। इस सम्पक के लिए मैंने कोशिश नही की, वह सयोगवश ही सध गया। गाधीजी के साथ जेल म सम्पक उन्हीं के द्वारा सम्भव हुआ था। पर विलिंग्टन ने सहायता करने से इकार कर दिया। घटनाक्रम इसी प्रकार चलता रहा। गत दिसम्बर में ज्वाइट पार्लियामेटरी कमेटी की रिपोट निकली। मैंने एण्डसन म एक बार फिर कहा कि परिणाम दु खद हागा। मैं सुधारों की भाषा की ओर ध्यान नही देता उनके पीछे निहित भावना को ध्यान मे रखता हू। दिल्ली मे जो गाधी इर्विन-पक्ट हुआ उससे हासिल कुछ नही हुआ पर उसे स्वीकार कर लिया गया क्योकि वह सदभावना से अनुप्राणित था। वैसी ही मनोवत्ति को प्रोत्साहन मिलना चाहिए। एण्डसन ही विलिंग्डन के साथ हुई दो मुलाकातो के साधन बने थे। ब्रेक के साथ भी भेंट हुई, फिर ब्रेक और सरदार वल्लभभाई की भेंट हुइ पर नतीजा कुछ नही निकला। मैंने अपनी निराशा की बात एण्डर्सन का बताई। उन्होंने मेरे लदन आने के विचार को प्रोत्साहन दिया। मैंने गाधीजी की सलाह ली और वह सहमत हुए। एण्डसन ने भारत-सचिव को चिट्ठी लिखी। गाधीजी ने मुझे आपके तथा लायड जॉज के नाम चिट्ठिया दी है। मुझे यहा आज एक सप्ताह हो गया। इस बीच मैंने होर जेटलण्ड और इर्विन का पत्र लिखे पर अभीतक कोई उत्तर नही आया है। मैं विदेश विभाग भी हो आया है। इधर से उधर उधर से इधर।

और पूछा कि क्या उससे मिलन के लिए भी मुझे काफी प्रतोक्षा करनी पडी थी। मैंने कहा नही। इसपर उसने हप प्रकट किया। उसने पूरी सहायता व पथ प्रद शन का वचन दिया और पूछा कि मेरा क्या सुझाव है। मैंने उत्तर दिया "अधिक बुद्धि विवेक, काय म औपनिवेशिक स्वराज्य के अनुरूप आचरण, जिन मामला मे प्रत्यक्ष उत्तरदायित्व न सौपा जाए उनमे आवश्यक परिपाटिया चलाकर काम लिया जाए मत्री सबधी समझौता हो। उसने जानना चाहा कि क्या मैंन निर्देश विधि पढी है। मैंने उत्तर दिया पढी है पर वह निर्जीव है, जबकि आवश्यकता मानवीय सहृदयता की है। मने कहा कि दो ही रास्ते हैं या तो सुधारा को सुचारु रूप स काम म लाना अथवा उन्हें ठप करना। मैंन उसे बताया कि काग्रेसिया के मानस का मैं जानता हू। काग्रेस सारी सीटो पर कब्जा कर लेगी और सरकार का भी काबू म ले लेगी। उसके बाद जान बूझकर गवनर के साथ छेडछाड शुरू होगी जिसके परिणामस्वरूप गवनर सारे अधिकार अपने हाथ म लेने को बाध्य हो जायेगा। शासन विधान निकम्मा कर दिया जायेगा। मेरी आशका यही समाप्त नही हो जाती है। इसका एकमात्र परिणाम यह होगा कि गाधीवाद की पराजय होगी और साम्यवाद जोर पकडेगा, जसा कि सम्पूर्णानन्द के सक्यूलर म बताया गया है। मुख्य उद्देश्य होगा पुराने नेताओ की साख का नष्ट करना। यदि काग्रेस के दष्टिकोण का समझन के लिए आवश्यक बुद्धि विवेक से काम नही लिया गया, तो साम्यवाद की जड मजबूत होगी। इसक अतिरिक्त यह भी तो जाहिर है कि सरकार ने मुसलमानो की पीठ ठोककर उनमे यह धारणा उत्पन्न कर दी है कि व चाहे जो करें अधिकारी वग नत मूदे रहेगा। इस प्रकार उनके नतिक वल का ह्रास हो गया है। स्टीवाट ने पूछा कि क्या सरकार न कराची म कुछ नही किया था ? मैंने कहा वहा पहले तो मुसलमानो को बढावा मिला और वे खुल्लम खुल्ला ज्यादती पर उतर आए तो गोली चलाई गई। उसने सवाल किया क्या कलकत्ते मे हत्यारा को फासी पर लटकाया गया था? मैंने उत्तर म कहा हा उन्हे भी औरा को भी। पर सवाल इस बात का नही है। मैं जिस बात पर जोर दना चाहता हू वह यह है कि मुसलमाना म ऐसी धारणा बन गई है। मैंने कहा कि मैं वाद विवाद म नही पडना चाहता पर इतना अवश्य कहूगा कि कश्मीर और हैदराबाद म जा नीतिया बरती जा रही हैं उनम आकाश पाताल का अन्तर है। भारत म यह धारणा व्याप्त है कि मुसलमान जा कुछ करें करत रहे उनसे जवाब तलब नही किया जायगा। इसका नतीजा यह है कि कोई हिन्दू अधिकारी पक्षपात रहित आचरण करना चाहेगा तो मुसलमाना का ही पक्ष होगा। यह धारणा मुसलमानो को बिगाडकर छोडेगी। ग्रिग की

शिकायत है कि एक-न एक दिन आपको मुसलमानो के खिलाफ कारवाई करनी पडेगी, और जहा एसा किया कि आपके साथ मुसलमाना का मत्री का नाता खतम हो जायगा। तीसरी बात अधिकारी-वग को गलत ढग की शिक्षा दीक्षा दन स सम्बध रखती है। अधिकारी-वग ने यह समझ रखा है कि कोई चीज चाहे वह कितनी ही अच्छी हो यदि समाज क लोकप्रिय वग द्वारा की जाए तो उसका विरोध करना जरूरी है। अस्पश्यता निवारण ग्रामोत्थान आदि काम अधिकारियो को घोर अप्रिय हैं। इसका परिणाम यह है कि सरकार द्वारा उठाया गया कोई भी काम जन-साधारण की दृष्टि म सदेहास्पद है। इमस खाई दिन-पर दिन चौडी होती जा रही है। इस सबका अत कहा जाकर होगा ? आशका यह नही है कि भारत म शासन विधान ठप हो जायगा चिता इस बात की है कि भारत म सब यही समझे बैठे हैं कि यह उलटी दिशा म उठाया गया कदम है। मैं शासन विधान की इनी गिनी अच्छाइया को दख पाता हू और इसका भी कारण यह है कि मैं पक्षपात स काम ले रहा हू। अय सबकी धारणा दूसरी ही है। वे सब उस एक दम बुरा समझत हैं। मर सेम्युअल होर की धारणा है कि जो लाग शासन विधान की धज्जिया उडा रह हैं, व मौजबाजी की भावना से प्रेरित हैं। वास्तव म, ऐसी कोई बात नही है। मुझे शासन विधान क ठप हो जाने की सम्भावना म भय नही है, मुझे डर कही अधिक गम्भीर परिस्थिति के उत्पन्न होन का है, जबकि हम सब शाति चाहते हैं। उसने पूछा कि 'शाति की वार्ता किसके साथ की जाए, और किन शर्तों पर ?" मैंने उत्तर दिया मुसलमाना को हम छोड देना चाहिए क्योकि व शासन विधान का विरोध नही करेंगे। साम्यवादिया को इसलिए छाड देना चाहिए कि व किसी भी प्रकार के समझौते क खिलाफ हैं। लिबरल पार्टी वाला को इसलिए अलग रखना चाहिए कि उसम भिन्न भिन्न विचारा के कुल आधा दजन आदमी है जिनकी कोई नही सुनता। अब रही काग्रेस। बस यही एक ऐसी सस्था है, जिसके साथ शाति-वार्ता चलाई जा सकती है। उसन पूछा, 'परन्तु क्या लाग मिस्टर गाधी की बात मानेंगे ?' मरा उत्तर था 'नि सदेह पर वह बुडढे हो चले हैं और उनके जाने के बाद अय कोई एसा व्यक्ति नही है, जिसक साथ बातचीत चलाई जा सक। इसलिए यदि समय रहते कुछ नही किया गया, तो विपत्ति आना अनिवाय है।' वह बोला उद्देश्य के प्रति मेरी पूरी सहानुभूति है पर मैं नही जानता कि उद्देश्य सिद्धि कस हो और न यही जानता हू कि उसक लिए किसम बातचीत की जाए और किस उत्तरदायी माना जाए। प्रजातत्र म व्यक्तिया के साथ समझौता करना कठिन हो जाता है। मैंने कहा कि इग्लड म भी देश का शासन-काय कुल आधा दजन आदमी चलाते हैं। भारत के

बारे मे भी यही बात है। प्रजातन्त्र तो नाम के लिए होता है वास्तव म शासन व्यक्ति ही करते है। उसने मरी बात की साथकता स्वीकार की, पर कहा कि "पक्ट की अपेक्षा दोनो पक्षो के मत्रीपूण वक्तव्य अधिक महत्त्व के सिद्ध होंगे। उदाहरण के लिए सम्राट की घोषणा-जसा कोई नाटकीय काय।" मैंन उत्तर दिया कि "ऐसी कोई घोषणा निष्प्राण साबित होगी ठीक जिस प्रकार काम स सभा म दी गई स्पीचें और उद्गार निष्प्राण सिद्ध हुए है। सबसे पहले व्यक्तिगत सम्पक सधना चाहिए। वह बोला 'आपने यह धारणा बना रखी है कि वतमान अवस्था बनी रहेगी। व्यक्तिगत सम्पक अवश्य किया जायगा। मैंने कहा कि' मैं इसकी परवाह नही करता कि असली चीज हासिल करने म किस उपाय से काम लिया जाए—वक्तव्य के द्वारा या पक्ट के द्वारा असल चीज है एक दूसरे को समझने की मनोवत्ति।' वह बोला कि "पक्ट एक बार फिर भग हो सकता है।' मैंने उत्तर म कहा कि इसकी सम्भावना है पर यदि बुद्धि विवेक से काम लिया गया तो दोनो पक्ष नेकनीयती के साथ प्रयत्नशील रहग। वतमान स्थिति मे तथा भावी स्थिति मे एकमात्र यही अ तर है कि वतमान अवस्था मे जिस व्यवस्था को साझेदारी का नाम दिया जा रहा है उसमे दूसरे साझीदार का पता ठिकाना तक नही है जबकि भावी अवस्था म यदि कभी कोई असाधारण स्थिति उत्पन्न हुई तो दानो साझी दार मिल बठकर समस्या का समाधान करने की बात सोचेंगे। फिलहाल साझी दारो के प्रवेश क लिए द्वार बन्द है। उसने फिर यही बात दुहराई कि वह सिद्धात क रूप म मेर कथन से सहमत है पर माग मे कठिनाइया हैं। मत्री की भावना का उदगम स्थान कानूनी दस्तावज नही, उभय पक्षो के वक्तव्य हैं। मैंन यह स्वीकार किया पर कहा कि वक्तव्य आपस की बातचीत म उत्पन्न हुई मत्री की भावना के प्रतीक मात्र है। उसने इस मामले पर सप्ताह के अत मे विचार करन का वचन दिया और कहा कि उसके लिए कोई सुझाव देना उसके बाद ही सम्भव होगा। उसने अय लोगो के साथ भेंट मुलाकात की व्यवस्था करने का भी वचन दिया।

मेरी धारणा है कि उसके ऊपर गहरा प्रभाव पडा है और मुझे आशा है कि वह पूरी सहायता करेगा। गाधीजी के स्वास्थ्य के बारे मे प्रश्न करने के बाद उसन कहा कि उस एक रविवार के व तीन घण्टे हमेशा याद रहेंगे जब गाधीजी न बातचीत की थी। मैंन कहा कि यह मेरे पक्ष म एक बहुत जबदस्त दलील है—दोनो मे किसी प्रकार का राजनतिक समझौता न होने पर भी उस उस भेंट की मधुर स्मृति है। व्यक्तिगत सम्पक क महत्त्व का यह एक जीता जागता प्रमाण है। हम इसी प्रकार के सम्पक स्थापित करके मत्री के सम्बन्ध बढाने चाहिए। वह

मुझे पत्र लिखेगा। मैंने उस सारी बात गुप्त रखने की सलाह दी और कहा कि जब तक उसे यह पता न लगे कि इस दिशा में उठाये गये कदम का किस ढंग से स्वागत किया जायेगा, तबतक वह पहल न करे।

३४

२० जून १९३५

श्री बटलर के साथ वार्तालाप

बातचीत एक घण्टा चली

शिष्टाचार भोजन के पश्चात मैंने स्थिति का संक्षेप में वर्णन किया।

मैंने कहा कि मैं इंग्लैंड में जिस जिस अंग्रेज से मिला—इनमें राजनेता और व्यापारी सभी थे—उन सबने बड़े विश्वास के साथ यही कहा कि एक बड़ा प्रगतिशील कदम उठाया गया है। मैंने कहा 'मैं उनकी नेकनीयती में शक नहीं करता पर मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि भारत में सबकी यह धारणा है कि यह कदम पीछे की ओर ले जाता है, आगे की ओर नहीं। दोनों दृष्टिकोणों में इतना विरोधाभास हो यह एक कौतूहल का विषय है। पर यदि भारत के वातावरण को ध्यान में रखा जाय तो इसका कारण समझने में भी देर नहीं लगेगी। कांग्रेस पार्टी व्यवस्थापिका सभा में उपस्थित है पर सरकार ने उसकी एक भी सलाह अबतक नहीं मानी है। कौंसिल में प्रवेश करने की अनुमति एक भी भारतवासी को नहीं मिली है। ऐसी अवस्था में लोगों का यह सोचना स्वाभाविक है कि जब भारतवासियों को अपने ही भाइयों के दुःख दर्द में शरीक होने की छूट नहीं है तो यह एक ऐसी साझेदारी है जिसमें न तो एक-दूसरे पर भरोसा करने की भावना है न पारस्परिक सम्पर्क साधने की इच्छा।' उसने बताया कि 'आपत्ति सैनिक कारणों से है पर उसे गलत समझा जा सकता है।' बोला 'मैं आपका अभिप्राय समझ गया। आप यही चाहते हैं न, कि दोनों पक्ष एक दूसरे को समझें और अनुकूल वातावरण तैयार किया जाए? पर यह सब कैसे किया जाए?' मैंने कहा, 'पारस्परिक सम्पर्क के द्वारा।' उसने कहा, "आपका क्या सुझाव है, बताइये।' मैंने उत्तर दिया 'दिल्ली इस मामले में मरुस्थल जैसा है। वहां सरकार में कल्पना शक्ति का नितान्त अभाव है। समूचे भारत में एक हैमरान का छोड़

कर एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं है, जो गाधीजी के साथ पश आ सके।" उसने पूछा, 'हैण्डसन पश आ सकते हैं ?' मैंने कहा, 'हा।" उसन पूछा 'लाड प्रबान के बारम आपकी क्या राय है ?' मैंने उत्तर दिया, 'मेरी कोई राय नही है क्योकि मैं उन्हें नहीं जानता। 'और एसक्वाइन ?' मैंने कहा, हा, उन्ह जानता हू।' दोनो ही भले आदमी हैं उसने बताया।

मैंन कहा एक अन्य वकल्पिक सुझाव यह है कि अबकी बार जो वाइसराय जाए उसे तुरत बातचीत चलाने का अधिकार देकर भेजा जाए। एक विकल्प और भी है। स्वय भारत-सचिव अथवा उप-सचिव बातचीत का श्रीगणेश करने भारत क्या न जाए ? चौथा विकल्प भी है वह यह कि गाधीजी को किसी अन्य काय के बहाने यहा बुलाया जाए पर असली उद्देश्य बात चलान का हो। उसन यह बात स्वीकार की कि भारत का वातावरण दूषित है और उसम सुधार करन की जरूरत है। सारा प्रश्न मनोविज्ञान का है पर यह सब कुछ कसे किया जाय ? हम यह देखकर बडा दु ख होता है कि जिस बिल की खातिर हमने स्वास्थ्य बिगाडा मित्र गवाए समय नष्ट किया उस पीछे ढकेलनेवाला ठहराया जा रहा है। सर सेम्युअल न अपना स्वास्थ्य बिगाड लिया ह और मैं यह सारा भार तरुण होने के कारण ही उठा सका हू। पर उसका यह पुरस्कार है। मैंन कहा कि इन सारी बाता की ओर ध्यान देते समय भारत क वतमान वातावरण को भी ध्यान मे रखना चाहिए तब आपकी समझ म आ जायगा कि भारतवासी इस बिल के बारे म इतने उदासीन क्या हैं। उसन जिज्ञासा की कि सर सेम्युअल होर को खोकर भारत को दु ख होगा या नहा ? मैंने कहा बिलकुल नही। उसने पूछा, पर मिस्टर गाधी को ता दु ख होगा ही ? मैंने कहा कि गाधीजी को यदि दु ख होगा तो केवल इस कारण कि वह उन्हे व्यक्तिगत रूप स जानत हैं। वह सर फाइण्ड लेटर स्टीवट को भी जानत है। पारस्परिक सम्पक का बडा महत्त्व है। उसन पूछा लाड हैलिफक्स के बार म क्सी धारणा है ? मैंन उत्तर दिया कि 'उन्होंने एक अनिवाय स्थिति के आग आत्मसमपण कर दिया अब उनकी साख नही रही है। पर तो भी भारत म उनके लिए आदर का भाव है। हा भारत म जो अग्रेज हैं उनक मन म उनके लिए आदर का भाव नहीं है। उसने बताया कि 'लाड हैलिफैक्स का अब भी बडा प्रभाव है भारत म उनके प्रति यह धारणा सही नही है। मैंने कहा कि मुझे यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई। वह बोला कि 'लाड हैलिफक्स न भारत का अपन जीवन का मिशन बना लिया है।

उसने कहा कि मैंने उस जो कुछ बताया है उसपर वह विचार करेगा और मेरी सहायता करने की कोशिश भी करगा। उसने कहा मेरी पत्नी स मिलिए

और मेरे तथा कुछ अन्य मित्रों के साथ दोपहर का भोजन करने आइए। मैं आपकी भरसक सहायता करना चाहूंगा। यहां कितने दिन ठहरने का विचार है?' मैंने कहा 'जितने दिन ठहरना आवश्यक होगा पर व्यर्थ समय गवाने की इच्छा नहीं है।' उसने कहा कि वह इस बात को ध्यान में रखेगा। उसने श्री वाल्डविन से भी मिलने की सलाह दी। लार्ड जटलैंड भी शीघ्र ही मिलेंगे। इन लोगों को संधि वाली बात नहीं रुची। मैंने कहा कि 'मैं संधि' शब्द का कोई महत्त्व नहीं देता मैं न संधि शब्द का प्रयोग करूंगा, न पैक्ट शब्द का। मैं तो केवल यही चाहता हूं कि दोनों पक्ष एक दूसरे को समझने में लग जाएं और यह केवल आपसी सम्पर्क से ही सम्भव है। उसने पूछा "क्या आपकी यह धारणा नहीं है कि आगामी अप्रैल तक सम्पूर्ण भारत-सरकार का कायाकल्प हो जायगा? तबतक नया वाइसराय भारत जा पहुंचेगा और पारस्परिक सम्पर्क स्थापित करना सम्भव होगा। मैंने उत्तर में कहा कि 'इसमें काफी देर लग जायगी। बोला कि 'वर्तमान भारत सरकार की धारणा है कि मिस्टर गांधी के साथ बात करने से क्या लाभ होगा! मैंने कहा कि उन लोगों से यह भी पूछा जाय कि गांधीजी से बात न करके क्या लाभ हुआ? उसने स्वीकार किया कि यह जवाब बिलकुल ठीक उतरा। इसके बाद उसने जानना चाहा कि भारतवासी अंग्रेजों की नेकनीयती पर शक क्यों करते हैं। मैंने कहा कि इसका दोष वर्तमान वातावरण को देना चाहिए। उसने पूछा, यह वातावरण किसने पैदा किया? मेरा उत्तर था 'अंग्रेजों ने भारत में रहनेवाले अंग्रेज व्यापारियों ने।' उसने कहा 'आप यह भूल जाते हैं कि उन लोगों की शिक्षा-दीक्षा त्रुटिपूर्ण रही है, और वे सौजन्य शिष्टाचार के तकाजे से अनभिज्ञ हैं। वे लोग हमारी जाति के सच्चे प्रतीक नहीं हैं। मैंने उत्तर दिया, 'पर भारतवासियों को तो यह मालूम नहीं है। उन्हें आपकी जाति के सच्चे प्रतीकों के सम्पर्क में आने का अवसर ही कहां मिला है? बटलर बोला, वे लोग भोंडेपन से पेश आते हैं और ऐसे काम कर बैठते हैं, जिनके साथ मेरी कोई सहानुभूति नहीं है।

उसने पूछा कि क्या साम्यवाद जोर पकड़ रहा है? मैंने उत्तर में कहा 'हां क्योंकि सरकार और साम्यवादी लोग दोनों गांधीवाद की हत्या करने में लगे हुए हैं। लोग-बाग यह धारणा बनाते जा रहे हैं कि डरा धमकाकर ही स्वराज्य हासिल किया जा सकता है। उसने पूछा 'क्या आप किसी ऐसे देश का नाम बता सकते हैं, जिसने स्वेच्छापूर्वक अपना कब्जा जिस ढंग से हम इस बिल के द्वारा छोड़ने की तैयारी कर रहे हैं उस ढंग से छोड़ा हो?' मैंने कहा कि "जनता को कृतज्ञ होने का कोई कारण नहीं है।' उसने कहा यह बड़े दुर्भाग्य की बात है और

पूछा कि क्या भविष्य का बात सोचकर मुझे निराशा का भान होने लगता है। मैंने उत्तर दिया, हा, भारत मे इस समय जो वातावरण है उसे देखता हू तो मैं भी निराश होने लगता हू। उसने कहा कि मेरे विचारो के साथ स्वय उसके विचार मेल खाते हैं पर वह यह नही जानता कि इन भावनाओ को साकार कैसे किया जाय। मैंने कहा 'मैंने आपके सामने आधा दजन विकल्प रख दिये, अब कुछेक आप भी रखिए। यह विश्वास करने को जी नही चाहता कि ब्रिटिश राजनीति का इतना दीवाला निकल गया है कि वे अपनी भावनाओ को कार्यान्वित नही कर पा रहे हैं।'

उसने मुझे दुबारा लिखने का वचन दिया है और भरसक सहायता देने का आश्वासन भी। मैंने कहा कि हैण्डसन गाधीजी से मिलनेवाला था पर ठीक समय पर उसे टाल दिया गया, तब से तीन वर्ष हो गये मैं प्रतीक्षा करता आ रहा हू। वह चुपचाप सुनता रहा। ऐसा प्रतीत होता है कि भारत मे तैनात लोग ही सारी कठिनाइया पैदा कर रहे हैं।

३५

२० जून १९३५

सर जार्ज शुस्टर से भेंट

बातचीत एक घण्टे तक चली। इस समय वह अखिल साम्राज्य आर्थिक कान्फ्रेंस की अगली बैठक की तैयारी करने मे लगा हुआ है। उसका विश्वास है कि ओटावा कान्फ्रेंस बुलाकर भारी भूल हुई है। उस भारत मे ओटावा कान्फ्रेंस का पक्ष इसलिए लेना पडा कि हम लोगो ने कुछ विशेष नही दिया था। ओटावा के बारे मे एकमात्र सतोषजनक बात यही थी कि हम एक दूसरे से विदा हुए तो शत्रुता की भावना लेकर विदा नहीं हुए। उसने कहा वास्तविकता की ओर से मुह फेरना उचित नही है। हरेक देश की अपनी निजी समस्याए हैं और इस आधार पर नये गुट अस्तित्व मे आ सकते हैं। वर्तमान स्थिति की चर्चा करते हुए उसने बताया कि इस समय इग्लैंड की २० प्रतिशत जनता फाका कर रही है और २० लाख आदमी बेकार हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि पूरा देश पोषक तत्त्वो के अभाव के दौर से गुजर रहा है। इसका एकमात्र परिणाम यह होगा कि समूचे राष्ट्र का स्वास्थ्य बिगड जायगा और पूरी-की पूरी जाति शरीर से दुर्बल हो जायेगी। वह

उत्पादन को कम करने के पक्ष म नही है। उसका कहना है कि देश म समृद्धि लानी है तो कृषि-उत्पादन के मूल्या म वद्धि करनी होगी और यह उत्पादन को सकुचित करके नही बल्कि पसेवाले वग पर अधिक कर लगाकर ही हा सकता है जिससे बीस लाख बेकारा का पट भर अन्न दिया जा सके स्कूल जानवाले बालका को मुफ्त भोजन और मुफ्त दूध दिया जा सके।' मैंन कहा कि 'यह सब तो ठीक है पर मुझे तो भारत की अधिक चिन्ता है। उसे शिकायत है कि लागो को इग्लड तक के बार मे बात करन का अवकाश नही है भारत की बात करने का किसके पास समय है ?

उसने नविल चेम्बरलेन से बात की थी, पर मुझे किस किससे मिलना चाहिए यह वह नही सुझा सका। उसन कहा कि मैं लिनलिथगो स जरूर मिलू वह उसे इस बार म सब बातें लिखगा। उसन जेटलैंड और होर स भेंट करने की भी सलाह दी। उसकी राय म साइमन स मिलना व्यथ होगा क्योकि उसम स्पष्टवादिता का अभाव है। पर मुझे हालिफैक्स से अवश्य मिलना चाहिए भले ही १५ मिनट के लिए मिल पाऊ। मैंने पूछा कि मैं १५ मिनट मे अपनी बात कसे कह पाऊगा ?' बोला कि यदि आप १५ मिनट मे नही कह पायेंगे तो कभी नही कह पायेंगे। लन्दन काम-काजी शहर है १५ मिनट यथेष्ट हैं।' मैंन बताया कि राजनैतिक अस्थायी सधि के बगर भारत म रचनात्मक काय असम्भव है। उसन मेरी बात मानी भरसक सहायता दन का वचन दिया, पर कहा यह काम आसान नहीं है। लोगा के पास सोचने तक का समय नही है। (सर बसिल) ब्लेक्ट के बारे म उसन कहा कि उसका पानी उतर चुका है पर लिटन और हेनरी स्ट्राकाश के बार म उसकी धारणा अच्छी है।

मैं अपन गाव म जा कुछ कर रहा हू उसकी बाबत मैंन उस बताया, ता उसन बडी दिलचस्पी जाहिर की और कहा दूध के पाउडर स ताजा दूध कही अच्छा है।' उसन सलाह दी कि इस विषय पर लिनलिथगा स बात करना न भूलू। बाला, जब कभी मरी सहायता की जरूरत हा आ जाइये। मैं यथाशक्ति सहायता करूगा।' उसन बताया कि वह जबतक भारत म रहा, एक नायस का छाडकर किसी ने उसकी सहायता नहा की और और तो बराबर उसके खिलाफ रहा। उन्हें इस बात का भी अहकार है कि अब वहा कल्पना शक्ति बची ही नही।

३६

२४ जून १९३५

सर बसिल ब्लकेट के साथ दोपहर का भोजन

इनकी धारणा है कि आर्थिक अवस्था सुधरती जा रही है पर यदि विशेष प्रयत्न नही किया गया तो वतमान समृद्धि टिकनेवाली नही। इसका कहना है कि मूल्य स्तर म २० प्रतिशत तक की वद्धि अत्यावश्यक है। मानता है कि सावजनिक कार्यों म खच करना वाछनीय है। इसका परिणाम यह हो सकता है कि पौंड की दर म कमी हो और सोने के मूल्य म वद्धि हो। कहता है फ्रास सोन स बेतरह चिपटा हुआ है। उसने पहले स ही समझ रखा था कि फ्रास का सोने का मोह त्यागना पडेगा और अब भी उसकी यही धारणा है कि एक-न एक दिन उसे यह करना ही होगा। उसके विचार म चादी तेजी पकडेगी। इस मामले को लेकर अमेरिका म बडी राजनतिक छीछालेदर हो रही है पर इतने पर भी अमरिका म सारी चादी हस्तगत करने की सामथ्य है। उसने मुझस एक अच्छा सवाल किया, अगर चादी १०० रुपय से ऊपर गई तो भारत क्या करेगा ? मैंने उत्तर दिया कि सम्भव है हम चादी के निर्यात पर प्रतिबध लगा दें। उसन आशका व्यक्त की कि ऐसा किया गया तो तस्कर व्यापार जोर पकडेगा और चादी के रुपय पर दबाव बना रहेगा। उसका सुझाव है कि नोटो को चादी म बदलने पर रोक लगा दी जाए। नये सिक्के चलाये जाए जिनम आज के रुपय की आधी चादी रहे। जिनके पास आज के रुपये का सग्रह है उन्हे उसे गलाकर अमरिका को निर्यात करने और इस प्रकार नफा बटारने की छूट रहे। उसका सुझाव ठीक लगता है, क्योकि यदि एसा नही किया गया तो रुपय की विनिमय दर १/६ स ऊपर चली जायगी। कम स कम उसका सुझाव और सवाल तक सगत थे। मैंने कहा कि निकट भविष्य म चादी का भाव चढने की सम्भावना नही है। बोला, 'कौन कह सकता है क्या होगा ?

३७

२४ जून १९३५

श्रीमती शुस्टर के निवास-स्थान पर ग्राम-कल्याण-संघ की बैठक मे भाग लिया। सर माल्कम हेलो और (टाइम्स के सम्पादक) श्री डालिंग दोनो ने दो बातो पर जोर दिया। एक तो राजनेता लोग ग्रामोत्थान संबधी योजना मे हाथ बटाने को उत्सुक हैं। अबतक सरकार पसा फेंकती रही है। अब भविष्य मे सफलता तभी मिलेगी जब गैर सरकारी संस्थाए सहयोग देंगी और गाववालो की प्रवृत्ति, साधन और कार्य प्रणाली को ध्यान मे रखते हुए उनके साथ सम्पर्क बनाया जायगा। दूसरे दोनो ही की यह धारणा थी कि ग्रामीण तीव्र बुद्धि का होता है और यदि कोई नयी प्रणाली लाभकारी प्रतीत होती है तो उसे अपना लेता है वह अपने हितो के प्रति काफी सचेत है।

तीसरे पहर सर हेनरी पज कापट के साथ चाय ली। उसका कहना है कि अब जबकि बिल पास हो गया है, अच्छा वातावरण तैयार करना अत्यावश्यक है। उसे हार्दिक विश्वास है कि भारतवासियो को ठोस अधिकार दिये गये हैं और अब जबकि वाद विवाद का अंत हो गया है इन अधिकारो का काम मे लाया जायेगा।

३८

२८ जून १९३५

निम्नलिखित सज्जनों के साथ कामन्स-सभा भवन मे दोपहर का भोजन किया

डब्ल्यू किर्कपैट्रिक, एस० एम० हैमरस्ले, रजिनाल्ड क्राफ्ट एन्थनी क्रासली जाजेफ नाल एडमिरल कैम्पबेल, हैमिल्टन कर।

इनमे से अनेक मन्चेस्टर के हितो का प्रतिनिधित्व करते थे। मैंने स्पष्टवादिता से काम लिया।

मैंने मन्चेस्टर के सामने आनेवाले निम्न खतरो से उन्हें आगाह किया

१) विदेशी कपडे पर सरक्षणात्मक चुगी,

२) आय की आवश्यकता,
३) रुई की खपत म जापान की मजबूत स्थिति,
४) उत्पादन-व्यय म कमी करने की हमारी क्षमता।

हम बातें करते रहे पर उनके लिए यह अप्रिय सत्य पचाना कठिन प्रतीत हुआ। मैंने उन्हें बताया कि मोदी का बम्बई की मिलो का समथन प्राप्त नही है।

मैंने इन लोगो को सुझाया कि सबमे अच्छा तरीका यही है कि भारत के राजनेताओ के साथ मेल मिलाप बढाया जाये और उनकी सदभावना प्राप्त की जाए। मरे इस कथन का मम दे हृदयगम नही कर सके पर उन्ह अपनी कठिनाइयो का भान था। मैंने उन्ह बताया कि बर्मा म भारतीय कपडे को जो तरजीह दी जाती है उसका कारण यह है कि भारत बर्मा के तेल को तरजीह दता है। मिलो म लगनेवाली सामग्री तथा रुई पर चुगी लगान म २५ प्रतिशत सरकारी चुगी का निराकरण नही हो जाता। इन लोगो को मेरी खरी खरी बातें अच्छी नही लगी पर हमने मित्रो के रूप म एक दूसर से विदा ली। श्री नासबी ने कहा कि व लोग समय के साथ नही चल रह हैं। हैमरस्ले विदा हुआ तब बोला आपके पास कोई रचनात्मक सुझाव है क्या ? मैंन उत्तर दिया, 'हा है। आप मुझे सद भाव दीजिए मैं आपका कपडा लूगा। एक उद्योगपति के नाते मुझ उसकी चिन्ता नही है पर एक राजनेता के नाते चिन्ता की बात अवश्य है।

पर ये सब कुण्ठित बुद्धि के लोग हैं।

३६

२६ जून, १६३५

सर फाइण्डलेटर स्टीवार्ट के साथ दोपहर का भोजन
बातचीत एक घण्टे स अधिक चली

मैंने उसे बताया कि इन दिनो मैं क्या कुछ करता रहा। मैंन कहा कि मुझे एसा एक भी आदमी नहा मिला है जो सिद्धान्त रूप म मेरे साथ सहमत न हुआ हो। उसने कहा कि वह खुद मिस्टर गाधी को अपनी आर करन का वतरह उत्सुक है। पर वह यह नही जानता कि यह कस सम्भव हो। वह गाधीजी की मौलिकता पर लट्टू है। उसने बताया कि किस प्रकार द्वितीय गालमेज कान्फ्रेंस के अवसर पर

उन्होंने वाफ़स के गठन की आलोचना म एक एसी इमारत की उपमा दी थी जिसके निर्माण मे चतुभुजी इटा की बजाय बडे बडे पत्थर एक-दूसरे के ऊपर रख दिय गये हो और इस प्रकार असम्भव का मम्भव बनान की कोशिश की जा रही हो। वह पक्ट के खिलाफ है। भारत और इग्लैंड म जो विरोध की भावना फली हुई है, उसको ध्यान म रखना आवश्यक है। लोग-बाग पैक्ट के पक्ष म नही है। उसे यह विचार रुचिकर लगा कि यहा स कोई घोषणा की जाए और उसके उत्तर म मिस्टर गाधी काई घोषणा करें। वैसी घोषणा तो होगी ही पर वह चाहता है कि वह पारस्परिक सम्पक होन के बाद की जाए। इस सम्भ म उसन मुझसे यह जानना चाहा कि यदि यहा से काई घाषणा की जाए ता क्या मिस्टर गाधी भी जवाबी घोषणा के दौरान कुछ इस प्रकार के उदगार व्यक्त करेंगे— मुझे योजना अच्छी नही लगी, पर बातचीत हुई है और मैं समझता हू इसकी आजमाइश करना उचित रहेगा।' मैंने उत्तर म कहा कि यदि गाधीजी के साथ ठीक ढग से पश आया गया तो उनके लिए एसे उदगार व्यक्त करना असम्भव नही है। मैंने कहा, "यदि आपलोग उनके सामने अपना दिल खोलकर रख देंगे और उन्हे अपनी सीमित सामर्थ्य की बात बतायेंगे तो वह अवश्य आपकी सहायता करेंगे।' मैंने उस बताया कि जिस प्रकार द्वितीय गोलमेज कान्फ्रेंस के अवसर पर कोई शासन विधान प्राप्त किये बगैर ही वह जाने को तयार थे बशर्ते कि दोनो देशा के बीच मैत्री का समझौता हो जाए। वह हृदय परिवतन मे विश्वास रखत हैं। बिल की भाषा स उनका कोई सरोकार नही है वह उसके पीछे निहित भावना को देखना चाहते हैं। मैंने उसे बताया कि गाधीजी न लाड सॅकी और श्री मकडानल्ड के बार मे प्रतिकूल पर श्री बाल्डविन और सर सम्युअल होर के बारे मे अत्यत अनुकूल धारणाए बनाई थी। उन्होने कहा था कि यह कितनी विचित्र बात है कि उन्ह अनुदार दलवालो ने मन्त्र मुग्ध-सा कर लिया था क्योंकि उस दल के लोगा की धारणा बन रही थी कि स्वय गाधीजी उनके जसे ही मानस क व्यक्ति हैं।

स्टीवार्ट ने कहा 'हम यह कदापि नही चाहेंगे कि मिस्टर गाधी मोर्चे के दूसरी ओर हा। हमे यह बात कभी रुचिकर नही होगी कि वह सत्व हमारे विरुद्ध रह। पर उसने बताया कि मिस्टर गाधी और वाइसराय की मुलाकात की बात को इतना अधिक महत्त्व दे दिया गया है, जसे वह काई दो शत्रुओ की मुलाकात जसी हो। मैंन उस बताया कि गाधीजी की वाइसराय से पहली बार मुलाकात तब हुई जब १९२२ म वह लाड रीडिंग से मिल थ। उसके बाद वह १९२९ म और फिर १९३१ मे लाड इर्विन स मिले थ। इन मुलाकाता के विषय पक्ट ही थे।

गाधी इर्विन-पक्ट बाद आकस्मिक घटना नही थी।" मैंने यह भी कहा कि ' गाधी जी लाड चेम्सफोड से भी मिले थ, और उसने उनसे सहायता मागी थी। गाधीजी अधिकारिया से पक्ट की खोज मे ही मिलते रहे हो ऐसी बात नही है। पक्ट पर सही होन के बाद वह स्थिति म सुधार करने के निमित्त यहा मे वहा दौडते रह है।"

उसने कहा हम लोग शासन व्यवस्था मे आस्था रखते हैं। यह माना कि मिस्टर गाधी भारत की ६० प्रतिशत जनता के उपास्य हैं पर शासन विधान की दष्टि म उनकी क्या पोजीशन है? मैंने तत्काल उत्तर दिया ' आशा है आप उनके मत्री बनने तक नही ठहरे रहेंगे। ' उसने कहा नही। यदि आपस म एक दूसरे को समझने की मनोवृत्ति पदा हाने के बाद मिस्टर गाधी अधिकारियो से मिलेंगे तो यह कोई सनसनीखेज बात नही होगी। यदि यहा परिपाटी छोडकर चलनेवाला वग प्रधान मत्री से मिले तो यह कोई असाधारण बात नही होगी। पर मिस्टर गाधी स मुलाकात की बात को एक दूसरे ही दष्टिकोण से देखा जा रहा है। क्या सा तो कहना कठिन है पर है यही बात। इसके बाद वह बोला, आपका अभिप्राय मैंने अच्छी तरह समझ लिया है और म उसस सहमत हू। अब मैं समस्या का हल तलाश करने म लगूगा यह सब आप मुझपर छोड दीजिए।

उसने मुझसे ब्रेबान और एमसन के बार म मेरी राय मागी। मैंने कहा कि एमसन के साथ गाधीजी की अच्छी तरह निभी थी पर ब्रेबान के बार म मैं कुछ नही जानता। बस तो गाधीजी यहा भी आ सकत है पर उसम अटकलबाजियो का बाजार गम होगा। हमने किसी सामाजिक समारोह के अवसर पर गाधी वाइसराय मिलन की उपादेयता की भी चर्चा की और फिर किसी गवनर के साथ उनकी अन्य विषयो पर बात करने का भी जिक्र आया।

उसने जानना चाहा कि मैं गाधीजी के सम्पक मे कसे आया? मैंने आप-बीती सुनाई और उस बताया कि किस प्रकार मैं एक बार भारत रक्षा कानून की गिरफ्त मे आ गया था। वह सहमत हुआ और बोला कि जो चीज सबसे ज्यादा जरूरी है वह है गाधीजी क साथ पेश आने का तौर तरीका। उसने कहा कि वह यह बात अच्छी तरह समझता है कि इस काय के लिए वाइसराय नितात अनुपयुक्त है। हैण्डसन, एमसन या ब्रेबान—उसे ये तीन आदमी पसद हैं। मैंने उसे बताया कि मुझे सुझाव दिया गया है कि मैं श्री बाल्डविन से मिलू। उसने इसकी व्यवस्था करने का वचन दिया। वह मुझे फिर लिखेगा और बतायगा कि अगली भेंट के लिये कौन-सा दिन ठीक रहेगा। मेरे मिशन के बारे म वह लाड जेटलड से भी बात करेगा।

मैंने उसे यह साफ-साफ बता दिया कि कांग्रेस सरकारी मशीनरी को दमनपूर्वक चलाने के लिए पद ग्रहण नहीं करेगी। यदि कांग्रेस पद-ग्रहण करने को तैयार हुई, तो एकमात्र रचनात्मक कार्य सिद्धि के लिए। मैंने बताया कि इसकी परिधि में शिक्षा उत्पादन में वृद्धि आदि अनेक विषय आते हैं। क्या गवर्नर लोग इस कार्य में कांग्रेस का हाथ बटायेंगे? उसने उत्तर में कहा कि नीति निर्धारित करने के मामले में मंत्री लोग स्वतंत्र रहेंगे गवर्नर कदापि हस्तक्षेप नहीं करेंगे। यदि वर्तमान स्थिति को ही बल प्रदान करना होता, तो यह बिल पास कराने में जो भगीरथ प्रयत्न करना पड़ा है उसकी क्या जरूरत थी? उसने पूरे मनोयोग से मुझपर यह प्रभाव डालने की कोशिश की कि उन लोगों की नीयत साफ है।

४०

२६ जून, १६३५

लार्ड लोदियन से भेंट

बातचीत ८५ मिनट चली

मैं जो कुछ औरों से कहता आ रहा हूं वह इनसे भी कहा, और पूछा, 'क्या आपका भी यह विश्वास नहीं है कि एक प्रगतिशील बड़ा कदम उठाया गया है?'' उन्होंने कहा 'क्या मेरा यह विश्वास नहीं है? मैं इस मामले में अनुदार दलवालों से सहमत हूं कि यह आत्मसमर्पण के तुल्य है। आप लोगों ने अभी तक कोई शासन-विधान नहीं बरता है इसलिए आप नहीं जानते कि आपको कितनी बड़ी शक्ति सौंपी गई है। यदि आप शासन विधान पर ही दृष्टि गड़ाये रहेंगे तो आपको प्रतीत होगा कि समूचे अधिकार या तो गवर्नर-जनरल के हाथ में रख गये हैं या गवर्नरों के हाथ में। पर क्या हमारे यहां भी सारे अधिकार राजा के हाथ में नहीं हैं? सारे काम राजा के नाम से किये जाते हैं पर क्या कभी राजा हस्तक्षेप करता है? हम लोग कायदे-कानून बरतनेवाली जाति हैं एक बार अधिकार विधायकों को सौंपने के बाद न तो गवर्नर ही दखल देंगे, न गवर्नर जनरल ही। हां यदि कानून और व्यवस्था को खतरा पैदा हुआ तो गवर्नर और गवर्नर जनरल अवश्य अपने विशेष अधिकारों का उपयोग करेंगे। पर शायद आपका शांति भंग करने का तो इरादा होगा नहीं। सरकारी अमला सदैव आपकी सहायता करेगा। इंग्लैंड का मजदूर दल सरकारी अमले को गालियां दिया करता था पर एक बार सुशासन की बागडोर हाथ में लेने के बाद वह सरकारी अमले का प्रगाढ़ मित्र बन गया।

आप लोग खुद ही देख लेंगे। हम लाग अनुशासनप्रिय जाति हैं। सरकारी अमला अपनी सलाह अवश्य देगा, पर एक बार कोइ नीति निर्धारित हुई कि अमला पूरी वफादारी और नेकनीयती के साथ उस कार्यान्वित करेगा।' मैंने उन्हे बीच ही म टोक दिया और कहा कि यहा और वहा के सरकारी अमले म महान अन्तर है। मैंने कहा कि आपको भारत म सरकारी अमले का भारतीयकरण तेजी से करना होगा। लाड लोदियन सहमत हुए। उन्हान कहा आप लागा को केवल एक मामल म डटकर मोर्चा लना होगा, वह है सैन्य विभाग के सचालन का अधिकार। पर एक इस विभाग को छाडकर बाकी सारे के-सारे अधिकार अब आपके हो गये हैं।' साथ ही उन्होने मेरी यह दलील भी मानी कि भारत मे मनोवृत्ति म सुधार करने की जरूरत है फिलहाल वह हद दर्जे की दूषित है। उन्हान कहा 'इस दिशा मे हम असहाय है। आपको पता नही है, यहा हम कट्टरपथियो से कसा लाहा लेना पडा था और इस मामले म श्री बाल्डविन और सर सेम्युअल होर ने किस दु साहस से काम लिया था। वह उदारतावाद की भारी विजय थी। हम मनोवृत्ति का सृजन नही कर सके क्योकि हम कट्टरपथियो का बखशना नहीं चाहते थे। उन लागा ने इस बिल को आत्म समपण के नाम से पुकारा और हम उनस पश आने के लिए एक दूसरे ढग की भाषा का प्रयाग करना पडा। इसके अलावा एक दूसरी कठिनाई लाड विलिग्डन के बाबत थी। उन्हे महात्मा पर बिलकुल भरोसा नही है या व बहुत कुशाग्र नहीं है। पर मध्य जुलाई तक बिल कानून बन जायेगा और अगली अप्रल तक वहा नया वाइसराय जा पहुचेगा। तब सब कुछ बदल जायेगा। हमे इस दिशा मे कुछ करना है।' मैंने उत्तर दिया मुझ सब्र नही है। मैं अगली अप्रल तक रुकने को तैयार नही हू क्योकि तब तक पासा पड चुका होगा। भारतीय जनमत इन सुधारा को सदेह की दृष्टि से देखना है आगामी अप्रल तक नये निर्वाचना की तयारी सुधारो को ठप करने के उद्देश्य स की जायेगी।' वह इस बात पर सहमत हुए कि कुछ-न कुछ तुरत ही करने की जरूरत है। उन्हान जिज्ञासा दिखाई कि क्या मर पास कोई ठोस सुझाव है? मैंन कहा, सबस पहले तो व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित हा और उसके बाद एक समझौता हो। उन्हाने पूछा 'इस समय भारत म सबस अच्छा गवनर कौन-सा है?' मैंने कहा सर जान एण्डसन। उन्होंने पूछा और लाड ब्रेबान? मैंने कहा सो तो मैं कह नहा सकता पर मेरी समझ म सर जान एण्डसन बेहतर हैं। उन्हाने बात स्वीकार की। मैंने कहा या तो एण्डसन को बातचीत चलान की अनुमति दी जाये अथवा भारत-सचिव भारत जाकर स्वय यह काम हाथ म लें, या फिर गांधीजी को यहां बुलाया जाय।" उन्होंने सहमतिपूवक कहा कि वहा की मनोवृत्ति

का वदलने के लिए कुछ-न कुछ अविलम्ब करना आवश्यक है। उन्हें आशा है कि लाड जेटलड कुछ-न कुछ करन म समथ होग। उ होने लाड जेटलड लाड हैलिफक्स तथा श्री मैंक्डानल्ड स बात करने का वचन दिया और कहा कि मुझे श्री मक्डानल्ड से मिलना चाहिए। मैं इसाक फूट से भी मिल सकता हू पर वह अधिक सहायता नही करेंगे। मुझे लायड जाज मे भी मिलना चाहिए। वह अब श्री मक्डानल्ड को मेरे बारे मे लिखेंगे। तत्पश्चात मुझे मुलाकात का समय निश्चित करना चाहिए। उन्होंने मुझसे कहा एक बार मुझसे फिर मिलिए।

लाड लोदियन सुधारो के बारे म बडे आशावान हैं और समझत हैं कि इन सुधारो के द्वारा एक बडा प्रगतिशील कदम उठाया जा रहा है। पर उन्होने मेरी यह बात मानी कि जसी कुछ मनोवत्ति है उसे देखते हुए इन सुधारा की खूबिया को ठीक ठीक नही समझा जायेगा। उन्होंने मेरी भरपूर महायता करने का वचन दिया। आज तीसरे पहर वह लाड हैलिफैक्स से बात करेंगे। मैंने उन्हें क्वटा क मामले का साग ब्योरा दिया। वह मुझस पुन भेंट करेंगे।

४१

२७ जून १९३५

लाड जेटलड से भेंट

भेंट २ ४५ पर आरम्भ हुइ और ४० मिनट चली

सौजन्य शिष्टाचार क बाद मैंने उन्हें उनकी नयी नियुक्ति पर बधाई दी जिसस वह बहुत प्रसन्न हुए।

मैंने उन्हें अपने मिशन का उद्देश्य बताया। वह बहुत प्रभावित हुए। चुपचाप सुनते रहे, शायद ही कभी बीच मे टोका हो। एक बार उन्होंने टोककर पूछा कि क्या मिस्टर गाधी व्यावहारिक व्यक्ति हैं ? मैंने कहा कि लोर्ड हैलिफक्स, सर फाइण्ड्लेटर स्टीवार्ट तथा स्मटस—सभी गाधीजी के लिए इसका प्रमाण पत्र देंगे। वह बोले, 'पर हिन्द स्वराज्य' भी तो उन्हीं की रचना है ?' मैंने उत्तर दिया कि मैं तो केवल समझाने की कोशिश कर सकता हू। उनके कुछ अपने आदर्श हैं जिनकी सफलता वाछनीय है पर जबतक उन्हें मूर्त रूप देना सम्भव न हो किसी आदमी के लिए उनके अनुरूप आचरण करना कठिन काय है। मसलन गाधीजी ने अपनी पुस्तक म अस्पतालो की आलोचना की है, पर मैं उन अस्पतालो

मा हवाला दे सकता हू जो लाला लाजपतराय तथा चित्तरजन दास न बनवाय थे, और जिनका उन्होने उदघाटन किया था।' लाड जेटलड बोले कि स्वय मिस्टर गाधी ने आपरेशन कराया था।' मैंने स्वीकार किया और कहा कि उन्होने क द्वितीय विवाह का भी अनुमोदन किया था। उन्होने अहमदाबाद क साथ वेतन घटाने के बारे म भी समझौता किया था। आपको उनकी व्यावहारिकता के विषय मे किसी प्रकार का सदेह नही करना चाहिए। वह किसी चीज का गुण दखत है उसके रग रूप की उन्हें जरा भी चिन्ता नही है। वह तो भावना क कायल है।' लाड जेटलड ने कहा, 'आपने जो बात कही उसकी मैं सराहना करता हू। मैं गलत फहमी का दुश्मन हू। मैं जब कलकत्ते म था ता मेरी समझ म यह नही आता था कि गलतफहमी हो ही क्या। मैंने कहा 'आप भारत म अपने बार मे कोई गलत फहमी छोडकर नही आय है। लाड हैलिफक्स भी कोई गलतफहमी छोडकर नही आय हालाकि उन्होने ६० हजार आदमियो को जेलो मे ठूस दिया था। लाड जेटलड बडे खुश हुए बोले कि अग्रजो म काग्रेस के बारे म आशका की भावना काम कर रही है। ऋण अदा करने से इन्कार तथा इसी प्रकार की अन्य कई बातो ने उन्ह भयभीत कर दिया है। उन्ह आशका है कि काग्रेसी सारी सीटें हथिया लेंगे सरकार को ठप कर देंगे और ब्रिटिश राज का अत कर देगे। यह बात विपक्षी दल पर ही लागू नही होती है। जो लोग हमारा समथन करते हैं उन्होंने भी अपनी निजी चिट्ठियो म कहा है कि हम आफत मोल ले रहे है। उन्होने कहा 'काश, हमार भारतीय मित्र यह जान पाते कि हम बिल पास कराने म किस सघष के दौर स गुजरना पडा है। मैंने उत्तर मे कहा कि यदि उन्हे यह बात समझाने लायक वातावरण तयार हो जायगा तो उन्ह समझाना भी सम्भव हो सकेगा। फिलहाल यह सम्भव नहीं है। इस समय तो पास तक मत फटको की मनोवृत्ति ने वातावरण को दूषित कर रखा है।'

मैंने क्वेटा के मामले की चर्चा उठाई। उनके सामने गाधी विलिंग्डन पत्र व्यवहार मौजूद था। मैंने कुछ अश पढकर सुनाय और कहा कि देखिए दोनो के रुखो म कितना अन्तर है। उन्होने मेरे अभिप्राय को हृदयगम किया और पूछा, अब किया क्या जाए?' मैंने कहा विलिंग्डन गाधी भेंट मुलाकात निरथक अवश्य साबित होगी पर होनी अवश्य चाहिए अन्यथा गवनर लोग गाधीजी स नही मिल सकेंगे। लेकिन विलिंग्डन के साथ भेंट होने के बाद गाधीजी को किसी भारतीय गवनर के सुपुद कर देना चाहिए। उन्होने कहा कि मेरी समझ म आ गया। उन्होंने फाइण्डलेटर स्टीवार्ट क साथ सम्पक बनाय रखने की सलाह दी।

उन्होंने भरसक सहायता करने का वचन दिया और कहा, एक बार फिर मिलिए।" मेरी तो धारणा है कि उनपर खासा गहरा प्रभाव पड़ा है।

४२

२७ जून १९३५

लार्ड डर्बी मुझसे मेरे होटल मे मिलने आये

बड़े ही शिष्ट हैं। शान बिलकुल नही दिखाई। ज्यो ही मैंने उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की तुरत मेरे होटल मे आकर मिलने को राजी हो गये। बिल के बारे मे बेहद उत्साह है। सद्भाव से ओत प्रोत हैं और वैसा ही सदभाव भारत मे दोनो ओर से देखना चाहते हैं। उनकी सामर्थ्य मे जितनी सहायता देना सम्भव है वह देंगे। जब मैंने लार्ड सलिसबरी से मिलने की अभिलाषा प्रकट की, तो उन्होंने उनसे इस बाबत बात करने का वचन दिया और कहा कि मुझे सर आस्टिन चेम्बरलेन से भी मिलना चाहिए। बोले 'जब कभी मेरी जरूरत हो फोन कर दीजिए। मैं खुद आ जाऊगा या आपको अपने यहा आने का निमत्रण दूगा। आप मचेस्टर भी आइये। मैं आपको दोपहर के भोजन पर बुलाऊगा, और महत्त्वपूर्ण लोगो से आपकी जान पहचान कराऊगा।

उन्होंने बताया कि कट्टरपथियो मे सर हेनरी पेज क्रॉफ्ट और लार्ड सलिसबरी बिलकुल भिन्न स्वभाव के आदमी हैं। बड़े ईमानदार हैं। लार्ड लॉयड और चर्चिल आदि लोगो जैसे बिलकुल नही है।

४३

२९ जून १९३५

पूज्य बापू

जिन जिन लोगो से मुझे मिलना था, प्राय उन सबसे मिलने के बाद अब आपको यह लम्बा पत्र लिख रहा हू। लन्दन के लोगो से भेंट मुलाकात करने मे बड़ी देर लगती है क्योकि ये लोग इतना पहले प्रोग्राम बना लेते हैं। हैलिफैक्स

म ५ तारीख को मिलने की बात है अर्थात् यहा आन के एक महीना बाद। रहे होर, सो वह जमनी इटली और चीन म इतन उलझे हुए हैं कि उन्होंने मुझस कह रखा है कि थोड दिनो तक रहिए कभी न कभी मुलाकात का समय निकल ही आयगा। पर यह मैं अच्छी तरह जानता हू कि इन दोनो को मेर यहा क काय कलाप का पूरा पता रहता है। जिन लोगो से अब तक मिला हू, उन सबको मेरे मिशन क साथ पूरी सहानुभूति है और यह सहानुभूति महज मौखिक नही है। इन सभी म सबस अधिक काम आनेवाला व्यक्ति सर फाइण्डलेटर स्टीवार्ट है और मेरा खयाल है कि इसका बडा प्रभाव है। आपके प्रति उसका पूर्ण मत्री का रुख है। वह आपकी प्रशसा करत नही अघाता। मैंने उसे आपकी चिट्ठी दी तो उसने उस बड प्रेम और भावावेग के साथ पढा। उसन सहायता करने का वचन दिया है और सहायता दे भी रहा है। उसके प्रभाव का इसीस अनुमान लगाया जा सकता है कि उसन मुझे सहज भाव स शेखी बघारे बगर बताया कि आपके द्वितीय गोलमेज कान्फ्रेंस म भाग लने का श्रेय उसी को है। (सर जॉन) हेफी ने मुझे बताया कि वह प्रभावशाली है चतुर है और दृढ प्रतिज्ञ है साथ ही मुझे यह भी मालूम हुआ है कि सरकारी अमल के हितो पर आच न आती हो तो वह भारत का ही पक्ष लेता है। मेरी समझ म यह बात अधिकाधिक पठ रही है कि नीतियो के निर्धारण के मामले म अमले के अधिकारियो का प्रमुख हाथ रहता है। इसलिए इन्ही लोगो का सम्पक काम म आनेवाला है। मत्रियो का भी महत्त्व है पर स्थायी अधिकारियो का महत्त्व कुछ कम नही है। लार्ड जटलैंड न मेरे उद्देश्य के प्रति गहरी सहानुभूति प्रदर्शित करने के बाद मुझे सर फाइण्डलेटर स्टीवार्ट क साथ सपर्क बनाये रखने की सलाह दी। इस सलाह का मम है। इसी सलाह को ध्यान म रखकर मैं इस आदमी स चिपटा हू और जितनी महत्त्वपूर्ण मुलाकातें होती हैं एकमात्र इसीके द्वारा होती हैं। इसके साथ अब तक दो बार मिल चुका हू। कुल मिलाकर ढाई घण्टे तक बातचीत हुई है। इसने मुझस कह रखा है कि सिद्धान्त के रूप म उसकी मेरे साथ सहमति है और अब कुछ-न कुछ लिखित रूप म तयार करने का समय आ गया है। क्या लिखने का समय आया है सो वह खुद तय करगा। अब मैं यहा के अपने काय कलाप का सविस्तार वर्णन करूगा।

अबतक मैं इन इन लोगो स मिल चुका हू। सर फाइण्डलेटर स्टीवार्ट जिसके साथ ढाई घण्टे बात हुई। भारत का उप सचिव बटलर जो अभी तरुण है फिर भी काफी चतुर है और उसका शील स्वभाव तो दिल को छूता है उसके साथ कोई घण्टा भर बातचीत हुई। इसी सप्ताह मे उसके साथ दोपहर का भोजन करने की बात है। लार्ड जेटलैंड ने ६५ मिनट बात की। बिल सामत सभा म पास हो

जायगा, तो उनसे फिर मिलूगा। लाथियन से भी ४५ मिनट बात हुई। उनसे भी दावारा बिल पास होने के बाद मिलूगा। लार्ड डर्बी से तो जितनी बार चाहू, मिल सकता हू। सर हैनरी पेज क्राफ्ट से दो बार मिला। मैचेस्टर के हितो का प्रतिनिधित्व करनेवाले कामन्स सभा के सदस्यो के साथ दोपहर का भोजन किया। सर हेनरी स्ट्राकाश के साथ खाना खाया। उनने कह रखा है कि जब कभी उसकी सहायता की जरूरत हो, मैं आकर उसके साथ खाना खा सकता हू। सर थामस कैटो तथा नगर के अन्य कई प्रमुख व्यापारियो से मिल लिया हू। उन्होने मुझे एक बार फिर दोपहर के खाने पर बुलाया है। सर नाल्ज गुस्टर से दो बार मिला। सर वसिल ब्लैकेट से भी मिल लिया। उसने दोपहर के खाने पर फिर बुलाया है। भारत सचिव के निजी मत्री क्रॉफ्ट के साथ खाना खाया। मैचेस्टर गार्जियन के श्री बोन से मिला। उसी पत्र के श्री क्राजियर के साथ मैचेस्टर में भेंट होगी। अब इस सप्ताह मे लार्ड लिनलिथगो लार्ड हैलिफैक्स तथा श्री मैक्डानल्ड से मिलने का प्रोग्राम है। सर सैम्युअल होर का छोड और सबका मिलने का समय निश्चित हो जाता है। फाइण्डलेटर स्टीवार्ट श्री बाल्डविन के साथ भेंट का बन्दो बस्त कर रहा है। लोदियन ने कहा अभी लायड जार्ज से मिलने की चिंता मत करिये। गुस्टर बोला साइमन से मिलने में समय क्या नष्ट करते हैं? डर्बी की सलाह है कि लार्ड सलिसबरी तथा सर आस्टिन चेम्बरलेन से अवश्य मिलू। उनका कहना है कि कट्टरपंथियो मे लार्ड सलिसबरी तथा सर हेनरी पेज क्राफ्ट सबसे अधिक ईमानदार व्यक्ति हैं। चर्चिल और लार्ड लायड के बारे मे उनकी अधिक अच्छी धारणा नही है। उन्होने कहा एक बार मैचेस्टर पधारिये। मैचेस्टर के हितो का प्रतिनिधित्व करनेवाले प्रमुख मित्रो से आपकी भेंट करा दूगा। लार्ड रीडिंग बीमार पडे है। नगर के अन्य प्रमुख व्यापारियो के साथ भी मिलूगा। मजदूर दल के अधिकाश प्रमुख सदस्य इसी सप्ताह मे कामन्स सभा भवन मे मेरे साथ दोपहर का भोजन करेंगे। बाद को धार्मिक क्षेत्र के प्रमुख व्यक्तियो तथा अन्य पत्रकारो से भी भेंट करूगा पर अपने काम के निमित्त मुझे अन्य सब लोगो की अपेक्षा हैलिफैक्स, जटलैंड होर बटलर, बाल्डविन और लोदियन ही सबसे अधिक महत्त्व के जचते है। सर फाइण्डलेटर स्टीवार्ट तो हैं ही। बस, इन्ही लोगो पर ध्यान केन्द्रित करूगा। मुझे अब क्या करना है इस बारे मे सर फाइण्डलेटर ही तय करेंगे। इस प्रकार एक तरह से मैं अब बिलकुल उन्ही पर भरोसा किये बैठा हू। बटलर तीव्र बुद्धिवाला आदमी है और उसने मेरे काम आने का आश्वासन दिया ही है।

सबसे क्या क्या बातचीत हुई वह भी बता दू। मैंने इन लोगो से कहा कि

भारतवासियो म जो यह धारणा व्याप्त है कि यह बिल प्रगति की दिशा म ले जानेवाला सिद्ध न होकर उरटे विपरीत दिशा म उठाया गया प्रतिक्रियावादी कदम है—यह कोई राजनतिक हथकण्डा नही बल्कि एक वास्तविकता है और भारत के प्रति हार्दिक भावना का प्रतीक है। मैंने उन्ह बता दिया है कि भारतीय जनता का विश्वास है कि यह नया शासन विधान शासकों का शिकजा मजबूत करने के लिए तयार किया गया है। य लोग इसपर आश्चय चकित होकर हाथ नचाते हैं और यह नही समझ पा रहे हैं कि भारतवासिया न एसी धारणा कस बना ली है। मैंने उनसे कहा कि मैं उनक इस दाव को कि यह बिल एक बडा प्रगतिशील कदम है और साफ नीयत से उठाया गया है यह मानने का तयार हू पर जनता उसे इस रूप म तभी ग्रहण करगी जब उसे उनकी साफ नीयत प्रत्यक्ष देखने को मिलगी। पर वतमान वातावरण म यह सम्भव नहीं है क्योंकि जनता वहा के अधिकारिया क आचरण मे एक दूसरी ही मनोवत्ति दखती है। मैंने कहा, मेरी बराबर यही धारणा रही है कि बिल की भाषा नही, उसमे निहित भावना ही असली चीज है। जबतक उस भावना का एहसास नहा कराया जायेगा इस बिल को परले सिर का प्रतिक्रियावादी कदम ही माना जाता रहेगा। मैंने कहा कि हरेक मामले म अ तिम निणय गवनर जनरल तथा गवनरा के ही हाथो म रखा गया है और यदि गवनर जनरल तथा गवनर अपन विशेषाधिकारो का प्रयोग करने लग जायेंगे तो शासन सोलह आने निरकुश हो जायेगा। पर यदि शासक वग वैधानिक राजतत्र की तुलना के अनुरूप आचरण करेगा जसा कि यहा बार बार सब दुहरा रह हैं —तो बिल अवश्य कल्याणकारी शासन व्यवस्था को जन्म देगा। इस प्रकार, सब कुछ इस पर निभर करगा कि सुधारो को किस मनोवत्ति के साथ अमल म लाया जाता है। मैंने इन लोगा से कहा है कि मुझे उनके सदाशय और उनकी सहानुभूति के बारे म समाधान है पर इमसे प्रयोजन पूरा नहीं होता। भारत मे जिन लोगा के हाथ म शासन की बागडोर है उनका आचरण यहा व्यक्त की गई सदाकाक्षाओ के सवथा प्रतिकूल है। मैंने ववटा का ताजा उदाहरण दिया। मैंने लाड विलिंग्डन के साथ आपका पत्र व्यवहार उन लोगा के हवाले कर दिया है और आपके अनुराध और लाड विलिंग्डन क उत्तर स प्रत्यक्ष उत्पन्न विषमता की ओर भी उनका ध्यान आकृष्ट कर दिया है। ऐसे वातावरण मे जब कि हम अपन भाई-बन्धुओ स उनके दु ख दद की घडी म मिलने तक को स्वतत्र नहीं हैं तो यह कौन मानगा कि कुछ समय बाद हम अधिक व्यापक अधिकारो का उपयोग करने की छूट रहेगी। भारत म यही आतकपूण स्थिति है जिसक प्रत्यक्ष अनुभव ने हम यह धारणा बनान को विवश किया है। नये सुधार वास्तव

म पीछे की आर ल जात ह, आगे की ओर नही। सुधारा के प्रति दूसर ढग की मनोवत्ति बनान के लिए, जिसस उन्ह सुचार रूप स अमल म लाया जा सके जिससे यहा के शुभचितका की आकाक्षा पूरी हो सके, तथा वतमान सघष की स्थिति का सदव के लिए अत किया जा सके अपक्षाकृत अधिक वाछनीय वत्ति से काम लेना होगा। यह अविलम्ब हाना चाहिए। मैंन इन लागो का यह भी बताया कि दिल्ली म मैं इस भावना क पापण के निमित्त प्रयत्नशील रहा पर मर सार प्रयत्न व्यथ गय। मैंन कहा कि यदि स्वस्थ प्रवत्ति दखन म नही आइ ता इन सुधारा स दाना दशा म कटुता बढेगी। वतमान वातावरण से चारा आर गर जिम्मदारी बढती जा रही है तथा अनुशासन का अभाव हाता जा रहा है। सरकारी अमले म उत्तर दायित्व की भावना का स्थान निरकुशता की वत्ति लेती जा रही है। मैंन खान साहब का उदाहरण देते हुए बताया कि मातहत अमले के सगठित विराध क सामने होम मेम्बर की एक नही चली। नौकरशाही मे इस धारणा न जड पकड ली है कि उसका एकमात्र कत्तव्य कानून और व्यवस्था का अक्षुण्ण रखना है। फलत जनता की ओर स आए अच्छे-स अच्छे सुझाव की अवमानना करना नौकर शाही क कत्तव्य का एक अग बन गया है। दूसरी आर, काग्रस का गर जिम्मवार वग सरकार की ओर से उठाए गए किसी भी कदम को जनता की दष्टि म सदेहास्पद बनान स नही चूकता। इस सारी चीज का एकमात्र परिणाम यह होगा कि काग्रेस का दक्षिणपथी वग कमजार पडता जायगा और वामपथी वग उत्तरो त्तर सबल हाता जायगा। यदि सरकार और जनता के बीच एक दूसर को समझन की भावना इसी प्रकार अनुपस्थित रही ता काग्रस का दक्षिण पथी वग भी सुधारा को ठप करने म लग जायगा। वतमान वातावरण स मुसलमानो का नतिक बल क्षीण होता जा रहा है व समझने लग है कि व चाह जो करें सरकार आखें मूदे रहगी। मैंन कहा कि इन कठिनाइया क बावजूद गाधीजी न अपना मानस निर्लिप्त रखा है। मैं इन लोगा को बता रहा हू, आप लोग एसे आदमी की हत्या करन म लगे हुए हैं जा ससार भर म आपका सबसे बडा हितपी है। मैं इन लोगा को यह बतान म लगा हू कि वतमान वातावरण क कारण आचार भ्रष्टता इतनी व्यापक और इतनी गहरी हो गई है कि भारत म कोइ भी रचनात्मक काय प्राय असम्भव हो गया है। यहा के अथशास्त्री भारत की जनता की क्रयशक्ति बढान क विभिन्न उपाया की चर्चा करत नही अघात पर यह तवतक असम्भव रहेगा जबतक दोना पक्षो के बीच की खाई नही पाटी जायेगी।

इस समय भारत म जो सबस अधिक शोचनीय बात है वह यह है कि एक ओर तो शासक-वग कानून और व्यवस्था कायम रखने म ही सारा समय लगाता

है और दूसरी ओर जनता अपना समय सरकार से जूझने में बिताती है। इसलिए मैं इन लोगों को सलाह देता रहा हूं कि इस क्रम को उलट देना चाहिए, और इसके लिए पारस्परिक सम्पर्क स्थापित करना अनिवार्य है। इस दिशा में पहला कदम उठाने के निमित्त यह आवश्यक है कि भारत में चुन चुनकर अच्छे से अच्छे गवनर और गवनर-जनरल भेजे जायें जिससे मंत्रियों और गवनरों के बीच संघर्ष की नौबत ही न आये। मैं इन लोगों को बताने में लगा हुआ हूं कि कांग्रेस को सरकार का संचालन करने और उसके कल पुर्जों को चालू हालत में रखने मात्र में कोई दिलचस्पी नहीं है। यदि कांग्रेसी लोग सरकार में जायेंगे और उसका संचालन करेंगे तो केवल रचनात्मक काय में संलग्न होने की गरज से करेंगे। ग्रामोत्थान स्वास्थ्य, सफाई, शिक्षा क्षेत्र का विकास गरीबों को राहत और कर का भार अमीरों पर रखने के निमित्त कर व्यवस्था में आवश्यक हेर फेर नौकरियों में भारतवासियों की संख्या में वृद्धि उद्योग की सहायता, साहूकारी जलमार्ग के लिए सरकारी नौकाओं का निर्माण बीमा सैन्य विभाग का उत्तरोत्तर अधिकाधिक नियंत्रण तथा अंतिम ध्येय सम्पूर्ण स्वराज्य—बस ये ही कार्यक्रम कांग्रेसियों को सुधार अमल में लाने के लिए प्रेरणा दे सकते हैं। मैंने उन लोगों से यही सब कहा है और कहता जा रहा हूं।

इसके उत्तर में इन लोगों का कहना है 'आप जितने भी अधिकार चाहते हैं इस बिल के द्वारा सारे के सारे मिल जायेंगे। इस बिल को लेकर यहां कितनी ठनी फली थी—समर्थकों और आलोचकों दोनों में—इसका आप लोगों को अन्दाज तक नहीं है। विपक्षियों का कहना था कि यह बिल क्या है आत्म समर्पण का दस्तावेज है। समर्थकों ने बिल का समर्थन तो किया पर एकमात्र वफादारी के तकाजे से बस तो वे लोग भी यही चेतावनी देते रहे कि इस यातना से भारत में ब्रिटिश राज को भारी खतरा पैदा हो जायेगा। ये लोग कह रहे हैं यह बाल्डविन होर तथा हैलिफक्स के ही सत्साहस का परिणाम है कि यह बिल पास कराया जा सका। इन लोगों ने तथा भारत के अन्य हित चिन्तकों ने जिस सत्साहस का परिचय दिया है पार्टी के हितों तथा मैत्री के बंधनों की जिस प्रकार उपेक्षा की है और अपना स्वास्थ्य तक बिगाड़ लिया है यदि इसके लिए उनकी सराहना करने के बजाय यह कहा जाए कि यह सब अपना शिकंजा मजबूत करने के लिए किया गया है तो घोर अन्याय होगा निर्दयता की पराकाष्ठा होगी। हम शिकंजा मजबूत करने की क्या जरूरत थी? क्या शिकंजा पहले से ही मजबूत नहीं था? आप लोगों को पता नहीं है कि आपको कितने व्यापक अधिकार सौंपे जा रहे हैं। ब्रिटिश राज का अंत हो रहा है। एक बार हस्तांतरित करने के बाद अधिकार

वापस नही लिये जा सकते। ये अधिकार सचमुच हस्तांतरित हुए हैं। हा, सरसरी निगाह से ऐसा अवश्य लगता है कि समूचे अधिकार गवर्नरो और गवर्नर जनरल की मुट्ठी मे रहेंगे, पर यहा भी तो सब कुछ वैसा ही है। सारे अधिकार राजा की तथा सामंत सभा की मुट्ठी मे हैं। जो थोडे-बहुत सरक्षण रखे गये हैं, वे भी भारत के हितो को ध्यान मे रखकर रखे गये है। जब तक कोई मंत्री अराजकता फैलाने पर उतारू न हो जाय तब तक उसके कार्य-कलाप मे हस्तक्षेप करने की मूर्खता कौन करना चाहेगा? अब आप लोगो को केवल एक किला फतह करना रह गया है—सेना विभाग। पर जब सारा सरकारी ढाचा आपके कब्जे मे आ जायेगा और उसका आप बुद्धि विवेक के साथ सचालन करेंगे तो वह किला भी फतह हुआ समझिए। निर्देश पत्र मे सैनिक मामलो पर मत्रियो के साथ सयुक्त परामर्श करने की व्यवस्था रखी गई है। काग्रेसियो ने कभी सरकार मे रहकर काम करना तो सीखा नही है इसलिए वे यह नही जानते कि ये सरक्षण केवल घर की सुरक्षा के लिए हैं उन लोगो से रक्षा के लिए नही जो उस घर मे जाकर रहना चाहते हैं। ये सरक्षण ताले कुजी का काम करेंगे जिससे घर सुरक्षित रहे। आप लोग ग्रामोत्थान और शिक्षा-जैसी छोटी छोटी बातें उठाते हैं पर अब तो समूची सरकार ही आपकी हो जायगी। आप स्वय नीति निर्धारित कीजिए उसे विधान सभा मे पास कराइये बस जो प्रोग्राम हाथ मे लेना चाहे ले सकते हैं। (मेरे लिए यह कहना निरर्थक होता कि ८० प्रतिशत तो आपने सेना तथा ऋण अदायगी के लिए रिजर्व रख छोडा है फिलहाल तो हमारी आकाक्षाए सीमित सी हैं, इस समय यह सब युक्तिसगत नही होता।) आपकी योजना मे कोई हस्तक्षेप नही करेगा।

वर्तमान वातावरण के बारे मे इन लोगो का यह कहना है "हा, हम जानते हैं पर हम कट्टरपथियो की जबान नही पकड सकते। श्री बाल्डविन लार्ड हैलिफैक्स तथा सर सम्युअल होर जो तीनो-के तीनो अनुदार दल से सम्बन्ध रखते हैं—कट्टरपथियो के घोर विरोध के बावजूद अनुदार दल के बहुमत वाली पार्लियामेंट मे बिल पास कराना सहज काम नही था। ऐसा मालूम पडता था मानो बिगडे हुए साडो से निपटा जा रहा हो। आप भारत मे अपने मित्रो को बताइये कि हम पर कैसी बीती थी। हा यह बात अवश्य है कि यदि वाइसराय कोई दूसरा व्यक्ति होता तो शायद वातावरण भिन्न होता। पर किसी न किसी कारण से वाइसराय और गाधी का मानस एक दूसरे के लिए अरुचिकर है। पर अब बिल तो पास हो ही गया है मनोवृत्ति मे भी परिवर्तन अवश्य होगा। हम यह स्वीकार करते हैं कि बिल की भाषा की अपेक्षा उसके पीछे छिपी मनोवृत्ति

सर्वाधिक महत्त्व है। जहा तक सम्भव हो हम गाधीजी को अपनी ओर लेना चाहिए। इस मामले मे हम आपसे सिद्धान्त रूप म सहमत हैं। पर प्रश्न यह है कि यह कस किया जाये ?'

इस सदभ म मैं यह अवश्य कहना चाहूगा कि मैं इन लोगो की नेकनीयती स प्रभावित हुए बिना नही रहा। जब जटलैंड, बटलर लोदियन और सर फाइण्ड लेटर स्टीवाट ने मेरा इस बाबत समाधान कराया कि मन्त्रियो के काम काज म दखल देन के निमित्त सरक्षण की व्यवस्था नही रखी गयी है मुझे उनकी नीयत का कायल होना पडता है। यह विश्वास करने को जी नही करता कि यह सारी बातचीत निरा दिखावा मात्र है। अपने काम काज के दौरान मैं चिकनी चुपडी बाता म कभी नही आया और यदि मुझे यह प्रतीत होगा कि मैं इनके शिष्टाचार और ओजस्विता के प्रवाह म बह गया हू, तो मुझे बडा आश्चय होगा। जो भी हो निणय तो आपको ही करना है और यदि मैं सचमुच धोखे मे आ गया होऊ तो भी मैंने इससे अधिक कुछ नही कहा है कि सुधारो को अमल म लाने के हेतु इन लोगो को कोई-न-कोई समझौता करना चाहिए और इसके लिए आपके साथ पारस्परिक सम्पक बनाना आवश्यक है। बस, सारी बातचीत का और मरी दलीलो और उनके उत्तर का यही सार है। आशा है यह सब कपूर की तरह नही उड जायगा।

जो लाग महत्त्व रखत हैं उन्होने निम्नलिखित प्रश्न किय है अपने सुझाव भी दिय हैं। इन प्रश्नो और सुझावो का अपना निजी महत्त्व है।

१) समझौते की बातचीत किसके साथ की जाए ? मेरा उत्तर था मुसलमानो को छोड देना चाहिए क्योकि वे सुधारो का विरोध नही कर रहे है और उनके अधिकारो स उन्हे वचित करने का हमारा कोई इरादा नही है। लिबरल दलवालो का कोई अनुगामी नही है इसलिए उनके बारे म चिन्ता करना व्यथ है। साम्यवादियो को अलग रखना ठीक रहेगा क्योकि वे काग्रेस के ही अग हैं पर यदि उनका पथक अस्तित्व स्वीकार किया जाए तो भी उनके बारे म सोचना बेकार है क्योकि उनकी समझौता करने की कोई इच्छा नही है। इस प्रकार एकमात्र काग्रेस ही बची जिसके साथ बातचीत करन के लिए गाधीजी क साथ बातचीत करना जरूरी है क्योकि एकमात्र वही ऐस व्यक्ति हैं जो समझौते को मूत रूप दे सकते है।'

२) 'क्या गाधी समझौते को मूत रूप देने म समथ हैं ? मेरा उत्तर रहा नि सदेह।

३) समझौते की शत क्या होगी ? मैंने कहा, दोनो पक्षो का एक

दूसरे पर भरोसा हो तथा मत्री की भावना को आधार माना जाय। शासन विधान को अमल म लाने के दौरान औपनिवेशिक स्वराज्य के लक्ष्य को ध्यान म रखा जाय और इसमे ब्रिटेन सहायता दे।" इसके उत्तर म ये लोग कहते है, "औपनिवेशिक स्वराज्य अथवा मत्री की भावना का उदगम स्थल कानूनी दस्तावेज कदापि नही हो सकता, इसके लिए कठोर परिश्रम की जरूरत है और इस उद्देश्य की पूर्ति ब्रिटेन के प्रयत्नो के द्वारा नही, स्वय भारत के प्रयत्ना के द्वारा ही सम्भव है। साथ ही उनका यह भी आश्वासन है कि "हम सदव सहायता के लिए तयार है।'

४) ' हमे पक्ट अथवा सधि शब्द अप्रिय हैं।"—इन लोगों का कहना है कि इस समय इग्लड मे ये शन्द नितान्त अप्रिय हैं। दोना ही देशो की भावनाओ को ध्यान मे रखना होगा। इसके उत्तर मे मैं कहता हू ' यदि असली चीज मिलती हो तो मुझे इसकी चिन्ता नही है कि उसे किस नाम से पुकारा जाये। क्या ये लोग बातचीत करन और समझौता करने के उद्देश्य से ए थनी ईडन को फ्रास, इटली तथा अन्य देशा को नही भेज रहे हैं ? क्या ये लोग अभी भी आयर्लैण्ड के साथ बातचीत नही कर रहे हैं ? एक-दूसरे का समझना ही मुख्य है और इसी को समझौता कहत हैं पर क्या इन लोगो के पास कोइ विकल्प है ? इसके उत्तर मे ये लोग कहते है फज करिय पारस्परिक सम्पक स्थापित हो गया और एक दूसरे के विचार हृदयगम कर लिये गये वसी हालत मे यदि इधर से सम्भवत राजा के मुख से, बाकायदा घोषणा कर दी गई तो क्या काग्रेस भी वसी ही घोषणा करेगी ? मेरा उत्तर था कि दाना पक्ष एक दूसर को समझें और दोनो पक्ष सम्मानजनक समझौते की शर्तें मानन का बाध्य हा, तो उसे घोषणा का रूप दिये जाने पर मुझे आपत्ति नही है। उसका जो कुछ भी रूप हो, यदि उसके उद्देश्य का स्पष्टीकरण हा जाय तो मुझे कोई आपत्ति नही है।

५) मिस्टर गाधी स कौन मिल ? ' मरा कथन था कि गतिरोध का अत वाइसराय ही करेगा अ यथा अ य लोग बातचीत नही चला सकते। पर वाइसराय से भट करन स ही कोइ प्रयोजन सिद्ध नही होगा। किसी और को ही मिस्टर गाधी के साथ सम्ब ध जाडना चाहिए। मेरा सुझाव एण्डसन के पक्ष म है। मुझसे पूछा जाता है 'एमसन कसा रहेगा ? क्या गाधी का वह अच्छा लगता है ?' मैं कहता हू सो म नही जानता।" ये लोग कहते है ' आदमी तो अच्छा है।'

६) "क्या गाधी व्यावहारिक बुद्धिवाले व्यक्ति हैं ? मेरा उत्तर रहा हैलिफक्स होर स्मटस और फाइण्डलटर स्टीवाट इसका प्रमाण पत्र देंगे। मे

व्यापारी हू। एक भावुक आदमी के पीछे क्या दौडता ?'

७) 'क्या मिस्टर गाधी पारस्परिक सम्पर्क स्थापित होने तथा हमारी ओर से घोषणा किये जाने के बाद निम्नलिखित वक्तव्य देंगे यह सुधार अच्छा नही रहा मैं जो चीज चाहता था वह यह नही है। पर मुझे सदभावना तथा रचनात्मक कार्य म सहायता का आश्वासन दिया गया है। इसलिए मैं इसे आजमाकर देखना चाहता हू। इसके उत्तर म मैं कहता हू हा उनके लिए यह कहना सम्भव है। मुझे इसकी पूरी आशा है बशर्ते कि आप उनके साथ ठीक ढग से पेश आना जानते हो। यदि आप उनके साथ ईमानदारी से पेश आयेंगे अपना हृदय उनके सामने खोलकर रख देंगे और उन्हे अपनी सारी कठिनाइया बता देंगे, तो वे जरूर सहायता करेंगे।

८) इसपर ये लोग कहते हैं, मिस्टर गाधी के सम्बन्ध म सबसे बडी कठिनाई यह है कि उनकी कोई वैधानिक पोजीशन नही है यद्यपि यह सही है कि भारत की ६० प्रतिशत जनता उनका आदर करती है और उनसे प्रेम करती है। हम अग्रेज लोग ऐसे आदमियो से बातचीत करने म विश्वास रखते हैं जिनकी कोई वैधानिक पोजीशन हो। इसके उत्तर म मैं कहता हू तब क्या आप उनके मंत्री बनने तक इतजार करेंगे ? यदि ऐसी बात हो तो आपको प्रलयकाल तक प्रतीक्षा करनी पडेगी। तब मुझे बताया जाता है उनके वाइसराय से मिलने की बात ने दुर्भाग्यवश ऐसा रूप धारण कर लिया है मानो दो शत्रु नेताओं की भेंट की बात हो रही हो।' मेरा उत्तर यह है यह आप ही की करतूत है। गाधीजी लार्ड चेम्सफोर्ड से मिले लार्ड रीडिंग से मिले और लार्ड इर्विन से मिले। ये भेंटें पक्की के पहले हुई।

९) क्या आप नये वाइसराय के आने तक प्रतीक्षा करेंगे ? मेरा उत्तर रहा "इसमे बहुत देर लग जायगी।'

आशा है इस प्रश्नमाला से आपको हवा के रुख का अन्दाज हो जायेगा।

अब लार्ड हैलिफैक्स बटलर तथा लार्ड डर्बी के बारे मे दो एक शब्द। बटलर ने जान बूझकर यह जिज्ञासा दिखाई कि भारत म लार्ड हैलिफैक्स के बारे मे क्या धारणा है ? मैंने उससे कहा उनके प्रति लोगो म अब भी प्रेम भाव है पर अब उनकी साख जा रही है और प्रभाव गिर रहा है। साथ ही भारत स्थित अग्रेजो म वे सबसे अधिक अप्रिय हैं। उसने प्रत्युत्तर म कहा आपके भ्रम का निवारण कर दू कि इसम तनिक भी सचाई नही है कि उनकी साख गिर गई है। उनका बडा प्रभाव है और वह भी भारत को भूले नही हैं। भारत उनके जीवन का मिशन है। बटलर बडा बुद्धिमान आदमी है बडा योग्य है और उसकी दृष्टि

थाण व्यापक है। इसम जातीय पक्षपात तो रत्ती भर नही है, न उसम बडप्पन की बू है। हम इन लोगो को जिस प्रकार सन्देह की दृष्टि से देखते हैं, उससे उसे बडा क्षोभ हुआ है। वह हर तरह की मदद कर रहा है। पर मुझे लाड डर्बी का व्यक्तित्व सबसे अधिक हृदयग्राही लगा। लाड डर्बी धनकुबेर हैं और उनका असाधारण प्रभाव है। पर वह थोथी शान म विश्वास नही रखते। जब मैन उनस मिलने की इच्छा प्रकट की तो वह स्वय मेरे होटल मे आ गये। मैं जिस जिसस मिलने की इच्छा रखता हू, उसका वह इन्तजाम कर देंगे। उन्होंने मुझसे कह रखा है कि मुझे जब कभी उनकी मदद चाहिए उन्हें फोन कर दू या तो वह खुद आ जायेंगे या मुझे अपने यहा बुला लेंगे। उन्होंने मुझसे पिता-तुल्य वात्सल्य के साथ बात की। मुझे वह बेहद अच्छे लगे।

अब मैं आपका अभिप्राय जानना चाहूगा। आपका जो पत्र भेजना हो वह मेरे आदमी के हवाले कर दीजिए। वह दिल्ली से हवाई डाक द्वारा मेरे पास भेज देगा। मैं उम्मीद रखता हू कि मैं ठीक ठीक और वफादारी के साथ आपका प्रतिनिधित्व कर रहा हू। गलतफहमी फली हुई है, इसमे कोई सन्देह नही है। वहा का वातावरण तनावपूण है ही। जब मुझे क्वेटा से महादेव भाई का पत्र मिला तो मेरा हृदय विनीण हो गया। यहा के और वहा के वातावरण मे कितना अन्तर है। जब तक भारत मे था मैंने समझ रखा था कि यहा भी वहा जैसा हो वातावरण होगा। मेरी धारणा है कि सारा दोष मशीनरी का है। जब यहा के लोगो म सौहाद का दशन करता हू तो आशा बधती है कि वहा की मशीनरी मे भी तेल डाला जाय तो वह भी सुचारु रूप मे चलने लगेगी। आप जो-कुछ करते है उसमे मुझे गलतफहमी दूर करने का प्रयत्न दिखाई देता है।

जसी परिस्थिति है उससे हर कोई बौखला उठता पर ऐसी परिस्थिति मे भी धय स काम लेना केवल आप ही के लिए सम्भव है। एक ख्यातनामा मित्र ने कहा "हम लोग वधानिक आचार के अभ्यस्त हैं। लायड जाज जबतक पदासीन थे बहुत बडे आदमी थे। पर अब हम उनका अथवा और किसी का आदर भल ही करें उसके पद त्यागने के बाद उसके साथ कोई लगाव नही रहेगा। आपको यह नही भूलना चाहिए कि मिस्टर गाधी पदासीन नही हैं। जब आप लोगो की अपनी सरकार होगी तो स्थिति दूसरी होगी। सरकारी अमला आपके प्रति दासवत आचरण करेगा। पर अभी उसके लिए ऐसा करना सम्भव नही है। यह कायाकल्प कोई अचम्भे की बात नही होगी, क्योकि सरकारी अधिकारियो को स्वामि भक्ति

का पाठ पढाया गया है।'
देखें, 'सर फाइण्डलेटर स्टीवार्ट का अगला कदम क्या होता है।"

स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

४४

१ जुलाई, १९३५

श्री रम्जे मेक्डानल्ड से भेंट
बातचीत ३५ मिनट चली

उन्होने पूछा 'भारत के क्या हालचाल हैं?' मैंने उत्तर दिया 'दुखी है।' उन्होंने प्रत्युत्तर मे कहा 'सबका यही हाल है।" मैंने कहा 'आपने हमे ऐसा शासन विधान प्रदान किया है जिसे आप एक भारी प्रगतिशील कदम मानते है जो हमारी उद्देश्य सिद्धि मे सहायक हो सकेगा पर भारत म उसे विपरीत दिशा म उठाया गया एक ऐसा कदम समझा जा रहा है जिससे शिकजा और मजबूत होगा। इसका दोष वहा के वतमान वातावरण को देना चाहिए। हमे काफिया की भाति दूर रखा जा रहा है। आप लोग सहानुभूति स भरे उदगार भर व्यक्त करते है पर हम काय म सहानुभूति की भावना देखना चाहते है। ये स्पीचें हमे हमारे लक्ष्य की ओर नही ले जायगी। मानवीय सम्पक का पूण अभाव है। जब कभी हम किसी सत्काय म सहयोग का हाथ बढाते हैं हमे दुत्कार दिया जाता है। मिस्टर गाधी के साथ चोर डाकुओ जसा व्यवहार किया जाता है और ऐसे वातावरण म आप हमसे सुधारो की सराहना करने की अपेक्षा करते है। ऐसे वातावरण म यह स्वाभाविक ही है कि हम सुधारो को और आपके इरादो को सदेह की दृष्टि से देखें। आप भूमि को जोते बगर और सिंचाई की व्यवस्था किए बगैर बीज छितरा रहे हैं। आप अच्छी फसल की आशा कसे कर सकते हैं?' उन्होने कहा 'आपकी बात बिलकुल ठीक है। मानवीय सम्पक की नितान्त आवश्यकता है। पर माग म कठिनाइया हैं। वाइसराय खुद भला आदमी है और मिस्टर गाधी भी भले आदमी हैं पर दोनो एक-साथ मिल बठ नही सकते। मानो दो तरह के मधुर सगीत हो जिन्हे अलग-अलग बड सुन्दर ढग से गाया जा सकता है पर जहा दोनो को एकसाथ गाने की कोशिश की कि राग बेसुरा हुआ। बस

इतजार करूगा। अगर गया तो अपने मित्र मिस्टर गाधी स अवश्य मिलूगा। लोग क्या सोचेंगे इसकी मुझे चिता नही है। मुझे उनसे मिलना ही होगा। यदि मैं मिला तो सारा बखेडा निपट जायेगा। पर फिलहाल मैं अधकार म टटोल रहा हू। कठोर परिश्रम के बा" अब जाकर कही थोडा अवकाश मिला है। रात को नीद अब भी नही आती। मैं अपना नया घर ठीक करने म लगा हुआ हू। मेरे घर म सब कुछ बिखरा पडा है। कोट टागने के लिए खूटी तक नही है। पुस्तकें रखने के लिए अलमारी तक नही है। आप जानते ही हैं मैं गरीब आ"मी हू। घर ठीक करने म एक हफ्ता लग जाएगा। उसके बाद इस मामल पर ज्यादा गौर करूगा। पर फिलहाल मेरी समझ मे नही आ रहा है कि आपकी क्या सहायता करू ?" बातचीत के "ौरान उ"होंने भारत जाने की अभिलाषा तीन बार व्यक्त की। मैंने कहा 'यदि आप जाकर गाधीजी स बात करने म अभी असमथ हा ता किसी और को उनसे बात करने का अवसर दीजिए। मैंन इस सदभ म बगाल के गवनर का जिक्र किया।

उ"ह बगाल के गवनर पर गव है क्योकि वह भी स्काटलड के निवासी है। मैंन कहा, आपको इस मामले म सहायता करनी चाहिए। आप कबिनेट म है बहुत कुछ कर सकते हैं।' उ"हाने पूछा आपने इडिया आफिस म बातचीत की थी ? मैंन कहा हा। वह बोल लाड जेटलड भल आदमी है।' मैंने कहा 'इसम कोई शक नही, पर उनमे सर सेम्युअल होर जसा सकल्प-बल नही है। वह बोल 'होर को भारत के "याय्य पक्ष का यकीन हा गया था इसीलिए उसने बिल की इतनी जोरदार वकालत की। जेटलड पहले स ही भारत क साथ सहानु भूति रखत आए हैं इसलिए उसका समथन कुछ दूर पड जाता है। पर मैं ठीक तरह से नही जानता। जो भी हो पहल भारत सचिव को करनी हागी। कबिनेट की बठक सप्ताह म दो बार हाती है सिफ दो घण्टे के लिए। उ"ही अवसरा पर जेटलड से भेंट हा जाती है। पर वह यदि किसी काम को हाथ लगायेंग ता उस पूरा करके ही दम लेंगे। वह इस बात की ओर स पूरे तौर स जागरूक हैं कि यदि सुधारा को समथन प्राप्त नही हुआ तो उनकी प्रतिष्ठा का बट्टा लगगा। इसलिए व लोग सबके सब आपकी बात पर अवश्य ध्यान देंगे। मन कहा लाड जटलड मुझस सहमत हैं और सर फाइण्डलेटर स्टीवाट मेरी भरपूर मदद कर रह है पर यद्द काइ नही बताला कि अगला कदम क्या होगा। मैं अबतक जिन जिन से मिल चुका हू, यह सब मैंने उ"हे बताया। उ"हाने कहा 'ता आपने मछली पकडने का अपना जाल काफी बड क्षेत्र म फला रखा है। यह बडी खुशी की बात है। पर आप यह मत समझिए कि वे लोग अगले कदम की बात नही सोच रहे हैं। वे जरूर सोच

रहे हैं पर अभी वतान म अममथ हैं। व लोग जो-कुछ कहते हैं उसे ध्यान से सुनिए। यह धारणा लेकर भारत मत जाइये कि अगला कदम नाम की कोई चीज नहा है। आप अपने मिशन म अवश्य सफल होंगे। भारत जाने की मेरी बडी अभिलाषा है, पर इस दरम्यान सोचूगा कि आपके काम किस तरह आऊ। आप मुझस एक बार फिर मिलिए।'

मैंने कहा आप अपने उनिद्र राग के इलाज के लिए अपने भोजन म हेर फेर करिए। मैंने भी यही किया था।' मुझे एक डाक्टर मित्र की जरूरत है या मैं डाक्टरो के पचडे म नहा पडता। मैं रोज हाडर क साथ नाश्ता करता हू और इसस मुझे बडी राहत मिलती है।' उन्हान अपने पुरान दिनो की याद की, जब वह एक बार भारत गए थे और वहा शिकार किया था। उन्हान कई एक वृद्ध व्यक्तिया की चर्चा की जो उनके साथ बडे शिष्टाचार से पश आय थे।

४५

टिप्पणियां

२ जुलाई १६३५

श्री और श्रीमती बटलर क साथ दोपहर का भोजन किया। काई प्रगति नही हुई। बटलर ने बताया कि जब बिल कमेटी की स्टेज पार कर चुकेगा तभी भारत सचिव खुलकर बात कर सकेंगे। उसने कहा कि लाड जेटलड की पूण सहानुभूति है पर कठिनाई भारत की ओर स उपस्थित हो रही है।

तीसरे पहर ४ बजे श्री लेसबरी और मेजर एटली के साथ चाय ली। लेस बरी ने स्पष्टवादिता से काम लिया और नेकनीयती का परिचय दिया। मेजर एटली अनुदार दलवाला के साथ मिल बठ रहे हैं। दाना ही बुद्धि के मद लगे। दाना ने ही बेबसी जाहिर की। दोनो का कहना है कि उनके लिए जितना कुछ करना सम्भव था उन्हान कर दिया। उन्होने कहा 'आप यह न भूलिए कि हम अल्पसख्यक ह।

सध्या के पौने आठ बजे कामन्स सभा भवन म मजदूर दलीय सदस्या के साथ भोजन किया। मेजर एटली रिह स डेविस डब्ल्यू० पालिंग, सीमार कुक्स टाम स्मिथ टाम विलियम्स मोरगन जोन्स जान विलमाट तथा चाल्स एडवड स

ह। सबके-सब मन्द बुद्धि के प्रतीत हुए किसी म बुद्धि विवक दिखाई नही दिया। एटली तो प्रतिक्रियावादी-सा लगा। उसने क्वटा के प्रसग मे सरकारी कारवाई का अनुमोदन करत हुए कहा कि हम लोग वहा की स्थिति का राजनतिक लाभ उठाना चाहते हैं। मने कहा, आप एक ओर हमे अपनी सदभावना और मत्री पर भरोसा करने को कहत है और दूसरी ओर हमारे ऊपर भरोसा करन को तैयार नही है हमारे इरादा को सन्देह की दष्टि से देखत है और हमारे लिए क्या चीज अच्छी रहेगी इसका निणय भी सदैव आप ही करते हैं। हमारे देशवासी कष्ट भोग रहे है पर ऐसी अवस्था म भी इसका निणय आप ही करते हैं कि ऐसी परिस्थिति म क्या करना ठीक रहेगा। एटली बोला म तो केवल सरकार का दृष्टिकोण सामने रख रहा था पर दोषी दानो ही पक्ष हैं। फिर वह कहने लगा हम लोग १६३० म शासनारूढ थे। आप लोग उस समय सारा मामला निपटा लेते तो फायदे म रहते। आप लोगो ने ऐसा न करके भूल की।' मने कहा तब आप हमे यह बिल प्रदान न कर सक होत क्योकि सामत सभा आपके माग म बाधक होती।" फिर मैंने कहा, आप मजदूर दलवाले लोग लम्बी चौडी स्पीचें देना भर जानत हैं जो वचन देते हैं उसका पालन करने का आपका इरादा नही होता है।' मेरी इस बात से कुछ सदस्य चिढ गये और मने बातचीत का रुख आर्थिक विषयो की ओर मोडा पर भारत का प्रश्न फिर भी आ गया। मन कहा आप लोगों का जीवन-यापन का वतमान स्तर विदेशी व्यापार एव विदेशो म लगाई पूजी के ऊपर निभर है। आप लोगा को मालूम है कि विदशी व्यापार शन शन घटता जा रहा ह और एक दिन विदेशो म लगाई गई पूजी स भी आपको हाथ धोना पडेगा। वसी अवस्था म क्या आप एकमात्र स्वदशी उत्पादन के बल पर अपना वतमान स्तर कायम रख सकेंगे ?' उन्होने कहा नहीं। मन जिज्ञासा बताई तो फिर आप अपने स्तर को और भी ऊचा ल जाने की अपनी आकाक्षा का ताल मेल भारत के लिए स्वायत्त शासन की वकालत क साथ क्योकर बठा सक्त हैं ?" मैंने इस असगति का सकेत किया, वह उन्ह रुचिकर नही लगा। मन सुनी-सुनाई दा एक किवदलिया प्रस्तुत की कि एक प्रमुख मजदूर दलीय सदस्य स यह प्रश्न किया गया कि आपन वेजवुड बन को इडिया आफिस म क्या रखा जबकि वह भारत क विषय म कुछ नही जानता था तो यह उत्तर मिला था कि ' यदि किसी तीक्ष्ण बुद्धिवाल आदमी को वहा रखा जाता तो वह वहा के सरकारी अमल से तथा वहा भारत-सरकार स झगडा मोल ले बठता इसलिए मकडानल्ड न बडी चतुराई के साथ मत्रिया के पदा पर एसे आदमिया को रखा जो अमले की इच्छा क अनुसार आचरण कर सकते थ,

ताकि काम-काज म बाधा खडी न हो।" मैंने उन्हें यह भी बताया कि जब १९२४ म लाड पास फील्ड ने अपने विभाग का कायभार सभाला था, तो विभाग के अमले का बुलाकर कह दिया था कि "मैं जानता हू कि आप लोग अब तक स्वामियो-जसा बर्ताव करत आ रहे हैं और भविष्य म भी वसा ही करते रहगे। और आप सदव की भाति ही आचरण करते रहिए। उपस्थित अतिथियो म से एक बोल उठा, 'बात बिलकुल सच्ची है। हम जो कहत हैं, उस पर आचरण करना हमार लिए सम्भव नही है। हमने अपनी पिछली कान्फ्रेंस म ऐसे प्रस्ताव पास किय कि यदि उन्हे कार्यान्वित किया जाए तो ससार की सारी सपत्ति ठिकाने लग जाए।" मेजर एटली को यह स्पष्टोक्ति अच्छी नही लगी। वह और भी चिढ गया। फिर तो मने जो-कुछ कहा उसका वह खन्डन करने मे लग गया। बोला मजदूर सरकार आप लोगो की सबसे अधिक हितपी थी। गाधी कभी कुछ कहते हैं कभी कुछ। वह विलक्षण राजनीति विशारद हैं वह जो-कुछ कहते है हृदय स नही कहत। कांग्रेस म भ्रष्टाचार भरा पडा है। वयस्क मताधिकार के पक्ष म कोई भी बडा नता नही है।" वह इसी तरह की ऊल जलूल बाते करते रहे। अ त म मन कहा 'मेजर एटली ऐसा मालूम पडता है कि आप गाधीजी को मुझसे अधिक जानते है। मैं यहा इग्लड अग्रेज जाति का अध्ययन करने आया था पर एसा मालूम होता है कि आप मेरे ही देश के विषय मे मेरा ज्ञान बढाना चाहते हैं। पर म यह शिक्षा आपसे लने को तयार नही हू। तत्पश्चात सब टेढे पड गये। मेजर एटली तथा अन्य कई एक न कहा कि मुझे कुछ तरुण अनुदार दलीय लोगो स मिलना चाहिए। इस बात पर सब सहमत थे कि वातावरण मे सुधार की आवश्यकता है पर इस दिशा म कुछ कर सकने मे उन्होने अपनी लाचारी जाहिर की। उन्होने कहा कि न उनके हाथ म कोई अधिकार है न उनका कोइ प्रभाव है। वे इतना और जोड देते कि न उनमे बुद्धि विवेक है तो वस्तु स्थिति का सही वणन हो जाता। य लोग हीनता की भावना मे पीडित है। ये लोग अपने ही दल क किसी आदमी के बजाय लाड लिनलिथगो का वाइसराय बनना अधिक पसद करेंगे। इन पर अनुदार दलवाला का दबदबा बैठा हुआ है या फिर लाड डर्बी-जैस धन कुबेरा का।

शासन विधान के बार म इन लोगा का कहना है 'आप गवनर के विशेषाधिकार की बात का बेकार तूल दे रह हैं। आप इस बात की उपेक्षा कर रहे हैं कि ससार भर म ऐसा कोई भी शासन विधान नहा जिसम अतिम निणय का अधिकार किसी एक व्यक्ति को न सौपा गया हो। हमारे यहा राजा का यह अधिकार ह।'

या अत म, हम मित्रा के रूप मे विदा हुए। म तो नही समझता कि समय व्यथ नष्ट हुआ।

४६

टिप्पणी

२ जुलाई १६३५

लाड लिनलियगो लम्बा कद, हृष्ट पुष्ट तीक्ष्ण बुद्धि तो नही पर योग्य और विवेकशील। कल्पना शक्ति का अभाव नपी-तुली बात कहते हैं। साथ ही, स्पष्टवादी भी हैं। नीयत के साफ मालूम दिए।

मैंने अपनी पुरानी दलील पेश की। दो प्रकार के वातावरण मौजूद हैं एक वातावरण इग्लड म है जो सदभावना और भविष्य के बारे म सहानुभूति रखता है। दूसरा वातावरण भारत म है जो शासन की कठारता से व्याप्त है। भारत म जसा कुछ वातावरण है वहा के लोग बिल को उसीके प्रकाश म देखत हैं। यदि यह स्थिति बनी रही और शासन विधान का तय हाना तो अनिवाय है लकिन परिणाम मे कटुता हाथ लगेगी। नय शासन विधान का श्रीगणश अनुकूल वाता वरण के शुभ मुहूत मे करना चाहिए।

उन्हाने मेरी बात ध्यान से सुनी और पूरी सहमति व्यक्त करते हुए पूछा कि क्या मेरे पास कोई ठास सुझाव है। मैंने पारस्परिक सम्पक और समझौते की बात कही। वह पारस्परिक सम्पक के पक्ष म तो थ पर समझौतेवाली बात उन्ह रुचि कर नही लगी। उन्हान बताया कि यहा के कट्टरपथी वग म वे लोग भर पड है जो भारत मे रह आए हैं। इग्लड म नीति म हेर फेर ही नही आमूल परिवतन हो रहा है। जो नयी पीढी आग आई है उसम ४५ से अधिक की आयु क लोग नही हैं। उस पीढी की विचार सरणि उदार है। भारत म भी हेर फर होना अवश्यभावी है। वहा क लोगोका यह समझ लेना चाहिए कि यहा सदभावना का अभाव नही है और लक्ष्य सिद्धि दोनो पक्षो के मेल मिलाप द्वारा ही सम्भव है।

मैंने कहा कि यह सब पारस्परिक सम्पक के द्वारा ही सम्भव है और कोई रास्ता नही है। उन्हाने कहा कि मिस्टर गाधी को दो म से एक बात चुननी होगी। भारतीय मानस के कायाकल्प के लिए कौन-सा माग बेहतर है? पारस्परिक सम्पक मत्री तथा इन दोना क माध्यम से विकास का माग या अशाति और अव्यवस्था का माग जिसके द्वारा उद्देश्य सिद्धि हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती, और जिस पर चलकर गन्तव्य स्थान तक पहुचने मे वर्षों लग जायेंगे।

मने यह स्पष्ट कर दिया कि मिस्टर गाधी की रक्तपातपूण क्राति म कभी आस्था नही रही। मैंने कहा कि जहा तक मेरा सबध है मैं रक्तपातपूण क्राति को

उतना निषिद्ध नहीं मानता हू पर मेरा विश्वास है कि उसके द्वारा हमारी काय सिद्धि नही होगी इसलिए मैं भी सम्पर्क, सम्बन्ध और मैत्री की उपादयता मे आस्था रखता हू। इस मामले म मिस्टर गाधी का दष्टिकोण असदिग्ध है। अपन कथन की पुष्टि म मैंने जगाथा हैरिसन के नाम लिखे गाधीजी के पत्र को पेश किया। उन्होंने पत्र रुचिपूवक पढा और कहा यह पत्र सचमुच बडे महत्त्व का है। मैं आपकी बात स सहमत हू पर मेरे दिमाग मे कोई योजना फिलहाल नही है। मैं इस मामले पर विचार करूगा और यदि बात बूते के बाहर लगी तो साफ साफ कह दूगा। इस बीच आप और लोगो स मिल लीजिए और १० तारीख तक खबर दीजिए तभी और बातचीत होगी। पर जब आपने स्वतत्रता प्राप्ति के लिए आवश्यक तरीके की चर्चा की है तो मुझे भी अपनी राय देने दीजिए। *रक्तपातपूर्ण क्राति एक साहसपूर्ण काय अवश्य होगा पर वह बुरा साबित* होगा। यातायात के आधुनिक साधनो के कारण अब दुनिया छोटी हो गई है। इसलिए रक्तपात से कोई प्रयोजन सिद्ध नहा होगा। इसके विपरीत, मत्री की भावना के साथ शासन विधान को अमल म लाया जायगा तो उसका परिणाम सुखद होगा।'

मने कहा 'मैं आपके निष्कष से सहमत हू पर आपके तक का कायल नही हू। इस समय शासन विधान एक प्राणविहीन शव मात्र है सुन्दर-सन्सुन्दर शव भी केवल अग्नि दाह के ही योग्य है। म चाहता हू कि शासन विधान म प्राणो का सचार हो। केवल पारस्परिक सम्पक और एक दूसरे को समझने की भावना से ही उसम प्राण डाले जा सकते हैं।

वह मेरे साथ एक बार फिर सहमत हुए। उन्होंने खेद के साथ यह बात मानी कि भारत का सरकारी अमला और भारत मे मौजूद अंग्रेज व्यापारी इग्लड के अच्छे प्रतिनिधि साबित नहीं हुए हैं।

४७

२ जुलाई १९३५

प्रिय लाड जेटलड

उस दिन आपसे हुई भेंट के दौरान आपने बताया था कि किस प्रकार जब आप बगाल के गवनर थे तो आपने गलतफहमियो को दूर करने का प्रयत्न किया था। मन कहा था कि आप भारत म अपने बारे म किसी प्रकार की कटुता की भावना छोडकर नही आय हैं और यह भी कहा था कि लाड इर्विन न भी जसा कि कहा जाता है ६० ००० लोगो को जेल म ठूसने क बावजद भारतवासियो म किसी प्रकार का मनोमालिन्य छोडकर भारत से विदा नही ली थी। मेरा अभिप्राय यह है कि मानवीय सम्पक के द्वारा गलतफहमियो स बचा जा सकता है। इस पत्र के साथ 'हिंदुस्तान टाइम्स की एक कटिंग भेजता हू। यह पत्र काग्रस का पक्ष लेता है। आपको इस कटिंग से मेरे कथन की पुष्टि होती प्रतीत होगी।

उस वार्तालाप के दौरान आपने यह जिज्ञासा भी की थी कि क्या मिस्टर गाधी व्यावहारिक आदमी हैं और मेरा उत्तर था कि उनकी व्यावहारिक बुद्धि के बारे म लाड हैलिफक्स सम्युअल होर सर फाइण्डलेटर स्टीवाट तथा जनरल स्मटस प्रमाण-पत्र दने म जरा भी नही हिचकिचाएग। मन हिंद स्वराज्य म उनके द्वारा व्यक्त किए दष्टिकोण का समझाने की भी कोशिश की थी। इस पत्र के साथ हरिजन का एक अक भी भेज रहा हू। इस पत्र का सम्पादन मिस्टर गाधी स्वय करते ह। पत्र को पन्ने स आपको खुद ही पता लग जायेगा कि वह आदश वाद और व्यावहारिकता म ताल मेल बठान की दिशा म कितन सचेष्ट है।

इसी चिट्ठी के साथ कुमारी अगाथा हैरिसन को स्वय गाधीजी द्वारा लिखे गये पत्र की नकल भी भेज रहा हू। यह पत्र हैरिसन को पिछली डाक स मिला है। कुमारी हैरिसन तथा अन्य कई मित्र मिस्टर गाधी स बराबर आग्रह करते आ रह हैं कि यहा दो एक भारतवासियो को भेजना ठीक रहेगा जिसस व यहा के लोगो के साथ सम्पक स्थापित कर सकें। मिस्टर गाधी को इसकी उपादेयता के विषय म बराबर सशय रहा है। इस बार थी अगाथा हैरिसन न फिर वही आग्रह किया और मिस्टर गाधी ने जो उत्तर दिया वह आप देख ही लेंगे। म इस पत्र को खास तौर से इसलिए भेज रहा हू कि आपको यह पता लग जाए कि गाधीजी मत्री की भावना से कितने ओतप्रोत हैं।

आपका समय ले रहा हू, आशा है, आप इसका खयाल नही करेंगे। वास्तव म आप स्वय दोनो देशो के बीच मैत्री की भावना दखना चाहत हैं, म आपकी उस लालसा की पूर्ति मे सहायता ही कर रहा हू।

भवदीय
घनश्यामदास बिडला

४८

२ जुलाई, १६३५

प्रिय सर फाइण्डलेटर स्टीवाट,

साथ का पत्र तथा उसके साथ नत्थी की गइ सामग्री लाड जेटलैंड के लिए है। म यह आपके पास इस उद्देश्य से भेज रहा हू कि यदि आपको यह अच्छा लगे तो इसे उद्दिष्ट स्थान पर भेजने की कृपा करें।

आज लाड लिनलिथगो से भेट हुई। आगामी ५ तारीख का लाड हैलिफक्स से और उसके बाद लाड सलिसबरी म मिलन की बात है। इन भेंटो मे मेरी मुलाकातो का पहला दौरा समाप्त हो जाएगा। मुझे अभी तक एक भी ऐसा आदमी नही मिला जो उचित वातावरण निमाण करने के बार म मरे दष्टिकोण से सहमत न हुआ हो। पर अगला कदम अभी अधकार के गभ म है। मुझे विश्वास है कि इस आर आपका ध्यान है। आप काम-काज से कुछ छुट्टी पायेंग तो आपस मिलने की आशा है। तब तक मेरा पथ प्रदशन करने की कृपा करते रह।

भवदीय
घनश्यामदास बिडला

४६

ग्रासवनर हाउस,
पार्क लेन लन्दन डब्ल्यू० १
५ जुलाई १९३५

महामहिम

मै यहा गत मास की ५ तारीख को पहुचा था और अब प्राय एक महीने बाद यह पत्र लिख रहा हू। आरम्भ के कुछ सप्ताहो मे मेरे पास विशेष कुछ लिखने को नही था। लेकिन अब आपको लिखना आवश्यक समझता हू क्योकि आपके पथ प्रदर्शन की आवश्यकता है। अब तक मै लार्ड जेटलैड लार्ड लोदियन लार्ड डर्बी, लार्ड लिनलिथगो लार्ड हैलिफक्स श्री रम्जे मैकडानल्ड तथा श्री बटलर और सर फाइण्डलेटर स्टीवार्ट से मिल चुका हू। दो सज्जनो से दो बार मिला था। श्री बटलर से भेंट करने के अतिरिक्त मैंने उनके और उनकी श्रीमतीजी के साथ दोपहर का भोजन भी किया है। लार्ड डर्बी लार्ड सलिसबरी के साथ मेरी भेंट की व्यवस्था कर रहे हैं और श्री बाल्टविन से भी मिलने की आशा है। लार्ड रीडिंग अस्वस्थ हैं इसमे उनके साथ मुलाकात सम्भव नही है।

नगर के व्यापारी महाजन-समाज के कई मित्रो के साथ दोपहर का भोजन किया है। इनमे प्रमुख ये हैं सर हेनरी स्ट्राकोश सर थामस कटो सर चार्ल्स बरी सर फिलिक्स पोल सर वाल्टर लिटन सर बसिल ब्लेकट श्री वलेस और सर जार्ज शुस्टर आदि। दो बार कामन्स सभा भवन मे भी दोपहर का भोजन कर चुका हू—एक बार मन्चेस्टर के हितो का प्रतिनिधित्व करनेवाले सदस्यो के साथ और दूसरी बार मजदूर दल के कुछ महत्त्वपूर्ण नेताओ के साथ। अभी तक सर सेम्युअल होर से भेंट नही हो पाई है। वह अभी विदेश विभाग को लेकर बेतरह व्यस्त है। उन्होने मुझे पुन याद दिलाने के लिए कहा था सो मैंने उन्हे याद दिला दी है। चर्चिल तथा लायड जार्ज से सबसे आखिर मे भेंट करूगा और यहा से विदा होने से पहले धार्मिक क्षेत्र के कुछ महत्त्वपूर्ण व्यक्तियो एव पत्रकारो से भेंट करने का इरादा है। सर फाइण्डलेटर आपकी भूरि भूरि प्रशसा करते हैं। वे गाधीजी के भी मित्र हैं। वह मेरे बडे काम आए है। मेरे मिशन मे उन्होने अमूल्य सहायता प्रदान की है। मेरी भेंट मुलाकात का पहला दौर खत्म हो गया है और अब शीघ्र ही दूसरा दौर शुरू होगा।

इन सबके साथ अपनी बातचीत के दौरान मैंने इन इन मुद्दो पर जोर दिया।

मैंने इन्हें सबसे पहले तो यह बताया कि भारत म यह व्यापक धारणा है कि बिल पीछे की ओर ले जानेवाला कदम है। साथ ही, मैंने इस धारणा के कारणो पर भी प्रकाश डाला। मैंने कहा कि बिल को सरसरी तौर से पढने पर ऐसा लगता है कि सारे-के सारे अधिकार गवनर-जनरल और गवनरो के हाथा म केंद्रित कर दिये गये हैं। मुझे बताया गया है कि इग्लड म भी अतिम निणय राजा का ही माना जाता है। मुझे यह भी बताया गया कि मत्रियो के काय कलाप म हस्तक्षेप करने की मूखता कोई गवनर नही करेगा। मैंने यह स्वीकार किया—पर कहा कि भारत म लोग बिल के गुण-दोषा की परख इग्लड के मैत्री और सौहाद के वातावरण की कसौटी पर कसकर नही, भारत के पारस्परिक अविश्वास और सशय के वातावरण की कसौटी पर कसकर करते हैं। इसके फलस्वरूप, भारत के लोगा की यह धारणा हो गई है कि गवनरो और गवनर-जनरल को जो विशेषाधिकार सौंपे गए है वे शिकजे को मजबूत करने के लिए हैं। मैंने जिन जिन से भेंट की उन्हे यह भी बताया कि महत्त्व की वस्तु बिल नही वातावरण है। सुधार तभी अमल म आ पायगे, जब वातावरण अच्छा रहेगा। यदि वातावरण इसी प्रकार कटुतापूण रहा तो नयी शासन व्यवस्था ठप होकर रह जाएगी। अच्छे वातावरण के अभाव म सुधार तो असफल सिद्ध होगे ही पर मेरी आशका इतनी ही नही है। यदि सुधार असफल सिद्ध हुए तो परिणामस्वरूप जो स्थिति उत्पन्न होगी वह भारत के भविष्य के लिए भी घातक सिद्ध होगी और दोनो देशा के सम्ब ध तो बिगडेंगे ही। भारत की नौकरशाही ने लोकप्रिय तत्त्वो को सदेह की दष्टि से देखना सीखा है। इस समय भी भारत के वतमान वातावरण का यह सबसे बुरा पहलू है, और वसी स्थिति आने से तो वह और भी भयकर रूप धारण कर लेगा। मैंने इन लोगो को इसके कई दष्टात दिए। यही बात काग्रेस पर भी लागू है। उसने भी सरकार के सारे कामा को सदेह की दष्टि से देखना सीखा है भल ही वे काम कल्याणकारी हा। ऐसे वातावरण म पारस्परिक सहयोग एक असम्भव कल्पना है और जब तक यह वातावरण बना रहेगा, कोइ भी रचनात्मक काम नही हो पाएगा। इस वातावरण के फलस्वरूप काग्रेसी लाग अधिकाधिक बेचन होते जा रहे ह और ऐसा लगने लगा है कि वामपथी वग जोर पकडता जा रहा है। और सम्भव है दक्षिण पथी वग वामपथी वग की होड म स्वय भी तोडफोड की कार्यवाही म लग जाए। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि पारस्परिक सम्पक के माध्यम से दक्षिण पथी वग को इस बात का विश्वास दिलाया जाए कि इन सुधारा के अन्तगत रचनात्मक

खतरे के लिए वतमान वातावरण ही जिम्मेवार है। एक और खतरा भी है वह यह कि मुसलमानो की यह भ्रान्त धारणा हो गई है कि व चाहे जो करें, सरकार चू तक न करेगी। एक स्टेज ऐसी आ सकती है जब इस स्थिति की भयकर प्रतिक्रिया हो। मैंने यहा मित्रो को बताया कि इन सारी बातो के बावजूद गाधीजी ने अपने आपको निलिप्त रखा है। मैंने बताया कि गाधीजी उनके सबसे बडे मित्र हैं पर एक ओर सरकार और दूसरी ओर साम्यवादी वग ये दोनो उनका तिरोभाव करने म लगे हुए हैं।

मेरी इन बातो का बडा सुदर प्रभाव पडा है। इन लोगो ने उत्तर म कहा है कि उन्हें यह देखकर बडा क्षोभ हो रहा है कि अनुदार दलवालो के कट्टर विरोध के बावजूद और अपनी पार्टी क तकाजे को एक ओर रखकर और अपने स्वास्थ्य को बिगाडकर तथा व्यक्तिगत मत्री का बलिदान करके श्री बाल्डविन, सर सम्युअल होर एव लाड हैलिफक्स ने यह बिल पास कराने म जिस सत्साहस से काम लिया उसकी सराहना नही की जा रही है। मुझे इन लोगो ने बताया कि भारतवासियो को कितने बडे अधिकार प्रदान किए जा रहे हैं। इन्होने मुझे आश्वासन दिया है कि गवनर-जनरल और गवनर लोग मत्रियो के काय कलाप म हस्तक्षेप करना तो दूर, वे उन विषयो पर भी उनके साथ सलाह-मशवरा करेंगे जो उनके विशेष उत्तरदायित्व की परिधि म आते हैं। मैं यह स्वीकार करता हू कि मैं इन लोगो की नेकनीयती और सदभावना स बडा प्रभावित हुआ हू। पर मैं इन्हें यह बताए बिना नही रह सका कि यहा के वातावरण को भारत म व्याप्त एक दूसरे प्रकार के वातावरण मे रहनेवाले लोग समझने और सराहने म असमथ रहेंगे। यहा के मित्र मेरे इस कथन से सहमत हो गए हैं कि भारत की मनोवत्ति मे परिवतन करना अत्यावश्यक है। इन्होने मुझसे ठोस सुझाव मागे हैं। मैंने इन्हें बताया इसका प्रारभ दिल्ली म ही करना होगा और यह सुझाव दिया है कि सर जान एण्डसन-जसे किसी व्यक्ति को गाधीजी से बातचीत चलानी चाहिए जिससे मेल मिलाप की दिशा मे कदम बढाया जा सके। इन लोगो ने मुझसे पूछा क्या सर जान एण्डसन मिस्टर गाधी स पार पा सकेंगे?' मैंने कहा, क्या नही?' तब इन्होने पूछा 'लाड ब्रेबान लाड एसकाइन और पजाब के गवनर के बारे म आपकी क्या धारणा है?' मैंने उत्तर म कहा कि मैं इस बारे मे कुछ नही कह सकता क्योकि मेरा इनसे परिचय नही है। इन्होने पूछा समझौते का आधार क्या होगा?' मैंने उत्तर दिया विश्वास और मत्री की भावना। शासन विधान को कार्यान्वित करने मे केवल एक लक्ष्य सामने रखा जाए—औपनिवेशिक स्वराज्य की दिशा म भारत की प्रगति। इस काय म ब्रिटेन सहायता देता रहे। इस बारे म सर फाण्डलेटर

स्टीवाट का कहना है कि हमे अपक्षाकृत अधिक निश्चित भाषा का उपयोग करना होगा। वह इस दिशा मे विचार करेंगे। मुझे बताया गया कि यहा 'पक्ट', सधि' आदि शब्दा स लागा को चिढ है। मैंने उत्तर म कहा कि यदि मूल बात बनती हो तो मुझे शब्दा की चिन्ता नही है। मैंने कहा कि मैं तो यह चाहता हू कि दोनो पक्ष एक दूसर को समझें और अपने-अपने उत्तरदायित्व के प्रति सचेत रह। मुझे सकेत दिया गया कि फज करिये यहा स किसी प्रकार की घोषणा सम्भवत राज घोषणा की गई तो क्या मिस्टर गाधी उसका यथोचित उत्तर देंगे ? मैंने कहा, 'अवश्य बशर्ते कि उनके साथ पहल स ही ठीक ढग से चर्चा हो चुकी हो। उनकी रजामदी हासिल करन क लिए यह आवश्यक है कि उनके साथ ईमानदारी का व्यवहार किया जाए और उनके सामन कठिनाइया रख दी जाए। आप उनक आगे अपना हृदय खोलकर रख देंगे ता वह आपकी सहायता के लिए सदव तत्पर रहगे। वह गुण के भूखे हैं परिणाम क नही। उन्ह प्रगति की मीमा की उतनी चिन्ता नही है, जितनी उसे अमल म लान के ढग की चिन्ता है।' यह समस्या, कि इस काम का जिम्मा कौन लेगा और किस प्रकार लेगा अभी तक बनी हुई है। मैं आशा करूगा कि दिल्ली कोई अडचन खडी नही करगी।

सर फाइण्डलेटर स्टीवाट मेरी बडी सहायता कर रहे हैं यह मैं ऊपर लिख ही चुका हू। अगला कदम क्या हो, अब वह इस दिशा मे सोच रहे हैं। लाड जेटलड न मुझे सर फाइण्डलेटर स्टीवाट के साथ सम्पक बनाए रखने की सलाह दी है।

आपको यह बताते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है कि यहा मेर साथ बडे सौजन्य, शिष्टाचार और सदभाव का व्यवहार किया गया। मैं इससे अधिक कुछ नही चाहता था। पर भारत से मिलनेवाले समाचारो से मरा हृदय विदीण हो जाता है। मेरी समझ म नही आता है कि वे लोग क्वेटा क मामले म गलतफहमी बनाए रखने पर क्या तुले हुए हैं। पारस्परिक सपर्क न होन से ऐसी गलतफहमिया बनती हैं पर क्या दिल्ली के लिए गर सरकारी तत्त्वा को वस्तुस्थिति स अवगत कराना सभव नही था ? मन लाड जेटलड का बताया कि लाड इर्विन ने ६०००० आदमिया का जेला म ठूस दिया और स्वय आपन २५०० नर नारिया को नजर बन्द कर रखा है पर जो नीति काम म लाई गई, उसे लेकर मतभेद रहा किन्तु कडवाहट कभी उत्पन्न नही हुई। इसका कारण स्पष्ट है। मरी धारणा है कि पारस्परिक सपक म जो जादू है और विपक्षी के दष्टिकोण से स्थिति को समझन की जो खूबी है वह भारत का अमला हृदयगम नही कर पा रहा है।

श्री मकडानल्ड ने बातचीत के दौरान मुझस एक मजेदार सवाल किया कि भारत का नया वाइसराय कौन होगा ? मेरा उत्तर था कि यह उनस अधिक और

कौन जानता है, पर साथ ही कहा कि लाड लिनलिथगा और सर जान एण्डसन का नाम लिया जा रहा है। श्री मक्डानल्ड को इस बात का बडा गव है कि आप भी स्काटलड के निवासी हैं पर उन्होंने कहा कि एक प्रान्तीय गवनर के लिए वाइसराय बनना आसान नही है। पहले ऐसा कभी नहीं हुआ। बस, सारा धन्धा इसी ढर्रे पर चल रहा है। मैं तो परिपाटी की लीक कभी न पीटू।

आपने मुझे जो पत्र दिए थे उनके लिए धन्यवाद देता हू। इन पत्रो का मैंने अभी उपयोग नही किया है जब जरूरत होगी तभी इनका उपयोग करूगा। इस बीच आप वही से मेरी सहायता करते रहिए और मेरा पथ प्रदशन भी। मैंने एक भारी जिम्मेदारी के काम का बीडा उठाया है और जसा कि आपने ऊपर दिए गए विवरण से अन्दाज लगाया होगा, श्री मैंक्डानल्ड के शब्दो म मैंने अपना मछली पकडने का जाल काफी दूर तक फला रखा है। पर अन्तिम निणय तो यहा का इडिया आफिस और दिल्ली का सेक्रेटेरियट ही करगे। यहा के लोगो ने समय न रहते हुए भी मेरे लिए समय निकाला और मेरी बात ध्यान से सुनी। लाड डर्बी खुद मेरे होटल आए और बोले कि जब कभी मुझे उनकी सहायता की जरूरत हो फोन करने भर की देर है वह खुद आ जाएग या मुझ बुला लेंगे। इससे अच्छा वातावरण और क्या हो सकता है ? पर इससे मेरा काम अधिक नही सधेगा। पहल इडिया आफिस को ही करनी होगी और उसम भी दिल्ली के मानस को बदलने की जरूरत है। मुझ आशा है कि जहा आप सहायता देना सभव समझेंगे, अवश्य देंगे। काश, यहा के वातावरण को मैं वहा ले जा पाता। मुझे यह देखकर थोडी-बहुत निराशा अवश्य होती है कि अभी तक कोई प्रयत्न नही किए गए हैं। यो क्या कुछ होगा इस बारे म सशयशील होना अनावश्यक है। मुझे बताया गया है कि जब तक बिल सदनो म रहा तब तक मेल मिलाप की बात उठाने से कट्टर पथी लोग बिदक जाते, पर अब वसी स्थिति नही है इसलिए काम का शुभारम्भ करने का समय आ पहुचा है। यह बात यहा सब लोग समझते है अब अगल कदम के बारे म मुझे बातचीत जारी रखनी है और मुझे आपकी सहायता मिलती ही रहेगी।

भवदीय
घनश्यामदास बिडला

हिज एक्सीलेंसी सर जान एण्डसन

५०

लन्दन
५ जुलाई, १९३५

लार्ड हैलिफक्स से भेंट
बातचीत ४५ मिनट चली

मैंने उन्हें सारी कथा कह सुनाई—१९३२ से लेकर अपने लन्दन आने तक की। अपने आने के एक महीने बाद उनसे भेंट हुई इसके लिए मैंने अपने भाग्य को दोषी ठहराया। मैंने बताया कि इस बीच मैंने अनेक द्वार खटखटाए, और उन्होंने दाद दी कि वे सब खुले मिले। मैंने स्वीकार किया। जब मैंने उन्हें बताया कि किस प्रकार मुझसे यही प्रश्न बार-बार पूछा गया कि क्या एमसन और मिस्टर गांधी एक-दूसरे को भाते हैं और मेरा यह जवाब रहा कि हां तो उन्होंने खुद ही कहा कि यह बात मजेदार है कि कुछ ही मिनटों की बातचीत के बाद दोनों एक-दूसरे को अच्छे लगने लगे। मैंने कहा कि इसका एकमात्र कारण यह है कि एमसन खरा और दो टूक बात करनेवाला इन्सान है। जब मैं अपनी कहानी सुना चुका तो उन्होंने कहा, "आपने जो-कुछ कहा है, उसमें सार है, मैं आपके प्रत्येक शब्द से सहमत हूं। आपने व्यक्तिगत सम्पर्क की आवश्यकता पर जोर देकर गुर की बात पकड़ी है। मिस्टर गांधी को क्या कुछ रुचेगा क्या नहीं, यह अब व्यक्तियों के बीच की बात बनकर रह गई है। वर्तमान वाइसराय के लिए उनसे निपटना सम्भव नहीं है। जिस चीज की सबसे अधिक जरूरत है वह है मनोदशा में सुधार।" लार्ड हैलिफक्स मेरी इस बात से सहमत हुए कि गांधीजी को हमेशा गुण की चिन्ता रहती है मात्रा की नहीं। उन्होंने यह माना कि बिल के साथ भावना का योग अनिवार्य तथा आवश्यक है। पर वह मुझे कोई ठोस सुझाव नहीं दे सके। उन्होंने बताया कि मैं जब से लन्दन आया हूं, वह यही बात सोच रहे हैं। लार्ड लोदियन से मेरी क्या बात हुई उन्हें पता है उन्हें यह भी मालूम है कि लार्ड लोदियन ने कोई रास्ता खोज निकालने का वचन दिया था। लार्ड लोदियन ने उन्हें यह सुझाया था कि लार्ड जेटलैंड कुछ दिनों के लिए हवाई जहाज द्वारा भारत जाकर वातावरण में सुधार करने की कोशिश करें। उन्होंने कहा, "मुझे यह सुझाव ठीक नहीं जंचा क्योंकि वैसा करने से भारत सरकार की प्रतिष्ठा को बट्टा लगेगा। मैंने उनकी उक्ति का औचित्य स्वीकार किया। उन्होंने कहा, "मैं एक और बात सोच रहा हूं। अगर मैं, जेटलैंड, लोदियन तथा भारत के कुछ केन्द्रीय

व्यक्ति भारतीय पत्रा म मिस्टर गाधी के नाम सहयोग की अपील प्रकाशित करें तो कसा रहे ? क्या उसका कुछ प्रभाव पडेगा ?" मैंने कहा, 'नही।" भारत के तथाकथित केन्द्रीय व्यविनयो ने दोना दिशाओ से लाभ उठाने की कोशिश की थी, इसलिए वे मिस्टर गाधी का विश्वास प्राप्त नही कर सकेंगे। आपकी अपील तभी प्रभावोत्पादक सिद्ध होगी, जब वह व्यक्तिगत रूप से और निजी तौर से की जाएगी। समाचार पत्रों का माध्यम ठीक नही रहेगा। यदि आप निजी पत्र द्वारा अपील करें तो उसका अधिक महत्त्व होगा।' उन्होने यह बात मानी पर कहा कि चाहे कुछ भी क्या न किया जाए सारी कठिनाई इस बात की है कि सरकार को लगेगा कि वह मिस्टर गाधी के आगे घुटने टेक रही है और लोगो की यह धारणा बनेगी कि मिस्टर गाधी के साथ समझौते की बात चलाने के सिवा उसके पास कोई और चारा नहीं है। उन्हाने बताया कि यही एक आशका है, जिसके कारण खुले आम बातचीत चलाना असम्भव हो गया है। मैंने कहा कि मैं भी खुलआम बातचीत चलाने के पक्ष म नही हू पर इसका कारण अलग है। भारत सरकार का अग्रेज अमला गाधी इर्विन पक्ट का लगातार विरोधी रहा है जिसके परिणामस्वरूप लाड इर्विन की साख को भी धक्का लगा है। अब नये सिरे से खुलेआम बातचीत चलाने की चर्चा होगी तो यह अग्रेज अमला एव भारत के अग्रेज व्यापारी मिल कर ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर देंगे कि सौहाद का वातावरण पुन दूषित हो जाएगा। मैं तो यह पसद करूगा कि सारी बातचीत अनौपचारिक ढग से और बगर किसी शोरगुल के की जाए। पर भारत सरकार को केवल अपनी मान-मर्यादा की चिन्ता है और उसका यह रुख मुझे एकदम अप्रिय है। सरकार को यह समझ होनी चाहिए कि १८ महीने बाद उसका स्थानहम लाग ग्रहण करेंगे और तब प्रश्न उसकी मान-मर्यादा का नही, हमारी मान मर्यादा का बन जाएगा। साझेदारी अविश्वास के वातावरण म नही चलती, मैत्री क वातावरण म ही पनप सकती है, इसलिए सरकार का अपनी वतमान मनावृत्ति बदलनी ही चाहिए। लाड हैलिफक्स न खुलआम बातचीत चलाए जाने के सम्भावित खतर को स्वीकार किया और पूछा, अगर मिस्टर गाधी को मैं निजी पत्र लिखू तो उसका प्रभाव पडेगा? आपका क्या खयाल है ? मैंने उत्तर दिया बहुत गहरा प्रभाव पडेगा। पर म आपको अभी कुछ लिखन की सलाह नही दूगा। सबस पहल आपका यह तय करना है कि आपका अगला कदम क्या हागा। आप उन्हें अभी स कोई पत्र लिखेंगे तो वह आपकी अपील स प्रभावित हाग, और आग चलकर दाल-दलिया कुछ न हुआ, ता वह भले ही न चिढ़ें पर विश्वास का चोट पहुचेगी।' उन्होने जानना चाहा, 'म उन्हें वचन भी दू तो क्या कहकर दू ?' मैंने कहा, 'आपके समथन का आश्वासन

ही काफी होगा, पर वसा आश्वासन देने से पहले आपको एक कदम आगे की बात सोच रखनी चाहिए।" उन्होने यह बात मानी और कहा कि वह इस विषय पर विचार करेंगे और यदि उन्हें लगा कि गाधीजी को पत्र लिखना ठीक रहेगा, तो वह इसके लिए भी तैयार हो जाएग। उसके बाद उन्होंने पूछा कि क्या नये वाइसराय के जान तक रुकना ठीक नही रहेगा, और यह भी कि क्या मैं लाड लिनलिथगो से मिला था। मने कहा, "हा मिला था, पर आगामी अप्रल तक रुकन म काफी देर लग जाएगी। काग्रेस का अधिवेशन माच मे होगा और तब पासा पड चुकेगा।" उन्होंने कहा "यह बहुत बढिया दलील है पर क्या हम लोग कोई ऐसा काम नहा कर सकते जिससे काग्रेस इस मामले म अधिक गहराई से नये वाइसराय के जाने तक रुकी रहे ? क्या मिस्टर गाधी इस दिशा मे हमारी सहायता करेंगे ?" मैंने उत्तर दिया, "जरूर करेंगे, पर तभी, जब म आपके पास स आशा और भरोसे का सदेश ले जाऊ। साथ ही शायद आपको भी लिखना पडे। मैंने उन्हें सुझाया कि नये वाइसराय के जाने तक सबसे अच्छा तरीका यही रहेगा कि दिल्ली के गति रोध का अत करने के निमित्त कुछ गवनर गाधीजी से मिलते रहे। इस प्रकार नये वाइसराय के लिए जमीन जुती-जुताई तयार मिलेगी। उन्हे यह सुझाव पसद आया। उन्हे रजा अली के सहयोगवाली घटना का पता है। उन्होने कहा, 'कल लाड लोदियन से मिलना है, लाड जेटलड से भी मिलूगा और देखूगा कि इस मामले मे क्या कुछ किया जा सकता है। उसके बाद आपसे एक बार फिर बात चीत करूगा। उन्होन श्री वाल्डविन से मेरी भेंट कराने मे महायता देने का वचन दिया।

बातचीत से ऐसा लगता है कि लाड हैलिफक्स का अब भी बडा प्रभाव है। उन्होन पूण आत्मविश्वास और खुल दिल से बात की, और मने स्वय देखा कि सारी बातचीत के दौरान उनका दिमाग तेजी से यही सोचने म लगा रहा कि क्या कुछ करना ठीक रहेगा। गाधीजी के प्रति उनका प्रगाढ मत्री का भाव है और वह भारत के मगल के लिए सचमुच कुछ-न कुछ करने की अभिलाषा रखते हैं। मेरी धारणा है कि वह इस अपना नतिक कत्तव्य मान वठे हैं।

५१

८ जुलाई १९३५

सर सेम्युअल होर से भेंट

मुलाकात का समय ५ बजे के लिए निश्चित हुआ था। मुझे आधे घण्टे तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। उसके बाद उनका सेक्रेटरी आया, तथा इतनी देर तक प्रतीक्षा करने के लिए क्षमा-याचना करते हुए बोला कि सर सेम्युअल एक अन्य मुलाकाती के साथ बात कर रहे थे। ठीक ५॥ बजे मैंने उनके कमरे मे पाव रखा। उन्होंने इतनी देर तक रोके रखने के लिए खेद प्रकट किया और बताया कि अभी अभी कामस सभा से बुलाहट आई है इसलिए बातचीत अधिक देर तक नही हो पाएगी, मुझे सारी बात ८ मिनट म समाप्त करनी होगी। उसने इस सीमित समय का अच्छा खासा उपयोग किया।

मने कहा कि म भारत से जो कुछ लिख चुका हू उससे अधिक मुझे कुछ नही कहना है। इग्लड का वातावरण अपेक्षाकृत अच्छा है, पर भारत का वातावरण बहुत गदा है। ऐसे वातावरण मे बिल के रचयिताओ के इरादो का हम ठीक ठीक अथ लगाने म असमथ हैं। सबसे पहले पारस्परिक सम्पक स्थापित होना चाहिए उसके बाद समझौता होना चाहिए। उन्होने कहा कि वह इग्लड म ही व्यक्तिगत सम्पक बनाए हुए हैं, और भारत स जो कोई आता है उससे मिलते रहत हैं। वह बोले, म सदव मानवीय सम्पक का कायल रहा हू पर भारत के मामले म म कुछ नही कर सका। प्रातीय विधान सभाओ के निर्वाचन प्राय १८ महीने बाद होंगे। तब तक बहुत कुछ घट जाएगा। पर हम यह अतरिम काल पारस्परिक सम्पक बढाने और एक दूसरे के विचार को समझनेमे व्यतीत करेंगे। मने कहा पर नया वाइसराय अप्रल म आएगा और काग्रस का अधिवेशन माच मही हो जाएगा। कुछ-न कुछ इसस पहल ही हो जाना चाहिए। उन्होने पूछा क्या काग्रस का अधिवेशन नय वाइसराय के आने तक स्थगित नही हो सकता? नया वाइसराय अप्रल के पहले सप्ताह म पहुच जाएगा। यदि काग्रेस नये वाइसराय के द्वारा नयी नीति का श्रीगणेश करने से पहले ही कुछ निश्चय या निणय कर लेगी, तो यह बुद्धिमत्ता का काम नही होगा। फिर वह बोले हम सुधारो को पूणतया सफल बनाने के लिए दढ प्रतिज्ञ हैं। हम भारत के मगल के लिए इन सुधारा के द्वारा अधिक से-अधिक उपलब्धि करने के इच्छुक है। चर्चिल ने बखेडा खडा नही किया पर अन्य कट्टर पथियो न बिल को तहस-नहस करने म कोई कोर-कसर नही रखी थी। हमारी

इन कोशिशों के पीछे हमारी नेकनीयती छिपी हुई थी। यदि भारत इसकी सराहना नहीं करेगा, तो हमें बड़ा दुःख होगा।' इसके बाद उन्होंने कहा, 'आप मिस्टर गांधी को बता दीजिए कि हम भारत का हित करना चाहते हैं। उन्हें कांग्रेस को कोई ताजा निश्चय या निर्णय करने से रोक रखना चाहिए।" मैंने कहा, "मैं भरसक प्रयत्न करूंगा, लेकिन आप यह मिस्टर गांधी को अपने एक पत्र में लिख दें, तो कैसा रहे?" उन्होंने कहा, 'मैं लार्ड जेटलैंड से बात करूंगा। पर मैं वर्तमान वाइसराय के लिए परेशानी पैदा नहीं करना चाहता।' मैंने कहा, 'आप सोच विचार लीजिए।" वह सहमत हुए। मैंने पूछा, 'क्या गतिरोध का अंत करने की दिशा में पहला कदम दिल्ली में ही उठाना ठीक नहीं रहेगा? उसके बाद सर जान एण्डर्सन मिस्टर गांधी से बातचीत शुरू कर सकते हैं।' उन्होंने कहा, 'मिस्टर गांधी से बात चलाने के लिए सर जान एण्डर्सन ठीक जंचते हैं। मैं लार्ड जेटलैंड से बात करके देखूंगा कि वह क्या कहते हैं?" उन्होंने एक बार फिर खेद प्रकट किया कि उन्हें जाने की जल्दी है। बोले, 'मेरी तबीयत ठीक नहीं रहती है। एक बार तो बहुत बीमार हो गया था। तब अपने नये आफिस में आया तो ऐसा लगा कि दुनिया खत्म हो रही है।" उन्होंने आशा प्रकट की कि सम्राट की गार्डन पार्टी में फिर मुलाकात होगी, तब ज्यादा बातचीत होगी।

उन्होंने गांधीजी के स्वास्थ्य के विषय में पूछताछ की। मैंने बताया कि वह स्वस्थ हैं। मैंने पूछा, "नया वाइसराय कौन होगा?" वह बोले, 'अभी तय नहीं हुआ है।' साथ ही उन्होंने आश्वासन दिया कि वे लोग ऐसे आदमी को भेजेंगे जो सुधारों को पूर्ण सहानुभूति के साथ और भारत के मंगल के लिए अमल में लाएगा। उनकी नीयत साफ दिखाई दी। इस प्रकार हमने प्रारम्भिक आठ मिनट व्यतीत किए। अब तक जितनी मुलाकातें हुई हैं यह उनमें सबसे अल्पकालीन रही। उन्होंने जो उद्गार व्यक्त किए उनकी नेकनीयती के बारे में शक शुबहे की कोई गुंजाइश नहीं थी, और यह स्पष्ट हो गया कि यह छुआछूत का भूत भारत में ही वास करता है व्हाइट हाल से उसका कोई सरोकार नहीं है। पारस्परिक सम्पर्क न होने के सम्बन्ध में भारत-सचिव ने अपने विचारों को छिपाने की कोशिश नहीं की। वह टेढ़े मेढ़े निर्वाचनों के खिलाफ हैं पर लाचार हैं।

५२

८ जुलाई, १९३५

कुमारी राथबोन के साथ भेंट

इसका कोई प्रभाव नही है पर जताती है कि है। बात का प्रतिपादन नैतिक आधार पर करती हू। बोली, अभी भारत प्रजातन्त्र के योग्य नही है इसलिए सरक्षण आवश्यक है। इसने मुझे बताया कि भारत के प्रति इग्लैड का रुख कठोर हो चला है। आप हमे धमका नही सकते। मैने उत्तर दिया मुझे यह नयी बात मालूम हुई। यह तो कहा जा सकता है कि हममे डराने धमकाने लायक शक्ति नही है पर आपका यह कहना कि इग्लैड धमकियो म आनेवाला नही है सचाई की ओर से मुह मोडना है। इसे जर्मनी ने डराया धमकाया इटली ने डराया धमकाया। अभी कुछ ही महीने पहले तक श्री ए यनी इनके आगे दण्डवत करने की बात भी न सोचते पर अब ये राष्ट्र आपको डरा धमका रहे हैं तो आप झुक रहे हैं।"

राथबोन बोली जर्मनी के बारे म हम अपने-आपको अपराधी मान रहे थे।' मैंने तडाक से उत्तर दिया "और शायद भारत के बारे मे आपने अपने-आपको निर्दोष मान रखा है? वह बोली,"हम लोग अधिक दूर तक नही जा सके, क्योकि भारतवासियो म इग्लैंड के प्रति विरोध की भावना थी।" मैने कहा तो फिर रिआयतो और अत करण की बात उठाना बेमानी है। आप लोग हमे हमारी विरोधी भावना के लिए पुरस्कार दे रहे है या दण्ड दे रहे हैं, सबसे पहले आपको इसका निर्णय करना चाहिए।"

५३

८ जुलाई, १९३५

प्रिय सर फाइण्डलेटर स्टीवार्ट,

मेरी मुलाकातो का पहला दौर खत्म हो गया है। मैंने सोचा कि मैने जो कुछ बातचीत की उसे लिख डालू जिससे मेरा दृष्टिकोण स्वय मेरे लिए स्पष्ट हो जाए। अत इस पत्र के साथ परिणामस्वरूप सामग्री भेजता हू।

सामत सभा की कमेटी के दौर से बिल गुजर जाने के बाद आप और लार्ड जेटलड शायद मुझे बुला भेजेंगे।

आप लोग अपना प्रोग्राम पहले से ही बनाकर रख छाडते हैं इसलिए मैं यह पत्र आपको याद दिलाने के लिए नहीं लिख रहा हू, क्योकि मैं जानता हू कि यह मामला आपके ध्यान म पहले से ही है बल्कि इसलिए लिख रहा हू कि मुझे मालूम हो सके कि मुलाकात के लिए कोई तारीख निश्चित करना आपके लिए सम्भव होगा या नही। लार्ड जेटलैंड न कहा था कि म आपके सम्पर्क म रहू, पर म आपको परशान करना ठीक नही समझता। मैं जानता था कि आप जब जरूरी समझेंगे, मुझे खुद ही बुला भेजेंगे।

इस बीच क्या श्री बाल्डविन के साथ कुछ मिनट की बातचीत सम्भव हागी?

मुझे मालूम हुआ है कि लार्ड ब्रेबान यही हैं। क्या उनसे भेंट सम्भव है? यदि है, तो क्या आप इसकी व्यवस्था कराने की कृपा करेंगे?

भवदीय,
घनश्यामदास बिडला

सर फाइण्डलेटर स्टीवार्ट, नाइट,
स्थायी अण्डर सेक्रेटरी,
इण्डिया आफिस,
एस० डब्ल्यू० १

५४

८ जुलाई, १६३५

प्रिय लार्ड लोथियन,

मने अपनी मुलाकातो का पहला दौर प्राय पूरा कर लिया है, और अब दूसरा दौर शुरू कर रहा हू। अब यदि आपसे दूसरी बार मिलन की बात ध्यान म हो तो अगला कदम क्या हागा इस बाबत मुझे कुछ मालूम नही हो सका है। म जानता हू कि यह बात आपके ध्यान मे है और आप इस सबध मे सहायता कर रहे हैं। कुछ भी हो आपसे जब कभी मेरा मिलना उचित लगे एक पक्ति लिख भेजिए।

म स्वदेश कुछ ठोस चीज लेकर ही लौटना चाहता हू। साथ ही म श्री इसाक फूट और श्री लॉयड जार्ज से मिलना चाहता हू। श्री लॉयड जॉर्ज से मिलने के

लिए मेरे पास एक परिचय पत्र है।

क्या आपके लिए इन दोनो भेंटा की व्यवस्था करना सम्भव होगा ?

भवदीय,
घनश्यामदास बिडला

मार्क्विस आफ लोदियन
१७, वाटरलू प्लेस
एस० डब्ल्यू० १

५५

८ जुलाई, १६३५

प्रिय लाड लिनलिथगो

आपसे मिलने के बाद मैं लाड हैलिफक्स स मिला था, और आज तीसर पहर सर सेम्युअल होर से मिलने की बात है। ऐसा लगता है कि अगले कदम के सबध म सूचना सामत सभा की कमेटी के दौर स बिल के गुजर जान के बाद ही मिल पाएगी।

आपसे फिर भेंट हागी ? जसा आप उचित समझें। म जानता हू कि आपक पास समय का नितात अभाव है म केवल आपको याद दिला रहा हू। यदि आप अगले हफ्ते क किसी दिन मेर साथ भोजन करन का सौभाग्य प्रदान करें तो इसस अच्छी बात और क्या हो सकती है ?

सर जाज शुस्टर न मुझे सुझाव दिया था कि म ग्रामोत्थान के सबध म क्या कुछ कर रहा हू, उसके बार म आपको अधिक जानकारी कराऊ ता उत्तम हा। अगली भेट के दौरान म ऐसा अवश्य करूगा।

भवदीय,
घनश्यामदास बिडला

मार्क्विस आफ लिनलिथगो,
२६, चेशाम प्लेस
एस० डब्ल्यू० १

५६

८ जुलाइ, १९३५

प्रिय लाड हैलिफैक्स,

अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट करने के लिए मने उन सारी बाता को लिपिवद्ध कर लिया है जो म मित्रा स यहा आने के बाद कहता रहा हू। इस पत्र के साथ उसकी एक प्रति सलग्न है।

यदि आपको लग कि म अपने विचार सम्यक रूप से व्यक्त करने मे समथ हुआ हू तो क्या एक प्रति लाड लिनलिथगो के पास भी भेज दू ? एक प्रति मैं सर फाइण्डलेटर स्टीवाट के पास पहले ही भेज चुका हू।

श्री बाल्डविन से कुछ मिनटो के लिए मिल लेने की अभिलापा है। आपको याद दिला रहा हू।

भवदीय,
घनश्यामदास बिडला

लाड हैलिफक्स
समर विभाग

५७

गोपनीय

डर्बी हाउस,
स्ट्रेटफोड प्लेस, डब्ल्यू० आइ०
९ जुलाइ, १९३५

प्रिय महोदय

आपके पत्र के लिए अनेकानक धयवाद। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुइ कि आप लाड सलिसबरी से भेंट करन जा रहे हैं। आपको वह बहुत अच्छे लगेंगे। हम दोना का समान दृष्टिकोण तो नही है पर इसम सदेह नही कि उनके हृदय म दोनों ही देशा के कल्याण की कामना है। आज म शायद पहली वार उनको एक

मामले म समथन कर रहा हू। इसका सबध एक एसे परे स है, जिसम कहा गया है—और जिसक बारे मे सम्भवत आपको भी कोइ आपत्ति नही होगी—कि ब्रिटिश माल के मुकाबले विदेशी माल को तरजीह न दी जाए। म अपने देश क माल को तरजीह दिया जाना कभी पसद नही करूगा, हा, उस वह स्थान अपने आप मिल जाए तो बात दूसरी है। पर एक बात जो म चाहता हू और जिसे आप सब भी चाहते हैं, उसे प्रकाश म लान म म कोइ हानि नही देखता हू। वह यह कि ब्रिटिश माल के साथ कोइ भेदभाव न बरता जाए।

आपन भोजन का निमत्रण दिया धन्यवाद। पर म उसे स्वीकार करन मे असमथ हू, क्याकि आगामी २२ तारीख तक सभी रात्रियो के लिए मैं बुरी तरह बधा हुआ हू। उसके बाद मुझे अपनी चिकित्सा के लिए बाहर जाना है। पर आपके निमत्रण के लिए म अत्यत कृतज्ञ हू।

भवदीय,
डर्बी

श्री घनश्यामदास बिडला

५८

६ जुलाई, १९३५

लाड सलिसबरी से मुलाकात

लाड सलिसबरी बुडढा है और बहरा है। न सकल्प शक्ति है न प्रत्युत्पन्न मति, पर अपने उत्तरदायित्व के प्रति सचेत है। मुझे बताया कि मिस्टर गाधी से मिलने का उसे कभी सौभाग्य प्राप्त नही हुआ। मैंने बिल के प्रति उसके विरोधी रुख की चर्चा की और कहा कि बिल मुझे भी पसन्द नही पर इसके कारण दूसरे हैं। हम मानत हैं कि उसके द्वारा यथेष्ट प्रगति नहीं होगी। साथ ही मैंने कहा 'पर राजनतिक मतभेद के बावजूद क्या हम बिल को कार्यान्वित करने के मामले मे मित्र जसा आचरण नही कर सकते ?' उसने उत्तर दिया क्या हम इस समय भी मित्र नही है ? मेरा उत्तर था नही। इस समय भारत का वातावरण विरोध की भावना और गलतफहमी स व्याप्त है। 'उसने बताया कि वह श्री गौड के सम्पक मे आ चुका है। 'क्या वह भारत का प्रतिनिधित्व नही करते हैं ? मैंने कहा 'वह व्यवस्थापिका सभा के लिए खडे होने के निमित्त एक निर्वाचन-क्षेत्र

तक हासिल नही कर पाये।" वह बोला 'हा, यह तो मैं जानता हू।" इसके बाद उसने कोई ठोस सुझाव मागा। मैंने कहा, हलिफक्स की भावना को स्थापित कीजिए। उसने उत्तर म हैलिफक्स के साथ अपनी असहमति जताते हुए कहा, "हैलिफक्स ने जो किया वह हैलिफक्स के किये ही हो सकता है। बडे आकर्षक व्यक्ति हैं। डर्बी भी कम आकर्षक नही है पर दोनो म नही पटी।" मैंने कहा, 'तिसपर भी आपकी मित्रता बनी रही।' उसने सहमत होते हुए कहा कि राजनैतिक मामलो म मतभेद होते हुए भी मत्री निभाई जा सकती है।

उसने गाधीजी के सता जसे जीवन चरित्रबल और साधु उद्देश्यो की सराहना की पर कहा "आप भारतवासियो की सबसे बडी भूल यह है कि आप लोग सद्गुणो और अनुभव मे भेद नही करते। इग्लैंड के पास १००० वर्ष का अनुभव है, आपके पास क्या है? कुछ भी नही।' मैंने उत्तर दिया "हम लोगों की पृष्ठभूमि इग्लैंड से कही अधिक पुरानी और गौरवपूर्ण है। उसने कहा "आपकी संस्कृति और दर्शन शास्त्र दोनो महान हैं मैं उन्हें घटाकर बताना नही चाहता पर वह प्रजातत्र तो है नही। आपको अभी सीखना है। मैंने कहा, क्या आपने गलतिया नही की?' उसने कहा हा।" मैंने कहा 'हमारे पास कुछ चीजो का अभाव है इसीलिए तो हम मैत्री की बात कर रहे हैं।

आदमी भला है पर इससे कोई काम सधनेवाला नही।

५६

६ जुलाई, १६३५

प्रिय सर फाण्डलेटर स्टीवार्ट

अपने कल के पत्र और उसके साथ नत्थी की गई सामग्री के सिलसिले म कुमारी हैरिसन के नाम श्री एण्ड्रूज के पत्र का साराश भेजता हू। आशा है, आपको रोचक लगेगा।

यदि आपको उचित लगे कि मेरा कल का पत्र और आज का पत्र भारत-सचिव के सामने रखे जायें और इससे मेरे मिशन म सहायता पहुचेगी तो आप ऐसा अवश्य करिये। मैं यह आपके ही ऊपर छोडता हू कि क्या करना उचित होगा।

मैं इस विषय पर जितना अधिक सोचता हू मेरी यह धारणा दृढ होती जाती है कि यदि वातावरण म सुधार अभीष्ट हो, तो इसके लिए वर्षों तक अन वरत परिश्रम की आवश्यकता है। जैसा कि मिस्टर गाधी का कहना है "हमार आचरण म एकरूपता का अभाव रहा है।' मैं तो कहूगा कि यह उक्ति दोना ही पक्षो पर समान रूप स लागू होती है। इस प्रकार एक दुष्ट चक्र-सा बन गया है। इस चक्र को तोडना होगा और किसी-न किसी दिन इस काम को हाथ मे लेना अनिवाय हो जायगा।

भवदीय,
घनश्यामदास बिडला

६०

१० जुलाई १६३५

प्रिय लाड डर्बी,

आपके पत्र के लिए अनेक धयवाद। आपके सुझाव पर मुझे सिद्धात के रूप म केवल एक स्थिति को छोडकर और किसी स्थिति म आपत्ति करने का कारण प्रतीत नही होता। मरी आपत्ति इस बात पर है कि अग्रेजी माल ब्रिटिश सरकार के अशदान अथवा क्षतिपूरक सहायता के नाम पर भारत मे उडेल दिया जाए। वसी स्थिति म भेदभाव करनेवाली चुगी लगानी पड सकती है लेकिन अय देशा के मुकाबले ब्रिटिश माल के साथ भेदभाव बरतनेवाली चुगी का क्या औचित्य है ?

मैं और एक स्पष्टीकरण करना चाहता हू। वह है भारत बर्मा समझौता। सरकार को एसा समझौता करने की सलाह देने के लिए जो प्रतिनिधि मडल भेजा गया था उसमे मैं भी था। हम लोगो ने केवल दो वष का परामश दिया था। भारत स्थित ब्रिटिश हितो न पाच वष का हठ पकडी थी। यह कशमकश मैंचेस्टर के कपडे और भारत के बीच नही बल्कि मैंचेस्टर के कपडे और बर्मा से प्राप्त ब्रिटिश तेल के बीच है। हमन तेल को तरजीह दी, यद्यपि इसके लिए हम जो बलि दान करना पड रहा है उसकी मात्र आशिक पूर्ति भारत के कपडे पर दी जानेवाली रिआयत से होती हो तो हो। वास्तव म भारतीय हितो का यह पक्का सुझाव था कि तरजीह न ब्रिटिश कपडे को दी जाए न भारतीय कपडे को, पर तेलवाले

अपन हित को ज्या-का-त्यो वनाए रखन के पक्ष म थे, मैंन दाना स्थितियो मे तालमेल वठानेवाला यह सुझाव पेश किया था और अ त म यह समझौता हो गया।

मैं यह केवल इसलिए लिख रहा हू, जिससे इस मुद्दे पर म चेस्टर के हितो और हमार बीच किसी तरह की गलतफहमी न रहे।

मुझे यह जानकर निराशा हुई कि अब आपम भेंट नही हो पायेगी। मैं अगले महीने म चेस्टर जाने की सोच रहा हू। म आशा लगाए बठा था कि उस अवसर पर वहा आपसे भेंट हो जायेगी। पर भाग्य ने साथ नही दिया। अव मैं आपकी शुभकामनाआ का प्रत्युत्तर या तो आपकी भारत-यात्रा के दौरान या मेरे फिर से यहा आने के अवसर पर ही दे पाऊगा।

म आपकी शिष्टता व सौज य के प्रति आभार प्रकट करता हू जिसका परिचय आपने हमारी अल्पकालीन वार्ता के दौरान दिया था। कहना अनावश्यक है कि मैं आपकी सादगी, मत्री और हृदयाकपक व्यक्तित्व स वहुत प्रभावित हुआ हू।

भवदीय,
घनश्यामदास विडला

अल आफ डर्वी

६१

८८ ईटन स्क्वेयर,
एस० डब्ल्यू० १
१० जुलाई, १६३५

प्रिय श्री विडला

आपके पत्र के लिए बहुत-बहुत धयवाद। आपने लिखित रूप म जो सामग्री तैयार की है वह मुझे बहुत रोचक लगी है और मैं उसकी एक प्रति लाड लिन लियगो को अवश्य भेजूगा।

अवसर मिलते ही मैं यह पता लगान की कोशिश करूगा कि श्री वार विन

आपके लिए समय निकाल सकेंगे या नहीं ? यदि सम्भव हुआ तो समय अवश्य निकालेंगे।

भवदीय,
हैलिफक्स

पुनश्च

यह पत्र लिखाने के तुरत बाद श्री बाल्डविन से मिला। वह आपसे मिलकर प्रसन्न होंगे पर यह भेंट एक सप्ताह या दस दिन बाद ही हो पायेगी। वह आपसे कब मिल सकेंगे, इसकी सूचना आपको देने के लिए मैं उनके सेक्रेटरी से कह दूंगा। वह बड़े कार्य व्यस्त हैं। मैंने उनसे कह दिया है कि जब उन्हें सुविधा होगी आप उनसे भेंट करेंगे।

श्री घनश्यामदास बिड़ला

६२

१० जुलाई १९३५

टाइम्स के सम्पादक श्री डासन से भेंट

मैंने जो कुछ कहा उसमें उन्होंने रुचि दिखाई। उन्हें जान हैण्डर्सन मेरी ही तरह प्रिय हैं। इस विषय को वह अपने पत्र में उठायेंगे। उन्होंने बताया कि लार्ड हैलिफक्स का कैबिनेट में बड़ा प्रभाव है पर वह राजनीति का परित्याग करके अपने बंधु बांधवों के साथ अपनी जमींदारी में रहने को उत्सुक हैं क्योंकि वहां के लोगों की दशा शोचनीय है। उनका अंतःकरण उन्हें बेचैन कर रहा है। जटलैंड बहुत भले आदमी हैं और हिन्दुओं के कट्टर समर्थक हैं। श्री डासन मुझसे इस बात पर सहमत हुए कि वातावरण में सुधार अत्यावश्यक है। वह कभी मेरे साथ भोजन करने आयेंगे। उन्होंने भी यह स्वीकार किया कि भारत का अंग्रेज अमला राजनीति में टांग अड़ाता है। पर उनकी राय है कि अंत में सब कुछ ठीक हो जायेगा।

६३

११ जुलाई, १६३५

प्रिय श्री डासन

आज के टाइम्स मे भारत पर जो लेख निकला है उसे मैंने रुचिपूर्वक पढा। आपने स्थिति को बडे सुन्दर ढग से पेश किया है और यह देखकर मुझे प्रसन्नता हुई है कि आपने पारस्परिक सम्पकवाले पहलू पर जोर डाला है। पर मेरी समझ म शासनारूढ वग को प्रभावित करने के लिए कुछ और अधिक नपी तुली भाषा की जरूरत है।

इस प्रश्न पर सरसरी तौर स की गई चर्चा से विशेष सहायता नही मिलेगी। पता नही पारस्परिक सम्पकवाली बात को लेकर किसी दिन पूरा का पूरा अग्र लेख देने का मेरा सुझाव आपको कसा लगेगा।

जसा कि मन बताया था लाड हैलिफैक्स ने ६०००० आदमियो को जेलो मे ठूस दिया था तिस पर भी उनके प्रति किसी प्रकार की दुर्भावना पैदा नही हुई थी। सर जान एण्डसन ने २५०० आदमियो को मुकदमा चलाए बिना जेलो मे बन्द कर रखा है तिस पर भी उनकी लोकप्रियता म अन्तर नही आया है। इसका कारण यह है कि उन्होने पारस्परिक सम्पक के द्वारा अपने आलोचको के सामने यह स्पष्ट कर दिया है कि यह सब कुछ उन्ह स्वय भी अरुचिकर लग रहा है।

लाड हैलिफक्स के विदा होते ही पारस्परिक सम्पकवाली नीति को तिलाजलि दे दी गई। जबतक वह नीति फिर से नही अपनाई जायेगी आनेवाला बिल अव्याव-हारिक ही सिद्ध होगा एसी मेरी धारणा है। हम लोग बिल से सन्तुष्ट नही है, साथ ही उसम लिखी धाराओ की अपेक्षा हम उसके स्वरूप से और अधिक असन्तुष्ट हैं। यदि दोनो पक्ष एक दूसरे को समझ पाए, तो यही बात गले भी उतर सकती है। एक दूसरे को समझने के इस विषय म दक्षिणपथियो को वाम पथियो से होड लेनी पड रही है। और इस प्रकार दोनो देशो के बीच की खाइ अधिकाधिक चौडी होती जा रही है।

भारत क अधिकारी वग को एकमात्र सरकार की प्रतिष्ठा का खयाल है। यह वग इस बात को भूल जाता है कि आज की सरकार कलवाली सरकार नही होगी और कलवाली सरकार की प्रतिष्ठा का भी उतना ही महत्त्व है जितना आज की सरकार का। आज की सरकार म सरकारी अमले का बोलबाला है। कलवाली सरकार मे मत्रियो का बोलबाला होगा। यदि बिल को सफल बनाना

है तो सरकारी अमले को इस महत्त्वपूर्ण पहलू को भली भांति समझ लेना होगा। इंग्लैंड में सद्भावना और सहानुभूति प्रचुर मात्रा में विद्यमान है पर यह सुखदायी ऋतु अभीतक एक समन्दर भी पार नहीं कर पाई है।

आपसे एक बार फिर बात करने की इच्छा रखता हूं। यदि आप समय निकाल सकें और मेरे साथ भोजन के लिए आ सकें, तो बडी बात होगी।

भवदीय
घनश्यामदास बिडला

६४

१२ जुलाई १९३५

सर आस्टिन चेम्बरलेन के साथ मुलाकात
समय प्रात काल १०॥ बजे

बातचीत एक घण्टा चली। प्रारम्भ में वह कठोर दिखाई पडे। बातचीत का अंत होते होते बडे मीठे और भले हो गये। मैंने बात अपनी पुरानी दलील के साथ छेडी और जब मैं अपना कथन समाप्त कर चुका तो उन्होंने कई मुद्दों को लेकर मुझे चुनौती दी।

यदि वाइसराय मिस्टर गांधी के साथ मुलाकात करने को राजी नहीं हैं तो इसका कोई वैध कारण अवश्य होगा। वाइसराय का रुख बहुत सहानुभूतिपूर्ण है और वह आवश्यक कारवाई करने की क्षमता रखते हैं। आपका यह कहना गलत है कि वह कार्यभार से दब गये हैं या थक गये हैं। कांग्रेस ने रजिस्टर में दस्तखत न करके राजा के प्रतिनिधि का अपमान किया है। ऐसी हालत में मुलाकात कैसे हो सकती है? ब्रिटिश शासन पक्षपातरहित है। यह कहना गलत है कि हम हिन्दू हितों का बलिदान करके मुसलमानों को बढावा दे रहे हैं। जेटलैंड हिन्दुओं के कट्टर समर्थक हैं। उनसे बढकर सहानुभूति कौन दिखा पायेगा। वह दखल नहीं दे सकते। वाइसराय जो उचित समझेंगे करेंगे।

मैंने कहा 'मुझे अपनी बात दुबारा समझानी होगी। मैं आपसे दखल देने के लिए नहीं कह रहा हूं। आप न कैबिनेट में हैं न भारत-सचिव हैं न वाइसराय हैं। इसलिए आपके दखल देने का तो सवाल ही नहीं उठता। आप केवल सलाह दे सकते हैं। वर्तमान वातावरण में सुधारों को अमल में लाना सम्भव नहीं है।

जहा सुधार टप हुए कि कटुता का बढना अनिवाय है, और साथ ही गर जिम्मे दारी भी बढ़ेगी। मैंने यह बीडा खुद ही उठाया है और अब मैं किंकर्त्तव्यविमूढ हू। मैं यह तय नहीं कर पा रहा हू कि किस दिशा म कदम बढाऊ। आपकी क्या सलाह है ? मैंन यह नहीं कहा कि मुसलमाना को ज्यादती करने का बढावा मिलता है। मेरा कहना केवल यही है कि एक हिन्दू अधिकारी को अपनी निष्पक्षता सिद्ध करने के लिए मुसलमाना के साथ पक्षपात बरतना पडता है। यदि वह ऐसा न करें ता उसे अपने अफसरा की डाट फटकार सुननी पड सकती है।"

मैंने देखा कि चेम्बरलेन पिघले और बात म रस लेने लगे बोले ' यह तक आप किसके खिलाफ पश कर रहे हैं ? क्या आप न्याय करने मे अपनी अयोग्यता की स्वय ही घोषणा कर रह है ? और इसी तक के द्वारा आप सुधारो के खिलाफ दलील पेश कर रहे हैं। मैंने वस ही जोश के साथ उत्तर दिया ' मैं न सुधारो के खिलाफ दलील पेश कर रहा हू, न हम लोगा की अयाग्यता की ही घोषणा कर रहा हू। सुधारा से कोई सहमत नहीं ह। यदि मैं सुधारा के खिलाफ दलील पेश करता प्रतीत होऊ तो मुझे इसकी चिन्ता नही है। मेरी दलील आपकी नीति के खिलाफ है जिमकी बदौलत सरकारी अधिकारिया के लिए सही आचरण करना असम्भव हो जाता है। वह बाले, अच्छा यह बात है। आप हम पक्षपात का दोषी ठहरा रहे है ? मैंने कहा ' बात तो कुछ ऐसी ही है और अपने कथन की सत्यता प्रमाणित करने के लिए मैं दष्टात पर दृष्टात पश करने को तैयार हू।" और मुझे लगन लगा कि इस घर से मित्र की हैसियत स विदा होना सम्भव नही है।

उन्होंने रुखाई के साथ कहा, 'आप यह धारणा बनाय रखना चाहें, तो बनाय रखिए पर मैं आपके कथन को मान नही सकता। मने कहा म लाचार हू, पर मैं जा कह रहा हू वह मेरी सम्मति-मात्र नही है, बल्कि वस्तुस्थिति है जिसकी पुष्टि स्वय आप ही के आदमी करेंगे। एक बार सर जेम्स ग्रिग ने मुझसे कहा था, "जब कभी आप किसी मुसलमान के पास कोई सुझाव लेकर पहुचेंगे तो आपको उसकी रजामदी की मुह मागी कीमत अदा करनी पडगी। आप पक्षपात भले ही करें, पर पक्षपात रहित होने का दावा क्या करते हैं ? साम्प्रदायिक निणय एक जीता-जागता उदाहरण है। आपने हिन्दू हितो का बलिदान करके मुसलमाना को सीटें दी। 'इस पर वह और भी नाराज हो उठे। बोले, "म कुछ नही कर सकता। हमने आपको बिल दिया और आपकी हर तरह से मदद की। यदि पारस्परिक सम्पक की जरूरत है तो काग्रेस को सुधारा को कार्यान्वित करने म क्या आपत्ति है ? काग्रेसी लोग हस्ताक्षर न करके पारस्परिक सम्पक स्थापित करने से खुद जी

चुरा रहे हैं। व वाइसराय का अपमान करने के बाद भी पारस्परिक सम्पर्क स्थापित करने की इच्छा रखते है।" मने तुरत जवाब दिया, 'सर आस्टिन, मिस्टर गाधी की बात न करें तो अच्छा है। यह मामला व्यक्तियो के बीच का है। वाइसराय और मिस्टर गाधी की भेंट हो या न हो यह इन दोनो की अभिरुचि पर निभर है। पर क्या आप समझते हैं कि ऐसे वातावरण म सुधार लागू किये जा सकते हैं? यदि मिस्टर गाधी के साथ नही तो भारत का प्रतिनिधित्व करनेवाले किसी अय व्यक्ति के साथ आपको समझौता करना पडेगा। अब यह पता लगाना आपका काम है कि वह अय व्यक्ति कौन हो सकता है। म अप्रियता मोल नही लेना चाहता हू पर वाइसराय द्वारा गाधीजी के साथ मुलाकात करने से एक से अधिक बार इकार करने के बाद क्या आप किसी भी स्वाभिमानी काग्रेसी से यह अपेक्षा करते है कि वह वाइसराय की मुलाकाती किताब म अपना नाम दज करेगा?' मने यह बात काफी सरगर्मी के साथ कही। बस इसके बाद बातचीत का प्रभाव दूसरी दिशा म हो गया। उ होने कहा यह बात दूसरी है। आपने स्थिति को दूसरे रूप म पश किया है। इसके बाद बातचीत का दौर मत्री के वातावरण म रहा। उ होने अपेक्षाकृत अधिक सहृदयता का परिचय दिया और मैं भी निश्चित हो गया।

उ होने सुधारो की प्रशसा के पुल बाध दिये और कहा कि उ ह कार्यान्वित करने के दौरान वह पूरी नेकनीयती के साथ भारत के हित-साधन की कामना से अनुप्राणित रहगे।

इस पर मैंने कहा म आपके आश्वासन को स्वीकार करता हू। इस नेकनीयती के दशन मुझे जितने यहा हुए, भारत म नहा हुए। मने अपन हृदय के भावो को काग्रेसियो से कभी नही छिपाया पर म यहा यह बताने क लिए नही आया हू कि मन अपन काग्रेसी मित्रो से क्या कहा। म यहा आपके सामन उनकी कठिनाइया पेश करने आया हू। भारत म इस समय अविश्वास का वातावरण व्याप्त है फलत उनके लिए आपके इरादो को अच्छे रूप म ग्रहण करने म कठिनाई हो रही हैं। सुधारो का भारत के हित मे होना सम्भव है पर एकमात्र इसी शत पर कि उ ह पारस्परिक मत्री के वातावरण म लागू किया जाए। म सरक्षणो को स्वीकार करता हू तो इसलिए नही कि वे मुझे प्रिय हैं बल्कि इसलिए कि हम शक्तिहीन हैं। हम लोग अपनी निबलता की ओर स सचेत है। यदि हम निबल न होते तो आप इन सरक्षणो को हमारे ऊपर थोप ही नही पाते या हम अपनी शक्ति का सहारा लेकर सुधारो को व्यथ कर देते। पर यदि य सुधार अविश्वास की भावना के प्रतीक बन जायग तो हम लाख निबल होते हुए भी

उन्ह मान्य नही कर सकेंगे। यदि भरोसे की भावना के साथ सुधार पेश हो तो व सफल सिद्ध हागे और वसी भावना न होने पर वे जहर का प्याला ही सावित हागे।' वह सोलह आने सहमत हुए।

उन्होंने कहा कि मुझे भारत मे अथवा इडिया आफिस के लोगो के साथ एक दूसरे का समथन की भावना से प्रेरित होकर काम करना होगा। पर वह निश्चित रूप म कुछ नही कह सक। वह केवल पालियामेट म बोल सकत हैं, पर इतन मात्र से तो कोई सहायता मिलने से रही।

मन उनकी स्थिति समझी और हम दोना इस शुभकामना तथा आश्वासन क साथ विदा हुए कि यदि कोई ऐसा ठोस काम दिखाई पडे जिसम उनकी सहायता की जरूरत हो तो वह अवश्य सहायता करेंगे। उन्होने उन दिनो की याद की, जब वह भारत-सचिव थे, और लाड विलिंग्डन की नेकनीयती की दाद दी। उन्होंने बताया कि किस प्रकार लाड मिन्टो सुधारो पर अडे रहे और किस प्रकार मार्ले ने प्रतिरोध किया था। उन्होंने यह बात फिर दुहराई कि अग्रेज-मानस सदभावना से परिपूण है। सुधारा म से भारत की प्रगति के बीज अकुरित होग गवनर-जनरल और गवनर लाग सदव सहायता करेंगे।

इसके बाद हम एक-दूसरे से विदा हुए।

६५

१२ जुलाइ, १९३५

महामहिम

आज प्रात काल सर आस्टिन चेम्बरलेन से भेंट हुई। बातचीत लगभग एक घण्ट तक चली। प्रारम्भ म तो थोडा वाद विवाद हुआ, पर अत म हम दोना ने देखा कि हमारे दष्टिकोण प्राय एक जस हैं।

वह मुझस इस बात पर सहमत हुए कि बिल, तथा एक दूसरे को समझने की भावना य दोनो ही बिल की सफलता के लिए अनिवाय हैं। उन्होंने कहा कि भरोस की इस भावना का विकास भारत मे हाना आवश्यक है और इस काय के लिए लाड जेटलट सबसे अधिक उपयुक्त है। उनकी सहायता की जहा जरूरत होगी वह अवश्य देंगे।

उन्होंने शुभकामना व्यक्त करते हुए यह भी कहा कि क्या ठोस कदम उठाना

चाहिए यह तो वह नही जानते। लेकिन मैंने कहा कि मैं स्वय उनसे किसी तरह के ठोस कदम की अपेक्षा नही करता। मैं तो केवल यही चाहता हू कि मुझे अपने मिशन म क्या कुछ करने से सफलता मिल सकती है इस विषय म वह मुझे अपने सत्परामश से उपकृत करें।

मैंने कहा कि भारत म मुझसे जो कुछ बन पडेगा, अवश्य करूगा विशेषकर काग्रेस के क्षेत्र मे पर काग्रेसियो की कठिनाइया का भी समझना उचित होगा। मैंने उन्ह बताया कि मुझे इग्लड मे सदभावना दिखाई दी और हर कोई मेरे मिशन से सहमत होता दिखाई पडा, पर अगला कदम अभी तक नही उठाया जा सका है क्योकि सब बिल को लेकर व्यस्त हैं। उन्होंने कहा 'जब कभी मेरी सहायता की जरूरत हो आ जाइए।'

मैंने उन्ह पारस्परिक सम्पक की खूबिया बताने की चेष्टा की और इसका सबसे अच्छा उदाहरण यह दिया कि यद्यपि आपने २५०० आदमियो को जेलो मे बद कर रखा है और यह काय आपको भी उतना ही अरुचिकर है, जितना हम सबको। पर यह सब करना आपके लिए आवश्यक हो गया था। मुझे कहना पडता है कि इस मामले मे मैं उन्ह अधिक प्रभावित नही कर पाया। वह उन लोगो म स हैं जिनकी धारणा है कि भारत मे जो कुछ हो रहा है ठीक ही हो रहा है।

सर सेम्युअल होर से भी मिल लिया कुछेक दिना मे श्री बाल्डविन से भी मिलनेवाला हू टाइम्स' क श्री डासन से भी मिला था। वह आपके अच्छे मित्र मालूम दिये।

मैं यहा जो कुछ कर रहा हू, उससे आपको अवगत रखना आवश्यक समझता हू। इस गतिविधि का साराश यह है कि यहा के लोगो मे सहानुभूति तो खासी है पर भारत के गतिरोध का अत करने की दिशा मे अभी तक कुछ नही कर पाये है।

कृपा करके सहायता देना जारी रखिए।

भवदीय
घनश्यामदास बिडला

हिज एक्सीलेंसी सर जान एण्डसन

६६

१२ जुलाई १९३५

प्रिय लाड डर्बी,

आपके पत्र के लिए धन्यवाद। आप वर्मा और भारत के समझौते को ?े वर्ष की अवधि तक सीमित रखना चाहेंगे तो भारतीय हित इस मामले मे आपकी पूरी सहायता करेंगे।

मुझे लगता है कि अब इस मामले म देर हो गई है पर यदि आप यह चाहेंगे कि भारतीय व्यापारी-समाज की ओर से इस दिशा म मैं कुछ करू तो मैं सहायता के लिए प्रस्तुत हू।

भवदीय,
घनश्यामदास बिडला

अर्ल आफ डर्बी,
डर्बी हाउस,
स्टेटफोड प्लेस,
डब्ल्यू० आई०

६७

चि० लक्ष्मीनिवास

तुमारा खत मिला है। पिताजी पर खत इसके साथ है। एरमल से भेज दो। सब अच्छे होंगे।

बापु के आशीर्वाद

१३ ७ ३५

भाई घनश्यामदास

तुम्हारा लम्बा खत मिला है। अच्छा है, मुझे तो कहीं गलती प्रतीत नहीं होती है लेकिन मुझे पूरा डर है कि जब कुछ शर्त करने लगेंगे तब कुछ नही जैसे कैदीयो को छोडना डेटेयु को छोडना अडमान बध करना सत्याग्रहीयो की जमीन वापिस करना आज ऐसी बातें करना शायद अनुचित माना जाय, यह सब

जिसके साथ मशविरा कर वह भल कर आज का वायुमण्डल कायम रहेगा तो मुझे समझौता की कोई आशा नहीं है। तुमारे साथ मीठी बातें करते हैं, उसमें इतना अध्याहार रहता मालूम होता है कि जो वस्तुस्थिति जैसी है ऐसे ही स्वीकृत होगा यदि यह डर सच्चा है तो नाका होना असंभव है इससे अधिक इस वक्त नहीं कह सकता हूं। इसका यह अर्थ नहीं है कि जो प्रयत्न कर रहे हैं उसे छोड़ दिया जाय। तुमारा प्रयत्न तो चलना ही चाहिये जैसे चल रहा है परिणाम तो ईश्वर के ही हाथ में है।

तबियत अच्छी होगा।

बापु के आशीर्वाद

वर्धा

१३ ७ ३५

६८

१८ जुलाई १९३५

श्री बाल्डविन के साथ मुलाकात
समय प्रातःकाल १० बजे

मुलाकात २० मिनट तक हुई। उन्होंने जाते ही कहा कि उन्हें मालूम है कि मैं लार्ड हैलिफक्स का मित्र हूं। बस यह हवाला ही काफी है।

उन्होंने पूछा आप सिगरेट पीते हैं? मैंने कहा, नहीं। मैं पीऊं तो कुछ एतराज है? जरा भी नहीं।" बड़ी बुरी लत है यह।' और वह खिलखिलाकर हंस पड़े। मैंने पूछा, 'आपको मालूम है मैं इंग्लैंड किस उद्देश्य से आया हूं? अगर मालूम हो तो मैं आपका समय क्या नष्ट करूं?' उन्होंने उत्तर दिया, मुझे कुछ मालूम नहीं है।

मैंने अपनी कहानी कह सुनाई। सुधारों को सफल बनाने के लिए तीन बातें जरूरी हैं। सरकारी अमले को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि वे लोग नौकर मात्र हैं स्वामी या राजनेता नहीं हैं। इसलिए उन्हें निष्पक्ष आचरण करना चाहिए। किसी राजनैतिक दल के प्रतिकूल या अनुकूल आचरण से उन्हें बचे रहना चाहिए। कांग्रेस को यह भरोसा होना चाहिए कि वह इन सुधारों को कार्यान्वित करके देश की राजनैतिक स्वतन्त्रता के लक्ष्य तक पहुंच सकती है।

आदमी को भेजेंगे, वह जनता के उत्थान के निमित्त आपके साथ सहयोग करेगा। कुछ ऐसी चीजें हैं जिन्हे केवल आप लोग ही कर सकते है, हम नही। हम आशा है कि आप जरूर करेंगे। आपको हमारा पूरा सहयोग मिलता रहेगा। याद रखिए प्रजातन्त्र मे एक वग बराबर अडगा लगाता रहता है।

'इग्लैंड और भारत मे ऐसे वग सदैव रहेगे। ऐसे वर्गों के माध्यम से हम जनता का मूल्याकन नही करना चाहिए। पर काग्रेस को यह समझ लेना चाहिए कि उसके लिए जन कल्याण सम्बन्धी काय क्षेत्र प्रशस्त है। अब तक काग्रेस सरकार विरोधी रही है जिसका अथ यह हुआ कि वह ब्रिटेन विरोधी रही है। पर अब भविष्य म सरकार विरोधी होने का अथ होगा भारत विरोधी होना।"

मैंने उत्तर म कहा आपने जो-कुछ कहा वह बिलकुल ठीक है, पर आपको भारत के वातावरण को भी ध्यान मे रखना होगा। मैं ऐसे सकडो उदाहरण दे सकता हू जब भारत के प्रति अविश्वास का आचरण किया गया है। ऐसे वातावरण म कोई यह कसे समझ ले कि मात्र भर बाद सब-कुछ बदल जाएगा? सुधार बढिया हो सकते हैं और इग्लण्ड की नेकनीयती क बारे म भी पूरा भरोसा हो सकता है पर आप स्वय ही कल्पना कीजिए कि क्या आप बहुत ही स्वादिष्ट शोरबे को बगर पेंदी के कटोरे म परोस सकते है? आप पारस्परिक विश्वास एक-दूसरे को समझने की प्रवत्ति और मत्री की भावना का कटोरा पेश करिए इसके बगर शोरबा चाहे जितना स्वादिष्ट हो परोसा नही जा सकता।

उन्होने कहा मैं मानता हू। इसलिए जब सब लाग लाड हैलिफक्स की छीछालदर करने म लगे हुए थे मैंने उनका समथन किया था। मैंने जिज्ञासा की कि आपने उनकी मियाद बढा क्यों नही दी? यह बडे दुर्भाग्य की बात थी कि जिन दो व्यक्तियो न पक्ट पर दस्तखत किए उन्हे तुरत ही भारत स जाना पडा। लाड हैलिफक्स ने अपना काम शुरू ही किया था। और अब वह पक्टवाला वातावरण भारत स नदारद है। उन्होन उत्तर म कहा हम उन्हे पाच वप स अधिक वहा नही रख सकते थे क्योंकि काम के बोझ से उनका स्वास्थ्य खराब रहने लगा था और उनके लिए वह भार अधिक काल तक वहन करना सम्भव नही था। पर आपने मानसिक वातावरणवाली जो बात कही उसस मैं सहमत हू। मै जवान होता तो भारत खुद चला जाता पर । ठीक इसी समय उनका सेक्रेटरी आ धमका और बोला कि अमुक व्यक्ति आ गया है। इस प्रकार मुलाकात, श्री बाल्डविन का वाक्य पूरा होने स पहले ही समाप्त हो गई। मैंने मन ही मन सेक्रेटरी को कोसा म उठ खडा हुआ हाथ मिलाया और बोला महोदय, मुझे आशा है कि आप हमारी सहायता करेंगे। इसके बाद मने उनसे विदा ली।

विशप सिर हिला हिलाकर सहमति प्रकट करते रहे)। काग्रेसवालो को इस नीति की उपादेयता म पूण आस्था नही है। पर उनके पक्ष मे इतना अवश्य कहना होगा कि वह विचारो म न सही, कम स कम स्वतत्रता सग्राम म वरावर अहिंसा का परिचय देत रहे हैं। स्वभाव स ही हिंदू अहिंसा म विश्वास रखत हैं। (उन्होंने बीच म कहा यह आपके महान धम का एक अग है)। पर गाधीजी को इतने से सतोष नही हुआ। फलत काग्रेसियो पर अपनी विचारधारा थोपन के बजाय वे काग्रेस से ही अलग हो गए। बावजूद इस तथ्य के व आज भी काग्रस के एकमात्र नेता हैं। वह एसे सरताज हैं जो अपनी शक्ति बनाए रखने क लिए शस्त्रास्त्रो पर निभर नही करत। इस प्रकार वह भारत के जीवन्त प्रतीक हैं। उन्होने जब कभी वाइसराय से मिलने की चेष्टा की द्वार बन्द ही मिला। इसस खाई चौडी होती गइ। वाइसराय चाहे जिससे मिलत रह लेकिन वह इस बात का दावा नही कर सकते कि उन्होने भारत से भेंट की है। गाधीजी भारत हैं और भारत गाधीजी। इविन भावना का तिरोभाव हो चुका है।

उन्होने कहा, आपने जो कुछ कहा उसमे मुझे गहरी दिलचस्पी है। मने लाड विलिंग्डन को कई वार लिखकर पारस्परिक सम्पक साधने की आवश्यकता बताइ है। उन्होन जो उत्तर दिया, वह तो म बता नही सकता पर आपके कथन की औरो ने भी पुष्टि की है। मुझ भारत के व्यापार स अथवा सनिक हितो से कोइ सरोकार नही है पर म ज्वाइट पार्लियामटरी कमेटी म कवल इसलिए शामिल हुआ हू कि मुझ भारत से अनुराग है। कई बातो म मेरा बहुमत स मतभेद है, पर मेरा यह आन्तरिक विश्वास है कि बिल एक सर्वोत्कृष्ट रचनात्मक सुझाव है। सबस पहली बात तो यह है कि फिलहाल पार्लियामट का जसा गठन है उसे देखते हुए इसस अच्छा कुछ प्राप्त करना सम्भव नही था। दूसरी बात यह है कि इस परिवतन काल म इससे अच्छा सुझाव पश करना आप लोगो के लिए भी सम्भव नही है। अब आपको बाहर से पहल करन क बजाय भीतर से पहल करनी चाहिए। एक न एक दिन आपको स्वाधीनता प्राप्त करनी ही है और य सुधार वहा तक पहुचने के लिए सर्वोत्तम उपाय हैं। आपको इन सुधारो की अच्छाइयो की उपक्षा नही करनी चाहिए उनका पूरा उपयोग करना चाहिए। म जानता हू कि इस समय भारत का वातावरण अच्छा नही है पर आप मिस्टर गाधी के पास मेरा सदेशा ले जाइए और उन्हे बताइए कि यदि केन्टरबरी के आर्कबिशप को यह लगता है कि वह भारत का हित-साधन करने म असमथ है तो वह अपना समय नष्ट नही करता। आप मिस्टर गाधी को मेरी सहानुभूति और सद्भावना का आश्वासन दीजिए और उन्ह बताइए कि इग्लड के जिम्मेवार आदमियो म से

अधिकांश भारत की सच्चे दिल से सहायता करना चाहते हैं।"

मैंने उत्तर में कहा "मैं गांधीजी को आपका संदेशा अवश्य दूंगा पर मेरा कहना यह है कि जब तक वहां के वातावरण में परिवर्तन नहीं होगा यह सब अरण्यरोदन ही रहेगा।" उन्होंने कहा "मुझे कुछ उदाहरण दीजिए। मुझे तो यह बताया गया है कि वहां चोटी के आदमी भले हैं मातहत अधिकारी वर्ग ही विरोध की भावना से प्रेरित है।" मैंने उत्तर दिया "मैं आपको एक हिंदुस्तानी उपमा दूंगा कभी कभी हम कुत्ते को मिठाई देते हैं पर गाय को सिर्फ चारा देते हैं। परन्तु कुत्ते को हम दूर से रोटी का टुकड़ा फेंक देते हैं जबकि गाय की पूजा करते हैं। सुधार अच्छे हो सकते हैं पर आप उन्हें हमारे मुंह पर फेंक देते हैं। यदि आप हमारे साथ साझेदारों-जैसा बर्ताव करना चाहते हैं तो आपको भी साझियों-जैसा बर्ताव करना होगा। रही किसी ठोस मिसाल की बात सो एक [illegible] उदाहरण ले लीजिए। वहां भूकम्प आया। भूकंप के बाद ४८ घंटे तक [illegible] मील मुहर लगी रही। बिहार में भूकम्प के ५ दिन बाद तक जीवित [illegible] मलबे से खोदकर निकाले जाते रहे। क्वेटा को भूकम्प के तुरन्त बाद [illegible] बाहरी दुनिया से अलग रखकर सरकार ने जनता में आतंक की भावना [illegible]। फरियादें हुईं वाइसराय से विनती की गई कि गैर-सरकारी लोगों [illegible] करें। तरह तरह की भौंडी अफवाहों का बाजार गर्म रहा पर [illegible] साथ कहा गया कि 'आप लोग खुद अपनी ही देखभाल नहीं कर सके। [illegible] करना मुनासिब होगा इसका निर्णय हम खुद करेंगे।' बस, भारत में [illegible] वातावरण की तूती बोल रही है। ऐसे वातावरण में हम [illegible] सकता हूं कि सुधारों को हमारे हितार्थ अमल में लाया जाएगा?" [illegible] लम्बी सांस ली और कहा "निहायत ही बेहूदा बात है। मैं अपने मित्र [illegible] बात करूंगा। मैं यह स्वीकार करता हूं कि वातावरण में परिवर्तन [illegible] है। मुझे आशा है एक-न-एक दिन हम दोनों देशों के बीच [illegible] सकेंगे। पर आप मिस्टर गांधी से कहिए कि आप लोगों की [illegible] दो एक वर्षों की देर-सवेर से कोई विशेष अन्तर पड़नेवाला नहीं है। [illegible] हमारी नीयत साफ है और हम सहायता के लिए प्रस्तुत हैं।"

मैं उठ खड़ा हुआ। उन्होंने विदा करने के लिए हाथ [illegible]। [illegible] "महाराज, आप सर्वोच्च पुरोहित हैं। अपने हिंदू-संस्कारों के [illegible] प्रणाम करना चाहता हूं।" मैंने दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम किया। [illegible] हाथ मेरे सिर पर रखा और आशीर्वाद दिया '[illegible]' इसके बाद मैं विदा हो गया।

७०

वर्धा

१६ ७ ३५

प्रिय घनश्यामदासजी

अगाथा को लिखे अपने पत्र की नक्ल नत्थी कर रहा हू। इसे ध्यानपूर्वक पढिए, और अपनी चर्चाओ के दौरान इसका पूरा उपयोग करिए। शायद आपको सारे पत्र व्यवहार की नक्ल मिल चुकी होगी और आपने उसका उपयोग किया ही होगा।

आपके पत्र जितने तफ्सीलवार हो सकते थे, हैं। मने बापू से पूछा कि क्या वह वहा आपके काम आने लायक कुछ लिखना चाहेगे। उन्होने उत्तर दिया, अगर म कुछ लिखने की कोशिश करूगा, तो वह सब बनावटी होगा। दिल गवाही दे तब न ?"

पर आप यह निश्चित मानिए कि हम आपके पत्रो पर बुरी तरह टूट पडते हैं। इसम कोई सन्देह नही है कि आप वहा अपनी उपस्थिति का पूरा-पूरा उपयोग करने म लगे हुए हैं। मैं तो जितना कुछ आप हासिल कर चुके हैं उसीसे सतुष्ट हो जाऊगा।

नेशनल काल ने आपकी इग्लड यात्रा के बारे मे एक अत्यत भद्दी टिप्पणी लिखी है। टिप्पणी क्या है कृतघ्नता की एक झलक है। बापू साहनी को कुछ लिखने की सोच रहे हैं। उन्होने कुछ लिखा तो उसकी नक्ल आपके पास भेज दूगा।

मने जिन किताबो का जिक्र किया था क्या पारसनाथजी को वे मिल सकी ?

आशा है, इन दोपहर के भोजनो और रात के भोजनो के बावजूद भी आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

सप्रेम

आपका

महादेव

७१

लन्दन

२२ जुलाई, १९३५

लार्ड लिनलियगो के साथ भेंट

दोपहर का भोजन १। बजे वापस लौटा २ ४० पर

उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं इस बीच अन्य लोगों से भी मिला। मैं जिन जिन से मिला था उनका नाम लिया और सर सेम्युअल ने जो-कुछ कहा था वह भी बताया। मैंने यह भी कहा लगता है कि अगले वाइसराय आप ही होंगे। उन्होंने कहा मैं कुछ नहीं बताऊंगा आप जो चाहे समझ लें।" मैंने कहा कि मैं पुष्टि कराना नहीं चाहता हूं। वह बोले, 'अब अपनी स्थिति संक्षेप में बता दूं। हम लोग आपस में विचार विमर्श करते रहे हैं और हम सभी आपकी दलील से बड़े प्रभावित हुए हैं। हमने अनेक विकल्पों पर विचार किया, उनमें आपवाला विकल्प भी शामिल है। पर कहना पड़ता है कि हम अभी तक किसी एक विकल्प को ग्रहण नहीं कर सके हैं। भावी वाइसराय अथवा भारत-सचिव के लिए भारत जाना सम्भव नहीं है। जबतक सफलता की काफी सम्भावना न दिखाई पड़े मिस्टर गांधी का यहां बुलाना भी सम्भव नहीं होगा। यदि हम उन्हें सफलता का वचन न दे सकें तो उन्हें आमंत्रित करना उनके साथ अन्याय होगा चाहे उन्हें किसी भी आधार पर बुलाया जाय। वर्तमान वाइसराय के लिए गतिरोध का अन्त करना सम्भव नहीं है क्योंकि उन्हें शिकायत है कि उनका बहिष्कार किया गया है। बस, यही सारी समस्या है और हम कोई रास्ता ढूंढ नहीं पाये हैं पर हमने आशा नहीं छोड़ी है। हो सकता है कि कोई योजना स्थिर कर पायें, भले ही वह योजना अपूर्ण हो। यदि ऐसा हुआ तो आपके भारत वापस जाने से पहले हम आपको बता देंगे। यदि हम कोई योजना स्थिर न कर पाये, तो अपनी हार मान लेंगे। पर आपको इतने से भी संतुष्ट होना चाहिए कि यद्यपि आप कोई ठोस चीज हासिल न कर सके तथापि आप अपने दृष्टिकोण से हम सबको पर्याप्त मात्रा में प्रभावित करने में सफल हुए हैं। हम यह बात अच्छी तरह समझते हैं कि यदि सुधारों को प्रभावी ढंग से अमल में लाना है तो भविष्य के बारे में दक्षिणपंथी वामपंथी और मध्यम मार्गी के साथ समझौता होना आवश्यक है।

मैंने उत्तर दिया 'आपने जो-कुछ बताया उसका सार मैंने भली भांति ग्रहण कर लिया। मैं आपको समझौते की आवश्यकता समझा सका, मेरे लिए यही

पर्याप्त सतोप का विषय है। पर मुझे काई ठास काय विधि बताइय जिमकी पूर्ति म मैं लगा रहू। आगामी अप्रैल तक अर्थात नय वाइसराय के जान तक रुके रहने का सुझाव मेरा मन स्वीकार नही करता। रही दस्तखत न करने की बात, सो इस खेल का आरम्भ स्वय लाड विलिग्डन की ओर स हुआ था। यह कुए की आवाज़ है जो भीतर से उठी है। उ होने मिस्टर गाधी के लिए काई आधा दजन बार दर वाजा बन्द किया हागा इसलिए काग्रसिया के लिए और कोई चारा नही था। पर उनके दस्तखत करने मे इ कार करन के अय कारण भी हैं। व लोग अधि कारिया क साथ कोई सामाजिक नाता नही जोडना चाहत थे। श्री भूलाभाई दसाई वाइसराय स मिलने का मन्व तयार रह। काग्रेसियो ने लाड रीडिंग के जमाने म भी कभी हस्ताक्षर नही किय। हा लाड इर्विन के जमाने म उन्होन हस्ताक्षर करना अवश्य शुरू कर दिया था।' उन्हान कहा मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हू कि मैं किसी का पक्ष नही ल रहा हू। काग्रेस का रवया ठीक भी हो सकता है गलत भी हा सकता है। मरी शिक्षा दीक्षा व्यापारी क्षत्र म हुई है इसलिए मर लिए इसम कोई अन्तर नही पडता कि व मेरी किताब म दस्तखत करें अथवा करन से बचें। जा स्थिति पदा हो गई है उसका तो सामना करना हा है। मैंने कहा मैं समझ गया पर मैं एक और रास्ता सुझाता हू। फज कीजिए वतमान वाइसराय एक राजनतिक बठक बुलाए जिसम प्रान्ता के गवनरो क अलावा प्रमुख राजनता भी सम्मिलित हा और साथ ही गाधीजी का भी उसम भाग लेन के लिए आमत्रित किया जाय। इसके फलस्वरूप समझौते की दिशा म आगे बढ़न की स्थिति उत्पन्न हो। उन्होने कहा हा यह सुझाव उत्तम है। हम इस पर विचार करगे। मैं तो आशावान हू। मैने कहा फज कीजिए मेरे इग्लड स विदा हाने के बाद आपको कोइ रास्ता दिखाई पड तो उसके पक्ष मे आचरण कस कर सकूगा जब तक कि मुझे उसका भान नही हो। यह बात मुझ पर छोड दीजिए। मैं यहा और कितना दिन रुका रहू ?' इसका निणय तो आप ही करेंगे पर मरा खयाल है कि आप अगस्त तक तो ठहरगे ही। मैंने कहा जब तक मेरी जरूरत हागी मैं ठहरा रहूगा पर मैं अपना समय व्यथ नष्ट नही करना चाहता।

इसके बाद हम भोजन की मज पर गय और भारत की स्थिति की फिर चर्चा चल पडी। मैंने उन्हे बापू के वर्धा के कायक्रम के बारे म बताया कि किस प्रकार शुरू शुरू म ग्रामीणो न विरोध की भावना प्रकट की और उदासीनता भी दिखलाई फिर किस प्रकार धीरे धीरे मित्रता का रुख अपनाया तथा किस प्रकार गाधीजी को इन सारी विघ्न बाधाओ व कठिनाइया के बीच काम करना पडा—सरकार

की ओर से विघ्न बाधाए तथा ग्रामीणो की ओर से कठिनाइया।

पिलानी म जो-कुछ हो रहा है वह भी मने बताया। उ होने गहरी दिलचस्पी दिखाई और बडी सहानुभूति प्रकट की। उन्होने मुझे बताया कि भेडा की नस्ल सुधारने का प्रयत्न सफल नही होगा पर होलस्टीन साडो द्वारा गायन की नस्ल अवश्य सुधर सकती है। उन्होने कहा कि इस विषय पर तैयार की गई उनकी रिपोट मैं अवश्य पढ लू। इसके बाद गाधी इर्विन पैक्टवाले दिनो की चर्चा छिडी। मने उन्ह बताया कि किस प्रकार लाड इर्विन के बारे मे गाधीजी की प्रारम्भ म यह धारणा थी कि वह धूत हैं पर किस प्रकार पहली ही भेंट म उन्हें विश्वास हो गया कि वह नीयत के साफ है किस प्रकार उसके बाद वे दोनो प्रगाढ मित्र हो गय, आदि। इस सारी कहानीम उन्होने गहरी दिलचस्पी दिखाई।

मन उन्ह दूध लाने ले जाने सबधी कठिनाइया बताईं और कहा कि फल स्वरूप सर्वोत्कृष्ट गोवश का नाश हो रहा है। वह सहमत हुए और बोले कि हमे वातानुकलित रल डिब्बो की व्यवस्था करना चाहिए। इसके बाद मिल उद्योग की चर्चा चली। वह अपन उद्योग म धागा तैयार करते हैं इसलिए हमने विद्युत चालित मशीनरी के बारे मे चर्चा की। उन्होने भूमिगत मोटर द्वारा चालित मशीनरी की बात कही। और बताया कि जापानी लोग इसे बहुत पसद करते हैं। उन्होने कहा कि जापानी मशीनें बुरी नही हैं।

हमने भारत की शिक्षा सबधी समस्या की चचा भी की। उन्होने मेरी राय जाननी चाही। मैंने कहा कि मैं प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा पर जोर देने के पक्ष मे हू पर अनियत्रित उच्चतर शिक्षा के विरुद्ध हू। उन्होने बताया कि सूडान ने कालेजीय शिक्षा की कुछ इस प्रकार व्यवस्था की है कि स्नातको की भरमार न होन पाये। पर वह बोले कि भारत म यह कम ही यह कहना कठिन है। मैं बोला, 'यदि म मत्री होता तो प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा के लिए उच्चतर शिक्षा पर कर लगाता।' वह सहमत हुए पर साथ ही उन्होने शका प्रकट की कि क्या एक भारतीय मत्री के लिए भी अपन सबध म गलतफहमी पैदा किये बगर एसा करना सम्भव है। उन्होने जानना चाहा कि मोटर गाडियो व यातायात का ग्राम्य जीवन पर क्या प्रभाव पड रहा है। मन कहा कि जो कुछ बदला है वह अच्छे के लिए बदला है एसा मानन को म तैयार नही हू। सिनमाघरो की सख्या म वद्धि हुई है लोग पहले स अधिक खर्चीले कपडे पहनते हैं पेय पदार्थों के प्रति भी रुचि बढ रही है, पर आमदनी ज्यो की-त्यो है।' उन्होन मेरे विचारो के प्रति सहानुभूति प्रकट की।

उन्होने बापू के बारे मे जानना चाहा—कितनी आयु हो गई है, स्वास्थ्य

कैसा रहता है आदि। मैंने कहा कि "मैंने अपने जीवन में उनसे अधिक स्वस्थ आदमी नहीं देखा। वह कठोर परिश्रम करते हैं कम सोते हैं अल्पाहारी हैं फिर भी स्वस्थ और अत्यंत प्रसन्न रहते हैं।"

मैंने जान लिया कि वह लार्ड हैलिफक्स के घनिष्ठ मित्र हैं। जब मैं चलने लगा तो उन्होंने एक बार फिर स्थिति का संक्षिप्त वर्णन किया और कहा कि क्या कुछ करना सम्भव है इस बाबत वह मुझे सूचना देंगे।

७२

समर विभाग
ह्वाइट हाल
एस० डब्ल्यू० १
२२ जुलाई, १९३५

प्रिय श्री बिड़ला,

मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि श्री बाल्डविन आपसे मिलने के लिए समय निकाल सके और उनके साथ आपकी इतनी उत्साहवर्द्धक और सहायक भेंट हुई।

हम दोनों ने जिस विषय पर विचार विमर्श किया था मैं उसके चिंतन में लगा हुआ हूँ कि शायद कोई रास्ता निकल आए पर अभी तक कोई ऐसा हल नहीं पा सका हूँ जो मेरा समाधान कर सके। ऐसा लगता है कि एक बार फिर मिला जाए। यदि इस बीच कैबिनेट की बैठक बुला ली जाए तब तो बात दूसरी है नहीं तो आगामी सोमवार, तारीख २७ को मध्याह्न के सवा बारह बजे भेंट ठीक रहेगी। आशा है वह दिन और समय आपको भी सुविधाजनक लगेगा।

भवदीय
हैलिफक्स

जो भी हो मैं लन्दन छोड़ने से पहले आपसे मिलना अवश्य चाहूँगा।

७३

२२ जुलाई, १९३५

प्रिय लार्ड हैलिफक्स

भारत वापस रवाना होने से पहले आपसे अंतिम बार भेंट जरूर करना चाहता हूं। आशा है आप इसके लिए कुछ समय निकाल पायेंगे जिससे मैं आकर आपसे एक बार फिर बातचीत कर सकूं।

आज लार्ड लिनलिथगो के साथ दोपहर का खाना खाया था। यह जानकर मुझे खुशी हुई कि मामला विचाराधीन है।

आपका,
घनश्यामदास बिड़ला

लार्ड हैलिफैक्स,
८८, ईटन स्क्वेयर,
एम० डब्ल्यू० १

७४

गवर्नमेंट हाउस,
कलकत्ता
२२ जुलाई, १९३५

प्रिय श्री बिड़ला

आपके दोनों अतिशय रोचक पत्रों के लिए अनेक धन्यवाद। यह देखकर प्रसन्नता हुई कि आप इतने महत्त्वपूर्ण सम्पर्क स्थापित करने में समर्थ हुए हैं। अपनी समझ में मेरी सबसे अच्छी सलाह यही हो सकती है कि आप सर फाइण्डलेटर स्टीवार्ट के सम्पर्क में बने रहें, और उनमें पूरा भरोसा रखें। वह भारत की समस्याओं से पूरी तरह परिचित हैं, सदभावना से ओतप्रोत हैं और बड़े ही विवेकशील हैं।

भवदीय
जान एण्डर्सन

श्री घनश्यामदास बिड़ला
लन्दन

काम आये। पहले श्री बिड़ला और श्री हीथ ने एक-साथ दोपहर का भोजन किया तथा अन्य सदस्य बाद म आए। श्री बिडला ने सक्षेप म बताया कि किस प्रकार भारत म तनाव का वातावरण व्याप्त है किस प्रकार वह यहा ब्रिटिश नताओ स मिले हैं सबने सदभावना और मत्री का परिचय दिया है किस प्रकार वतमान वाइसराय ने मिस्टर गाधी क प्रति निकम्मा रुख अपना रखा है तथा किस प्रकार वाइसराय ने उनके अत्यत मत्रीपूण रास्ते को एक से अधिक बार ठुकराया है। श्री बिडला की राय म नये वाइसराय की नियुक्ति तक हाथ पर हाथ रखकर बठ रहना गलत होगा क्योंकि भारत का वातावरण पहल से ही उत्तेजनापूण है और आगामी माच म काग्रेस का अधिवेशन होनेवाला है जब काग्रेस सुधारो के प्रति अपने रुख की घोषणा करगी जिससे वातावरण और भी कठोर हो जाएगा। इस लिए यह आवश्यक है कि वतमान स्थिति से निपटने क लिए कुछ-न कुछ तुरत किया जाए। इस समय जो चीज तुरत होनी चाहिए वह है गाधी इविन वातावरण को सुधारने के लिए प्रयत्न करना। पारस्परिक सम्पक स्थापित किया जाए तथा समझौता किया जाए। यदि स्थिति का ज्यो का त्यो रहने दिया गया तो अशाति निश्चित है और तब किसी भी प्रकार के सुधारो को कार्यान्वित करना असम्भव हो जाएगा। यह विकल्प हो सकता है कि वतमान 'अलगाव के वातावरण को समाप्त करके भविष्य के लिए समझौता करने की सहयोगी भावना पैदा हो सकती है या नही, यह देखा जाए। मिस्टर गाधी तथा अन्य जवाबदार नताओ के साथ साक्षात्कार किया जाए। श्री हीथ ने बताया कि भारत मित्र मण्डल जिस कायक्रम को हाथ म लेना चाहता है उसे कार्यान्वित करने म वह पहले से ही लगा हुआ है। इसके बाद विचार विमश आरम्भ हुआ। निम्नलिखित विषय या सुझाव सामने आए

१) क्या श्री स्पेंडर का यह सुझाव व्यावहारिक है कि यहा और भारत म ससदीय दलो का गठन किया जाए, दानो दलो म सम्पक स्थापित किया जाए तथा दोनो दलो के सदस्य एक दूसरे के देशो का दौरा करें और एक दूसरे के सहायक बनें तथा सहायता करें ?

२) जवाबदार भारतीय नताओ के इग्लड आने के बारे म श्री बिडला ने मिस्टर गाधी के दष्टिकोण को समझाया और कहा कि श्री भूलाभाइ दसाई का यहा आना उपयोगी रहेगा।

३) मिस्टर गाधी के इग्लड आने की सम्भावना पर भी चर्चा हुई। श्री बिडला ने कहा कि जबतक इण्डिया आफिस राजी न हो उनका यहा फिलहाल आना वाछनीय नही होगा।

४) पार्लियामेंट के वर्तमान सत्र की समाप्ति के बाद कतिपय सदस्यों के भारत जाने, वहा सद्भावना का परिचय देने तथा श्री बिड़ला द्वारा बताई गई स्थिति का स्वय अध्ययन करने की सम्भावना पर भी चर्चा हुई। लार्ड लादियन, श्री फूट और श्री मोरगन जोन्स के नाम लिये गए। किसी उदारदलीय सदस्य का जाना आवश्यक समझा गया। यह सुझाव भी पेश किया गया कि धर्म क्षेत्र के तथा शांति-क्षेत्र के भी कुछ सदस्य भारत जाए।

५) इस बाबत लार्ड जेटलैंड के पास पहुचने की आवश्यकता पर जोर दिया गया।

नोट मित्र-मण्डल ने तैयार किया था। —घ

अत म यह निश्चय हुआ कि लार्ड हैलिफैक्स के साथ सलाह की जाए और उपर्युक्त सुझावों पर अमल करने से पहले उनसे उनकी उपादेयता के बारे म चर्चा की जाए। श्री हीथ ने कहा कि वह उनसे मुलाकात की तारीख निश्चित करने की अविलम्ब चेष्टा करेंगे।

७७

२५ जुलाई, १६३५

प्रिय श्री डासन

आपसे दुबारा भेंट होगी या नहीं कह नहीं सकता। अगले मंगलवार को कामस सभा मे भारत के विषय पर चर्चा होनेवाली है। आप पारस्परिक सम्पर्क की उपादेयता और सुधारों को अमल म लाने के लिए आपसी समझौते की आवश्यकता पर एक बार फिर कुछ लिख सकें तो बडी बात हो। स्थिति काफी गंभीर है और मेरे वहा से आने के बाद क्वेटा और लाहौर के मामले तथा हाल ही म हुई जबलपुर की घटना ने वातावरण म और भी अधिक तनाव पैदा कर दिया है। लाहौरवाली घटना विशुद्ध साम्प्रदायिक घटना है, और उसकी शुरुआत मुसलमानों की इस धारणा से हुई है कि हुक्म का इक्का उनके हाथ म है। जबलपुर की घटना अपेक्षाकृत अधिक गम्भीर है और इस मनोवृत्ति की पोषक है कि सरकारी असैनिक अमला भारत म जनता की सेवा के लिए नहीं है। भारत मे तथा यहा इंग्लैंड म इस मनोवृत्ति का एकमात्र यही इलाज है कि एक ऐसा समझौता हो

जिसके द्वारा सब यह समझने लगें कि उन्हें साझीदार-जसा आचरण करना है।
आशा है, आप सानन्द हैं।

भवदीय,
घनश्यामदास बिड़ला

यही बात अलग-अलग पत्रा में श्री ज० ए० स्पेंडर श्री किंग्स्ले मार्टिन सपादक 'न्यू स्टटसमन' सर वाल्टर लिटन नाइट वावेरी स्ट्रीट ई० सी० तथा श्री जम्स बान मैन्चेस्टर गार्जियन को भी लिखी गई—घ०

७८

२६ जुलाई, १९३५

प्रिय लार्ड लोदियन

आप नगर के बाहर जा रहे हैं और मैं भी शीघ्र ही भारत वापस चला जाऊंगा। इसलिए ऐसा लगता है कि शायद आपसे दुबारा भेंट न हो पाए। मैं सबसे मिल लिया हू और मेरी धारणा है कि मेरी बात का औचित्य सबको समझ म आ गया है। पर इन सम्पर्कों का अभी तक कोई ठोस परिणाम नहीं निकला है। मार्ग म कठिनाइया है। पर वे इतनी अधिक है, इसका मुझे भान नहीं था। जो भी हो इन रुकावटा का पार तो करना ही है और अधिक नहीं तो आगामी अप्रल तक उनके दूषित प्रभाव का निराकरण करना अत्यावश्यक है। मैं यहा से विदा होने से पहल अपने साथ कुछ ठोस सुझाव ले जाना चाहता हू, जिसस अगले कदम के लिए तैयारी की जा सके।

आप जितना कुछ कर रहे हैं, मुझे मित्रो से मालूम होता रहता है, और मैं आपकी दिलचस्पी के लिए बहुत आभारी हू।

भवदीय
घनश्यामदास बिड़ला

मार्क्विस ऑफ लोदियन,
सीमोर हाउस,
१७, वाटरलू स्ट्रीट,
एस० डब्ल्यू० १

मैं उसके बारे में अधिक नहीं जानता, पर शायद सर फाइण्डलेटर स्टीवार्ट बेहतर साबित हो।' उन्होंने सहमति व्यक्त की, फिर कहा, 'अब यह तो स्पष्ट हो ही गया कि नये वाइसराय के जाने तक कोई महत्वपूर्ण कदम नहीं उठाया जाएगा, अब आप मिस्टर गांधी को अपना प्रभाव डालने के लिए राजी करें कि वे कांग्रेसियों को जल्दबाजी में कोई फैसला करने से रोकें। फिर कहने लगे, मैं जानता हूं कि यह कार्य कठिन है। अगर मैं भारतवासी होता और ऐसा कांग्रेसवादी होता, जिसे अन्य कांग्रेसियों के मध्य अपनी मर्यादा की रक्षा करने की चिंता हो, तो विकल्प की बात सोचे बगैर निश्चयात्मक कदम कभी न उठाता।" मैंने कहा कि "गांधीजी की विचारधारा इस कोटि में नहीं आती है उन्हें इसकी रंच मात्र चिंता नहीं है कि कांग्रेसी क्या सोचेंगे या सरकार क्या सोचेगी? वह तो वही कदम उठाते हैं जो उन्हें ठीक जंचता है। उनका दृढ़ विश्वास है कि स्वतंत्रता भीतर से आएगी बाहर से नहीं इसलिए वह रचनात्मक कार्यों के माध्यम से राष्ट्रीय शक्ति का संकलन करने में लगे हुए हैं। मेरी धारणा है कि बापू विध्वंसात्मक तरीके अपनाए जाने के पक्ष में कदापि नहीं होंगे।' उन्होंने कहा, हां, मैं जानता हूं कि उन्होंने बिल को पढ़ा तक नहीं है न पढ़ेंगे ही। जब मैं शासन विधान संबंधी प्रश्नों की चर्चा करने लगा, तो उन्होंने उन्हें छुआ तक नहीं, उन्हें तो केवल स्वस्थ वातावरण से सरोकार है। पर क्या आप और क्या मिस्टर गांधी अन्य राजनेताओं को नये वाइसराय के पहुंचने तक सुधारों के बारे में कोई जल्दबाजी का निर्णय लेने से नहीं रोक सकते?' मैंने कहा, मैं बापू को सारी बात बताऊंगा।' उन्होंने जानना चाहा मिस्टर गांधी के बाद किस अन्य नेता का सबसे अधिक प्रभाव है?' मैंने कहा सरदार पटेल और पंडित नेहरू का। उन्होंने पूछा, व्यवस्थापिका सभा के अध्यक्ष (विट्ठलभाई पटेल) के भाई? मैंने कहा हां।' वह कैसे आदमी हैं?' बहुत योग्य बहुत समझदार और बहुत भरोसेवाले। अगर वह चाहें तो अपने भाई-जैसी शरारत कर सकते हैं, पर वह ऐसा चाहते नहीं है। वह हंस पड़े और नेहरू? क्या आप उनसे परिचित हैं? खूब अच्छी तरह से। मैं यह तो नहीं समझता कि वह सरदार पटेल-जैसे तीक्ष्ण बुद्धि वाले हैं। कभी कभी तो वह बच्चा-जैसा काम कर बैठते हैं। वह वयस्क लोगों को कदापि नहीं रुचेंगे पर तरुण समाज पर उनका प्रभाव जैसा है वैसा ही रहेगा।' क्या उनका झुकाव वामपंथियों की ओर अधिक है?" 'मैं तो नहीं समझता। वैसे वह बातें चाहे जितनी करें, भारतीय साम्यवादी तो उन्हें भरपेट गालियां देते हैं।' और डा० अंसारी? वह भले आदमी हैं बस उनकी प्रतिष्ठा एकमात्र हिन्दुओं के कारण है फलतः वह कांग्रेस में कदापि प्रभावशाली सिद्ध नहीं होंगे।'

उन्होने कहा, जो भी हो, आप भरसक चेष्टा कीजिए कि कोई नया निर्णय करने के मामले म कांग्रेस जल्दबाजी से काम न ले। आप यह धारणा लेकर मत लौटिए कि आपने कुछ हासिल नही किया। आपने बहुत बडी मात्रा म काफी बडे महत्त्व का काम किया है। आप श्री बाल्डविन से मिले, यह खुशी की बात है। आपने भूमि तयार कर दी है। इस ससार म ठोस काम तुरत ही दिखाई नही पडते। ठोस पदार्थ आदर्श के गर्भ म से प्रकट होता है और आप यह कभी नही जान सकते कि अमुक आदर्श कब मूर्त रूप धारण करेगा। इसमे समय अवश्य लगता है, पर अन्त म वह अस्तित्व म आ जाता है। इसके बाद उन्होने पूछा, 'क्या कांग्रेस वालो को वाइसराय की किताब म दस्तखत करने को राजी करना सम्भव है ?' मैने कहा बिलकुल असम्भव है। लार्ड लिनलिथगो के शासनकाल मे भले ही सम्भव हो, पर म कह नही सकता। उन्होने कहा आप कोशिश तो कीजिए। मिस्टर गाधी को मेरा प्रेम दीजिए। उन्हे यह बताना अनावश्यक है कि मैं यथा शक्ति प्रयत्न कर रहा हू। क्योकि वह जानते है कि कुछ अडचनें हैं, जिनसे निपटना होगा पर जब किसी कार्य मे आस्था हो तो उसे करने मे शिथिलता नही आने देनी चाहिए।

८०

टिप्पणिया

२६ जुलाई १९३५

श्री पास्ट दोपहर के खाने पर आया। यह धार्मिक पत्रो के लिए समाचार सग्रह करता है। धार्मिक पत्रकारिता इसकी विशेषता है। बोला, कितने दु ख की बात है कि भारत का वातावरण इतना खराब है और पूछने लगा कि क्या इस दिशा म चर्चवालो के लिए कुछ करना सम्भव है ? मैने कहा आप बहुत कुछ कर सकते है। आप लोग अपने समाचार पत्रो के माध्यम से प्रचार कर सकते है और केंटरबरी के आर्कबिशप से कह सकते हैं वह सदभावना सबधी आदोलन का नेतृत्व करके भारत सरकार को साझेदारो जैसा आचरण करने को बाध्य करें। उसने सलाह दी कि और अधिक धार्मिक पत्रकारो से भेंट करना उत्तम रहेगा। पर छुट्टिया आ रही हैं इसलिए सम्भव दिखाई नही देता। हमने जिन जिन विषयो पर चर्चा की उन्हे लेकर वह धार्मिक पत्रो मे लिखेगा।

ईवनिंग स्टैंडर्ड का प्रतिनिधि बातचीत के लिए आया। उसने अपने पत्र म कुछ नही दिया है।

'*मैंचेस्टर ईवनिंग न्यूज*' के सम्पादक श्री वान तथा श्री स्पेंडर न, जि ह मन पारस्परिक सम्पर्क की उपयोगिता के बारे म लिखा था वचन दिया है कि व इस विषय पर लिखेंगे। मन श्री डासन, सर वाल्टर लिटन तथा श्री किंग्सल मार्टिन को भी लिखा था। उ होंने अभी तक उत्तर नही भेजा है, पर वश्य देंगे ऐसा मानता हू।

८१

२९ जुलाई १९३४

विलसन हैरिसन सम्पादक 'स्पेक्टेटर'

मने अपनी पुरानी कथा कह सुनाई और वह प्रत्येक बात पर सहमत हुआ। उसने पूछा कि लाड जेटलड की स्पीच मुझे कसी लगी। मने कहा कि ऐसी स्पीचो मे अब तबीयत ऊबन लगी है। उनम वास्तविकता नही दिखाई देती। जब भारत म अयत दूषित वातावरण व्याप्त है और इग्लड म सुदर स्पीचें झाड़ी जाती हैं तो वे पाखण्ड से भरी प्रतीत होती है। हम स्पीचो की जरूरत नही है, हम ठास काम चाहते है।

इसके बाद हमने हैलिफक्स और विलिग्डन की तुलनात्मक आलोचना की। ऐसा प्रतीत होता है कि यहा कोई ऐसी तुलना करने का कष्ट नही उठाता क्योकि सब जानते हैं कि विलिग्डन हैलिफक्स के पासग म भी नही है। विलिग्डन की कुशाग्रता या कार्यशली के बारे म किसी की भी अच्छी धारणा नही है। विलसन हैरिसन ने अपनी जानकारी के लिए भारत के विषय म कई प्रश्न किए और अपने पत्र म कुछ लिखने का भी वचन दिया। हमने भारत के विद्यार्थियो की समस्या की भी चर्चा की। मुझ लगता है कि हम इस समस्या स निपटने के लिए भारत म ही कुछ करना होगा। यहा सब यही कहते है कि हम रुपया पानी म बहा रहे है। मने *उससे ईस्ट एण्ड के भारतीय माझियो का जिक्र किया। लगभग तीन सौ भारतीय* माझी ईस्ट एण्ड म जा बसे है। उन्होने अग्रज स्त्रियो से विवाह किए हैं और उनके बच्चे हैं। उ ह अपना निर्वाह करना कठिन हो रहा है। मन उस बताया कि म पचास बच्चो को भारत ले जाने को तयार था, पर उनके माता पिता राजी नही हुए।

८२

टिप्पणियां

२६ जुलाई, १९३५

लार्ड लोथियन का पत्र आया है। उन्होंने मुझे चाय पर बुलाया है। पत्र का एक मार्मिक पैरा इस प्रकार है

'आपने शुरू शुरू में जिस ढंग के प्रचार-कार्य की बात सोची थी उसके मार्ग में कुछ कठिनाइयां उपस्थित हो सकती हैं। पर आपके आगमन से लोगों को भारत की वास्तविक स्थिति का जितना बोध हुआ है उतना पहले नहीं था। मेरा विश्वास है कि इसका फल अन्य रूपों में प्रकट होगा। आपके कार्य की प्रचुर सराहना सुनने में आई है।'

यह एक हद तक उत्साहवर्द्धक है।

लायड्स के डाइरेक्टरों के साथ दोपहर का भोजन किया। मैंने उन्हें बताया कि अंग्रेज व्यापारियों के हाथ से बाजार खिसक रहा है। यूरोप के अन्य देशों ने मशीनरी में काफी तरक्की की है। मैंने कहा कि मेरा विश्वास है कि दस वर्ष बाद भारत लंकाशायर को कपड़े का निर्यात करने योग्य हो जाएगा। उन्होंने सब बड़ी गम्भीरता के साथ सुना और वे बड़े व्यग्र दिखाई दिए। वे लोग आपस में विचार विनिमय करेंगे।

८३

३० जुलाई १९३५

प्रिय महादेव भाई,

चिट्ठी मिली। धन्यवाद! यह कुछ कम संतोष की बात नहीं है कि कम से कम तुम्हें तो लगा कि मैं यहां अपनी मुलाकातों का अधिक से अधिक उपयोग कर रहा हूं। अभी तक कोई ठोस परिणाम नहीं दिखाई दिया। इससे बीच बीच में मैं हताश होने लगता हूं। पर तुम्हारा यह कथन बिलकुल ठीक है कि 'आपने जो कुछ हासिल किया है उसीसे संतुष्ट रहना चाहिए।' कल लार्ड हैलिफैक्स ने भी ठीक इन्हीं शब्दों में यह बात कही थी। उन्होंने बताया कि ठोस चीजें आदर्शों में से प्रकट होती हैं। उन्होंने कहा कि मैंने जमीन तैयार कर दी है और ठोस

परिणाम अवश्य निकलेगा।

प्राय म जिन जिनसे भेंट करना आवश्यक समझता था, उन सबस मिल चुका हू। श्री चर्चिल न दोपहर क खाने पर बुलाया ह, पर अभी तारीख निश्चित नहीं हुई है। श्री लायड जाज बेतरह कायव्यस्त हैं, देखना ह कि मेरे लिए समय निकाल सकते हैं या नहीं। पर यहा मेरे रुके रहने का मुख्य उद्देश्य लाड जेटलड और सर फाइण्डलेटर से अतिम बार भेंट करना है। मैं जिन जिनसे मिला हू उन सभी ने एक बार फिर मिलने को कहा है। पर म जान बूझकर ऐसा करने से बच रहा हू, क्योंकि व व्यथ ही उकता जाएगे। इसके अलावा, बात तो इण्डिया आफिस स ह। सर फाइण्डलेटर से इधर बहुत दिनो से भेंट नहीं हुई है। म उन्हे बराबर याद दिलाता हू पर उनका सेक्रेटरी हर बार टेलिफोन पर यही कह देता ह कि सर फाइण्डलेटर तथा लाड जेटलड दोनो ही मुझस यथासभव शीघ्र भेंट करेंगे। सभव ह भारत और ह्वाइट हाल म कुछ बात चल रही हो और वे अतिम निणय होने तक रुके हुए हैं पर यह भी हो सकता ह कि वे सचमुच ही कायव्यस्त हों। कम से कम यह तो ह कि वे भूल नहीं हैं और जानते है कि म उन्ही के निमित्त यहा रुका हुआ हू। उनसे निपटने के तुरत बाद मैं यहा स रवाना हो जाऊगा, और कुछ दिन यूरोप के दूसरे देशो मे रहकर सितम्बर क मध्य तक भारत के लिए रवाना हो सकूगा।

आज बगाल के गवनर का पत्र आया ह जिसम उन्होने मेरे पत्रों के पहुचने की बात कही है। उन्होने यह कहकर बडी अच्छी सलाह दी ह कि 'म आपको सबसे अच्छी सलाह यही द सकता हू कि आप सर फाइण्डलेटर के निकट सपक मे रहिए और उनके निणय पर पूरा भरोसा रखिए। उन्हे भारत की समस्याओ की पूण जानकारी ह उनम काफी सदभावना है, और व बहुत समझदार हैं।' म यह तो कर ही रहा हू पर कह नहीं सकता कि मरा सपक काफी निकट का है या नहीं? यह उनक ऊपर निभर ह मर ऊपर नहीं।

यहा रहकर मने जो धारणा बनाई ह वह यह है कि अब लोग बापू को पहले की अपेक्षा कहीं अधिक समझने लगे हैं और उनके प्रति पहल स अधिक आदर से काम लेते हैं। मने उनके व्यक्तित्व और विचारो को समझाने की यथासम्भव कोशिश की है।

म राजेन्द्र बाबू के पत्र-व्यवहार का पूरा उपयोग कर रहा हू पर भारत सरकार का पदाफाश करने से कुछ प्राप्त हो सकेगा यह म नहीं देख रहा हू। मने स्थिति का जितना अधिक अध्ययन किया उससे मेरी यह धारणा पुष्ट होती गइ कि लन्दन और भारत म दो भिन्न प्रकार के वातावरण व्याप्त हैं। यहा के वाता

वरण का सृजन राजनेताओ और राजनीति विशारदो द्वारा हुआ है, और भारत के वातावरण के जन्मदाता वाइसराय तथा सरकारी अधिकारी है। तुमने देखा ही होगा कि भारत सरकार की ताकीद के बावजूद मसानी के पासपोट की मियाद बढा दी गई है। साफ जाहिर है कि लन्दन का वातावरण विपरीत दिशा म काम कर रहा है। पर लन्दन का वातावरण उन्ही मामलो म सहायक हो सकता है जिनका निपटारा लन्दन म हाता हो। भारत सरकार की काय प्रणाली पर इस वातावरण का रत्ती भर भी प्रभाव नही होता। लाड हलिफक्स ने मेरे इस विश्लेषण के साथ सहमति व्यक्त की। भारत के वातावरण मे सुधार कसे किया जाए यह बहुत कुछ व्यक्तियो के ऊपर निभर है। पर हम धय से काम लेना है।

सप्रेम
घनश्यामदास

यह पत्र ३० तारीख को लिखाया। उसके बाद जेटलड से मिल लिया। उसका विवरण जा भेजा जा रहा है। इससे स्पष्ट होगा कि दिक्कत कहा है। फाइण्ड-लेटर ७ तारीख को मेरे साथ खाने पर आएगा। चर्चिल ने ६ को लच पर बुलाया है।

यहा का मुझ पर अच्छा असर पडा है। हम लोग यहा स मदद लेकर वहा की स्थिति पर काबू पा सकत है ऐसा मुझे लगता है। यहा के लोग अन्धे और बहरे नही है। टोरी भी समय के साथ चलता है। रूस के साथ मत्री और वारसा की सधि का दफन इसका प्रमाण है। हिन्दुस्तान के बारे म भी वसा ही समझो। समय सब कुछ करा लगा। इसक विपरीत नौकरशाही काशी के पडितो की तरह समय स पिछडी हुइ है। और यही हमारी दिक्कत है। यहावाले भी एक हद तक इसम असहाय हैं। पर हम उन्ह भी मदद द सकते हैं।

इन सबको सामन रखकर बापू को अपनी गाडी हाकनी है।

घनश्यामदास

८४

३० जुलाई, १९३५

प्रिय सर फाइण्डलेटर,

क्वेटा के सबध म काग्रेस के अध्यक्ष तथा भारत सरकार के बीच जो पत्र

व्यवहार हुआ है उसकी नकल इसके साथ नत्थी कर रहा हू। आप खुद ही निणय करें कि किस निष्कप पर पहुचना चाहिए।

इस मामले की गहराई म जाए बिना मैं इतना तो कह ही दू कि जो परिणाम निकला है वह भरोसे की भावना तथा पारस्परिक सम्पक के अभाव म स्वाभाविक ही था। क्वेटा को लेकर जा अफवाह फली हुई हैं उनसे स्वय राजेन्द्र बाबू प्रभावित हुए बिना नही रह सकत थे। इसलिए उन्होने सरकार का ध्यान इस सारे मामल की ओर आकर्षित किया सो ठीक ही किया। उधर सरकार का क्रुद्ध होना भी स्वाभाविक था कि उस इन अफवाहा की बात बताई गई जबकि उसका हार्दिक विश्वास है कि उसके लिए जा-कुछ करना सम्भव था उसने किया है। पर मनो विज्ञान का कोई भी विद्यार्थी तुरत कह उठगा कि अपने उत्तर म इन अफवाहो म निपटने का सरकार ने जा तरीका अपनाया है वह गलत तरीका है। इसलिए इन सारी कठिनाइयो का सामना करने का मुझे एकमात्र यही उपाय सूझता है कि आपसी सम्पक द्वारा एक दूसर के प्रति भरोस की भावना का सृजन किया जाए।

मसानी के पासपोर्ट को नयी स्वीकृति देकर सरकार ने उचित ही किया, पर मुझे भय है कि इस काण्ड के द्वारा मसानी को अनावश्यक रूप म प्रसिद्धि मिल गई। यह घटना भी यहा के वातावरण और भारत के वातावरण के अन्तर को स्पष्ट करती है। भारत के वातावरण ने जा कुछ किया उसका निराकरण लन्दन को करना पडा।

मैंने अपनी मुलाकातो का दौर खत्म कर दिया है। अब मेरे लिए कुछ करने को बाकी नही रह गया है।

भवदीय
घनश्यामदास बिडला

सर फाइण्डलटर स्टीवार्ट

८५

सीमोर हाउस
१७ वाटरलू स्ट्रीट एस० डब्ल्यू० १
३१ जुलाई १९३५

प्रिय श्री बिडला,

आपके पत्र का उत्तर मैंने इसलिए रोक रखा है कि इडिया आफिस मे अतिम

विचार विमर्श की सभावना है। मुझे मालूम हुआ है कि लाड जेटलड आपसे दो एक दिन म भेंट करनेवाले हैं। वह जिस नतीज पर पहुचे हैं, आपको बता देंग।

आपने शुरू शुरू मे जिस ढग के सुधार-काय की बात सोची थी उसके माग म कुछ कठिनाइया आ सकती हैं। पर आपक आगमन से लोगो को भारत की वास्तविक स्थिति का जितना बोध हुआ है उतना पहले कभी नही हुआ था, और मेरा विश्वास है कि इसका फल किसी-न किसी रूप म प्रकट होगा ही। आपक काय की काफी सराहना सुनने म आई है।

रही मरी बात, सो मैं आगामी शुक्रवार की सध्या को छुट्टी पर नगरसे बाहर जा रहा हू। यदि आप एक प्याला चाय के लिए मेरे उपर्युक्त आफिस म अथवा ८८ सेंट जेम्स स्ट्रीट मे मरे निवास स्थान पर उस दिन तीसरे पहर आ सकें तो बडा हप होगा क्योकि आपके भारत लौटने स पहल आपसे कुछ और बातें करना मर लिए मूल्यवान साबित होगा।

भवदीय
पी० पी० लोन्यिन
(पी० एम० गी०)

श्री० घनश्यामदास बिडला
ग्रासवेनर स्क्वेयर
पाक लेन डब्ल्यू० १

८६

१ अगस्त, १६३५

लाड जेटलड के साथ भेंट

समय सध्या के ५ बज—बातचीत ४५ मिनट चली

मुलाकात का समय ४ बजे निश्चित हुआ था पर उन्ह सामत सभा म देर लग गई। उन्होंने फोन पर क्षमा याचना की और प्रतीक्षा करने का अनुरोध किया। वह ५ बजे आए और विलम्ब के लिए बार बार क्षमा मागी। वार्ता के आरम्भ मे उन्होंने दानो हाथ मले जसा कि बातचीत के दौरान उनका स्वभाव है। इसके बाद उन्होंने दीघ नि श्वास छोडते हुए कहा कि अत म बिल पास हो ही गया कन कानून का रूप धारण कर लेगा। मैंने कहा 'आपको अभी निवृत्ति

की सास नही लेनी चाहिए, क्योकि असली काम तो अब आरम्भ होगा। वह सहमत हुए। फिर पूछने लगे कि उनसे पिछली बार मिलन के बाद से म और किस किस से मिला। मने लम्बी-सी फेहरिस्त सुना दी। उन्होने पूछा कि क्या म इग्लड के दौरे से सतुष्ट होकर लौट रहा हू? मने कहा, "जहा तक भेंट मुलाकातो का सम्बन्ध है वे बहुत सतोषप्रद रही। मैं जिनसे मिला, वे सभी मुझसे सहमत हुए सभी ने सहानुभूति भी प्रकट की। पर मुझे स्वीकार करना पड़ता है कि मैं भारत कोई ठोस चीज लेकर नही लौट रहा हू म अब भी प्रकाश की खोज म हू। वह बोले, हम लोग अर्थात हैलिफक्स, लोदियन लिनलिथगो और म खुद आपस म विचार विमर्श कर रहे थ। स्थिति जसी कुछ है हमारे लिए उलझन पैदा कर रही है। मैंने वाइसराय को लिखा था कि पारस्परिक सम्पर्क स्थापित करना चाहिए और वातावरण मे सुधार करना आवश्यक है पर उन्होने उत्तर दिया कि वह कुछ भी करने म असमर्थ हैं क्योकि उनका सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया है। उनकी धारणा है कि कांग्रेसवालो को व्यवस्थापिका सभा म लाने का श्रेय उन्ही को है इसलिए उन्ह उनके साथ सहयोग करना चाहिए था पर उन्होने न केवल दस्तखत करने से इन्कार किया बल्कि जिस सामाजिक आयोजन म वह जाते हैं उससे भी वे कतराते हैं। उनका कहना है कि वह राजा का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं इसलिए ऐसी परिस्थिति म पारस्परिक सम्पर्क सम्भव नही है। मैंने कहा मैं लार्ड विलिंग्डन के कथन म सशोधन करना चाहता हू। यह बात गलत है कि वाइसराय जिस आयोजन म जाते है कांग्रेसी सदस्य उसम भाग नही लते। यह सही है कि उन्होने हस्ताक्षर नही किये पर इसम उनके प्रति अशिष्टता क्या हुई? श्री भूलाभाई देसाई उनसे भेंट करने को तयार है पर उन्होने मुझ खुद बताया कि जबतक श्री देसाई दस्तखत नही करेंगे वह उनसे मुलाकात नही करेंगे। रही दस्तखत करने की बात, सो इस बारे म कुछ कठिनाई है। लार्ड विलिंग्डन ने मिस्टर गाधी का बहिष्कार कर रखा है इसलिए कांग्रेसी लोगो मे रोष की भावना काम कर रही है। पर उनके दस्तखत न करने का प्रधान कारण यह है कि व सरकारी अमल के साथ सामाजिक सम्पर्क स्थापित करने की इच्छा नही रखते। फारस म भी ऐसा ही प्रतिबन्ध है वहा भी अग्रेजो के साथ सामाजिक सम्बन्ध रखने की सरकारी कर्मचारियो को मुमानियत है। वहा केवल चोटी के अधिकारी ही सामाजिक व्यवहार कर सकते हैं। कांग्रेसी लोगो म वाइसराय के प्रति अशिष्टता की भावना बिलकुल नही है पर व साधारण कोटि के कांग्रेसियो को अधिकारी वर्ग से पृथक रखना चाहते हैं और ऐसा आचरण आत्मरक्षा के हेतु किया जा रहा है। पर मुझे यह देखकर क्षोभ होता है कि वाइसराय

न इस नगण्य-सी बात को इतना तूल दे दिया। मिस्टर गाधी ने राजा की मुलाकातियो की किताब मे दस्तखत नही किये थे, पर फिर भी उन्हें बकिंघम राजप्रासाद मे आमत्रित किया गया था।" लार्ड जेटलैंड ने उत्तर दिया, "कारण जो भी हो, हम इस वस्तुस्थिति का सामना करना है कि लार्ड विलिंगडन को आपका सुझाव रुचिकर नहीं है। इसलिए हम नये वाइसराय के जाने तक मैत्री का सकेत करने के लिए रुकना ही होगा।" मैंने कहा, "मैं आपकी कठिनाइयो को समझता हू, पर आपको दो बातें ध्यान मे रखनी होगी—नये वाइसराय के जाने से पहले कुछ-न-कुछ करना जरूरी है और आपको अपने मन मे वातावरण सुधारने के निमित्त अगले कदम के बारे मे कोई योजना स्थिर करनी है जो नये वाइसराय के वहा पहुचने के बाद कार्यान्वित की जा सके।" वह सहमत होते हुए बोले "इस अन्तरिम काल मे आप अपने मित्रो के साथ मिलकर काम कर सकते हैं और उन्हें बता सकते हैं कि आप यहा से क्या धारणा लेकर विदा हुए हैं। क्या आप हमारा यह आश्वासन स्वीकार करेंगे कि हम आपकी सहायता करने के लिए दृढप्रतिज्ञ हैं? आप मिस्टर गाधी का समाधान करा सकते हैं कि बाल्डविन होर हैलिफैक्स, लिनलिथगो और मै खुद नीयत के साफ आदमी हैं और सुधारो को भारत के हित मे कार्यान्वित होते हुए देखना चाहते हैं। इन सुधारो का उपयोग एकमात्र आपके देश के मगल के लिए हो इस बाबत हम आपको पूरी सुविधाए देंगे। सरक्षण हैं तो पर उन्हे काम मे नही लाया जाएगा। जो सरकार बनेगी, वह आप ही की सरकार होगी। चर्चिल की स्पीचें सहानुभूति की भावना से रिक्त अवश्य रही, पर उनमे यह भय प्रकट किया गया कि हम आत्मसमर्पण कर रहे हैं। हम नरम दलवालो के विचार मे आप लोगो को विपुल अधिकार सौंपे जा रहे हैं, जिनका उपयोग आप अपने देश को उसके लक्ष्य की ओर आगे बढाने मे कर सकते हैं। आप इस विषय मे मिस्टर गाधी को आश्वासन दीजिए और उन लोगो से कहिए कि नये वाइसराय के पहुचने पर विरोध की भावना को प्रश्रय न दें।" मैंने कहा, "मै उन लोगो से ये सारी बातें कह दूगा पर इससे कुछ खास लाभ नही होगा। एक दूसरे को समझने की भावना को जन्म देने के लिए कुछ पर्याप्त सकेत अवश्य मिलना चाहिए। सुधार तभी अमल मे आ पायेंगे। लन्दन का वातावरण अच्छा खासा है पर जरूरत भारत के वातावरण मे सुधार की है। यहा के वातावरण का वहा निर्यात करना सम्भव नहीं है। वाछित वातावरण का निर्माण भारत मे ही करना होगा और आप ऐसा नही करेगे तो सुधार ठप हो जाएगे।" वह बोले, "आप निश्चित रहिए हम यथाशक्ति जितना कुछ सभव होगा करेंगे। फिलहाल हम कुछ नही कर सकते पर आपको यह बात नही भूलनी चाहिए कि सुधार

उन्होंने सलाह दी कि वाइसराय पर कोई दबाव न डालूं। वह स्वत ही कुछ करें तो बात दूसरी है।

८७

२ अगस्त, १९३८

लार्ड लोथियन के साथ चाय
समय सध्या के ५ बजे

उन्होंने पूछा कि लार्ड जेटलैंड के साथ मेरी बातचीत का क्या नतीजा निकला। उन्हें मालूम था कि लार्ड जेटलैंड मुझे बताएंगे, क्योंकि लार्ड हैलिफैक्स, लार्ड लिनलिथगो तथा लार्ड जेटलैंड और वे स्वयं एक-दूसरे के सम्पर्क में रहकर मेरे सुझावों पर विचार करते रहे हैं। मैंने उन्हें लार्ड जेटलैंड के साथ अपनी बातचीत का सार सुनाया। उन्होंने कहा कि मेरे सुझावों को लेकर वे सब विचार विमर्श कर रहे हैं पर कठिनाई अवश्य है। हम नये वाइसराय के जाने तक रुकना ही पड़ेगा। मैंने कहा, 'पर नये वाइसराय के लिए भी तो आप लोगों ने कोई योजना स्थिर की होगी। क्या आपके दिमाग में कोई ऐसी योजना बनी है? और मुझे तब तक क्या करना चाहिए?" उन्होंने विशद रूप से सुधारों के गुणों का बखान किया। उन्होंने कहा कि "हम अगले निर्वाचनों के लिए कोई योजना बनानी चाहिए, सारी सीटों पर कब्जा कर लेना चाहिए और अपनी सरकार बनानी चाहिए। निर्वाचन काल में सोच-समझकर वचन देना चाहिए पर साथ ही राष्ट्रीय भावना को जगाना चाहिए। जब नयी सरकार बनेगी तो ब्रिटेन तथा कांग्रेस के प्रतिनिधि एक दूसरे के अधिकाधिक संपर्क में आयेंगे और तब सारा वातावरण बदल जाएगा, तथा हमें सुधारों की खूबियों का पता चलेगा। गवर्नर लोग कदापि हस्तक्षेप नहीं करेंगे।

मैंने कहा वातावरण में सुधार करने का यह इलाज नहीं है, और शासन प्रणाली संबंधी सुधार ढेर-की-ढेर सदिच्छाओं के बावजूद तब तक अव्यवहार्य रहेंगे, जबतक नौकरशाही अपनी मनोवृत्ति नहीं बदलेगी और स्वामियों-जैसा आचरण करने के बजाय सेवकों-जैसा आचरण करना नहीं सीखेगी। उन्होंने पूछा कि क्या पिछले दस वर्षों में सरकारी अमले के रुख में बिलकुल परिवर्तन नहीं हुआ है? मैंने उत्तर दिया, "हुआ है, पर समय चूक जाने के बाद।' उन्होंने कहा सर्वत्र और सदैव यही होता आया है। समय जितनी तेज रफ्तार से चलता है, लोग बाग उतनी

रफ्तार से नही चल पाते। पर सरकारी अमले की मनोवृत्ति ज्यो की-त्यो रहेगी, इसकी तो म कल्पना तक नही कर सकता। इस समय सरकारी अमले का ४३ प्रतिशत भारतीय है। शन शन व अच्छे पदो पर पहुचेंगे और अनुपात म भी वद्धि होगी। इस प्रकार सारी मनोवृत्ति ही बदल जाएगी।' मने कहा 'जबतक दोनो देशा के बीच किसी प्रकार का समझौता नही होगा तबतक नौकरशाही मनोवृत्ति मे परिवतन नही आएगा। हा समझौता हो जाए तो नौकरशाही भी हमारी प्रतिष्ठा का मान करगी और सबको-जसा आचरण करने लगेगी।" उन्होने मेरी दलील का माना और कहा कि 'नया वाइसराय अब सबसे मिलेगा मिस्टर गाधी से भी मिलेगा इस प्रकार पारस्परिक सम्पक स्थापित हो जाएगा और किसी न किसी प्रकार का समझौता भी अस्तित्व म आ सकता है।" मने कहा कि "किसी प्रकार का कोई समझौता होने स पहले दो-तीन बातें उठेंगी राजनतिक बदिया की रिहाई जमीन की वापसी तथा नजरबन्दा की रिहाई के बार म कोइ योजना। यहा से कोई घोषणा की जाये जिसमें इन तीनो बातो का समावेश रहे। इस घोषणा का मसौदा भारत के लोकप्रिय वग से मिल-जुलकर तयार होना चाहिए। ऐसा करने से वातावरण बदल जाएगा और सबकी मनोवृत्ति म भी परिवतन होगा। उन्होने पूछा बगाल के गवनर के सुझाव के बारे म क्या प्रतिक्रिया थी? मने उन्हें सर जान एण्डरसन के साथ अपनी बातचीत का साराश बताया। मने कहा कि इस बारे म बगाल के गवनर का दृढ विचार है कि सभी बदियो को रिहा न किया जाए हा उनकी रिहाई के माग और तौर तरीके पर अवश्य विचार किया जाए। लाड लोदियन ने कहा कि यहा का शासक वग बगाल के गवनर के कथन का अधिकाश म अनुमोदन करेगा। उन्होने कहा कि नयी सरकार के बनने तक ठहरे रहने के बजाय आतकवादियो के बारे मे तुरत कुछ समझौता नितान्त आवश्यक है।' मने कहा कि शरत की रिहाई स मुझे प्रसन्नता हुई है अब सुभाष के बारे मे भी कुछ-न कुछ करन की जरूरत है। व मर्यादा से बाहर जाएगे ऐसी कोई बात नही है। और इन दोनो भाइयो की रिहाई के बिना गाधीजी क लिए बगाल क आतकवादियो की समस्या का समाधान करना भी सम्भव नही ह। दोनो भाई दढनिश्चयी तो हैं पर कठिन कदापि साबित नही होगे। दोनो का बडा प्रभाव है। उन्होने जिज्ञासा की कि बगाल इतना कस पिछड गया पहले तो वह सारे भारत का नेतृत्व करता था। उन पुराने दिनो के लिए ग्लडस्टन उपयुक्त था पर इस समय वह बेकार साबित होता।

उन्होंने बताया कि उन्होने सुभाष की पुस्तक पढी है पुस्तक बुरी नही है। इसके बाद वह फिर मुख्य बात पर आये और बोले 'आपने जो-कुछ कहा

है उस पर एक नोट तैयार कीजिए। उस लन्दन में लार्ड लिनलिथगो से बात करूंगा।' उन्होंने पूछा कि क्या मैंने लार्ड लिनलिथगो से इस विषय पर बात की थी ? मैंने उत्तर दिया, 'नहीं, आम बातें होती रहीं। मुझे लगा कि ठोस विषयों की चर्चा का समय अभी नहीं आया है। उन्होंने कहा कि इस विषय पर वह खुद बात उठायेंगे। मैंने पूछा कि क्या लार्ड लिनलिथगो के भारत जाने के बारे में अंतिम निर्णय हो चुका है ? उन्होंने उत्तर दिया 'ऐसा ही लगता है। वह बहुत अच्छे आदमी हैं, हां यह हो सकता है कि उनमें विलिंग्टन-जैसी मोहिनी शक्ति न हो। वह व्यवहार-कुशलता के मामले में थोड़े कच्चे हैं।" मैंने कहा यह मामूली सी बात है। पर क्या वह स्वयं निर्णय लेने में समर्थ हैं ? उन्होंने उत्तर दिया "हां।' मैंने सुझाव दिया कि उन्हें अपना सेक्रेटरी यहीं से ले जाना चाहिए—सर फाइण्लेटर स्टीवार्ट-जैसे आदमी को। फिर मैंने पूछा 'क्या मैं दिल्ली में एक बार फिर कोशिश कर देखूं ?" उन्होंने कहा अवश्य लार्ड विलिंग्टन मिस्टर गांधी से मिलने से इन्कार करके बहुत बड़ी भूल कर रहे हैं। हम गांधी से सहमत भले ही न हों पर उनकी महानता के बारे में कोई शक नहीं है। उनका व्यक्तित्व विश्वव्यापी है वह एक अन्तर्राष्ट्रीय विभूति हैं। वह व्यावहारिक न हों न सही पर उनके अनुयायी उनके इशारे पर चलते हैं। उनका आचरण कुछ भिन्न रहता है पर वे सब गांधी से ही स्फूर्ति ग्रहण करते हैं। आप फिर से कोशिश कीजिए हो सकता है कि आप कामयाब हो जाएं। विलिंग्डन का यह लग सकता है कि मेल मिलाप की भावना साथ लेकर भारत छोड़ना उचित है।' उन्होंने मुझसे पूछा कि भारत के लिए समुद्र-यात्रा करने से पहले मेरा कहां-कहां जाने का विचार है ? मैंने उत्तर दिया, कह नहीं सकता।" वह बोले "स्काटलैंड आकर मुझसे मिलिए।' मैंने पूछा, 'क्या आप आगामी वर्ष में भारत जाने की बात सोचेंगे ?' उन्होंने उत्तर दिया, 'हो सकता है।"

८८

३ अगस्त १९३५

प्रिय लार्ड लिनलिथगो,

आपका पत्र बड़ा ही उत्साहवर्द्धक लगा। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं किसी प्रकार की निराशा की भावना लेकर नहीं लौट रहा हूं। वास्तव में, मैं आपकी सद्भावना अपने साथ लिये जा रहा हूं। आपकी तथा अपने अन्य मित्रों

रफ्तार से नही चल पाते। पर सरकारी अमले की मनोवृत्ति ज्यो की-त्यो रहेगी इसकी तो मैं कल्पना तक नही कर सकता। इस समय सरकारी अमले का ४३ प्रतिशत भारतीय है। शनै शनै वे अच्छे पदो पर पहुँचेंगे और अनुपात में भी वृद्धि होगी। इस प्रकार सारी मनोवृत्ति ही बदल जाएगी।" मैने कहा "जबतक दोनो देशो के बीच किसी प्रकार का समझौता नही होगा, तबतक नौकरशाही मनोवृत्ति म परिवतन नही आएगा। हा समझौता हो जाए तो नौकरशाही भी हमारी प्रतिष्ठा का मान करगी और सबका जसा आचरण करने लगेगी।' उन्होने मेरी दलील को माना और कहा कि "नया वाइसराय अब सबसे मिलगा, मिस्टर गाधी से भी मिलेगा, इस प्रकार पारस्परिक सम्पर्क स्थापित हो जाएगा और किसी न किसी प्रकार का समझौता भी अस्तित्व मे आ सकता है।' मने कहा कि "किसी प्रकार का कोई समझौता होने से पहले दो-तीन बातें उठेंगी राजनतिक बन्दियो की रिहाई जमीन की वापसी तथा नजरबन्दो की रिहाई के बारे म कोई योजना। यहा से कोई घोषणा की जाये जिसमे इन तीनो बातो का समावेश रहे। इस घोषणा का मसौदा भारत के लोकप्रिय वग से मिल जुलकर तयार होना चाहिए। ऐसा करन से वातावरण बदल जाएगा और सबकी मनोवृत्ति म भी परिवतन होगा।' उन्होने पूछा बगाल के गवनर के सुझाव के बारे म क्या प्रतिक्रिया थी?" मने उन्हे सर जॉन एण्डसन के साथ अपनी बातचीत का साराश बताया। मैने कहा कि इस बारे म बगाल के गवनर का दृढ विचार है कि सभी बन्दियो को रिहा न किया जाए हा उनकी रिहाई के माग और तौर तरीके पर अवश्य विचार किया जाए। लाड लोदियन ने कहा कि 'यहा का शासक वग बगाल के गवनर के कथन का अधिकाश म अनुमोदन करगा।" उन्होने कहा कि "नयी सरकार के बनने तक ठहरे रहने के बजाय आतकवादियो के बारे म तुरत कुछ समझौता नितान्त आवश्यक है।' मैंने कहा कि शरत की रिहाई से मुझे प्रसन्नता हुई है अब सुभाष के बारे मे भी कुछ न-कुछ करने की जरूरत है। व मर्यादा से बाहर जाएग ऐसी कोई बात नही है। और इन दोनो भाइयो की रिहाई के बिना गाधीजी के लिए बगाल के आतकवादियो की समस्या का समाधान करना भी सम्भव नही है। दोनो भाई दृढनिश्चयी तो है पर कठिन कदापि साबित नही होगे। दोनो का बडा प्रभाव है। उन्होने जिज्ञासा की कि बगाल इतना कसे पिछड गया, पहले तो वह सारे भारत का नेतृत्व करता था। उन पुराने दिनो के लिए ग्लडस्टन उपयुक्त था, पर इस समय वह बेकार साबित होता।

उन्होने बताया कि उन्होने सुभाष की पुस्तक पढी है पुस्तक बुरी नही है। इसके बाद वह फिर मुख्य बात पर आये और बोले 'आपने जो-कुछ कहा

है उस पर एक नोट तयार कीजिए। उस लेटर म लाड लिनलियगो से बात करूगा।' उन्होंने पूछा कि क्या मैंने लाड लिनलिथगो से इस विषय पर बात की थी? मने उत्तर दिया, "नही आम बातें होती रही। मुझे लगा कि ठोस विषयो की चर्चा का समय अभी नही आया है।' उन्होंने कहा कि इस विषय पर वह खुद बात उठायेंगे। मैंने पूछा कि क्या लाड लिनलियगो के भारत जाने के बारे म अतिम निणय हो चुका है? उन्होंने उत्तर दिया 'ऐसा ही लगता है। वह बहुत अच्छे आदमी हैं हा यह हो सकता है कि उनम विलिंग्डन जसी मोहिनी शक्ति न हो। वह व्यवहार कुशलता के मामले मे थोडे रूखे है।' मैंने कहा "यह मामूली सी बात है। पर क्या वह स्वय निणय लेने म समथ है?' उन्होंने उत्तर दिया "हा।' मैंने सुझाव दिया कि उन्हे अपना सक्रेटरी यही से ले जाना चाहिए—सर फाइण्डलेटर स्टीवाट-जसे आदमी को। फिर मैंने पूछा, क्या मैं दिल्ली म एक बार फिर कोशिश कर देखू?' उन्होंने कहा अवश्य लाड विलिंग्डन मिस्टर गाधी स मिलने स इन्कार करके बहुत बडी भूल कर रहे है। हम गाधी स सहमत भले ही न हो, पर उनकी महानता के बारे मे कोई शक नही है। उनका व्यक्तित्व विश्वव्यापी है, वह एक अन्तर्राष्ट्रीय विभूति है। वह व्यावहारिक न हो न सही पर उनके अनुयायी उनके इशारे पर चलते है। उनका आचरण कुछ भिन्न रहता है पर वे सब गाधी स ही स्फूर्ति ग्रहण करते है। आप फिर से कोशिश कीजिए, हो सकता है कि आप कामयाब हो जाए। विलिंग्डन को यह लग सकता है कि मेल मिलाप की भावना साथ लेकर भारत छोडना उचित है।' उन्होंने मुझसे पूछा कि भारत के लिए समुद्र-यात्रा करने से पहले मेरा कहा-कहा जाने का विचार है? मैंने उत्तर दिया, कह नही सकता। वह बोले स्काटलड आकर मुझसे मिलिए। मैंने पूछा, 'क्या आप आगामी वप म भारत जाने की बात सोचेंगे? उन्होंने उत्तर दिया, 'हो सकता है।

८८

३ अगस्त, १९३५

प्रिय लाड लिनलिथगो,

आपका पत्र बडा ही उत्साहवद्धक लगा। म आपको विश्वास दिलाता हू कि म किसी प्रकार की निराशा की भावना लेकर नही लौट रहा हू। वास्तव म म आपकी सदभावना अपने साथ लिये जा रहा हू। आपकी तथा अपने अन्य मित्रो

की, और जसा कि आपने अपने पत्र म कहा है, समय आने पर यह सदभावना अत्यत फलदायक सिद्ध होगी।

दो एक बातें और हैं जिनकी ओर म आपका ध्यान दिलाना चाहता हू। वाइसराय को वातावरण तयार करने के लिए कठोर प्रयास करना पड़ेगा और उन्हें इस काय म किसी ऐसे आदमी की सहायता आवश्यक होगी, जो निष्पक्ष हो। म कह नही सकता कि नये वाइसराय के लिए अपना निजी सेक्रेटरी यहीं से ले जाने का सुझाव जचेगा या नही। पर लाड विलिंग्डन न यही किया था।

जब नये वाइसराय पारस्परिक सम्पक स्थापित कर चुकेंगे, तो उनके विचाराथ कुछ बात अवश्य उठेंगी। म उन मुद्दो का उल्लेख करना चाहता हू जिससे उनके विषय म आप अभी से विचार करना आरम्भ कर सकेंगे

१) अहिंसावादी राजनतिक बदियो की रिहाई। (इनकी सख्या अधिक नही है पर इनम खान अब्दुल गफ्फार खा तथा पडित नेहरू-जसे व्यक्ति है। मेरी धारणा है कि पडित नहरू शीघ्र ही रिहा कर दिय जाएगे)।

२) जब्त की गई जमीन की वापसी। इसकी व्यवस्था इविन गाधी पक्ट म थी पर उसके भग होने पर यह मामला खटाई म पड गया। अपने सहकर्मियो को बीच म लटका हुआ छोडकर काग्रेसी पद ग्रहण कसे कर सकेंगे?

३) आतकवादियो की समस्या का समाधान करना अत्यावश्यक है। कोई एसी योजना तयार करनी ही होगी जिससे आतकवाद का निवारण किया जा सके। इस बाबत काग्रेस और सरकार दोनो एकमत है पर दोनो के दृष्टिकोण भिन्न है। काग्रेस आतकवाद का अत मेल मिलाप द्वारा करना चाहती है दण्ड के द्वारा नही। यो काग्रेस भी अपनी काय विधि से दड की व्यवस्था को अलग नही रख पायगी पर सरकार को भी मल मिलाप के माग की उपेक्षा नही करनी चाहिए। म किसी ऐसी व्यवस्था की कल्पना कर रहा हू जिसके अतगत सरकार तथा विपक्ष मे समान उद्देश्य को सामने रखकर विचार विनिमय सम्भव हो। ऐसा हुआ तो आतकवाद से निपटने मे दोनो ही सफल होंगे। श्री शरतचद्र *बोस की रिहाई एक ठीक दिशा म उठाया गया कदम है* और मरी धारणा है कि उनके भाइ श्री सुभाष बोस से भी उचित ढग से निपटा जा सकता है। सर जॉन एण्डसन जितनी सूझ बूझ के आदमी हैं उस देखते हुए उनके लिए किसी ऐसे फामूले की खोज करना असभव नही है। म य सारी बातें आपके विचाराथ रख रहा हू क्योकि एक दिन वे

बात का असाधारण तथा अस्वाभाविक रूप द दिया ह। अब इसस बचना होगा। दूसरे, बातचीत भग जसी कोई बात नही उठनी चाहिए। भेंट का उद्देश्य सहमति के क्षेत्र की खोज करना रहे, असहमति का क्षेत्र तलाशना नही। सरकार कोई अकेल आदमी द्वारा सचालित न होकर एक जटिल मशीनरी है। कभी कभी निणयो के पीछे विवेक बुद्धि की सहायता प्राप्त निष्कर्षों का अभाव रहता है पर उन्हे लेने के लिए बाध्य होना पडता है। मिस्टर गाधी को यह बात हृदयगम कर लेनी चाहिए। यदि कभी उनकी सलाह को मान्यता न दी जाय तो उसस यह नही समझ बठना चाहिए कि मान्यता प्रदान करने की अभिलाषा नही है। केवल इतना ही समझकर सतोष कर लेना चाहिए कि परिस्थितियो ने मान्यता प्रदान करने की अनुमति नही दी। जब सरकार किसी निणय पर पहुचती है तो वसा करन स पहले अनेक परस्पर विरोधी विचारो को ध्यान मे रखना पडता है। कभी सरहदी आदमी की बात उठ खडी होती है। कभी किसी प्रातीय गवनर का दष्टिकोण सामन आ जाता है। इसस अनेक गुत्थिया खडी होती है। मिस्टर गाधी को निम्नलिखित प्रस्तावनाए ग्रहण कर लेनी चाहिए

१) कि नया वाइसराय भला आदमी है और भारत के साथ न्याय करना चाहता है।

२) कि भारत सरकार भूलें न करती हो एसी बात नही है पर यह समझना ठीक नही है कि उसम मूख भर पडे हैं। साथ ही भारत सरकार को भी यह समझ रखना चाहिए कि मिस्टर गाधी एक बडी शक्ति हैं और नीयत के साफ है, इसलिए उनकी बात जहा तक सम्भव हो मान लेनी चाहिए। यदि दोनो इस बात को धार लें तो व असहमत भले ही हो और परिस्थितियो के दबाव से किसी विषय को लकर पूरा समझौता भले न हो पाय पर दोनो पक्षो का सम्बन्ध-विच्छेद होने की नौबत कदापि नही आएगी। असहमति के क्षेत्र को उत्तरोत्तर सकुचित करक तथा जिन मुद्दो पर असहमति हुई है उनका किस्तो क रूप म निपटारा करके पूरी समस्या हल की जा सकती है। एक-दूसर पर भरोसा करन की भावना ही पथ प्रदशक मानी जाय। इसके लिए दोनो ओर धय की जरूरत है।

हम दोनो ने जमीन की वापसी राजनतिक बदियो की रिहाई तथा अत म नजरबदो की रिहाई के सबध म विस्तार क साथ विचार विनिमय किया। उन्होने सुभाव क विष य म और मन पक्ष म दलीलें पश की। सारी चर्चा मत्री के वातावरण म हुई। उन्होंने निश्चित रूप से तो कुछ नही कहा, पर इस बात पर यह सहमत हुए कि इन विषयो पर सरकारी चर्चा अनिवाय है। उन्होंने इन बातो

रहा है कि समझौता के अथ करने म दिक्कत पदा होनवाली है। लकिन म निश्चित हू जो हाने का ह सा हागा ही। हम अपने कत्तय का निडरता स पालन करें। तुमारा काम हो जान से अवश्य आ जाना। वहा बेकार बठना भी अच्छा नही लगेगा। हा शरीर अच्छा करन के लिय रहना उचित लग तो अवश्य रहना।

हरिजन सघ की सब बातें तो मिला करती हागी।

बापु क आशीवाद

४ ८ ३५

वधा

६१

चि० लक्ष्मीनिवास

तुमारा खत मिला है। अगल सब खत मिले थे। पिताजी क लिये खत ता भेजता हू। अगर वे निकल चुके हैं तो मुझे लिखो अथवा तार दो।

सब कुशल हागे।

बापु क आशीर्वा

वर्धा

४ ८ ३५

६२

७ अगस्त १९३५

सर फाइण्डलेटर स्टीवाट भोजन के लिए रात्रि के ८॥ बजे आये और १० बजे तक रहे

बातचीत का मुख्य विषय अगला कदम था। शब्दश विवरण तयार करना निरथक होगा बहुत लम्बा हा जाएगा।

उसक विचारो का साराश इस प्रकार ह—"यक्तिगत भेंट मुलाकात ही अगला कदम होगा पर यह ढिंढोरा पीटे बगर होना चाहिए लेकिन उस अतिरजित नही करना चाहिए। परिस्थितिया ने मि० गाधी तथा वाइसराय की भेंट की

बात का असाधारण तथा अस्वाभाविक रूप दे दिया है। अब इससे बचना होगा। दूसरे, बातचीत भग जैसी कोई बात नहीं उठनी चाहिए। भेंट का उद्देश्य सहमति के क्षेत्र की खोज करना रहे असहमति का क्षेत्र तलाशना नहीं। सरकार कोई अकेले आदमी द्वारा सचालित न होकर एक जटिल मशीनरी है। कभी-कभी निर्णयों के पीछे विवेक-बुद्धि की सहायता प्राप्त निष्कर्षों का अभाव रहता है पर उन्हें लेने के लिए बाध्य होना पड़ता है। मिस्टर गांधी को यह बात हृदयगम कर लेनी चाहिए। यदि कभी उनकी सलाह को मान्यता न दी जाय तो उससे यह नहीं समझ बैठना चाहिए कि मान्यता प्रदान करने की अभिलाषा नहीं है। केवल इतना ही समझकर सतोष कर लेना चाहिए कि परिस्थितियों ने मान्यता प्रदान करने की अनुमति नहीं दी। जब सरकार किसी निर्णय पर पहुचती है तो वैसा करने से पहले अनेक परस्पर विरोधी विचारों का ध्यान में रखना पड़ता है। कभी सरहदी आदमी की बात उठ खड़ी होती है। कभी किसी प्रातीय गवर्नर का दृष्टिकोण सामने आ जाता है। इससे अनेक गुत्थियाँ खड़ी होती हैं। मिस्टर गांधी को निम्नलिखित प्रस्तावनाएं ग्रहण कर लेनी चाहिए

१) कि नया वाइसराय भला आदमी है और भारत के साथ न्याय करना चाहता है।

२) कि भारत सरकार भूलें न करती हो ऐसी बात नहीं है पर यह समझना ठीक नहीं है कि उसमें मूर्ख भरे पड़े हैं। साथ ही भारत सरकार को भी यह समझ रखना चाहिए कि मिस्टर गांधी एक बड़ी शक्ति हैं और नीयत के साफ हैं इसलिए उनकी बात जहां तक सम्भव हो मान लेनी चाहिए। यदि दोनों इस बात को धार लें तो वे असहमत भले ही हों और परिस्थितियों के दबाव से किसी विषय को लेकर पूरा समझौता भले न हो पाये पर दोनों पक्षों का सम्बन्ध विच्छेद होने की नौबत कदापि नहीं आएगी। असहमति के क्षेत्र को उत्तरोत्तर सकुचित करके तथा जिन मुद्दों पर असहमति हुई है उनको किस्तों के रूप में निपटारा करके पूरी समस्या हल की जा सकती है। एक-दूसरे पर भरोसा करने की भावना ही पथ प्रदर्शक मानी जाय। इसके लिए दोनों ओर धैर्य की जरूरत है।

हम दोनों ने जमीन की वापसी, राजनैतिक बन्दियों की रिहाई तथा अत में नारवदा की रिहाई के सबध में विस्तार के साथ विचार विनिमय किया। उन्होंने सुझाव के विपक्ष में और मैंने पक्ष में दलीलें पेश कीं। सारी चर्चा मैत्री के वातावरण में हुई। उन्होंने निश्चित रूप से तो कुछ नहीं कहा, पर इस बात पर वह सम्मत हुए कि इन विषयों पर सरकारी चर्चा अनिवार्य है। उन्होंने इन बातों

पर गौर करने का वचन दिया। उन्होंने मेरी समुद्र यात्रा सफल होने की कामना व्यक्त की। उनकी धारणा थी कि राजेन्द्र बाबू ने पत्र-व्यवहार प्रकाशित कर दिया है। मैंने उनका भ्रम निवारण किया। पर उन्होंने यह तो कहा ही कि पत्र बहुत भौंडा था और पत्र की भाषा विचित्र थी।

कार्न हीथ कहता है कि वह लार्ड जेटलैंड से मिलेगा। उसने बताया कि लार्ड हैलिफैक्स मिस्टर गांधी के लंदन बुलाये जाने के पक्ष में नहीं थे, क्योंकि औसत दर्जे के अंग्रेज उन्हें समझने में असमर्थ रहेंगे। उनकी राय में मिस्टर गांधी को यहां बुलाना गुलदाऊदी को उत्तरी ध्रुव भेजने के समान होगा। जब मैं रायटर के प्रधान पुरुष से मिला तो मैंने कहा कि उसकी समाचार एजेंसी जो सामग्री इंग्लैंड भेज रही है उससे भारतीय दृष्टिकोण का वास्तविक चित्र उपस्थित नहीं होता है। उसने मेरी सलाह मांगी और मुझे आश्वासन दिया कि वह भारतीय दृष्टिकोण को अंग्रेज जनता के समक्ष रखने के पूरी तौर से पक्ष में है। मैंने उसे सलाह दी कि श्री मैलोनी को वर्धा में गांधीजी से मिलने को कहे। वह राजी हुआ।

९३

७ अगस्त, १९३५

महामहिम

आपके पत्र के लिए अत्यन्त आभारी हूं। वास्तव में मैं बिलकुल आपकी सलाह के अनुसार ही चलता आ रहा हूं। जिन जिनसे मिलना उपयोगी समझा, उन सभी से मिल लिया हूं। इनमें श्री बाल्डविन भी हैं। उन्होंने मेरे दृष्टिकोण के प्रति प्रचुर सहानुभूति प्रकट की और मेरे सुझावों को सराहा। पर इन सुझावों को मान्यता देने में कठिनाइयां भी हैं। मुझे बताया गया है कि समय आयेगा, जब मेरा यहां आना फलदायक सिद्ध होगा। इस प्रकार मैं अब नये वाइसराय, भारत सचिव तथा अन्य उन सभी राजजनों की शुभकामनाओं के साथ वापस लौट रहा हूं, जिनका प्रभाव है।

वापस लौटने पर आपसे मिलूंगा और अपने मिशन का वर्णन विस्तार के साथ करूंगा।

मैं आज शाम को सर फाइण्डलेटर स्टीवार्ट के साथ और परसों श्री चर्चिल के

साथ भोजन कर रहा हूं। मेरी धारणा है कि श्री चर्चिल के साथ मेरी भेंट आपको रोचक लगेगी।

आशा है आप सकुशल हैं।

भवदीय,
घनश्यामदास बिड़ला

हिज एक्सीलेंसी सर जान एण्डरसन
बंगाल के गवर्नर

९४

९ अगस्त १९३५

माननीय विंस्टन चर्चिल के साथ उनके ग्राम निवास-स्थान पर भेंट

बड़ा ही असाधारण व्यक्तित्व। आपस की बातचीत में भी उतने ही ओजस्वी हैं जितने अपनी स्पीचों में। वार्तालाप का अक्षरशः उद्धृत करना असम्भव है। उनके पास कोई दो घण्टे रहा। श्रीमती चर्चिल भी बड़ी दिलचस्प हैं, पर जब उनके पति बोलना शुरू करते हैं, तो वह चुपचाप सुनती रहती हैं। वह गत वर्ष भारत में केवल ६ घण्टे ठहरी थीं।

जब मैं वहां पहुंचा तो श्री चर्चिल अपने उद्यान में थे। श्रीमतीजी ने उन्हें बुला भेजा। वह एप्रन पहने हुए थे, जिसे उन्होंने भोजन के समय भी नहीं उतारा और वैसे ही फिर उद्यान की ओर चल पड़े। सिर पर एक बड़ा सा टोप धारण कर रखा था जिसमें एक पंख खोंसा हुआ था। भोजन के बाद वह मुझे अपना उद्यान दिखाने ले गये, जहां उन्होंने वे इमारतें दिखाईं जिनका उन्होंने निर्माण किया था और वे ईंटें भी दिखाईं जिनकी चिनाई उन्होंने अपने हाथों से की थी। उन्होंने वह चित्र भी दिखाया, जिसे उन्होंने खुद तैयार किया था।

उनका निवास स्थान, उसके आस पास की चीजें, तरन का कुंड सब-कुछ अत्यन्त मनोहारी लगा। कुंड का पानी बायलर से गरम किया जाता है। एक पम्प के द्वारा कुंड से पानी खींचा जाता है, फिर उसे बायलर गर्म करता है, उसे छानता है, उसके बाद वह पानी वापस कुंड में पम्प कर दिया जाता है। मैंने स्वगत कहा, यह विलासिता बड़ी महंगी रहती होगी। बातचीत में उनसे पता चला

पर गौर करने का वचन दिया। उन्होंने मेरी समुद्र यात्रा सफल होने की कामना व्यक्त की। उनकी धारणा थी कि राजेन्द्र बाबू ने पत्र व्यवहार प्रकाशित कर दिया है। मैंने उनका भ्रम निवारण किया। पर उन्होंने यह तो कहा ही कि पत्र बहुत भौंडा था और पत्र की भाषा विचित्र थी।

काल हीथ कहता है कि वह लार्ड जटलैंड से मिलेगा। उसने बताया कि लार्ड हैलिफैक्स मिस्टर गांधी के लंदन बुलाये जाने के पक्ष में नहीं थे, क्योंकि औसत दर्जे के अंग्रेज उन्हें समझने में असमर्थ रहेंगे। उनकी राय में मिस्टर गांधी को यहां बुलाना गुलदाऊदी को उत्तरी ध्रुव भेजने के समान होगा। जब मैं रायटर के प्रधान पुरुष से मिला तो मैंने कहा कि उसकी समाचार एजेंसी जो सामग्री इंग्लैंड भेज रही है उससे भारतीय दृष्टिकोण का वास्तविक चित्र उपस्थित नहीं होता है। उसने मेरी सलाह मांगी और मुझे आश्वासन दिया कि वह भारतीय दृष्टिकोण को अंग्रेज जनता के समक्ष रखने के पूरी तौर से पक्ष में है। मैंने उसे सलाह दी कि श्री मनोनी को वर्धा में गांधीजी से मिलने को कहे। वह राजी हुआ।

साथ भोजन कर रहा हूं। मेरी धारणा है कि श्री चर्चिल के साथ मेरी भेंट आपको रोचक लगेगी।

आशा है आप सकुशल हैं।

भवदीय,
घनश्यामदास बिड़ला

हिज एक्सीलेंसी सर जॉन एण्डरसन
बंगाल के गवर्नर

६४

६ अगस्त १६३५

मानतीय मिस्टर चर्चिल के साथ उनके ग्राम निवास-स्थान पर भेंट

बड़ा ही असाधारण व्यक्तित्व। आपस की बातचीत में भी उतने ही ओजस्वी हैं जितने अपनी स्पीचों में। वार्तालाप को अक्षरशः उद्धृत करना असम्भव है। उनके पास कोई दो घण्टे रहा। श्रीमती चर्चिल भी बड़ी दिलचस्प हैं पर जब उनके पति बोलना शुरू करते हैं, तो वह चुपचाप सुनती रहती हैं। वह एक बार भारत में केवल ६ घण्टे ठहरी थीं।

जब मैं वहां पहुंचा तो श्री चर्चिल अपने उद्यान में थे। श्रीमतीजी ने उन्हें बुला भेजा। वह एप्रन पहने हुए थे, जिसे उन्होंने भोजन के समय भी नहीं उतारा और वैसे ही फिर उद्यान की ओर चल पड़े। सिर पर एक बड़ा सा टोप धारण कर रखा था जिसमें एक पंख लगा हुआ था। भोजन के बाद वह मुझे अपना उद्यान दिखाने ले गये, जहां उन्होंने ये इमारतें दिखाईं जिनका उन्होंने निर्माण किया था और ये दूसरी भी दिखाईं जिनकी चिनाई उन्होंने अपने हाथों से की थी। उन्होंने वह चित्र भी दिखाया, जिसे उन्होंने खुद तैयार किया था।

जब मैंने निवास-स्थान, उनके आस पास की चीजें, सब कुछ सब-कुछ अच्छी नहीं थी, पर मेरा लड़का [illegible] बायलर से गरम किया जाता है। एक चाहूंगा। मरने से पहले एक बार [illegible] उसे बायलर गर्म करता है, उस महीने ठहरूंगा।' [illegible] र किया जाता है। मैंने स्वगत [illegible] बातचीत में उन्होंने [illegible]

कि उसपर प्रति सप्ताह केवल तीन पौंड खच करते ह ।

बातचीत म तीन चौथाइ हिस्सा चर्चिल ले लेते थ शेप एक चौथाई म श्रीमती चर्चिल और मैं । मैं बीच बीच मे केवल भ्रम निवारण के लिए अथवा प्रश्न करने के लिए टोक दता था पर वार्तालाप मुझे अत्यन्त रोचक लगा एक क्षण के लिए भी ऊब नही हुई । कभी-कभी तो वह भावावेश मे आ जाते थे, पर भारत के बार म उनकी जानकारी अत्य त दोषपूण है । उ होंने विचित्र धारणाए बना रखी हैं । उनका खयाल है कि भारत म गावो का शहरो स कोई वास्ता नही है । मैंने उनकी गलतफहमी दूर की और उन्ह बताया कि भारत का कोई भी शहरी सोलह आने शहरी नही है उसका किसी न किसी गाव से नाता अवश्य जुडा रहता है । मैं अपनी मिलो म जिन २५,००० आदमियो को लगाये हुए हू वे वप म कम स-कम एक बार अपने गाव अवश्य जाते हैं ।

उनकी यह भी धारणा थी कि अभी मोटर कारें गावो तक नही पहुच पाई हैं । मैंने उनके इस भ्रम को भी दूर किया । एक अमरिकी कार के लिए सडक की जरूरत नही रहती है और इस प्रकार कारें देश के कोने-कोने कर चुकी हैं ।

उनका विश्वास था कि ग्रेजुएटो और राजनीतिज्ञो का अड्डा नगर ह उनकी यह भूल भी सुधारी । मने कहा कि म अपने ही गाव म ६ ग्रेजुएट कर सकता ह । यह बात दूसरी है कि वे अपने गाव म स्थायी रूप से वास कर पाते ।

मैंने बताया तो उन्हें बड़ी दिलचस्पी हुई। वह बोले, "जब से मिस्टर गांधी ने अस्पृश्यता निवारण का कार्य हाथ में लिया है, वह मेरी दृष्टि में बहुत ऊंचे उठ गए हैं।" उन्होंने अस्पृश्यता निवारण कार्य के बारे में विस्तार के साथ जानकारी हासिल करने की इच्छा प्रकट की। मैंने उन्हें वह सब बताया। उन्हें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि मैं हरिजन-सेवक संघ का अध्यक्ष हूं। इसके बाद उन्होंने मिस्टर गांधी के ग्रामोत्थान-सम्बन्धी कार्यकलाप के बारे में जानना चाहा। "भारतीय किसान ने जमीन जोतने, बोने और फसल तैयार करने के मामले में अपनी प्रणाली में शिथिलता क्या आने दी ? लार्ड लिनलिथगो की भी यही धारणा है।' मैंने उन्हें बताया कि इसका कारण यह है कि उसे उपेक्षित रखा गया है। 'खैर, पर अब तो आपको अवसर मिलेगा ही। मुझे बिल पसन्द नहीं है, पर अब कानून बन चुका है। हमें यह कहने का मौका मत दीजिए कि हमने तो पहले ही कहा था कि सुधार ठप हो जायेंगे। कट्टरपंथी लोगों की तो यही कामना है। अब आप लोगों ...म अपरिमित शक्ति आ गई है। सिद्धान्त के रूप में गवर्नर ही सब-कुछ ...स्तव में वे हैं नहीं के बराबर। यहां राजा ही सर्वेसर्वा है। पर वास्तव में शक्त है। जब यहां समाजवादियों के हाथ में सत्ता आई तो उनके हाथ में ...क्त थी पर वे कोई अतिवादी कदम उठाने से विरत रहे। सरकार गर...ओं हैं जि... दापि काम में नहीं लायेगी इसलिए अब आप लोग शासन विधान को सफल ...इये।" मैंने पूछा "आपका सफलता का माप दंड क्या है ?" उन्होंने उत्तर दिया, "जन-साधारण का कल्याण, भौतिक कल्याण, नैतिक कल्याण। मुझे इसकी चिन्ता नहीं है कि आप लोग ब्रिटेन के प्रति कितने वफादार हैं। न मुझे अधिक शिक्षा प्रसार की ही चिन्ता है। पर जन-साधारण को मक्खन अधिक परिमाण में दीजिए। मैं तो मक्खन का हामी हूं। जैसा कि एक बार एक फ्रांसीसी राजा ने कहा था, देगची में मुर्गी।' मैं तो बराबर मक्खन के पक्ष में ही रहता हूं। गायों की संख्या घटाइये, पर नस्ल अच्छी चाहिए। प्रत्येक खेतिहर को खुद जमीन का मालिक बनने का मौका दीजिए। बढ़िया नस्ल की गायों को कसाईखाने में जाने से रोकिए। प्रत्येक गांव में एक बढ़िया सांड रखा जाय। अब आपको एक अच्छा खासा वाइसराय मिलनेवाला है। मिस्टर गांधी से कहिए कि जो अधिकार प्रदान किये जा रहे हैं उन्हें ग्रहण करें और उनका अच्छे-से-अच्छा उपयोग करें। जब मिस्टर गांधी यहां थे तो मैं उनसे नहीं मिल पाया था। उस समय मेरी स्थिति अच्छी नहीं थी पर मेरा लड़का उनसे मिला था। अब मैं भी उनसे मिलना चाहूंगा। मरने से पहले एक बार भारत हो आने की इच्छा है। ...ता ...कम ६ महीने ठहरूंगा।

उन्होंने पूछा कि क्या मिस्टर गांधी शासन विधान को ठप करने की इच्छा रखते हैं ? मैंने उत्तर दिया, 'मिस्टर गांधी उदासीन हैं। उनका दृढ़ विश्वास है कि हमारी राजनैतिक स्वाधीनता हमारे ही मध्य से आयेगी, राजनैतिक प्रगति स्वयं हमारे ऊपर निर्भर करती है। इसलिए वह जन-साधारण के उत्थान में लगे हुए हैं। उन्हें शासन विधान में विशेष रुचि नहीं है।' वह सहमत हुए। पूछा, 'अगर मैं भारत गया तो वहां मेरा कैसा स्वागत होगा ?' मैंने कहा, 'आप इस बाबत निश्चिन्त रहिए।' वह बोले, 'मैं गया तो लार्ड विलिंग्डन के वहां से जाने के बाद ही जाना पसन्द करूंगा।' फिर वह बोले, 'भारत के साथ मेरी हार्दिक सहानुभूति है। भविष्य के बारे में मेरी चिंता बनी हुई है और उसके कारण कल्पित नहीं हैं, वास्तविक हैं। भारत हमारे लिए भारस्वरूप हो रहा है। उसी की खातिर हमें इतनी बड़ी सेना रखनी पड़ती है, सिंगापुर का अड्डा रखना पड़ता है। मध्यपूर्व में शक्ति रखनी पड़ती है। यदि भारत अपनी देखभाल खुद कर सके तो हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। मनुष्य का जीवन-काल है ही कितना ? मैं जरूरत से ज्यादा स्वार्थपरता से काम नहीं लेना चाहता हूं। यदि सुधार सफल हुए तो मुझे हर्ष होगा। मेरी तो बराबर यही धारणा थी कि भारत टुकड़ों में बंटा है, कम से कम पचास भारत हैं। अब आपको एक नयी चीज मिली है, उसे कार्यान्वित कीजिए। यदि आपने इसे सफल कर दिखाया तो आपको और अधिक अधिकार दिये जाने का मैं समर्थन करूंगा।'

६५

बम्बई
२३ सितम्बर, १९३५

प्रिय लार्ड लोदियन,

मैं यहां १२ तारीख को पहुंचा। उसके बाद वर्धा जाकर गांधीजी से मिला। मैंने उन्हें अपनी धारणाएं बताईं और लार्ड हैलिफक्स, सर सेम्युअल होर तथा आपके संदेश दिये। वह बहुत प्रभावित हुए और मैं उनसे आपके संदेश के अनुरूप यह वचन ले सका हूं कि वह कांग्रेस पर अपना प्रभाव डालकर उसे लार्ड लिन लिथगो के आगमन से पहले सुधारों के बारे में कोई नयी योजना बनाने से रोकेंगे।

इग्लड म मने जो सौहादपूण वातावरण दखा, यहा सब कुछ उसके विपरीत ६। यहा का वातावरण पारस्परिक अविश्वास की भावना से भरा हुआ हैं। उसम सुधार करने के लिए लाड लिनलिथगा ो कठोर परिश्रम करना पडेगा। यह काम अत्यत दुरूह हैं। पर मन आशा नही छोडी है। गाधीजी हमेशा औचित्य के दायरे में रहत हैं और यदि उनके साथ ठाक ढग से पेश आया जाय, तो मुझे आशा है—और वास्तव मे यह बहुत वडी आशा है—कि कोई ऐसी काय योजना वन जायेगी जिस पर चलकर वधानिक ढग से भारत की प्रगति सम्भव हो सकेगी। म आपकी धारणा स परिचित हू, पर यहा राजनैतिक क्षेत्रो म यह आम चर्चा है कि यदि व्यवस्थापिका सभा द्वारा दो वार भारी बहुमत से अपराध कानून सशोधक बिल पास न किये जाने पर भी गवनर-जनरल उसे स्वीकृति प्रदान कर सकता है तो वधानिक प्रजातत्र के सफल होने के बार म क्या आशा की जा सकती ह ? आप यह कहेग कि चूकि फिलहाल सरकार व्यवस्थापिका सभा के प्रति उत्तरदायी नही ह इसलिए वह उसका निणय मानने को बाध्य नही है। म मानता हू कि कानूनी स्थिति यही ह पर हम इस समय नय युग के द्वार पर खडे हैं इसलिए इस दलील मे कोई सार नही है। जव तक जनमत की अवहेलना होती रहेगी, जनता के लिए यह विश्वास करना कठिन रहगा कि नया शासन विधान कोई ऐसी जादू की छडी हैं जिसस प्रभावित होकर नौकरशाही अपने आपको नयी परिस्थिति के अनुरूप ढाल लगी। नये शासन विधान मे भी नौकरशाही हो तो शासन-व्यवस्था का एक अत्यत महत्त्वपूण अग वनी रहेगी। मैं तो यही आशा लगाय बठा हू कि लाड लिनलिथगो का व्यक्तित्व नौकरशाही को प्रभावित करना शुरू कर देगा, जिसके परिणामस्वरूप सुधार वास्तविक प्रजातत्र के द्वार पर भारत का ले जायेंगे। मैं वार-वार यही कहता आ रहा हू कि सुधारा की सफलता शासन विधान की भाषा पर नही वल्कि आपस के भरोसे और एक-दूसरे का पूरे तौर स समझने की वत्ति पर निभर करेगी। एक-दूसरे को समझने की स्थायी प्रवत्ति का आधार वाग्रेस एक ओर जनता का प्रतिनिधित्व करने वाले लोकप्रिय वग का, और दूसरी ओर शासक वग का प्रतिनिधित्व करनेवाले गवनरा को एक-दूसरे के निकटतर आना नितात आवश्यक है। एक प्रकार से देखा जाय तो म लन्दन से खाली हाथ नही लौटा हू। इधर गाधीजी का यह आश्वासन भी कि नय वाइसराय के आगमन तक कोई नया कायक्रम नही बनाया जायेगा सफलताओ की शृखला मे एक और कडी है जिसके लिए म ईश्वर को धन्यवाद देता हू। नय वाइसराय के आने तक मेरे पास कुछ खास करने को नही है। नये वाइसराय के आगमन की मैं आशा के साथ प्रतीक्षा कर रहा हू और तब

उन्होंने पूछा कि क्या मिस्टर गाधी शासन विधान का रूप करन की इच्छा रखते हैं ? मने उत्तर दिया, मिस्टर गाधी उदासीन हैं। उनका दृढ विश्वास है कि हमारी राजनतिक स्वाधीनता हमारे ही मध्य स आयेगी, राजनतिक प्रगति स्वय हमारे ऊपर निभर करती है। इसलिए वह जन-साधारण के उत्थान म लग हुए हैं। उन्ह शासन विधान मे विशष रुचि नही है।' वह सहमत हुए। पूछा, "अगर म भारत गया तो वहा मरा कसा स्वागत होगा ? मने कहा 'आप इस बाबत निश्चिन्त रहिए। वह बोले, म गया तो लाड विलिंग्डन क वहा से जाने के बाद ही जाना पसन्द करूगा। फिर वह बोले भारत के साथ मरी हार्दिक सहानुभूति है। भविष्य के बारे म मेरी चिंता बनी हुई ह और उसके कारण कल्पित नही हैं वास्तविक हैं। भारत हमारे लिए भारस्वरूप हो रहा ह। उसी की खातिर हम इतनी बडी सेना रखनी पडती ह सिंगापुर का अड्डा रखना पडता है। मध्यपूव म शक्ति रखनी पडती ह। यदि भारत अपनी दखभाल खुद कर सके तो हम बडी प्रसन्नता हागी। मनुष्य का जीवन काल ह ही कितना ? मैं जरूरत स ज्यादा स्वाथपरता स काम नही लेना चाहता हू। यदि सुधार सफल हुए तो मुझे हष होगा। मेरी तो बराबर यही धारणा थी कि भारत टुकडा म बटा है कम से कम पचास भारत हैं। अब आपको एक नयी चीज मिली ह उसे कार्यान्वित कीजिए। यदि आपन इसे सफल कर दिखाया, तो आपको और अधिक अधिकार दिये जाने का म समथन करूगा।'

६५

बम्बई
२३ सितम्बर १९३५

प्रिय लाड लोदियन

म यहा १२ तारीख को पहुचा। उसके बाद वर्धा जाकर गाधीजी स मिला। मन उन्ह अपनी धारणाए बताइ और लाड हलिफक्स सर सम्युअल होर तथा आपके सदेश दिये। वह बहुत प्रभावित हुए और म उनसे आपक सदेश के अनुरूप यह वचन ले सका हू कि वह काग्रेस पर अपना प्रभाव डालकर उसे लाड लिन लिथगो के आगमन स पहले सुधारो के बारे म कोई नयी योजना बनाने से रोकेंगे।

इग्लड म मने जो सौहार्दपूण वातावरण देखा, यहा सब कुछ उसके विपरीत ह। यहा का वातावरण पारस्परिक अविश्वास की भावना से भरा हुआ है। उसम सुधार करने के लिए लाड लिनलिथगो को कठोर परिश्रम करना पडेगा। यह काम अत्यन्त दुरूह ह। पर मने आशा नही छोडी है। गाधीजी हमेशा औचित्य के दायरे मे रहते है और यदि उनके साथ ठीक ढग से पेश आया जाय, तो मुझे आशा ह—और वास्तव म यह बहुत बडी आशा ह—कि कोई एसी काय योजना बन जायेगी जिस पर चलकर वैधानिक ढग से भारत की प्रगति सम्भव हो सकेगी। म आपकी धारणा स परिचित हू, पर यहा राजनतिक क्षेत्रो म यह आम चर्चा ह कि यदि व्यवस्थापिका सभा द्वारा दो बार भारी बहुमत से अपराध कानून सशोधक बिल पास न किये जाने पर भी गवनर-जनरल उसे स्वीकृति प्रदान कर सकता है तो वधानिक प्रजातत्र के सफल होने के बारे म क्या आशा की जा सकती ह ? आप यह कहेंगे कि चूकि फिलहाल सरकार व्यवस्थापिका सभा के प्रति उत्तरदायी नही है इसलिए वह उसका निणय मानने को बाध्य नही है। म मानता हू कि कानूनी स्थिति यही है पर हम इस समय नये युग के द्वार पर खडे हैं इसलिए इस दलील मे कोई सार नही है। जब तक जनमत की अवहेलना होती रहेगी जनता के लिए यह विश्वास करना कठिन रहेगा कि नया शासन विधान कोई ऐसी जादू की छडी ह जिसस प्रभावित होकर नौकरशाही अपने आपको नयी परिस्थिति के अनुरूप ढाल लेगी। नये शासन विधान मे भी नौकरशाही ही तो शासन-व्यवस्था का एक अत्यन्त महत्त्वपूण अग बनी रहेगी। म तो यही आशा लगाये बैठा हू कि लाड लिनलिथगो का व्यक्तित्व नौकरशाही को प्रभावित करना शुरू कर देगा, जिसके परिणामस्वरूप सुधार वास्तविक प्रजातत्र के द्वार पर भारत को ले जायेंगे। मैं बार बार यही कहता आ रहा हू कि सुधारो की सफलता शासन विधान की भाषा पर नही, बल्कि आपस के भरोसे और एक दूसरे को पूरे तौर स समझने की वृत्ति पर निभर करेगी। एक-दूसरे को समझने की स्थायी प्रवृत्ति का आधार बनाकर एक ओर जनता का प्रतिनिधित्व करने वाले लोकप्रिय वग को और दूसरी ओर शासक वग का प्रतिनिधित्व करनेवाले गवनरो को एक-दूसरे के निकटतर आना नितान्त आवश्यक है। एक प्रकार से देखा जाय तो मै लन्दन से खाली हाथ नही लौटा हू। इधर गाधीजी का यह आश्वासन भी कि नये वाइसराय के आगमन तक कोई नया कायक्रम नही बनाया जायेगा सफलताओ की श्रृखला म एक और कडी है जिसके लिए म ईश्वर को धन्यवाद देता हू। नये वाइसराय के आने तक मेरे पास कुछ काम करने को नही है। नये वाइसराय के आगमन की मैं आशा के साथ प्रतीक्षा कर रहा हू और तब

तक अपनी सीमित सामर्थ्य के अनुसार कुछ न कुछ प्रयत्न तो करता ही रहूंगा।

मेरा स्काटलैंड जाना सम्भव नहीं हुआ। क्या आप बंगाल सीमा निर्धारण समिति के सेक्रेटरी को मेरे लिए परिचयात्मक पत्र लिख देंगे? मैंने इस मामले में आपसे बात की थी। अब मैं यह मामला समिति के साथ उठाना चाहता हूं और यदि सेक्रेटरी के नाम एक चिट्ठी लिखकर भेजने की कृपा करेंगे तो मैं उनसे मिलकर व्यक्तिगत रूप से बात कर सकूंगा।

आपके यहां भावना का रुख कैसा रहता है इसकी जानकारी मुझे देते रहियेगा साथ ही मेरा मार्ग-दर्शन भी करते रहियेगा।

सद्भावनाओं के साथ

आपका,
घनश्यामदास बिड़ला

राइट आनरेबल मार्क्विस आफ लोदियन
सीमोर हाउस
१७, वाटरलू प्लेस
लन्दन एस० डब्ल्यू० १

९६

२३ सितम्बर, १९३५

प्रिय लार्ड जेटलैंड

मैं बम्बई-तट पर १२ सितम्बर को उतरा और तुरंत वर्धा के लिए रवाना हो गया जहां गांधीजी ग्रामोत्थान कार्य में लगे हुए हैं। उनके साथ काफी बातें हुई। मैंने इंगलैंड में अपने प्रवास काल में जो धारणा बनाई उससे उन्हें अवगत किया और बताया कि किस प्रकार मैं जिन जिन से मिला उनकी सद्भावना, मैत्री तथा नेकनीयती की मेरे मन पर गहरी छाप पड़ी है। मैंने आपके, लार्ड लिनलिथगो, लार्ड हैलिफक्स लार्ड लोदियन तथा सर सेम्युअल होर के साथ हुई बातचीत की विशेष रूप से चर्चा की। मैंने उन्हें आप सबके इस विचार की जिसके साथ मेरी पूर्ण सहमति है जानकारी दी कि नये वाइसराय के आगमन के बाद गांधीजी को स्थिति का अध्ययन करने का अवसर देने से पहले कांग्रेस के लिए कोई नया कदम उठाना युक्तिसंगत नहीं होगा। यह कहना अनावश्यक है कि मैंने उन्हें जो कुछ बताया उसका उनपर अच्छा असर पड़ा। वे यह बात समझ सके कि

मने ल दन म जो वातावरण पाया है वह यहा भारत मे देखने मे नही आता। उनकी सलाह से म आपको तथा अपने अ य मित्रो यह सूचित कर रहा हू कि वे काग्रेस को यह सलाह देंगे कि सुधारो पर कोई नया निणय लेने से पहले काग्रेस नये वाइसराय की प्रतीक्षा करे। इस सम्ब ध म वे अपने प्रभाव का उपयोग करेंगे।

अब तक जो नतीजा निकला है वह सतोषप्रद है। इग्लड म मुझे जो सफलता मिली वह सीमित अवश्य थी, पर थी तो सफलता ही। उससे तथा गाधीजी न उसे जिस रूप मे ग्रहण किया है, उससे मेरे मन म आशा का सचार हुआ है। एक-दूसरे को समझने की प्रवत्ति का सृजन जितना दुरूह है उतना ही आवश्यक भी है। म दुरूह श द का प्रयोग जान बूझकर कर रहा हू क्योकि इग्लैंड मे मुझे जो सद्भावना दिखाई दी और यहा जो कुछ देखने म आता है उसमे दिन और रात का अ तर है। फलत अभीष्ट की सिद्धि के लिए दोनो ओर असीम धय और सद भावना की आवश्यकता है। इस दिशा मे मैं अपनी अल्प सामथ्य की सीमा मे जो कुछ बन पडेगा, करता रहूगा। पर जब तक नये वाइसराय नही आते, मेरे लिए कुछ अधिक करने को नही है।

आपने लाड ब्रेबॉन के लिए जो पत्र देने की कृपा की थी, उसका मने उपयोग नही किया है। पहली बात तो यह थी कि जब मैं बम्बई-तट पर उतरा, तो वह नगर मे नही थे। दूसरा कारण यह था कि श्री वल्लभभाई पटेल ने मुझे बताया कि लाड ब्रेबान ने उ ह तथा श्री भूलाभाई दसाई को मिलने के लिए बुला लिया था, और खूब खुलकर बातें हो चुकी हैं। मुझे लगता है कि आपको इसका पता चल गया होगा। श्री पटेल गवनर के बारे म अच्छी धारणा लेकर लौटे, पर उ होन कहा कि सरकारी कल-पुर्जों का रुख सदभावना और मत्री की दिशा म मोडने के लिए बहुत बडे साहस की जरूरत है। इसके साथ म अपनी तरफ स यह जोडना चाहूगा कि वसे साहस की दोना ही ओर से जरूरत है।

हाल ही मे बम्बई-सरकार ने श्री पटल को उनका बारडोली आश्रम वापस लौटा दिया है। यह पारस्परिक सम्पक का ही परिणाम हो सकता है। आशा है इस प्रवत्ति को बढ़ावा मिलेगा। जवाहरलाल नेहरू को रिहा करके भी अच्छी राजनीतिमत्ता का परिचय दिया गया है। इसके विपरीत अपराध-कानून सशोधक प्रस्ताव पर अपनी मुहर लगाकर पुराने वातावरण को जीवित रखा गया है। म यह सब आपको यहा की स्थिति म अवगत कराने के हेतु लिख रहा हू और मुझे आशा है कि आप मुझे ऐसा करन की अनुमति देंगे। पिछले चार महीन क अपने काय का सिंहावलोकन मुझे आशावान रहने को प्रेरित करता है। इस सबकी

तक अपनी सीमित सामर्थ्य के अनुसार कुछ न कुछ प्रयत्न तो करता ही रहूगा।

मेरा स्काटलैंड जाना सम्भव नही हुआ। क्या आप बगाल सीमा निर्धारण समिति के सेक्रेटरी को मेरे लिए परिचयात्मक पत्र लिख देंगे ? मैने इस मामले मे आपसे बात की थी। अब म यह मामला समिति के साथ उठाना चाहता हू, और यदि सेक्रेटरी के नाम एक चिट्ठी लिखकर भेजने की कृपा करेंगे तो म उनसे मिलकर व्यक्तिगत रूप स बात कर सकूगा।

आपके यहा भावना का रुख कसा रहता है इसकी जानकारी मुझे देते रहियगा साथ ही मेरा माग दशन भी करते रहियेगा।

सदभावनाओ के साथ,

आपका,
घनश्यामदास बिडला

राइट आनरेबल मार्क्विस आफ लोदियन,
सीमोर हाउस,
१७ वाटरलू प्लेस
लन्दन एस० डब्ल्यू० १

६६

२३ सितम्बर १६३५

प्रिय लाड जेटलड

म बम्बई-तट पर १२ सितम्बर को उतरा और तुरत वर्धा के लिए रवाना हो गया जहा गाधीजी ग्रामोत्थान काय मे लगे हुए हैं। उनक साथ काफी बातें हुइ। मने इग्लैंड म अपन प्रवास काल मे जो धारणा बनाई, उसस उन्हें अवगत किया और बताया कि किस प्रकार म जिन जिन से मिला उनकी सदभावना, मत्री तथा नेकनीयती की मरे मन पर गहरी छाप पडी है। मने आपके, लाड लिनलिथगो लाड हैलिफक्स लाड लोदियन तथा सर सम्युअल होर के साथ हुई बातचीत की विशेष रूप स चर्चा की। मन उन्हे आप सबके इस विचार की जिसके साथ मेरी पूण सहमति है जानकारी दी कि नय वाइसराय के आगमन के बाद गाधीजी का स्थिति का अध्ययन करने का अवसर देने स पहले काग्रेस क लिए कोई नया कदम उठाना युक्तिसगत नही होगा। यह कहना अनावश्यक है कि मने उन्हे जो कुछ बताया उसका उनपर अच्छा असर पडा। वे यह बात समझ सके कि

अब तक जो नतीजा निकला है उससे मुझे तसल्ली हुई है। इंग्लैंड में जो सफलता मिली, यथेष्ट नही थी, पर कुछ तो थी ही। उससे तथा उस पर गांधीजी की प्रतिक्रिया से मेरे उत्साह में वृद्धि हुई है और मेरे मन में एक नयी आशा जगी है। एक दूसरे को समझने का काम अत्यंत कठिन भी है और अत्यंत आवश्यक भी है। मैं कठिन इसलिए कहता हू कि जहा इंग्लैंड मे मैंने शुद्ध सदभावना देखी, वहा मैंने उसकी तुलना में यहा के वातावरण को एकदम विपरीत पाया। जमीन आसमान का अंतर है। यह विरोधाभास मुझे बहुत खटका। अत अभीष्ट की सिद्धि के लिए धैर्य और सदभावना से ही काम लेना होगा। अपनी सीमित सामर्थ्य के अनुसार मैं उस दिशा में बराबर सचेष्ट रहूगा, पर आपके आगमन तक मेरे लिए कुछ अधिक करना शक्य नही है।

शुभकामनाओ के साथ,

आपका,

घनश्यामदास बिडला

राइट आनरेबल मार्क्विस ऑफ लिनलिथगो,
२६, चेशाम प्लेस, लदन एस० डब्ल्यू० १

६८

२३ सितम्बर, १६३५

प्रिय श्री चर्चिल,

मैं यह पत्र आपको उस सहृदयता के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए लिख रहा हू, जो आपने मेरे प्रवास-काल में प्रदर्शित की थी। वे दो घण्टे मैं कभी नही भूल सकता, जिनका आनन्द मैंने आपके निवास स्थान पर लिया था। आपके मोहक सहवास को शब्दो के माध्यम से वर्णन करने में मैं अपने आपको असमर्थ पाता हू।

भारत वापस आने के तुरत बाद मैं गांधीजी से मिला और आपके तथा अन्य मित्रो के साथ हुई बातचीत और उनका मेरे मन पर जो प्रभाव पडा वह सब मैंने उन्हे कह सुनाया। उन्होने आपके साथ मेरी मुलाकात में खास तौर से दिलचस्पी जाहिर की और कहा, 'जब वह उपनिवेश विभाग में थे, तब की याद मुझे अब तक है और पता नहीं क्यो, मैंने बराबर यही मान रखा है कि उनकी सहानुभूति और सद्भावना पर भरोसा किया जा सकता है।

गाधीजी पर जा स्वस्थ प्रतिक्रिया हुई, उसस मुझे और अधिक सतोप हुआ है।

सदभावनाओ के साथ,

आपका
घनश्यामदास बिडला

आनरेबल मार्क्विस आफ जेटलड,
भारत-सचिव
इडिया आफिस,
ह्वाइट हाल
ल दन

९७

२३ सितम्बर १९३५

प्रिय लाड लिनलिथगो,

मैं गत १२ सितम्बर को वम्बई-तट पर नरकाडा' जहाज से उतरा और तुरत वर्धा के लिए रवाना हो गया, जहा गाधीजी ग्रामोत्थान काय मे लगे हुए हैं। उनके साथ घण्टो कई बार बातचीत हुई जिसके दौरान मैंने उन्हे बताया कि मैं इग्लड मे जिन जिन लोगा स मिला उनकी सहानुभूति, नेकनीयती और सदभावना रा प्रभावित हुए बिना न रह सका। मैंने विशेप रूप से आपके लाड जटलड के लाड हैलिफैक्स के तथा लाड लोदियन के साथ अपने वार्तालाप की चर्चा की। मैंने उन्हे उनके व्यक्तिगत मित्र—लाड हैलिफक्स लाड लोदियन और सर सम्युअल होर का यह सदेश भी दिया कि जब तक आप नये वाइसराय का हैसियत से यहा न आ जायें और गाधीजी आपसे मिलकर स्थिति का जायजा न ले लें, तब तक काग्रस क लिए सुधारो के प्रति काई खास रवया अख्तियार करना उचित नही होगा। आप जानते ही है कि स्वय मेरा भी यही विचार है। यह कहना अनावश्यक है कि गाधीजी इस सदेश स प्रभावित हुए हैं। जब मैंने उ हें इग्लड के वातावरण की बात बताई, तो वह उसकी तुलना यहा के वातावरण से किए बिना न रह सके। तिस पर भी मुझे उन्होने आपका तथा अपने अ य मित्रा को लिख भेजने को कहा है कि वह काग्रेस को यह सलाह देंगे कि जब तक आप यहा न पहुच जाए तब तक वह सुधारो क बारे म कोई निणय न करे। इस दिशा म वे अपने प्रभाव का उपयोग करेंगे।

है, पर मेरी कामना है कि भगवान विश्व को एक नये युद्ध से मुक्त रखेगा।

सद्भावनाओं के साथ,

आपका
घनश्यामदास बिड़ला

राइट आनरेबल
वाइकाउंट आफ जेटलंड
८८, ईटन स्क्वेयर,
लंदन, एस० डब्ल्यू० १

१००

वर्धा
२८.६.३५

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका पत्र मिला। माताजी को कोई भय नहीं है ऐसा बापूजी का विश्वास है। आप तो जब-जब उन्हें पूरा आराम न हो तब-तब वहीं रहिएगा। उतने आराम की आपको भी जरूरत है।

मालवीजी महाराज जब बापू देहली में हों तब वहां होंगे यह तो बड़ी खुशी की बात है। काफी बातें कर लेने का मौका बापू पर ले लेंगे।

देवदास के बारे में पत्र आते रहते हैं। उन्हें दिन-पर दिन आराम होता रहता है। आप जो कहते हैं वह ठीक है कि शारीरिक परिश्रम छोड़ देने से ही उसने अपनी प्रकृति खराब की। अब भी समझे तो अच्छा रहे। पारसनाथ उनके साथ दो दिन शिमले रह आये और व्यवस्था संबंधी सब बातें कर आये होंगे।

आपका
महादेव

आपने भारत के प्रति अपने भावी रुख के बारे म समाचार-पत्रा के साथ मुलाकात के दौरान जो कुछ कहा है उसे पढ़कर मुझे बडा आनन्द हुआ। मैं आपसे बातचीत कर ही चुका था, इसलिए मुझे आपके उदगारो पर कोई आश्चय नहीं हुआ, पर आपने निजी बातचीत मे जो कुछ बताया उसे आपने खुल्लमखुल्ला पुष्ट कर दिया इससे मुझे बडी प्रसन्नता हुई। मेरा विश्वास है कि इसका अच्छा असर पडेगा।

जब यह पत्र आपको मिलेगा तब आप यूरोपीय झमेले म उलझे हुए होग। यह सकट घोर चिन्ता का विषय है।

सदभावनाओ के साथ,

आपका,
घनश्यामदास बिडला

आनरेबल श्री विन्स्टन चर्चिल, एम० पी०,
चाटवैल वस्टरहाम,
केंट

६६

२३ सितम्बर, १६३५

प्रिय लार्ड हैलिफक्स

मैं इस पत्र के साथ लार्ड जेटलैंड को लिखे पत्र की नक्ल भेज रहा हू। यदि आपको कोई ऐसी बात लगे, जिसम आप मेरा मार्गदशन करना उचित समझें तो मुझे अवश्य बताइए। मुझे आशा है कि आप मुझे अपने विश्वास का पात्र समझेंगे।

आप सब यूरोप के सकट मे उलझे हुए हैं। भविष्य अधकारपूण प्रतीत होता

है, पर मेरी कामना है कि भगवान विश्व को एक नये युद्ध से मुक्त रखेगा।

सद्भावनाओं के साथ,

आपका
घनश्यामदास बिड़ला

राइट आनरेबल
वाइकाउंट ऑफ जेटलैंड,
८८, इटन स्क्वेयर,
लंदन, एस० डब्ल्यू० १

१००

वर्धा
२८-६-३५

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका पत्र मिला। माताजी को कोई भय नहीं है ऐसा बापूजी का विश्वास है। आप तो जब जब उन्हें पूरा आराम न हो, तब-तब वहीं रहिएगा। उतने आराम की आपको भी जरूरत है।

मालवीजी महाराज जब बापू देहली में हों, तब वहां होंगे यह तो बड़ी खुशी की बात है। काफी बातें कर लेने का मौका बापू पर ले लेंगे।

देवदास के बार में पत्र आते रहते हैं। उन्हें दिन-पर दिन आराम होता रहता है। आप जो कहते हैं वह ठीक है कि शारीरिक परिश्रम छोड़ देने से ही उसने अपनी प्रकृति खराब की। अब भी समझे तो अच्छा रहे। पारसनाथ उनके साथ दो दिन शिमले रह आये और व्यवस्था संबंधी सब बातें कर आये होंगे।

आपका,
महादेव

१०१

१ अक्तूबर, १९३५

प्रिय श्री बिडला

आज सुबह आपका २३ सितम्बर का पत्र मिला। उसके साथ भेजे लाड जेटलड को लिखे आपके पत्र की नकल भी मिली।

अपने पत्र म आपने जो कुछ भी कहा बडा दिलचस्प लगा। आपने यहा की बातचीत का ब्योरा मिस्टर गाधी को दिया उसस उनके मन पर जो प्रभाव हुआ वह हमारे लिए बडा मूल्य रखता है।

जब आप यहा थे तो हम इस बात पर एकमत थे कि इस मामले म कम फासले की पगडडी खोज निकालना सम्भव नही है। आप जो कहते हैं ठीक ही कहते है कि इस समस्या को हल करने के लिए दोनो ओर अधिक धय और सद्भावना की आवश्यकता है। मेरे विचार म यह बडा अच्छा हुआ कि मिस्टर गाधी ने आपको हमे यह लिखने को कहा कि वह नये वाइसराय के पहुचने तक काग्रेस का कोई निश्चय व निणय न करने की सलाह देंगे।

आपने अपने पत्र की नकल लाड लिनलिथगो के पास भी भेज दी होगी।

भवदीय,
हैलिफक्स

श्री घनश्यामदास बिडला

१०२

उपनिवेश विभाग,
डाउनिंग स्ट्रीट, एस० डब्ल्यू० १
४ अक्तूबर १९३५

प्रिय श्री बिडला

आपके २३ सितम्बर के पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। जब म मेरियनवड स इगलड वापस लौटा तो मुझे पता चला कि आपने मार्सेल्स स फोन पर मुझस बात करने की कोशिश की थी। आपको बेकार का कष्ट उठाना पडा इसका मुझ दु ख है पर आपने जो कुछ किया वह आपके लिए लाभदायक सिद्ध हो रहा है इसलिए मुझे इस बात का सतोष है कि आपका प्रयत्न अकारथ नही गया।

को अनुभव की कसौटी पर कसकर देखें। म सोचता हू कि भारत का तरुण समाज आगामी निर्वाचनो मे कमर कसकर कूद पडे, जिससे वह पहले प्रातो मे और बाद मे केंद्र म उत्तरदायित्व ग्रहण करने म सक्षम हो। भारत के शासन विधान की चाह जो रूप रेखा हो उसके तरुण समाज को बुनियादी समस्याओ को सुलझान के दौरान अपनी राजनतिक क्षमता, चरित्र-बल तथा स्थिरता का विकास करना है। बुनियादी समस्याए हैं—साप्रदायिकता दरिद्रता अल्पसख्यक वग और जातिया, भारतीय नरेश पूजीवादी ताकतें आदि। म 'टवेंटियथ सेंचुरी' का एक अक भेज रहा हू जिसम मने अपना यह विचार व्यक्त किया है कि महात्मा गाधी जिस हृदय परिवतन की आवश्यकता पर जोर देते नही थकते उसने यहा अब मूत रूप धारण कर लिया है और भारत की सरकार के सचालन का भार अब भारतीय कधो पर ही रहेगा। मने अपने इस विचार के समथन म दलीलें भी पश की हैं। आप इस लेख को स्वय पढ जाय और उन्हे भी पढवायें। लेख उनकी नजर मे गुजर चुका हो तो बात दूसरी है।

यदि शासन व्यवस्था के अखाडे म अपने रग-पुटठे मजबूत करने के बाद तरुण भारत को यह लग कि वे जिस प्रकार के सुधारो के लिए लालायित हैं, उनकी उपलब्धि मे यह शासन विधान स्वय बाधक सिद्ध हो रहा है, तो उसके सशोधन की माग वह कर सकता है। यदि उसकी माग सुनी-अनसुनी कर दी जाय, तो तरुण भारत को सीधी कारवाई करने का अधिकार रहेगा, अपनी इस काय शीलता के दौरान वे सरकार का योग्य सचालन करने म दक्षता का जो अनुभव ले चुके होगे उसके बूते पर वे देश भर के लिए अच्छी सरकार बनाने मे सफल हो सकेंगे। पर यदि भारत का तरुण समाज सविनय अवज्ञा तथा असहयोग म ही लगा रहेगा या हिंसापूण क्रातिकारी तरीका ही अपनाए रहेगा तो प्रशासकीय दक्षता स सरकार कस चलाई जाती है इसकी जानकारी हासिल करने म वह असफल रहेगा। वैसा करन स तरुण समाज भी उसी तानाशाही ढर्रे पर चलना सीख जाएगा जिसने इस समय यूरोप को तबाह कर रखा है क्योंकि तानाशाही प्रणाली म व्यक्तिगत स्वतत्रता और विचार स्वातत्र्य के लिए कोई स्थान नही है। तानाशाही मे तो सामूहिक सगठन ही सम्भव है और वस सगठन का एकमात्र परिणाम युद्ध है। यदि भारत म इस प्रवत्ति का प्रश्रय मिला तो देश खण्ड-खण्ड हो जाएगा तबाह हो जाएगा। मुझे इसम तनिक भी सदह नही है कि यदि तरुण भारत न भारत को अच्छी सरकार देने के मामले म बुद्धि विवेक से काम लिया ठीक उसी तरह जिस तरह उपनिवेशो के तरुण समाज ने काम लिया था तो अन्य देशो की भाति भारत को भी स्वायत्त शासन के सम्पूण अधिकार अनायास ही प्राप्त हो

जाएगा। अब ब्रिटेन को भारत पर पूरा अधिकार जमाए रखने की चिन्ता नहीं है। वह तो भारत के साथ व्यापार मात्र करना चाहता है। पर साथ ही वह यह भी नहीं चाहेगा कि भारत विपत्ति के गर्त में जा पड़े। ब्रिटिश जनमत पर इस समय इस धारणा ने गहरी छाप जमा रखी है कि भारत के राजनेता भारतीय सरकार और सुधारों से सम्बन्ध रखनेवाली समस्याओं को सुलझाने में लगे हुए हैं, और अपने इस प्रयत्न में विवेक और व्यावहारिक ज्ञान का परिचय दे रहे हैं। यहां का जनमत इस पक्ष में है कि यदि यह सिलसिला जारी रहा, तो जिस प्रकार कनाडा तथा आस्ट्रेलिया में सरक्षण का स्वतः ही अंत हो गया उसी प्रकार भारत में भी हो जाएगा। फलतः व्यावहारिक दृष्टि से इस समय कांग्रेस तथा उसके प्रतिद्वंद्वी दलों के लिए जिस बात की अधिक आवश्यकता है, वह यह है कि प्रान्तीय सरकारों को अपने कब्जे में ले ले, उनका संचालन सफलतापूर्वक करें और उसी मार्ग से केन्द्र की ओर कदम बढ़ाए जाए।

भवदीय
लोदियन

श्री घनश्यामदास बिड़ला,
बिड़ला हाउस, अल्बुकर्क रोड,
नयी दिल्ली

१०४

व्यक्तिगत

हौपटाउन हाउस,
साउथ क्वीन्सफेरी
स्काटलैंड
३० अक्तूबर १९३५

प्रिय श्री बिड़ला,

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप भारत सकुशल पहुंच गए।

आपने इंग्लैंड में रहकर जो धारणा बनाई उससे मुझे अतिशय हर्ष हुआ। स्वयं मेरी यह धारणा है कि पिछले दस वर्षों में भारत की आकांक्षाओं के प्रति

यहा सहानुभूति की मात्रा म लगातार वद्धि होती रही है। मुझे पूरा यकीन है कि इस वस्तुस्थिति को पूण रूप स ध्यान म रखा जाएगा कि जनमत अपन सामूहिक रूप म कवल एक हद तक ही गतिशील हो पाता है। पुरानी पीढी अभी भी काय भार सभाले हुए है, और वास्तव में वही जनमत का नेतृत्व कर रही है। उसके लिए नयी परिस्थितिया तथा नये दृष्टिकोण का पचाना उतना सहज नही है जितना नयी पीढी के लिए होता है। वास्तव म साधारणतया मनुष्य के लिए ४५ की आयु रेखा लाघन के बाद अपने-आपको नयी परिस्थितिया के साचे म ढालना आसान नहीं है। यह बात दोनो ही देशा और सभी कौमा पर समान रूप स लागू है। इसलिए यदि आरभ म प्रयत्न उतने सफल न भी हो पाए जितनी अपक्षा है, तो निराशा से अनुत्साहित न होने के लिए दृढ साहस और धय की जरूरत होगी।

मुझे नये शासन विधान को अधिक-स-अधिक मात्रा म सफल बनाना है और जहा तक मुझस बन पडेगा मेरी चिन्ता का एकमात्र यही विषय रहेगा कि भारत का प्रत्यक स्त्री पुरुष चाहे वह किसी भी विचारधारा का हो शासन विधान की सीमा म रहते हुए काम करे। शायद आप मुझस सहमत होगे कि शासन विधान के विभिन्न पहलू भारत की राजनतिक स्थिति को किस तरह प्रभावित करेंगे, इसका कोई नपा-तुला अनुमान किसी परम विवेकशील व्यक्ति के लिए भी फिलहाल ढूढ निकालना ही होगा। इसलिए मेरी यह धारणा है कि इस समय हमारी रायें चाहें जितनी भिन्न हो हम चित्र का अतिम रूप सामने आने तक किसी प्रकार का निणय न लें।

मैं पारस्परिक आदर-सम्मान तथा एक-दूसरे पर भरोसा करने की भावना का न कवल पुष्ट ही करता रहूगा बल्कि उसके दायर को बढान का भरपूर प्रयत्न करता रहूगा। यह बात आप भी जानत हैं कि ऐसा किए बगर कोई सुखद परिणाम होनेवाला नही है। साथ ही मैं अपने व्यक्तिगत मित्र-जगत का भी सहारा लूगा जो सावजनिक जीवन के कायभार को हल्का करन तथा माग मे आनेवाली कठिनाइया को दूर करने म मूल्यवान सिद्ध हो सकता है। वास्तव म मत्री के ऐसे बधना के मूल्य और महत्त्व का ठीक ठीक अनुमान लगाना भी असम्भव सा है।

भवदीय,
लिनलिथगो

१०५

३ नवम्बर, १६३५

प्रिय लाड लोदियन,

आपके पत्र के लिए धन्यवाद। आप जो कहते हैं उससे मैं पूर्णतया सहमत हूं। मैं स्वयं इसी दिशा म अपनी सामर्थ्य के अनुसार सक्रिय हूं और उचित फल की आशा लगाए हुए हूं। मैं आपके इस कथन से भी सहमत हूं कि इंग्लैंड म हृदय परिवर्तन ने मूर्त रूप धारण कर लिया है। लन्दन म मैंने इस वस्तुस्थिति का स्वयं अनुभव किया है। मैं आपके इस कथन से भी सहमत हूं कि ब्रिटेन इसलिए झिझक रहा है कि उसे आशंका है कि कहीं भारत स्वराज्य प्राप्ति की चेष्टा म विपत्ति के गर्त म न जा पडे। इस आशंका का निवारण करने के लिए हम अपनी योग्यता का सबूत देना होगा। पर मेरी आशंका यह है कि वर्तमान वातावरण म हम अपना राज-काज खुद चलाने की क्षमता का सबूत देना भी चाहें तो असफल रहेंगे। बहुत सम्भव है कि भारत म हमारी अपने साम्प्रदायिकों से मुठभेड हो जाए और हमारे अनुभव की कमी तथा हमारे प्रति विरोध की भावना एकसाथ मिलकर हम बिलकुल निकम्मा साबित कर दें। मेरी तो यही कामना है कि इंग्लैंड म जो वांछित वातावरण दिखाई देता है वह भारत स्थित अंग्रेजों के आचरण मे प्रतिबिम्बित हो। मेरा अभिप्राय सरकार के अंग्रेज अमले तथा भारत के अंग्रेज व्यापारियों से है। इस कामना की सफलता के लिए मैं लार्ड लिनलिथगो पर भरोसा किए बैठा हूं। इसलिए जहां मैं अपनी ओर से गांधीजी के मानस को प्रभावित करने मे कोई कोर-कसर नहीं छोडूंगा वहां मैं आपसे भी यह चाहूंगा कि आप अपनी ओर से वहां इसी दिशा म प्रयत्नशील रहें। हम दोनों की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि हमारे साझेदारों की मनोवृत्ति का कायाकल्प हो। मुझे आशा है कि लार्ड लिनलिथगो की प्रेरणा म यह हो सकेगा। आशा है वह भारतीय मामलों को नजदीक से देख-समझ रहे हैं।

मैं 'ट्वेंटियथ सेंचुरी' (बीसवीं सदी) की एक प्रति गांधीजी को भेजूंगा और आपका लम्बा पत्र उन्हें खुद दिखाऊंगा। मुझे विश्वास है कि वह उन्हें बहुत रुचिकर लगेगा।

आपने मेरे पत्र के एक अंश का उत्तर नहीं दिया। वह सीमा निर्धारण समिति के बाबत था। यदि उस अंश की ओर आपका ध्यान नहीं गया हो, तब तो कोई

बात नही है, म फिर याद दिला रहा हू। पर यदि आपको सकोच हो तो म क्षमा प्रार्थी हू।

आशा है आप सकुशल हैं।

भवदीय,
घनश्यामदास बिडला

मार्क्विस आफ लोदियन
लन्दन

१०६

१४ नवम्बर, १६३५

बगाल के गवनर के साथ मुलाकात
समय १२॥ बजे मध्याह्न

मेरी इग्लड यात्रा के परिणामो से वह बडे प्रसन्न हुए और म वहा से जो धारणा लेकर आया उसकी उन्होने पुष्टि की। मने उन्हे दोनो देशो के वातावरण के अन्तर की बात बताई और कहा, 'लेकिन हम तो डाउनिंग स्ट्रीट या ह्वाइट हाल से नही, यहा भारत मे मौजूद आदमी से ही निपटना है।" मैंने उनसे सलाह चाही कि दिल्ली मे समझदारी का वातावरण पदा करने के लिए मुझे क्या कुछ करना है। मने गाधीजी के विषय म जानकारी देते हुए कहा कि असहयोग अथवा सविनय अवज्ञा आदोलन के बावजूद वे मेरी सम्मति म सबसे बढ़-चढ़कर सहयोगी हैं। मने कहा कि भारत की वह अन्यतम विभूति हैं। मने यह भी कहा कि मेरी कठिनाई यही रही है कि मुझ पर विश्वास नही किया जा रहा है। गवनर ने मेरी कठिनाई को समझा और कहा एकमात्र नये वाइसराय की राजनीतिमत्ता और नेतृत्व ही काम म आएगा। मैंने कहा कि नित्यप्रति के व्यवहार म तो अधिकारी वग से ही पाला पडता है इसलिए म चाहूगा कि यह वग विश्वास करना और मैत्री का आचरण करना सीखे। उन्होने ग्रिग के साथ सम्पक बनाये रखने की सलाह दी और कहा कि वह उससे बात करेंगे। गवनर को ग्रिग प्रिय है। मने पूछा कि क्या मुझे क्लाइव स्ट्रीट म किसी से घनिष्ठता बढानी चाहिए। उन्होंने कहा बन्थल से। वह उससे भी बात करेंगे। व बडी सहृदयता से पश आए हमेशा सहायता करने को तयार रहते है।

१०७

२६, चेशाम प्लेस
लन्दन एस० डब्ल्यू० १
२६ नवम्बर १९३५

प्रिय श्री बिडला

आपका १५ नवम्बर का पत्र मिला। म य पक्तिया हवाई डाक स केवल यह कहने के लिए भेज रहा हू कि मुझे आशा है कि मेरा ३० अक्तूबर का पत्र आप तक पहुच गया होगा।

शिष्टता का यह तकाजा है कि मै आपके २३ सितम्बर के पत्र का उत्तर देने मे विलम्ब होने का कारण समझा दू। मने अपने टासिलो का आपरेशन कराया था—मामूली-सा आपरेशन था पर ढलती उम्र के मेरे जसे आदमियो के लिए कष्टदायक रहा।

आम निर्वाचनो की ऊहापोह के बाद अब यह देश अपनी स्वाभाविक स्थिति म आ गया है। मतदाताओ का विश्वास अजन करने के बाद सरकार पहले से अधिक प्रतिष्ठा के साथ कायरत हो रही है। अतर्राष्ट्रीय स्थिति कठिन भी है और अस्पष्ट भी। अबीसीनिया की लडाई क बारे मे विश्वसनीय समाचारो का अभाव है। मेरी धारणा है कि लडाई के इस मौसम की समाप्ति पर इटली उचित समझौते की बातचीत चलाने पर शायद राजी हो जाए। मेरे विचार म लीग आफ नेशस द्वारा आर्थिक बहिष्कार सबधी आशका का इटली पर अपक्षाकृत अधिक दबाव पड रहा है। अब यदि अमेरिका उसे तल भेजना बद कर द तो उसकी कठिनाई भयकर रूप धारण कर लेगी।

आप जब चाह शौक स लिखिए। म आपका पत्र पाकर आनदित होऊगा।

भवदीय,
लिनलिथगो

१०८

बिड़ला हाउस
नयी दिल्ली
२६ नवम्बर, १९३५

प्रिय महादेवभाई,

लार्ड विनलिथगो ने बड़ा सुन्दर पत्र भेजा है। बापू यहां आएगे, तो देखेंगे।
मिल में आंशिक हड़ताल चल रही है। जो मांगें रखी गई हैं उनमे एक यह है *कि वेतन में कोई कटौती न हो, किसी को निकाला नहीं जाए और कुछ अन्य* मामूली-सी मांगें हैं। क्या क्यूं, मैं खुद नहीं जानता, क्योंकि जिन लोगों ने ये मांगें रखी हैं वे वस्तुस्थिति से अनभिज्ञ हैं। वेतन में न तो कटौती हुई है, न करने का विचार ही है। मैं आज एक पर्चा बटवा रहा हूं, जिसमें असल बात पर रोशनी डालूंगा और साथ ही यह भी चेतावनी दूंगा कि अगर मजदूर काम पर नहीं लौटे, *तो उन्हें बरखास्त करके नये आदमी ले लिये जाएंगे। पर मुझे भरोसा है कि जो* लोग गैरहाजिर रहे हैं वे काम पर लौट आएंगे। कपड़ा बुननेवालों में कुछ असंतोष है, क्योंकि छुट्टियों के कारण अक्तूबर में मिल २६ दिन के बजाय केवल २३॥ दिन चली और जो लोग उजरती काम करते हैं उन्हें उसी अनुपात में मिला, पर सूत कातनेवाले तो बंधी तनख्वाह लेते हैं, उन पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। यह *बात समझदार मजदूर समझ गए हैं। सत्यवती जैसी नेता को किसी समय में भी यह* बात आ जानी चाहिए थी, पर ये नेता लोग न तो समझना चाहते हैं, न आश्वासन की ओर ही कान देते हैं। जो हो, मैं स्थिति को काबू में करने की भरसक कोशिश करूंगा। सत्यवती लक्ष्मीनिवास से मिली थी और उसने उसे बता दिया कि किसी प्रकार की कटौती नहीं की गई है। उसके पास कोई उत्तर नहीं था। *उसे स्वीकार करना पड़ा कि जो लोग हड़ताल करने पर तुले हुए हैं उन पर* प्रभाव डालने में वह शायद असमर्थ रहेगी।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

१०६

भाई घनश्यामदास

मलकानी सह मत्री रहकर अपना अलग काम करेगा, ऐसा कल ठक्कर बापा के साथ ही तय किया था। लेकिन फजर म मेरे पास आया और कहा, मैं सह मत्री नही रह सकूगा। इस बार म मने ठक्कर बापा को लिखा है उसकी नकल इसके साथ रखता हू। इसलिय यहा ज्यादह लिखने की आवश्यकता नही।

बापु के आशीर्वाद

वर्धा
२६ ११ ३५

११०

२८ नवम्बर १९३५

प्रिय लाड लिनलिथगो,

आपके ३० अक्तूबर के पत्र से मरी एक बडी चिता दूर हुई। दखता हू कि म अपने पत्र को लकर व्यथ ही चितातुर था। मुझे आशका होने लगी थी कि पत्र कही गुम हा गया है।

आप जो-कुछ कहते हैं उसकी म सराहना करता हू। आपका यह कहना बिलकुल ठीक है कि यदि आरम्भ म प्रयत्न उतने सफल नही हो पाए जितनी अपेक्षा थी ता भा निराशा स भग्नोत्साह न होने के लिए साहस और धैय की जरूरत हागी। म आपकी यह उक्ति दाना पक्षा क लिए ठीक मानता हू। पर मुने जिस बात की आशा ह वह यह ह कि जब दोनो पक्ष एक-दूसरे का समझने लगेंगे और जब एसा हो जाएगा तब दाना समान भाव स उन कठिनाइयो स निपटने म लग जाएग। म सर जान एण्डसन के साथ सम्पक बनाए हुए हू और जब बम्बई के गवनर दिल्ली आएग तो उनसे भी मिलूगा। साथ ही मैं गाधीजी के निकटतम सम्पक म हू और इम वार्ता शृखला की प्रत्यक कडी मेरी इस आशा म वृद्धि करता है कि इसक द्वारा और कुछ नहीं ता कम-स-कम दाना पक्षा क लिए एक दूसरे की कठिनाइया को अधिकाधिक समझने की स्थिति ता बनगी ही। आपके यहां आगमन से पहले कोई ठास कदम उठाया जाना सम्भव नही है। म

उस घड़ी की प्रतीक्षा आत्मविश्वास और आशा की भावना से प्रेरित होकर कर रहा हूं।

सद्भावनाओं के साथ,

आपका,
घनश्यामदास बिड़ला

राइट आनरेबल
मार्क्विस ऑफ लिनलिथगो
२६ बेलग्राम प्लेस
लन्दन एस० डब्ल्यू० १

१११

वर्धा
२८ ११ ३५

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका २६ तारीख का पत्र मिला। बापू के पास घालपुरी दिल्ली से हनुमत सहाय का निम्नलिखित तार आया है

> बिड़ला मिल के मजदूर ६ दिन से हड़ताल पर हैं। वेतन में भारी कटौती की गई है। मिल-अधिकारी झुकने को तैयार नहीं। पुलिस और गुंडे लगे हुए हैं। 'नेशनल काल' पढ़िए। बीच-बचाव की प्रार्थना है।

बापू ने निम्नलिखित तार भिजवाया है

> तार मिला परिस्थितियों की पूरी जानकारी हासिल किये बगैर हस्तक्षेप अनुचित। निष्पक्ष पंच फैसले का सुझाव। शर्त यह कि मजदूर काम पर लौटें और दोनों पक्ष फैसले को स्वीकार करें।'

मैंने 'नेशनल काल' पढ़ा तो नहीं है, पर उसमें अफवाहें और छींटों की भरमार ही होगी। यदि पंचों द्वारा बीच-बचाव का सुझाव दिया जाय, तो आप उसे मान ही लेंगे।

आपका
महादेव

११२

२६ नवम्बर, १६३५

प्रिय महादेवभाई,

इस समय कवल एक तिहाई मिल ही चल रही है, और सो भी एक शिफ्ट। एक प्रकार से केवल १५ प्रतिशत काम हा रहा है। यह आशिक काय वाछनीय नही है इसलिए मैं दो एक दिन म मिल बिलकुल बन्द करने की बात सोच रहा हू। मिल का काम देखनेवालो ने नासमझी और बदइतजामी बरती। यदि हडतालो का कोई वध कारण न हो, तो सभी हडतालें बदइतजामी का परिणाम होती है। कल मुझसे मजदूर लोग मिलने आए थे। उन्होने यह बात स्वीकार की कि वास्तव म उनके वतन मे कोई कटौती नही हुई है फिर भी हडताल अकस्मात् ही हो गई। कुछ मामूली सी शिकायतें जरूर थी पर उन्हे दूर कर देना चाहिए था, यह मैंने मन्जूर किया। पर अब हडताल शुरू हो गई है तो वे उसका ज्यादा-से-ज्यादा फायदा उठाना चाहते है। उन्होने वेतन वद्धि की माग पश की है। मैंने उनसे साफ-साफ कह दिया कि मैं उनकी माग पर विचार करने को बिलकुल तयार नही हू। मिल पिछले बारह महीनो से घाटा उठा रही है पर हमन कटौती की बात सोची तक नही। उन्हे इसीमे सतुष्ट हो जाना चाहिए था। वे लोग खुशी खुशी चल गय और जाते समय बोले कि अपने अन्य साथियो से बात करेंगे। पता नही व सफल हागे या नही पर मुझे लगता है कि मजदूर लोग अपनी माग के औचित्य के बारे म खुद ही सदह करने लगे हैं। यदि सत्यवती तथा कुछ अन्य लोग टाग न अडाये होते, तो वे तुरत राजी हो जाते। मिल के मनेजर ने घोषणा कर दी है कि वतन मे कटौती का आरोप बेबुनियाद है, और मामला निणय के लिए बापू अथवा मालवीयजी के सुपुर्द किया जाएगा। सत्यवती तथा अन्य लोगो ने यह चुनौती स्वीकार की पर उन्हे मामला बापू तथा मालवीयजी के सुपुर्द किए जाने की बात अधिक पसद नही आई है। जहा तक मेरा सबध है मैं सत्यवती के साथ बातचीत करने को राजी नही हू। वह इस बात पर अडी हुई है कि उसके प्रभाव को मान्यता दी जाय। फिलहाल सारी अडचन यही है। यह सब केवल बापू के सूचनार्थ है।

मलकानी की बाबत तुम्हारा पत्र मिल गया था।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
मारफत महात्मा गांधी
वर्धा

११३

३० नवम्बर १६३५

प्रिय महादेवभाइ

मैंने कल से मिल बन्द कर दी है। मिल को आंशिक रूप से चलाना भारवत मालूम होने लगा था। मिल का काम देखनेवाला को डराया धमकाया गया था। जो लोग काम कर रहे थे वे भी काय कुशलता का परिचय नहीं दे रहे थे। मिल पिछले बारह महीनो स नुकसान उठाकर चलाई जा रही थी। अब उसके बद किए जान स कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ा है। दु ख की बात यही है कि ३००० मजदूर निठल्ले हो गए हैं। मजदूरो के दो तीन प्रतिनिधि जो खुद भी मजदूर ही हैं और मिल मे ही काम करते हैं, २ ३ दिन पहले मेरे पास आए थे जसा कि मैं तुम्हे लिख चुका हू वे सतुष्ट होकर गये थे पर नेता लोग टस-से मस नहीं हुए। कल सध्या समय एक मित्र सत्यवती का सदेशा लाया कि वह मजदूरो को साथ लेकर मुझसे मिलना चाहती है। मैंने कहला दिया कि मैं उससे बातचीत चलाने को तयार नही हू। मैंने यह भी कहला भेजा कि उसके लिए सबसे अच्छा यही होगा कि वह मजदूरो को खुद मेरे पास आने दे और यह बात मुझ पर छोड दे कि मैं उनस किस प्रकार निपटता हू। मजदूर लोग मुझे जानते हैं मैं उन्हे जानता हू। मैं उन्हे बराबर अच्छा लगता रहा हू। फिर उनके मन म मेरे प्रति मैल क्या पदा हो? आखिर म व काम तो मेरे यहा ही करेंगे। सत्यवती ने यह माग नही अपनाया। उकसाना आसान है, शान्त करने के लिए सत साहस की जरूरत है।

बापू न जसा उत्तर दिया है मुझे उनस वसे ही उत्तर की अपेक्षा थी। यदि नेता लोग मामला बापू के निणय पर छोडने को तयार हो जाते, तो मैं भी तयार

हो जाता पर वे लोग उसके लिए तयार नहीं हैं।

यह हड़ताल एक शोचनीय घटना है। मैं यह नहीं कहता कि शिकायत का कोई अवसर नहीं था पर यह सरासर झूठ है कि वेतन में कटौती हुई है। पर यदि ठीक ढंग से चला जाता, तो हड़ताल नहीं होती। १९२८ के बाद से मिल में आज तक कभी हड़ताल नहीं हुई। सत्यवती तथा अन्य लोगों ने १९३३ और १९३४ में भी चोटी से एड़ी तक पसीना बहाया था, पर मजदूर उनके हाथों कठपुतली बनने को तयार नहीं हुए थे। यदि मंडेलिया (ज्वालाप्रसाद) जीवित होता तो हड़ताल नहीं होती क्योंकि वह शिकायतें दूर करके मामला रफा दफा कर देता। यह सब कुछ पिछले ६ महीने में ही होता गया। यदि मजदूर सदव की भांति इस बार भी अपनी शिकायतें लेकर मेरे पास चले आते तो मामला रफा दफा हो जाता। पर सत्यवती मौके की तलाश में थी और इस दफा उसे मौका मिल गया। अब पिछली बन्दइतजामी को दूर करने मात्र से मजदूर लोग संतुष्ट होनेवाले नहीं हैं क्योंकि वे सत्यवती के प्रभाव में हैं। मेरी अपनी धारणा है कि एक सप्ताह के भीतर भीतर वे लोग मेरे पास पहुंचेंगे मैं उन्हें समझा बुझाकर राजी कर लूंगा और वे हंसी खुशी वापस लौट आयेंगे। जो भी हो जब मैं वर्धा में था तो मैंने बापू से कह दिया था कि उन्हें मेरी ओर से मुख्तार आम के अधिकार हैं वह स्याह करें या सफेद। इन ३००० मजदूरों में से मुश्किल से २०० ऐसे निकलेंगे जो हड़ताल जारी रखने के पक्ष में हैं पर बाकी सबको डराया धमकाया जा रहा है इसलिए वे भी काम पर आने में हिचकिचाते हैं।

मैं दो एक दिन में ग्वालियर जा रहा हूं क्योंकि अब मिल तो बंद है ही। जब तक मजदूर लोग मुझसे मिलने नहीं आते तबतक यहां मेरे लिए कुछ करने को नहीं है। मैं उनके पास गया तो गलतफहमी होगी।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
मारफत महात्मा गांधी,
वर्धा

११४

एक्सप्रेस तार

महात्मा गाधी,
वर्धा

सत्यवती तथा अन्य लोगो ने मुझसे मिलकर उन्हे मजदूरो के प्रतिनिधि के रूप मे अगीकार करने और समझौते की बातचीत उन्ही से चलाने की माग की। माग अस्वीकार करने का विचार है क्योकि बिडला मिल मजदूर सघ १६२८ से अस्तित्व मे है और हर साल उसके पदाधिकारियो का निर्वाचन होता है। सघ के कोष मे प्रत्येक मजदूर वतन का १ प्रतिशत चन्दा देता है। इतनी ही रकम मिल देती आ रही है। कोष की नीति मजदूरो के कल्याणकारी काय मे खच की है। यदि मिल मजदूर सघ के वतमान पदाधिकारी विश्वास गवा बठे हो तो गर साथ बातचीत के निमित्त नया निर्वाचन किया जा सकता है। पर नये आदमियो के प्रतिनिधित्व के दावे को मान्यता देना अन्याय होगा क्योकि ये लोग हाल ही मे अस्तित्व मे आए हैं और इनके भविष्य का ठिकाना नही है। सत्यवती और उसके सगी-साथियो का रवया उत्तरदायित्व शून्य रहा है उनके साथ समझौते की बात चलाने से भविष्य के लिए जटिलता उत्पन्न होगी। परामश तार द्वारा दीजिए।

—घनश्यामदास

बिडला हाउस
नयी दिल्ली
१ १२ ३५
समय ६ ४० रात्रि

११५

बिड़ला हाउस,
नयी दिल्ली
२ दिसम्बर, १९३५

प्रिय हनुमतसहाय,

कल शाम आपसे बात हुई थी जिसके दौरान आपने कहा था कि मैं आपकी समिति को मान्यता प्रदान करूं और हड़ताल की बाबत केवल उसी के साथ समझौते की बातचीत करूं। आपकी इस मांग पर मैंने गंभीरतापूर्वक विचार किया है और मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि यदि मैं ऐसा करूंगा तो वह वर्तमान बिड़ला मिल मजदूर संघ के साथ घोर अन्याय होगा।

यह संघ १९२८ में बना था। तब से यह बराबर अस्तित्व में है। प्रत्येक मजदूर अपने वेतन का १ प्रतिशत इस संघ के कोष में देता है, और इतनी ही रकम मिल देती है। यदि किसी वर्ष संघ का बजट घाटे का रहा तो उसकी क्षति-पूर्ति भी मिल ही करती है। इस कोष के आय व्यय की देखरेख संघ की समिति के जिम्मे है और यह समिति प्रतिमास २०००) रु० से अधिक राशि कल्याण-कार्य में खर्च करती है। संघ के पदाधिकारी मिल के विभिन्न विभागों में काम करनेवाले मजदूरों द्वारा चुने जाते हैं और जब कभी मिल और मजदूरों में कोई विवाद उठता है अथवा गलतफहमी पैदा होती है तो उसका निपटारा इसी संघ के माध्यम से होता रहा है। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि यदि मजदूरों को कोई शिकायत थी, तो उन्होंने उसे मिल के प्रबंधकों तक पहुंचाने में संघ का उपयोग क्यों नहीं किया। यदि संघ के वर्तमान पदाधिकारी अपने सह-कर्मियों का विश्वास गंवा बैठे हैं तो निर्वाचन के द्वारा नये पदाधिकारी चुने जा सकते थे। संघ पिछले ७ वर्षों से संतोषजनक रीति से कार्य करता आ रहा है, इसलिए यदि मैं उसके अस्तित्व की उपेक्षा करूं और आपकी समिति के साथ बातचीत चलाने को राजी हो जाऊं तो यह संघ के साथ अन्याय होगा। आपकी समिति अभी हाल ही में अस्तित्व में आई है और उसे जन्म देने का एकमात्र उद्देश्य हड़ताल को सफल बनाना रहा है। उसके भविष्य के बारे में अभी निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता।

मैंने आपसे जबानी भी कहा था और अब लिखित आश्वासन देता हूं कि मैं आपको तथा आपके मित्रों को मजदूरों के हितैषियों की हैसियत से दफ्तर के

११

एक्सप्रेस तार

महात्मा गाधी
वर्धा

सत्यवती तथा अन्य लोगो ने मुन
रूप म अगीकार करने और समझौत
माग अस्वीकार करने का विचार ह
अस्तित्व म है और हर साल उसक प
कोष म प्रत्यक मजदूर वेतन का १ प्र
देती आ रही है। कोष की नीति म
यदि मिल मजदूर सघ के वतमान प
साथ बातचीत के निमित्त नया निर्व
के प्रतिनिधित्व के दावे की मान्यता
म अस्तित्व म आए हैं और इनके
उसके सगी साथियो का रवैया उत्त
बात चलाने स भविष्य के लिए
दीजिए।

विडला हाउस
नयी दिल्ली
१ १२-३५
समय ६ ४० रात्रि

तार की नक्ल

घनश्यामदास बिडला
अल्बूक्क रोड
नयी दिल्ली

वतमान मिल मजदूर सघ की स्थिति का ठेस पहुचाय विना अथवा उसके प्रभाव को कम किये विना सबकी शिकायतें सुनने का तयार रहो, और वाजिब शिकायतें रफा करा। यदि जो लोग मजदूर न होत हुए भी उनकी ओर से बोलने का दावा करत है उन्हे अपने अधिकार को प्रमाणित करना होगा। यह सलाह आप के हृदय को स्पश न कर पाए तो समझिए कि मैं स्थिति को नही समझ पाया हू। वमी अवस्था म हर किसी को अपनी ही विवेक बुद्धि स काम लना चाहिए।

—बापू

वधा,
२ १२ ३५

'हिदुस्तान टाइम्स म सत्यवती किसी निकाले गए कमचारी की पत्नी कही गई है। बापू को यह जरा बुरा लगा। सत्यवती ने शिकायत की थी। बापू ने उस लिखा यह तो कोई रिपाटर की ववकूफी ह घनश्यामदास को भी यह नही मजूर हो सकता है।

आपका
महादेव

११७

३ दिसम्बर १९३५

पूज्य बापू

आपका तार मिला।

हडताल के प्रति सत्यवती ने जा रुख अपनाया है उसम मूलत राजनतिक भावनाओ की गध आती है। यही कारण है कि मैं उसस बातचीत करने म सकोच

कागज पत्र देखकर इस बाबत आपका समाधान करने की सारी सुविधाए देने को तयार हू कि मिल के प्रबधकर्त्ताओ ने न तो वेतन म कोई कटौती ही की है और न उनका एसा करने का विचार ही है। बिडला मिल मजदूर सघ के अधिकारी लोग कुछ दिन पहले मुझसे मिले तो मैंन उनका समाधान कर न्या था और वे सतुष्ट प्रतीत हुए। अब भी यदि हडताली लाग आपस म ही चुनकर प्रतिनिधि भेजें तो मैं उनसे प्रसन्नतापूवक बात करूगा और उनका समाधान करके मुझ खुशी होगी।

आपकी नयी नयी और तदथ गठित हुई समिति को मान्यता दने का अथ वतमान सघ की हत्या करने के तुल्य होगा और ऐसा करना मजदूरो और मिल दोना के साथ घोर अन्याय होगा। फलत मरे लिए यह माग अपनाना उचित नही है। मैं अपना यह आश्वासन फिर दोहराता हू कि मान्यतावाले प्रस्ताव को छोडकर मैं आपको तथा आपके मित्रा को इस बाबत समाधान करन की सारी सुविधाए देने को तैयार हू कि वेतन की दरो म कोई कटौती नही की गई है।

भवदीय
घनश्यामदास बिडला

श्री हनुमतसहाय
दिल्ली

११६

भाई घनश्यामदास

तुमार दोना खत पढा। तुमको आज सवेर तार दिया सो पहुचा होगा। (नक्ल साथ म है।)

मेरा अभिप्राय है कि सत्यवती को मिलने म कुछ हानि नही हो सकती है। हर हालत म इनसाफ करना है। उसके पास मजदूरो का मुखतारनामा हाना चाहिय। अच्छा यह होगा कि सब शिकायत कोई निश्चित पच क पास जाय। इसम शत यह हानी चाहिये कि पीछे हडताल हो ही नही सकती है। मैंने तो पच बनन का नही लिखा है। मैं कसे बन भी सकता हू। पच ता किसी और को हा बनाना होगा। सब काय धैय से ही करोगे।

बापु के आशीर्वाद

तार की नकल

घनश्यामदास बिडला
अल्बूकर्क रोड
नयी दिल्ली

वतमान मिल मजदूर सघ की स्थिति को ठेस पहुचाये बिना अथवा उसके प्रभाव को कम किये बिना सबकी शिकायतें सुनने को तैयार रहो और वाजिब शिकायतें रफा करो। यदि जो लोग मजदूर न होते हुए भी उनकी ओर स बोलने का दावा करते हैं उन्हे अपने अधिकार को प्रमाणित करना होगा। यह सलाह आप के हृदय को स्पश न कर पाए तो समझिए कि मैं स्थिति को नही समझ पाया हू। वसी अवस्था म हर किसी को अपनी ही विवेक बुद्धि स काम लेना चाहिए।

—बापू

वर्धा,
२ १२ ३५

हि दुस्तान टाइम्स' म सत्यवती किसी निकाले गए कमचारी की पत्नी कही गई है। बापू को यह जरा बुरा लगा। सत्यवती ने शिकायत की थी। बापू न उस लिखा यह तो काई रिपोटर की बवकूफी है घनश्यामदास का भी यह नही मजूर हो सकता है।

आपका
महादेव

१९७

३ दिसम्बर १९३५

पूज्य बापू

आपका तार मिला।

हडताल के प्रति सत्यवती न जो रुख अपनाया है उसम मूलत राजनतिक भावनाओ की गध आती है। यही कारण है कि मैं उससे बातचीत करने म सकोच

कर रहा हू। हो सकता है कि मैं ही पक्षपात की भावना से काम ले रहा होऊ। मैंने इस भावना से मुक्त होने की भरपूर कोशिश की है पर मरा अन्तःकरण उसस बातचीत करने के विरोध म है। १६२८ में भी ऐसी ही अवस्था उत्पन्न हो गई थी, तब जवाहरलालजी ने मुझसे लाला शकरलाल से वातचीत करने को कहा था। मेरा उत्तर था कि मैं उनस बात करने के बजाय स्वय उनसे (अर्थात जवाहरलालजी से) अथवा उनके पिताजी स बात करना पसद करूगा। जवाहरलालजी ने हठ पकडी और हमने एक दूसरे मे विदा ली। अब सत्यवती की बारी है। व्रजकृष्ण (चादीवाला) इस अवस्था को बडे गम्भीर रूप म ग्रहण कर रहे हैं। मैंने उनसे कहा कि वे इस मामले म पडे ता मैं उनसे अथवा शिवम या कृष्ण नयर से बातचीत चलाने को तयार हो जाऊगा पर सत्यवती स कभी नही। वह समाजवाद की चर्चा करती है असतोप की भावना के प्रसार की उपादेयता बताती है कहती है कि वतमान व्यवस्था का मूलोच्छेदन करना होगा आदि। मैंने हनुमत सहाय का चिट्ठी लिखकर अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी है चिट्ठी की नकल नत्थी कर रहा हू।

मैंने यह रुख अपनाया है अपनी सारी शिकायतें पश करो मैं उन्हें ध्यान स सुनूगा। मैं तुम लोगो को इस बार म समाधान कर दूगा कि वेतन म कोई कटौती नही हुई है पर तुम लोगो को मान्यता प्रदान नही कर सकता, क्योकि मुझे यह आशा नही है कि तुम्हारे हिस्से मे जो जिम्मेदारी आती है उसे तुम पूरा करागे। इसके लिए मैं केवल मजदूरो के साथ वचनबद्ध हो सकता हू या उनके वतमान सघ के साथ तुम्हारी समिति से मेरा कोई सरोकार नही है। सत्यवती का कहना है कि पहले उसे मान्यता प्रदान की जाय बातचीत बाद म होगी। इस प्रकार सारा झगडा इस वात का है कि मान्यता प्रदान की जाय और मैं उसकी इस माग को स्वीकार करने के लिए अपने-आपको तयार नही कर सका हू।

मजदूर लाग मेरे पास आते रहते हैं उनम से कुछ के चेहरे मुरझा गये हैं। मैंने उन्हे खाना खिलाया। मुझे आशा है कि दो एक दिन म उनकी सख्या बढेगी। जब उन्होने शिकायत की कि उन्हें डराया धमकाया जा रहा है, तो हमने अपने आदमियो का उनकी रक्षा का भार सौंपा और यह एक प्रकार की बदले की कार्यवाही हो गयी। यह सब मैंने बन्द करवा दिया है। मुझे मालूम हुआ है कि विपक्षी दल ने कई एक के सिर तोडे हैं। उधर विपक्षी दल भी ऐसी ही शिकायत कर रहा है। पर जब मैं मजदूरो की कहानी सुनता हू तो मुझे लगता है कि रुपये म बारह आने मजदूर काम पर आने म इसलिए हिचकिचाते हैं कि वे भयभीत हैं। उस इलाके के मुसलमान गुडे हमारे खिलाफ हैं क्योकि मिल म मुसलमानो की सख्या

कम है। दूसरी ओर समाजवादियों को इससे बढ़िया और कौन सा मौका मिलता ? इस प्रकार मैं असहाय-सा हो गया हूं।

यद्यपि इंजन में गडबडी होने या काम बन्द होने के कारण वेतन में कटौती नहीं हुई है, उजरती काम करनेवाले मजदूरों को पिछले महीने की अपेक्षा कम मिला है। और उन्हें सचमुच विश्वास हो गया है कि हमने वेतन की दर में धांधली बरती है। इसके अलावा, मिल के अधिकारियों के बर्ताव के बारे में भी शिकायतें हैं, और ठीक ढंग से मामले से निपटने के अभाव में मजदूर लोग भडक उठे हैं। मैंने सत्यवती को तथा संघ के पदाधिकारियों को जो मुझसे मिलने आए थे सारी स्थिति समझाई, पर इस समझाने बुझाने का परिणाम काम शुरू होने के बाद ही जाना जा सकेगा। फिलहाल वातावरण में तनाव है और कई प्रकार के प्रभाव काम कर रहे हैं। मैं यह सब देखता हूं और हीनता का बोध करता हूं, क्योंकि आप तो जानते ही हैं कि मैं इस अटपटेपन को किस भावना के साथ लेता रहा हूं। आशा है, कुछ दिन बाद यह स्थिति नहीं रहेगी।

कृपा करके मुझे बताइये कि मैंने यह नीति बरतने में कहां गलती की ? मैंने सत्यवती के दावे को स्वीकार करने से इंकार करके उसे चिढा दिया है। पर मुझे लगा कि यदि मैं इस मामले में और आगे बढूंगा तो भविष्य के लिए नयी उलझनें पैदा कर दूंगा। असंतोष के नये कारण ढूंढे जायेंगे और हडतालों का तांता बंध जायगा। जो भी हो, मुझे तो मजदूरों से ही निपटना है, और जब तक मैं उनसे सीधे न निपट पाऊंगा, उन्हें यह कैसे पता चलेगा कि मैं उनका परम हितैषी हूं।

आप मुझ पर इस बारे में भरोसा कर सकते हैं कि मैं मजदूरों के हितों को आंच नहीं आने दूंगा। मुझे आशा है कि मेरा मार्गदर्शन करने के लिए इतना आश्वासन ही यथेष्ट माना जायेगा।

स्नेहभाजन,
घनश्यामदास

पूज्य महात्मा गांधी,
वर्धा

कर रहा हू। हो सकता है कि मैं ही पक्षपात की भावना से काम ले रहा होऊ। मैंने इस भावना से मुक्त होने की भरपूर कोशिश की है, पर मेरा अत करण उससे बातचीत करने के विरोध म है। १९२८ मे भी ऐसी ही अवस्था उत्पन्न हो गई थी, तब जवाहरलालजी ने मुझसे लाला शकरलाल से बातचीत करने को कहा था। मेरा उत्तर था कि मैं उनसे बात करन के बजाय स्वय उनस (अर्थात जवाहर लालजी से) अथवा उनके पिताजी से बात करना पसद करूगा। जवाहरलालजी ने हठ पकडी और हमने एक दूसरे से विदा ली। अब सत्यवती की बारी है। व्रजकृष्ण (चादीवाला) इस अवस्था को बडे गम्भीर रूप म ग्रहण कर रहे हैं। मैंने उनसे कहा कि वे इस मामले म पडे तो मैं उनसे अथवा शिवम या कृष्ण नयर स बातचीत चलाने को तयार हो जाऊगा पर सत्यवती स कभी नही। वह समाज वाद की चर्चा करती है असतोष की भावना के प्रसार की उपादेयता बताती है, कहती है कि वतमान व्यवस्था का मूलोच्छेदन करना होगा आदि। मैंने हनुमत सहाय को चिट्ठी लिखकर अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी है, चिट्ठी की नकल नत्थी कर रहा हू।

मैंने यह रुख अपनाया है अपनी सारी शिकायतें पश करो, मैं उन्ह ध्यान स सुनूगा। मैं तुम लोगो का इस बारे म समाधान कर दूगा कि वेतन म कोई कटौती नही हुई है पर तुम लोगो को मान्यता प्रदान नही कर सकता क्योकि मुझे यह आशा नही है कि तुम्हारे हिस्से म जो जिम्मेदारी आती है उसे तुम पूरा कराेगे। इसक लिए मैं केवल मजदूरो के साथ वचनबद्ध हो सकता हू या उनके वतमान सघ के साथ तुम्हारी समिति से मेरा कोई सरोकार नही है। सत्यवती का कहना है कि पहले उसे मान्यता प्रदान की जाय बातचीत बाद म होगी। इस प्रकार सारा झगडा इस बात का है कि मान्यता प्रदान की जाय और मैं उसकी इस माग का स्वीकार करने के लिए अपने-आपको तयार नहीं कर सका हू।

मजदूर लोग मेरे पास आते रहते है उनम स कुछ के चेहरे मुरझा गये हैं। मैंने उन्ह खाना खिलाया। मुझे आशा है कि दो एक दिन म उनकी सख्या बढगी। जब उन्होने शिकायत की कि उन्हें डराया धमकाया जा रहा है तो हमने अपने आदमियो को उनकी रक्षा का भार सौंपा और यह एक प्रकार की बदले की काय वाही हो गयी। यह सब मैंने बन्द करवा दिया है। मुझे मालूम हुआ है कि विपक्षी दल ने कई एक के सिर तोडे हैं। उधर विपक्षी दल भी ऐसी ही शिकायत कर रहा है। पर जब मैं मजदूरो की कहानी सुनता हू तो मुझे लगता है कि रुपये म बारह आने मजदूर काम पर आने म इसलिए हिचकिचाते हैं कि वे भयभीत हैं। उस इलाके के मुसलमान गुडे हमार खिलाफ हैं क्योकि मिल म मुसलमानो की सख्या

भिन्नता म हुआ। सत्यवती के नतृत्व म निकाल गये जुलूस म हिन्दुस्तान टाइम्स और पारसनाथजी के खिलाफ नारे बुलद किये जा रहे थे, जिमसे स्टाफ भी भडक उठा था। जुलस ने अर्जुन और तेज' के साथ भी यही सलूक किया था, मुझे भी नही बख्शा गया। आतकवाद का समा वध गया था। सिर फुटौव्वल की नौबत भी आई थी। जो हडताली मेरे पास आकर बात करना चाहते थे उन्हे बलपूवक माग म ही रोक दिया गया, और एक के चेहरे पर तो कालिख पोत दी गई। पर जसा कुछ वातावरण था, उसम यह सब होना स्वाभाविक ही था, इस लिए इस चीज को कोई महत्त्व नही देना चाहिए।

कृष्ण नयर कल मिला था। मैंने उससे इस मामले म दिलचस्पी लेने को कहा था। उसने यह बात स्वीकार की कि उसने मेरे विरुद्ध उद्गार व्यक्त किये थे, पर मैंने कहा कि कोई बात नही है।

स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

पूज्य महात्मा गाधी
वर्धा

११६

भाई घनश्यामदास

तुम्हारा खत मिला। हनुमतसहाय को जो खत लिखा है वह बिलकुल ठीक है। न उनको, न सत्यवती को मजदूरो के प्रतिनिधि मान सकते है। मजदूर लोग उनको चुने तब ही उनमे से कोइ प्रतिनिधि बन सकते हैं। लेकिन जो मिलना चाहिये उनको मिले। इतना ही कहने का मेरा मतलब था और उतना तो तुमने किया भी है, ऐसा मैं समझा हू।

मेरी उम्मीद है कि अब तो सब कुछ खतम हो गया होगा। जो कुछ आफर तुमने की है वह पर्याप्त-सी लगती है।

बापु के आशीर्वाद

वर्धा
५ १२ ३५

११८

५ दिसम्बर, १९३५

पूज्य बापू

अत म कल मजदूर मुझसे मिलन आ ही गय। पर जब मैंन सत्यवती से बात चीत करने स इकार कर दिया, ता गतिरोध उत्प न हो गया और ब्रजकृष्ण ने पूछा कि अब क्या करना चाहिए। मैंने उनसे कहा कि मैं मजदूरा के साथ समझौते की बात चलाने को तयार हू। ब्रजकृष्ण ने बताया कि मजदूरो को आशका है कि व मरे साथ बात करेंगे तो मैं उ हें बरखास्त कर दूगा। इस बाबत मैंने उनको विश्वास दिलाया और मजदूरो न मर साथ पूर तीन घटे बात की। मैं आपको अपने पिछले पत्र मे बता ही चुका हू कि इजन मे गडबडी होन के कारण काम बद करना पडा था और मजदूरो का सचमुच यह विश्वास हा गया था कि वेतन मे कटौती की गई है। जब मैंने उनस बात की तो मुझे पता चला कि बसी कोई गलतफहमी नही है और वे वास्तविक स्थिति से पूर तौर स अनभिज्ञ हैं। उन्होंने स्वीकार किया कि उन्होंने हडताल करके गलती की और जब उन्हाने अपनी माग पश की तो मुझे पता चला कि उनकी माग यह थी कि १९३३ म बुनाई विभाग मे १२ प्रतिशत की जो कटौती की गई थी उस उठा लिया जाय। उन्होंने बताया कि हडताल की याजना पहल स नही बनाई गई थी पर अब जबकि हडताल जारी है तो उन्ह यह माग आग रखना उचित लगा। मैंने उनकी यह माग दढतापूवक अस्वीकार कर दी और कहा कि यह कटौती मूल्य म कमी होने के कारण की गई थी और अब स्थिति पहले से भी खराब है। उन लोगा ने जो और मागे पश की व साधारण-सी थी और मैंन उन्ह मान लिया। फिर उन्होंने बोनस पुन जारी करन का अनुरोध किया पर मैंन कहा कि मिल घाटे म चल रही है इसलिए वह बोनस दन की स्थिति म नही है पर मैंने यह भी कह दिया कि हो सका तो म अपनी जेब स कुछ द दूगा। व लोग दुबारा आयेंग। उन्होंने बताया कि वे नया मजदूर सघ बनान की बात सोच रह हैं। मैंने उन्हे तत्काल इसकी अनुमति द दी।

मैं मानता हू कि हिन्दुस्तान टाइम्स म सत्यवती का हवाला 'एक बरखास्त शुदा कमचारी की स्त्री' कहकर देना एक गलती थी। मैं सत्यवती से मिला था इसके लिए मैंने खेद प्रकट किया। मैंने इसके लिए हिंदुस्तान टाइम्स' के व्यवस्थापका को भी झाडा पर पारसनाथजी का कहना है कि यह उनकी अन

भिन्नता मे हुआ। सत्यवती के नतृत्व म निकाल गये जुलूस म हिदुस्तान टाइम्स' और पारसनाथजी के खिलाफ नार बुलद किय जा रह थ, जिसस स्टाफ भी भडक उठा था। जुलस ने अजुन' और तज' के साथ भी यही सलूक किया था, मुझे भी नही बख्शा गया। आतकवाद का समा बध गया था। सिर फुटौव्वल की नौबत भी आई थी। जा हडताली मर पास आकर बात करना चाहते थे उन्ह बलपूवक माग म ही रोक दिया गया और एक क चहर पर तो कालिख पात दी गई। पर जसा कुछ वातावरण था उसम यह सब हाना स्वाभाविक ही था इस लिए इस चीज का कोई महत्त्व नही दना चाहिए।

कृष्ण नयर कल मिला था। मैंन उससे इस मामल म दिलचस्पी लने को कहा था। उसन यह बात स्वीकार की कि उसने मेर विरुद्ध उदगार व्यक्त किय थे पर मैंन कहा कि कोई बात नही है।

स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

पूज्य महात्मा गाधी
वर्धा

११६

भाई घनश्यामदास

तुम्हारा खत मिला। हनुमतसहाय का जा खत लिखा है वह बिलकुल ठीक है। न उनको, न सत्यवती को मजदूरा के प्रतिनिधि मान सकते है। मजदूर लोग उनको चून तब ही उनम स कोइ प्रतिनिधि बन सकते है। लेकिन जो मिलना चाहिये उनको मिले। इतना ही कहने का मरा मतलब था और उतना तो तुमने किया भी है, एसा मैं समझा हू।

मेरी उम्मीद है कि अब तो सब कुछ खतम हो गया होगा। जो कुछ आफर तुमने की है वह पर्याप्त-सी लगती है।

बापु के आशीर्वाद

वर्धा
५ १२ ३५

१२०

८ दिसम्बर, १६३५

प्रिय महादेवभाई

आशा है बापू के स्वास्थ्य के बारे मे चिन्ता करने की कोई बात नही है। यह सब सोयाबीन के कारण नही हुआ होगा। अपनी वृद्धावस्था मे बापू को भोजन के मामले म नित्य नये प्रयोग करना छोड देना चाहिए। उनके लिए क्या खाद्य पदार्थ ठीक रहगे यह वह खुद जानते हैं और लम्बी परीक्षा के बाद उन्होंने जिन खाद्य पदार्थों को अपने लिए ठीक पाया है उन्ही स वह सतुष्ट क्यो नही रहते ? मुझे मालूम है कि उन्ह जो-जो पदार्थ अनुकूल सिद्ध हुए हैं उनम फल साग-सब्जी दूध और खजूरो का प्राधान्य है। अब उन्हें दूध का स्थान सोयाबीन को नही देना चाहिए।

मैंने मिल के मजदूरो के साथ सारा मामला चार दिन पहले निपटा लिया था। पर अभी मिल मे काम शुरू नही हुआ है। सबसे पहले तो मजदूरो मे ही समझौते को लेकर झगडा उठ खडा हुआ। उनम से कुछ का कहना था 'हम मिला क्या ?' और एक प्रकार से बात भी ठीक है। हडताल से किसी भी पक्ष को कोई लाभ नही हुआ। छोटी मोटी शिकायतें तो पहले भी रफा कर दी जाती। हडताल के समय का बीजक तयार करने पर यह कटु सत्य सामने आ खडा होता है कि इससे दोनो म से किसी भी पक्ष को कोई लाभ नही हुआ। इस प्रकार कुछ दिनो तक मजदूरों मे यही वाद विवाद रहा। अब टेड यूनियन ने समझौता मान तो लिया है पर मुझे दिल्ली म खबरें मिल रही हैं कि ट्रेड यूनियन म मजदूर तो हैं ही साथ ही बाहर के लोग भी है। यह यूनियन अब मिल के प्रबधकर्त्ताओ पर हुक्म चला रही है कि यह करो वह करो। मैंने मिल के मनेजर को ताकीद कर दी है कि वह समझौते का अक्षरश पालन कर और यदि उसक पास कोई शिकायत आये तो उसकी ओर कान द। साथ ही मैंने उसे यह भी बता दिया है कि यदि कोई यह समझ बैठा हो कि हमने मिल का प्रबध काय ट्रेड यूनियन को सौंप दिया है तो उस यह स्पष्ट रूप स समझ लेना होगा कि हम ऐस अनियत्रण क वातावरण म मिल चलाने को तयार नही हैं। मैंने मनेजर स सत्यवती स भी बात करने को कह दिया। व्रजकृष्ण बडे काम आया और मेरी धारणा है कि कृष्ण नयर भी सारी चीज अपनी आखो देख पाया पर ये लोग मजदूरो को प्रभावित करने मे अक्षम रहे। नयी ट्रेड यूनियन अवाछित समझे जानेवाले लोगो के हाथो मे जा पडी मालूम होती है।

मिल का मनेजर बडा परशान है पर मैंन उसस कह दिया है कि परेशान होने की कोई बात नही हम नपा-तुला रख अपनाये रखना है और यदि कोई हम मजबूर करना चाहेगा तो हम भी शक्ति और दृढता स काम लना जानते हैं। आखिर मे क्या नतीजा होगा, सो बताना कठिन है। स्थिति से व्यवहार कुशलता के साथ निपटना है। जो स्थिति उत्पन्न हुई है, गाधी इर्विन समझौते क बाद के दिनो की याद दिलाती है। मैं और व्रजकृष्ण समस्या का हल ढूढ निकालते, पर ट्रेड यूनियन वालो को तो नयी प्रतिष्ठा चाहिए, इसलिए वे लोग समझदारी दिखाने के लिए तयार नही हैं। मैं मिल की झझट स आप लोगो को अब और अधिक व्यस्त नही करूगा, क्योकि बापू को इन सारी बातो की सूचना देने मात्र से उन पर बोझ पडेगा जो मैं कदापि नही चाहूगा। मैं अपनी बुद्धि विवेक से काम लूगा। बापू को निश्चिन्त रहना चाहिए कि मैं अपने दृष्टिकोण के अनुरूप न्याय ही बरतूगा।

बापू के स्वास्थ्य के बारे म मुझे सूचित करते रहना।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

१२१

वर्धा
८ दिसम्बर १९३५

प्रिय घनश्यामदासजी,

हडताल समाप्त हो गई यह जानकर हम सबको बडा आनन्द हुआ। खूबी यह है कि विवाद के बारे म कृष्ण नयर और व्रजकृष्ण क वणन स आपका वणन अक्षरश मिलता है। दोनो ही पक्ष औचित्य के अनुरूप आचरण करें और दोनो ही मजदूरो का कल्याण चाहते हो तो ऐसा होना स्वाभाविक ही है। कृष्ण नयर ने बताया कि आपने मजदूरो के प्रतिनिधियो के साथ किस मान-मर्यादा का व्यवहार किया और किस प्रकार उनसे सारी बातो की चर्चा की। इन सारी बातो को देखते हुए तो यही कहना होगा कि तूफान भले के लिए ही आया था।

बापू क स्वास्थ्य म काफी गडबडी हो गई है। वह खुद यह बात जानते हैं।

चेतावनी समय रहते मिल गई और मैं इसके लिए कृतज्ञ हूं कि बापू डॉक्टरों की हिदायत का अक्षरशः पालन करने को राजी हो गए हैं। हम सब यही अचरज कर रहे थे कि कहीं यह पीड़ा गिर म लचक आ जाने से तो नहीं हुई है या लू लग जाने से हुई हो। पर डाक्टरों के निर्देश के बाद से बापू जिस प्रकार दर तक सोते आ रहे हैं उससे स्पष्ट हो गया है कि सारी व्याधि पर्याप्त नींद न लेने से उत्पन्न हुई थी। इस व्याधि की एकमात्र ओषधि विश्राम है। कल तीसरे पहर दो बजे उनका रक्त चाप २१० था। विश्राम और नींद के बाद सध्या को ६ बजे देखा तो गिरकर १७८ पर आ गया था। दुःख इस बात का है कि बापू जानते हैं कि विश्राम की जरूरत है तब भी वह बूते से अधिक परिश्रम करते हैं और मेरे जसे तुच्छ व्यक्तियों की चेतावनी को अनसुनी करके टाल जाते हैं।

हम सब यह आस लगाए बठे हैं कि एक पखवाड़े के पूर्ण विश्राम के फलस्वरूप बापू २७ से ३१ दिसम्बर तक के भारी कायक्रम से मोर्चा लेने और गुजरात का दौरा करने लायक हो जाएंगे। पर यदि बापू २५ दिसम्बर तक बिलकुल स्वस्थ नहीं हुए तो मैं अंतर्राष्ट्रीय भ्रातृ मण्डल को सूचित कर दूंगा और गुजरात का दौरा रद्द करने के बारे में डाक्टरों से परामर्श लेने में नहीं चूकूंगा। चरखा-सघ की बठक १२ को होगी। उसे स्थगित नहीं किया जाएगा पर उसमें बापू भाग नहीं लेंगे।

ज्यों ही रक्तचाप लेने के यंत्र ने ऊंचा रक्तचाप दिखाया कि हमने डाक्टर जीवराज को बुला भेजा। अब मैं आपको यह चिट्ठी लिख रहा हूं और डॉक्टर जीवराज बापू की परीक्षा में लगे हुए हैं। आज अभी तक पीड़ा नहीं हुई है और सम्भव है कि यंत्र और भी अधिक दिलासा देनेवाली सूचना दे। नहीं यंत्र ने दिलासावाली कहानी नहीं कही—रक्तचाप ऊपर में १८० और नीचे में १०० है। ठीक नहीं है। मैं आपको बराबर खबर देता रहूंगा।

भवदीय
महादेव

श्री घनश्यामदास बिड़ला
अल्बूकर्क रोड,
नयी दिल्ली

१२२

६ दिसम्बर १६३५

प्रिय महादेवभाई,

मुझे अपने पिछलेवाले पत्र मे मिल के बारे मे एक बात और बता देनी चाहिए थी। सत्यवती के बारे मे तुम्हें अंतिम बार लिखने के बाद मैं उसके सम्बन्ध मे पूछताछ करता रहा हूं और मुझे स्वीकार करना पड़ता है कि मैंने उसके विरुद्ध धारणा बनाने मे जल्दबाजी से काम लिया। वह जल्दी ही प्रभावित हो जाती है पर मुझमे भी तो यही दोष है। साथ ही, उसने भांति भांति की अनगल विचार धाराओं को अपने दिमाग मे जगह दे रखी है। मैंने उसके बारे मे सुना भी है और खुद भी बात करके देखा है कि उसके इन अतिवादी खयालों को छोड़ दिया जाए तो वह विवेक और दलील के आगे झुक जाती है। मुझे मालूम हुआ है कि मजदूरों को सलाह-मशवरा देने के मामले मे उसने औचित्य को हाथ से नही जाने दिया। मुझे लगता है कि बापू को लिखे अपने एक पत्र के दौरान मैंने उसके सम्बन्ध मे जो विचार प्रकट किये वे न्यायपूर्ण नही थे। शायद मैं उससे किसी दिन बात करूं। यह बात फरीदुल हक के बारे मे भी लागू होती है यद्यपि उसने गत वर्ष सभाओ मे मेरे खिलाफ अकारण ही दुनिया भर की बातें कह डाली थी। इसका एकमात्र कारण यह बताया गया कि 'हिन्दुस्तान टाइम्स' आसफअली का समर्थन कर रहा था।

मुझे एक और बात का पता चला। वह यह है कि व्रजकृष्ण व नैयर-जैसे नेता लोगो मे दृढ़ता का अभाव था। वे मेरे साथ जो कुछ तय कर जाते थे, उसे खुल्लम खुल्ला कह सुनाने का उनमे साहस नही था। मैंने खुद कोई वक्तव्य नही दिया, क्योंकि यह तय हो गया था कि व्रजकृष्ण वक्तव्य देगा, पर दृढ़ता की कमी से पूरे चार दिन वक्तव्य नही दिया जिसके परिणामस्वरूप मुझे काफी परेशानी हुई। आपस की बातचीत मे ये लोग स्वीकार करते थे कि हड़ताल मे अवांछित तत्वो का हाथ है नियन्त्रण का अभाव है और हड़ताली लोग समझदारी से काम नही ले रहे हैं। पर व्रजकृष्ण वक्तव्य को चार दिन तक दबाये बैठा रहा। मैं तो समझता हूं कि यह बात ६० प्रतिशत नेताओं पर लागू होती है। यदि ये नेता लोग सभाओ मे भड़कानेवाली स्पीचें नही झाड़ते और जो-कुछ उन्होंने आपस की बातचीत मे कहा था उसे खुल्लम खुल्ला कहते तो हड़ताल टल जाती और मजदूरो को जो क्षति उठानी पड़ी उससे वे बच जाते। पर यह आलोचना हमारे कई सार्वजनिक

चेतावनी समय रहते मिल गई और मैं इसके लिए कृतज्ञ हू कि बापू डॉक्टरा की हिदायत का अक्षरश पालन करने को राजी हो गए हैं। हम सब यही अचरज कर रहे थे कि कही यह पीडा सिर म लचक आ जाने से तो नही हुई है या लू लग जाने से हुई हो। पर डाक्टरो के निर्देश के बाद स बापू जिस प्रकार देर तक सोते आ रहे है उसस स्पष्ट हो गया है कि सारी व्याधि पर्याप्त नीद न लेने से उत्पन्न हुई थी। इस व्याधि की एकमात्र औषधि विश्राम है। कल तीसरे पहर दो बजे उनका रक्त चाप २१० था। विश्राम और नीद के बाद सध्या को ६ बजे देखा तो गिरकर १७५ पर आ गया था। दुख इस बात का है कि बापू जानते हैं कि विश्राम की जरूरत है तब भी वह बूत से अधिक परिश्रम करते है और मेरे जसे तुच्छ व्यक्तियो की चेतावनी को अनसुनी करके टाल जाते हैं।

हम सब यह आस लगाए बठे हैं कि एक पखवाडे के पूर्ण विश्राम के फलस्वरूप बापू २७ स ३१ दिसम्बर तक के भारी कार्यक्रम से मोर्चा लेने और गुजरात का दौरा करने लायक हो जाएगे। पर यदि बापू २५ दिसम्बर तक बिलकुल स्वस्थ नही हुए तो मैं अतर्राष्ट्रीय भ्रातृ मण्डल को सूचित कर दूगा और गुजरात का दौरा रद्द करने के बारे मे डाक्टरो से परामर्श लेने म नही चूकूगा। चरखा सघ की बठक १२ को होगी। उसे स्थगित नही किया जाएगा पर उसम बापू भाग नही लेंगे।

ज्यो ही रक्तचाप लेने के यत्र ने ऊचा रक्तचाप दिखाया कि हमने डाक्टर जीवराज को बुला भेजा। अब मैं आपको यह चिट्ठी लिख रहा हू और डाक्टर जीवराज बापू की परीक्षा म लगे हुए हैं। आज अभी तक पीडा नही हुई है और सम्भव है कि यत्र और भी अधिक दिलासा देनेवाली सूचना दे। नही यत्र ने दिलासेवाली कहानी नही कही—रक्तचाप ऊपर म १८० और नीचे म १०० है। ठीक नही है। मैं आपको बराबर खबर देता रहूगा।

भवदीय
महादेव

श्री घनश्यामदास बिड़ला
अल्बूकर्क रोड
नयी दिल्ली

नताओ पर लागू हाती है। व्रजकृष्ण कृष्ण नैयर और शिवम क सहायक होने का कारण सम्भवत यह रहा हो कि हम सभी बापू के शिविर म हैं।

आज क समाचार पत्रो स पता चलता है कि डाक्टरा न बापू को केवल दूध और फला पर रहन को कहा है। मैं ता समझता हू कि यह सारा झमेला सोयाबीन को लेकर हुआ। इस उम्र म बापू के लिए दाल पचाना सम्भव नही है, चाहे वह दाल सोयाबीन की हो या मूग की। आशा ह, अब उनकी हालत सुधर रही होगी।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाइ देमाइ
वर्धा

१२३

तार

वर्धागज
६ १२ ३५

घनश्यामदासजी
बिडला हाउस
नयी दिल्ली

बापू प्राय अच्छे ह। फफडे साफ हैं। खासी नही ह। बम्बइ जाना अनावश्यक। लिख रही हू।

—सुशीला

१२४

१० दिसम्बर, १६३५

प्रिय महादेवभाइ,

पत्रों मे बापू के स्वास्थ्य के बारे म सतोषप्रद खबरें निकल रही हैं फिर भी मुझे तो चिंता ही होती है। उनकी यह बीमारी क्या ह, प्रकृति की एक गभीर चेतावनी ह। बापू अब बूढे हो गए है पर शायद अभी तक उन्ह इस बात का एहसास होना बाकी है। उन्ह दिमागी और शारीरिक, दोनो ही प्रकार के विश्राम की जरूरत ह। स्नान जसी वाछनीय चीजें भी एक हद तक ही उपादेय हैं। उनका लबा चौडा अनुभव है इसलिए उन्ह अब तक खुद ही पता लग गया होगा कि उनके लिए क्या-क्या चीजे ठीक रहगी उन्हें उन्ही चीजा के व्यवहार स सतुष्ट रहना चाहिए। औरो के लिए विशेषज्ञ लोग प्रयोग म लगे हुए हैं ही और हमारे लिए उनकी खोज ही काफी है। मैं यह मानता हू कि सोयाबीन बडी अच्छी चीज है, पर केवल उनके लिए जो उसे हजम कर सकते हैं, बापू के लिए कदापि नही। उनकी पाचन शक्ति खजूर दूध और फलो तक ही सीमित है। ईश्वर के लिए उन्हें अब इन्ही चीजा के व्यवहार पर सब्र कर लेना चाहिए। आज मैंने देवदास स फोन पर बात करने की कोशिश की पर वह नही मिले। आज उन्हें तार भेज रहा हू कि कल सुबह वह मुझे फोन करें।

हडताल का तो अत हो गया पर मेरी चिंताओ का निवारण अभी होना बाकी है। कुछ हद तक नियत्रण म शिथिलता आई है झूठी आशाओ को प्रोत्साहन मिला है उनकी पूर्ति एक असम्भव काय है। पर मैं स्थिति से निपटने की भरसक कोशिश करूगा। कृष्ण नयर-जस आदमी मेरे मजदूरों मे व्यक्तिगत दिलचस्पी ल सकें, तो बडी बात हो। तब उन्हें पता चलेगा कि मिल चलाना हमी खेल नही है। मैं कृष्ण नयर स बात करूगा। जो भी हो अब मैं मिल को लेकर न अपना माथा खपाना चाहता हू न तुम्हारा ही। दिल्ली आओगे तो बताऊगा कि हडताल के दौरान क्या कुछ बीत गया। मेरा अनुभव सुखद नही था। मेरे प्रगाढ मित्रा तक की यह धारणा हो गई थी कि एक कपडा मिल कसे चलाई जाती है इस बाबत व मुझे सिखा सकते है।

बापू के स्वास्थ्य के बारे म मुझे बराबर खबर देते रहो। मैंने एक बार यह सुझाव दिया था कि बापू को पत्र-व्यवहार बिलकुल बन्द कर देना चाहिए। सुझाव गम्भीरतापूवक नहीं दिया गया था, क्योकि मैं जानता था कि उस पर आचरण

नेताओं पर लागू होती है। व्रजकृष्ण, कृष्ण नयर और शिवम के सहायक होने का कारण सम्भवत यह रहा हो कि हम सभी बापू के शिविर में हैं।

आज के समाचार पत्रों से पता चलता है कि डाक्टरों ने बापू को केवल दूध और फलों पर रहने को कहा है। मैं तो समझता हूं कि यह सारा झमेला सोयाबीन को लेकर हुआ। इस उम्र में बापू के लिए दाल पचाना सम्भव नहीं है, चाहे वह दाल सोयाबीन की हो या मूग की। आशा है, अब उनकी हालत सुधर रही होगी।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

१२३

तार

वर्धागंज
९ १२ ३५

घनश्यामदासजी
बिड़ला हाउस
नयी दिल्ली

बापू प्राय अच्छे है। फेफड़े साफ हैं। खासी नहीं है। बम्बई जाना अनावश्यक। लिख रही हूं।

—सुशीला

वाइसराय मरहावरा जाते हैं या ब्रिटेन के प्रधानमत्री चक्स जाते हैं)।

२) कि वह साल मे एक महीना केवल आराम के लिए ही अलग निकाल-कर रख लें।

यह सम्भव क्या नही है सो मैं नही समझ पाता। मैं जानता हू कि यह मेरे बूते स बाहर है, पर वल्लभभाई, जमनालालजी और आप जैसे तीनो मित्र मिलकर जोर लगाए तो यह सम्भव है। यदि उनके लिए तरह-तरह के अन्य सकल्प लेना सम्भव है तो यह परम आवश्यक सकल्प लेना क्यो असम्भव समझा जाय? वास्तव म ऐसे सकल्प का सुफल यह होगा कि काम भी अच्छा होगा और ठोस भी होगा। क्या, आपकी क्या राय है?

आपने हडताल के बार म जो-कुछ कहा है सो समझा। इतने पर भी आप सत्यवती और फरीद की प्रशसा के पुल बाधते है (क्षमा करिये, यही तो आपकी कमजोरी है)। जो हो, इस बारे म हम दिल्ली आने पर आपसे सब कुछ सुनने को मिलेगा ही। एक बात कह दू। मैंने पिछले हफ्ते म आपका कोई भी पत्र बापू के सामने नही रखा है आशा है आप खयाल नही करेंगे।

आपका,
महादेव

१२६

१३ दिसम्बर, १६३५

बापू की स्वास्थ्य विषयक रिपोर्ट

यह रिपोर्ट देते हुए मुझे आनन्द हो रहा है कि कल पूरे दिन आराम करने और रात भर अच्छी तरह सोने के बाद आज सुबह उनकी तबीयत काफी सुधर गई है। रक्तचाप लगभग स्वाभाविक स्तर पर आ पहुचा है नाडी म अधिक बल है, और देखने म भी वह पहले की अपेक्षा अधिक प्रफुल्लित लगते हैं। यह पता लगते ही कि रक्तचाप बढ गया है उन्होने दूध और साग-सब्जी छोड दी और भोजन के पदार्थों मे केवल शहद और फलो का व गन्ने का रस लिया। सोयाबीन का परित्याग बहुत पहले ही कर दिया गया था। डाक्टर जीवराज मेहता की

करना असम्भव है। पर तो भी, क्या बापू के लिए अपने पत्र व्यवहार म थोडी बहुत कमी करना सम्भव नही है ? यदि वह पत्र-व्यवहार क निमित्त दो घटे बाध लें तो कसा रह ? इसी प्रकार उन्हे भेंट मुलाकात की अवधि भी निर्धारित कर दनी चाहिए। इससे वह अधिक मा भी सकेंगे, और अधिक विश्राम भी कर सकेंगे। उन्हे यह ध्यान रखना चाहिए कि वे अब वृद्ध है और अपक्षाकृत अधिक विश्राम और अवकाश की उन्हें आवश्यकता है।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादवभाई देसाई
वर्धा

१२५

वर्धा
१३ १२ ३५

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका तार मिल गया था जिसका उत्तर मैंने तुरत भेज दिया था जिससे आपकी चिन्ता बहुत-कुछ दूर हो गई होगी। ताजा बुलेटिन साथ म नत्थी है।

सारी समस्या यह है कि बापू को आराम कसे दिया जाय? वह कहा जाए—दिल्ली या मगनवाडी या बम्बई—प्रश्न इस बात का नही है। इनमे से कोई भी स्थान उतना ही बुरा या अच्छा हो सकता है। यदि वह आराम करने को राजी हागे तो कोई भी स्थान उपयुक्त हो सकता है। यदि वह सामथ्य से अधिक काम करते रहेंगे तो काई भी स्थान उपयुक्त नही होगा। उन्हाने अत्यत कठिन कलाए सिद्ध की हैं पर काम के साथ आराम का विवेकपूण याग-साधना उनके काबू से बाहर ही रहा है। क्या आप-जसा कोई मित्र जिसकी बात वह सुनते हैं निम्न लिखित दो बाता मे से एक बात उनसे नहा मनवा सकता ?

१) कि वह हफ्त म एक दिन पूण विश्राम करें (इसम वह मौन दिवसवाला सोमवार शामिल नही है जो कि जहा तक आराम का ताल्लुक है धोम की टट्टी मात्र है)। उस दिन न कोई खत पढा या लिखा जाय न कोई भेंट मलाकात हो, चाहे वह कितनी ही जरूरी हो। वास्तव म उन्हें उस दिन कहीं अन्यत्र जाकर विश्राम करना चाहिए। (ठीक वसे ही जसे

१२८

विडला
विडला हाउस, अल्बूकर्क रोड,
नयी दिल्ली

१३ १२-३५

रक्तचाप काफी कम है। बापू पहले से कहीं अच्छे हैं। चिंता की कोई बात नहीं है।

—महादेव

१२९

प्रिय श्री पिनेल

१९ दिसम्बर १९३५

बगाल के शासन-कार्य की १९३३ ३४ की जो वार्षिक रिपोर्ट निकली है उसके पाचवें पृष्ठ के ९वें परे और १०वें पृष्ठ के २७वें परे की ओर महामहिम गवनर का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हू। इन दोनों परों में हरिजन-सेवक संघ के कार्य का उल्लेख है। यह संघ मिस्टर गांधी के इतिहास प्रसिद्ध उपवास के बाद हरिजनोद्धार-सम्बन्धी कार्य में लगा हुआ है। मैं इस संघ का अध्यक्ष हू।

मेरी धारणा है कि उक्त पैरों में हरिजन सेवक संघ के साथ घोर अन्याय किया गया है। इस संघ का कार्य क्षेत्र विशुद्ध मानवीय है। राजनीति से इसका कोई सरोकार नहीं है। पंडित जवाहरलाल को इस संघ के लिए रुपया इकट्ठा करने का कभी अधिकार नहीं दिया गया था और जहां तक मैं जानता हू उन्होंने इस निमित्त कभी रुपया इकट्ठा नहीं किया। पंडित जवाहरलाल नेहरू के राजनैतिक दृष्टिकोण से मेरा मतभेद रहा है पर मैं यह कदापि विश्वास नहीं कर सकता कि उन्होंने हरिजन-कार्य का बहाना लेकर रुपया इकट्ठा किया था। वह न गैर जिम्मेदार हैं न बेईमान। मेरी धारणा है कि हरिजन सेवक संघ की साख को क्षति पहुचाने के उद्देश्य से सरकार ने इस भ्रामक सूचना से काम लिया है। गवनर महोदय मुझसे व्यक्तिगत रूप से परिचित हैं और मुझे यकीन है कि यदि

सलाह मे ग्लूकोज को भी स्थान दिया गया है, पर यह खुराक पर्याप्त नही है। अत बापू शय्या पर ही विश्राम लेते रहे हैं। उन्हे चिंता नही है। इस स्वास्थ्य भग को वह प्रकृति की यह चेतावनी मान रहे हैं कि काम की गति धीमी की जाय।

यदि कल भी रक्तचाप आज जैसा ही रहा, तो बापू कल थोडा-सा दूध लेंगे। पर इसमे सदेह की गुजाइश नही है कि पूर्ण स्वास्थ्य लाभ के लिए उन्हे शाति और विश्राम की जरूरत है।

यह खबर निराधार है कि बापू को आराम और वायु परिवर्तन के लिए बबई जाने को राजी करने की कोशिश की जा रही है। यहा मे २ मील दूर आश्रम म जाने का विचार हो रहा था पर अब इसकी भी आवश्यकता प्रतीत नही होती क्योकि पिछले दो दिनो से स्वास्थ्य बराबर सुधरता जा रहा है। छत पर एक *छोटा सा तम्बू लगा दिया गया है बापू सारा दिन और पूरी रात शातिपूर्वक उसी* मे बिताते हैं।

महादेव देसाई

१२७

तार

१३ १२ ३५

महादेवभाई,
मारफत महात्मा गाधी
वर्धा

बापू के स्वास्थ्य के सम्बन्ध म बडी चिन्ता है। जोरदार सुझाव कि वह यात्रा योग्य हो तो दिल्ली मे उन्हे पूरा विश्राम मिलेगा। मौसम बडा सुदर है। रोज तार भेजा करो।

—बिडला

१२८

१३ १२ ३५

बिडला,
बिडला हाउस, अल्बूकक रोड,
नयी दिल्ली

रक्तचाप काफी कम ह। बापू पहल स कही अच्छे हैं। चिता की कोई बात नही है।

—महादेव

१२९

१९ दिसम्बर, १९३५

प्रिय श्री पिनेल

बगाल के शासन काय की १९३३ ३४ की जो वार्षिक रिपाट निकली है उसके पाचवें पष्ठ के ९वें पैरे और १०वें पष्ठ क २७वें परे की आर महामहिम गवनर का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हू। इन दोनो परो म हरिजन-सेवक सघ के काय का उल्लेख है। यह सघ मिस्टर गाधी के इतिहास प्रसिद्ध उपवास के बाद हरिजनोद्धार सम्ब धी काय म लगा हुआ है। मैं इस सघ का अध्यक्ष हू।

मेरी धारणा है कि उक्त परो मे हरिजन सेवक सघ के साथ घोर अ याय किया गया है। इस सघ का काय क्षेत्र विशुद्ध मानवीय है। राजनीति से इसका कोई सरोकार नही है। पडित जवाहरलाल को इस सघ क लिए रुपया इकटठा करने का कभी अधिकार नही दिया गया था, और जहा तक मैं जानता हू, उन्होने इस निमित्त कभी रुपया इकट्ठा नही किया। पडित जवाहरलाल नेहरू के राज नतिक दृष्टिकोण स मेरा मतभेद रहा है, पर मैं यह कदापि विश्वास नही कर सकता कि उन्हाने हरिजन काय का बहाना लेकर रुपया इकटठा किया था। वह न गर जिम्मेदार हैं न बेईमान। मेरी धारणा है कि हरिजन सेवक सघ की साख को क्षति पहुचाने के उद्देश्य स सरकार ने इस भ्रामक सूचना से काम लिया है। गवनर महोदय मुझसे व्यक्तिगत रूप स परिचित हैं और मुझे यकीन है कि यदि

मैं कहूं कि हरिजन सवक संघ एक विशुद्ध गर राजनतिक संस्था है जिसका एक मात्र काय दलितोद्धार है तो वह मेरी बात का विश्वास करेंगे। इसलिए रिपोट म संघ की बाबत प्रामाणिक उल्लेख रहना चाहिए था। २७वें परे म कहा गया है कि 'मिस्टर गांधी के कलकत्ता आगमन के बाद हरिजन-आंदोलन नि शेष हो गया और अब उसके बारे म कुछ भी सुनने म नही आता है।' हरिजन सवक संघ के आय-व्यय की जाच चाटड शुदा आडिटर करते हैं और उसकी रिपोट और आय व्यय का जाचा हुआ हिसाब प्रति वष प्रकाशित होता है। संघ की रिपोर्टों का समाचार-पत्र प्रमुख स्थान देते हैं। इसलिए यह बड परिताप का विषय है कि शासकीय रिपोट के रचयिता को संघ के काय के विषय म इतना घोर अज्ञान है।

मैं बंगाल सरकार के मुख्य सेक्रेटरी के पास हरिजन सेवक संघ की हाल की रिपोट भेज रहा हू। इस पत्र के द्वारा भी आपको यह बताना उचित समझता हू कि हमने १९३३ ३४ तथा १९३४ ३५ म हरिजन-काय पर प्रति वष ३ ३७,०००) अर्थात दोनों वर्षों मे ६ ७४,०००) खच किया। इनमे से ४,३६ ८३१) शिक्षा तथा १८ ८०६) सफाई व जल की व्यवस्था म खच हुआ। प्रति वष ५०० म अधिक कालेज और हाई स्कूल के छात्रों को छात्रवत्तिया दी गइ। ९०६ प्राथमिक पाठशालाए चलाई जाती रही और ७५ नि शुल्क छात्रावास रह। अकेले बंगाल म ही १२ महीनों म ४१ ०००) खच किये गये। हमारी साख क बारे म अब भी संशय रह गया हो तो कोई भी सरकारी प्रतिनिधि आकर हिसाब की जाच पड ताल करके अपना समाधान कर सकता है।

संघ के साथ घोर अन्याय हुआ है और उसके अध्यक्ष की हैसियत स गवनर महोदय का ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हू।

मुझसे संघ ने इस बाबत लिखने का आग्रह किया है। इधर मैं देखता हू कि पण्डित जवाहरलाल नहरू ने इस विषय पर एक वक्तव्य भी जारी किया है। इस मामले म किसी न भारी भूल की है। गलती तो गलती ही रहेगी और उस स्वीकार करना सदव वाछनीय है। मुझे इसम तनिक भी संदह नहीं है कि वसा करने स बंगाल सरकार की प्रतिष्ठा घटन के बजाय बढ़ेगी।

भवदीय
घनश्यामदास बिड़ला

श्री एल० जी० पिनल
एम० सी० आई० सी० एस०
बंगाल के गवनर के प्राइवेट सक्रेटरी
कलकत्ता

१३०

२१ दिसम्बर, १९३५

प्रिय लार्ड लिनलिथगो,

आपके २६ नवम्बर के पत्र के लिए धन्यवाद।

आशा है अब आपकी तबीयत ठीक होगी। मैंने भी टांसिला का आपरेशन कराया था। मेरा भी अनुभव उतना ही विषादपूर्ण रहा। आपने अपने टांसिल निकलवा दिये अच्छा किया। गले की व्याधि से पीड़ित लोगों के लिए दिल्ली कोई बहुत अच्छा स्थान नहीं है।

मेरा अनुमान है कि आप भारत के हालचाल को नजदीक से देख समझ रहे होंगे। यदि आप चाहें तो मैं बीच बीच में अखबारों की कटिंग भेजता रहूं।

साम्प्रदायिक समस्या सुलझने के बजाय दिन पर दिन जटिल होती जा रही है। स्थिति में स्थिरता लाने के लिए यह आवश्यक है कि मुसलमान प्रांतों में हिंदू तथा हिंदू प्रांतों में मुसलमान यह भली भांति समझ लें कि आखिर में उन्हें बहुसंख्यक जाति के शासन के अंतर्गत ही रहना होगा। वे जितनी जल्दी यह समझें या उन्हें समझा दिया जाय उतना ही सबके लिए कल्याणकारी होगा। मैं खुद हिंदू हूं इसलिए यह कहने में संकोच होता है कि यहां यह आम धारणा है कि भारत में स्थित और भारत के बाहर भी अंग्रेज लोग मुसलमानों का ही पक्ष लेंगे। वे चाहे जितनी ज्यादती करें और चाहे जैसा रवैया अपनाएं। कराची और लाहौर में इस धारणा को धक्का लगा है पर धारणा फिर भी मौजूद है। मुझे सम्प्रदायवादी कदापि नहीं कहा जा सकता, पर सतत प्रयत्न के बावजूद मैं अपनी इस धारणा से छुटकारा पाने में असमर्थ रहा हूं। सम्भव है मैं भी वातावरण का शिकार बन गया होऊं। जो भी हो, यह तो जाहिर ही है कि भारत में आपको काफी परेशानी का सामना करना पड़ेगा। पर मैं निराशावादी नहीं हूं, जहां एक बार हमने कठिनाइयों को चुनौती दी कि इलाज का पता लगते देर नहीं लगेगी।

सर सेम्युअल होर के इस्तीफे की खबर से बडा सदमा लगा। यह जाहिर है कि अवस्था दिन पर दिन जटिलतर होती जा रही ह।

भवदीय,
घनश्यामदास बिडला

राइट आनरेबल लाड लिनलिथगो,
२६, चशाम प्लेस
लदन एस० डब्ल्यू० १

१३१

२१ दिसम्बर, १६३५

प्रिय लाड लोदियन

इस पत्र के साथ भेजे कटिंग आपको दिलचस्प लगेंगे। मैं कुछ व्यग्र हुआ, क्योकि ऐसे नाजुक मामला म किसी तरह का प्रकाशन उद्देश्य को विफल कर देता है। ऐसा लगता है कि किसी समाचार पत्रवाले के हाथ इग्लैड के किसी बडे आदमी द्वारा भारत स्थित किसी दूसर बडे आदमी को लिखा गया पत्र पड गया है। उक्त समाचार पत्रवाला नाम प्रकट नही करना चाहता, पर यह जाहिर है कि उसकी पहुच सरकारी फाइलो तक है। यह मैं केवल आपकी सूचना के लिए लिख रहा हू।

सामत-सभा म आपकी स्पीच बहुत ही बढिया रही पर अब स्थिति और भी जटिल हो गई है। मुझ सर सेम्युअल होर पर तरस आता है। अब उनके साव जनिक काय म व्यवधान उपस्थित होगा ऐसा लगता है।

क्या यूरोपीय स्थिति से हम भारतवासियो को चिंतित होना चाहिए? आपका क्या विचार ह? भगवान न करें इग्लड किसी नये युद्ध म फस जाये।

भवदीय
घनश्यामदास बिडला

राइट आनरबल मार्क्विस आफ लोदियन,
सीमोर हाउस
१७ वाटरलू स्ट्रीट
लदन एस० डब्ल्यू० १

१३२

डी० ओ० ३८६४
गवनमट हाउस
कलकत्ता
२३ दिसम्बर १९३५

प्रिय श्री बिडला,

आपका १६ तारीख का पत्र मैंने गवनर महोदय के सामने रखा था। उन्होने मुझे आपको यह बताने का आदेश दिया है कि पडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा इग्लड म जारी किये गये प्रतिवाद पर वे पूरे तौर से गौर कर चुके हैं। हरिजन सेवक सघ के बारे म मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हू कि शासन-काय सम्बन्धी रिपोट म जो-कुछ कहा गया है वह उस सस्था की अथवा उसके काय की आलोचना के रूप म नही था, केवल यह आशका व्यक्त की गई थी कि कही इस आदोलन का दुरुपयोग तोड फोड की कारवाई म न होने लग। यदि आप पडित नहरू की एल्वट हाल म दी गई १८ जनवरी १९३४ की स्पीच पढेंगे तो देखेंगे कि उन्होंने अपने इस विचार का प्रतिपादन किया है कि जब कभी हरिजन-आदोलन को जोरा से चलाया जायगा तो सरकार के साथ सघप अनिवाय हो जायेगा। उन्होंने यह बात वस्तुस्थिति के रूप म बताई कि जिन लोगो ने आदोलन म जोरो के साथ भाग लिया उनका सरकार के साथ सघप हुआ है। आप शायद इस बात पर सहमत होग कि उनकी स्पीच का यह अथ लगाना अनुचित नही था कि उनके विचार में आदोलन के द्वारा ऐसी सम्भावनाए पैदा हो सकती हैं जिनसे उस क्रातिकारी काय को बल मिले जिसकी हिमायत म वह बोल रहे थे। हरिजन-सेवक सघ के काय की बाबत आपने जो कुछ कहा है उसे गवनर महोदय पूणतया स्वीकार करते हैं और यह कहना शायद अनावश्यक है कि दलित वर्गों के उत्थान का काय एक ऐसा काय है जिसके साथ सरकार की पूरी सहानुभूति है।

भवदीय,
एल० जी० पिनेल

श्री घनश्यामदास बिडला

सर सेम्युअल होर के इस्तीफे की खब
कि अवस्था दिन पर दिन जटिलतर हो

राइट आनरेबल लार्ड लिनलिथगो,
२६, चशाम प्लेस,
लन्दन एस० डब्ल्यू० १

प्रिय लार्ड लोदियन

इस पत्र के साथ भेजे कटिंग
क्योंकि ऐसे नाजुक मामलों में किसी
देता है। ऐसा लगता है कि किसी स
आदमी द्वारा भारत स्थित किसी दूस
है। उक्त समाचार पत्रवाला नाम
कि उसकी पहुच सरकारी फाइलो
लिख रहा हू।

सामंत सभा में आपकी स्पीच
जटिल हो गई है। मुझे सर सेम्युअ
जनिक कार्य में व्यवधान उपस्थित

क्या यूरोपीय स्थिति से हम
आपका क्या विचार है? भगवान

राइट आनरेबल मार्क्विस आफ लो
सीमोर हाउस
१७ वाटरलू स्ट्रीट
लन्दन एस० डब्ल्यू० १

खर्च करें। वह चाहें तो रुपये को किसी अच्छे काम में लगा सकते हैं, दिल्ली में ही लगाएं तो और भी उत्तम। हरिजन-सेवक संघ तो है ही। कृष्ण नगर का काम भी है, साथ ही डॉ० सुखदेव का ग्राम-कार्य भी है। इस विवरण से बापू को परेशान मत करना। यह केवल तुम्हारी सूचना के लिए है।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
मारफत महात्मा गांधी
वर्धा

१३५

२६ दिसम्बर, १९३५

प्रिय महादेवभाई,

बंगाल सरकार की शासन-कार्य-सम्बन्धी रिपोर्ट में हरिजन-आंदोलन के विषय में जो कुछ कहा गया है, उसे लेकर मैंने बंगाल के गवर्नर के साथ जो पत्र-व्यवहार किया, उसकी नकल इस पत्र के साथ भेजता हूं। बापू को इस मामले की जानकारी है। सेक्रेटरी का पत्र सहृदयतापूर्ण अवश्य है, पर उसमें मुख्य बात छुई तक नहीं गई है। यह जाहिर है कि गवर्नर की समझ में यह बात आ गई है कि भूल हुई है, पर जैसा कि सरकार करती आई है, ये लोग भूल स्वीकार करने में अपनी हेठी समझते हैं। मैं और अधिक पत्र-व्यवहार करना नहीं चाहता, पर गवर्नर से मिलूंगा तो यह प्रसंग भी उठाऊंगा। हरिजन-सेवक संघ के दृष्टिकोण से देखा जाय तो पत्र बुरा नहीं है, पर औचित्य का तकाजा है कि जवाहरलालजी के बारे में जो कुछ कहा गया है, उस पर खेद प्रकट किया जाय। सम्भव है, वे लोग इस दिशा में कुछ करें भी। मैं सेक्रेटरी को धन्यवाद का एक औपचारिक पत्र भेज रहा हूं, जिसमें यह सुझाव भी दूंगा कि खेद प्रकट किया जाए। यदि बापू को परेशानी न हो तो इस पत्र-व्यवहार का सार रूप में बता देना।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

१३३

२३ दिसम्बर, १६३५

प्रिय महादेवभाई

बापू के स्वास्थ्य के बारे मे सूचना देते रहने की कृपा करते रहो।

मैं सर जेम्स ग्रिग से अपन निवास-स्थान पर और सर हेनरी नेक से उनके निवास-स्थान पर मिला हू। यह जाहिर है कि मैं लन्दन म जो कुछ करता रहा उसकी इन दोना मे से किसी को जानकारी नही है।

कश्मीर रियासत के अथ मन्त्री श्री विनायक मेहता आई० सी० एस० मेरे यहा ठहरे हुए हैं। उनका कहना है कि अखिल भारतीय चरखा सघ द्वारा न्यूनतम वेतन दाखिल किये जाने के परिणामस्वरूप कश्मीरी कपडे के लिए लाल इमली और धारीवाल से होड लेना कठिन हो गया है। उन्होने कहा कि गाधीजी ने खादी का न्यूनतम वेतन निश्चित करके बडी भूल की क्योकि इसमे कश्मीर की खादी का सारा व्यापार चौपट हो जायगा। उनके कथन म तथ्य दिखाई पडता है। वह हिन्दुओ के प्रति काग्रेस के रुख की कडी आलोचना कर रहे थे।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
मारफत महात्मा गाधी
वर्धा

१३४

२५ दिसम्बर १६३५

प्रिय महादेवभाई

स्थानीय काग्रेसी लोग मेरे पास रजत जयती के लिए चदा मागने आये थे पर मैंने उन्हें कुछ नही दिया। जिन लोगो के साथ मेरे विचार मेल नही खाते उन्हें देने म मुझे उत्साह नही है। मैंने १०००) अलग रख छोडे हैं बापू जसे चाह

खच करें। वह चाहे ता रुपये को किसी अच्छे काम म लगा सकते हैं, दिल्ली म ही लगाए ता और भी उत्तम। हरिजन-सवक सघ तो है ही। कृष्ण नैयर का काम भी है साथ ही डा० सुखदव का ग्राम काय भी है। इस विवरण से बापू का परेशान मत करना। यह केवल तुम्हारी सूचना के लिए है।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
मारफत महात्मा गाधी
वर्धा

१३५

२६ दिसम्बर १९३५

प्रिय महादेवभाई

बगाल सरकार की शासन-काय सम्बधी रिपोट म हरिजन-आदोलन के विषय म जो कुछ कहा गया है उसे लेकर मैंने बगाल के गवनर के साथ जो पत्र व्यवहार किया उसकी नकल इस पत्र के साथ भेजता हू। बापू को इस मामले की जानकारी है। सेक्रेटरी का पत्र सहृदयतापूण अवश्य है पर उसम मुख्य बात छुई तक नही गई है। यह जाहिर है कि गवनर की समझ मे यह बात आ गई है कि भूल हुई है पर जसा कि सरकार करती आई है ये लोग भूल स्वीकार करने म अपनी हेठी समझते हैं। मैं और अधिक पत्र व्यवहार करना नही चाहता पर गवनर से मिलूगा तो यह प्रसग भी उठाऊगा। हरिजन-सेवक सघ क दष्टिकाण से दखा जाय तो पत्र बुरा नही है पर औचित्य का तकाजा है कि जवाहरलालजी के बारे म जा कुछ कहा गया है उस पर खेद प्रकट किया जाय। सम्भव है वे लोग इस दिशा म कुछ करें भी। मैं सेक्रेटरी का धयवाद का एक औपचारिक पत्र भेज रहा हू जिसम यह सुझाव भी दूगा कि खेद प्रकट किया जाए। यदि बापू को परशानी न हो ता इस पत्र-व्यवहार को सार रूप म बता देना।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

१३६

तार

डा० सुशीला नयर,
सेवाग्राम वधा

यहा आ गया हू। बापू के स्वास्थ्य का तार दो। आशा है उनके फेफडे साफ है। डाक्टर उचित समझें तो उन्हे बम्बई जस किसी नम आबोहवावाले स्थान पर जाना चाहिए। वही डाक्टरी चिकित्सा के लिए भी। बापू को अधिक वनानिक चिकित्सा की आवश्यकता बताओ।

—घनश्यामदास

१३७
सुधारो के बारे मे नोट
(हवाला सभी दलो के भाषण)

इग्लड म अग्रेजो की आम धारणा है कि नयी योजना के अन्तगत भारत को अपरिमित अधिकार सौप गये है।

१) मैं उनम स अनक से मिला हू और मेरी यह धारणा है कि उनका यह हार्दिक विश्वास है।

२) पर बिल का अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि सारे अधिकार गवनर जनरल तथा गवनरो के हाथो म केन्द्रित रहेग। (बिल के वाक्य विन्यास का हवाला)।

३) क्या इन परस्पर विरोधी तत्वो म ताल मेल बठाना सम्भव है ?

यह हो सकता है कि भारतवासियो की दृष्टि केवल सरक्षणो पर जमी हुई है जबकि अग्रेज लोग भविष्य म सुधारो की उपादेयता की आस लगाये बठे है।

ઈ ધનદયા મહાશય,

તુમારે સબ ખત ધ્યાનસે પઢતાહું
ઉસકો લિખનેકા સમય નહીં મિલતા
ં લિખનેકી ઇચ્છા ભી નહીં હોતીથી
ક્યા લિખું? પ્રતિદિનકી હાલત બદલતી
ઔર બનતી રહતીથી ઐસી હાલતમે
કુછ ભી લિખના અયોગ્ય જાનતાથા પુસ્તકે
દૂસરોંકા લિખના આવશ્યક થા ક્યોંકિ
સબકે જાનનેકા અસર જો કુછ
પડ સકતા થા વહ જાનને પડે ઇસમે
તુમારે ખતોંકા ક્યા અસર હોતાથા
મેં નહીં કહ સકતા હું ઇતના કહ
સકતા હું કિ વહાંસે જો ખત આતે થે ઉસકા
ઉત્તર કમ હોતાથા, યહાં જો કુછ હોતાથા
ઉસકા બહુત ઐસા કહીં મેરી હાલત
મસ્તાકીસી થી મસ્તાકો ભીતર સબ
કુછ હોતા હૈ કિ બાહરી ઉસકા વર્ણન નહીં

सम्भव है कि अग्रेज लोग सरक्षण को केवल जोखिम के समय बीमे के रूप म ग्रहण कर रहे है पर स्थिति का सर्वांगीण विश्लेषण करना बहतर रहगा।

४) स्वराज्य का माप दण्ड क्या है ? हम उत्तरदायित्वपूण सरकार के लिए निम्नलिखित मुद्दो को माप दण्ड के रूप म ग्रहण करना चाहिए

(अ) कि हमे उद्योगो, जहाजरानी साहूकारी तथा बीमे के विकास प्रसार और रक्षा करने की स्वतन्त्रता रह। हम सभी विदेशी कपनियो के मुकाबले मे इनकी रक्षा करने म समथ हैं।

(आ) कि हम अपनी साख और मुद्रा का राष्ट्रीय हित मे उपयोग करन मे समथ हो। यदि हम एसा करन में समथ नही हुए तो हमारे माग मे जो अडचनें डाली जायेंगी, क्या वे ससार के अन्य देशो की सरकारो की अडचनो स भिन्न होगी ? उदाहरण के लिए इग्लड और फ्रास का उल्लेख किया जा सकता है जहा निगम वको ने सरकार की सहायता करने स इन्कार कर दिया है। रिजव बैंक का ढाचा हमारी किस हद तक मदद कर सकेगा ?

(इ) कि हम रेलो का उपयोग राष्ट्रीय हित म कर सकें, रेल के अमले का भारतीयकरण कर सकें तथा रेलवे अपना सामान भारतवासियो स खरीद सके तथा ठेके भारतीयो को दे सके।

(ई) कि हम सना पर नियन्त्रण रख सकें। हम नियन्त्रण का पूरा अधिकार किस रूप म मिलेगा, तथा हम सेना का भारतीयकरण करने मे कस और कब समथ होंगे ? यह बात नौसना और वायुसेना पर भी लागू होती है। क्या हम शासन के वतमान खर्चीले ढाचे म मितव्ययिता लागू कर सकेंगे ?

(उ) हमे पुनप्राप्ति स सम्बधित प्रोग्राम लागू करन का अधिकार होना चाहिए, जिसस समृद्धि का समान वितरण हो, ठीक जिस प्रकार अन्य देशो मे किया जा रहा है। हम सफाइ, शारीरिक बलवद्धि तथा शिक्षा के क्षेत्रो म अधिक बेहतर प्रोग्राम काम म लाने का अधिकार होना चाहिए। वसा अधिकार मिलन पर हम कर-व्यवस्था म सशोधन कर सकेंगे जिसके फलस्वरूप समृद्धि के समान वितरण का काय सहज होगा। क्या हम हथियारो के लाइसेंस अधिक उदारता क साथ जारी कर सकेंगे ?

(ऊ) कि हमें अपने सरकारी अमले पर नियत्रण करने का अधिकार रहना चाहिए। मैं समझता हू कि सुधारो की उपादेयता की यही कसौटी

है। हम एक एक करके हरएक विषय से निपटेंगे, जिससे यह दिखाया जा सके कि बिल में क्या क्या प्रतिबंध रखे गये हैं, उनपर किस प्रकार काबू पाया जा सकता है, और इस कार्य मे हमे कैसे और कब सफलता प्राप्त होगी।

अवस्था का विश्लेषण करते समय यह नही भूलना चाहिए कि हमें अधिकार निश्चित रूप से तो नही मिलेंगे, पर हम अपने प्रभाव के द्वारा उनका उपयोग कर सकते हैं। अंग्रेज का दिमाग शासन-व्यवस्था प्रिय दिमाग है। सरक्षण रहेंगे और ब्रिटिश शासन व्यवस्था में भी सरक्षणो का समावेश है। अन्तर इतना ही है कि इंग्लैड की सरकार राष्ट्रीय सरकार है, जबकि हमारी सरकार सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय सरकार नही होगी। पर जब यह प्रश्न उठेगा कि यदि हम सरक्षण नही चाहते, तो सरक्षणो का प्रयोग कौन करेगा ? इन सारे पहलुओ का सम्यक विश्लेषण होना चाहिए और उनपर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए।

एक अन्य विचारणीय प्रश्न यह है कि द्वितीय सदन जनमत प्राप्त बातो की किस हद तक अवमानना करेगा। क्या यह सम्भव है कि सरकार काग्रेसी सरकार न हो बल्कि नरम दलवालो की सरकार हो, क्योकि किसी मंत्री को द्वितीय सदन में भी लिया जा सकता है ? मतदाताओं के आधार पर काग्रेस की शक्ति का विश्लेषण करना होगा और यह देखना होगा कि काग्रेस किस प्रांत में बहुसख्यक साबित होगी। कलकत्ता कार्पोरेशन के कार्य का भी विश्लेषण करना है क्योकि उसका सचालन लोकप्रिय लोगो के हाथो में है। सरक्षण वास्तव में क्या चीज है तथा उन्हें किस रूप में प्रयुक्त किया जा रहा है ? यदि सरक्षण न रखे जाते तो क्या अराजकता फैल जाती ?

१२८

भारत की राजनैतिक स्थिति के बारे में कुछ टिप्पणियां

भारत और ब्रिटेन को एक सूत्र मे बाधने के लिए इर्विन गाधी पैक्ट एक भारी प्रगतिशील कदम था। उसने एक परिपाटी को जन्म दिया। उसने अव्यवस्था के माध्यम से राजनैतिक प्रगति की प्रणाली की जड पर कुठाराघात किया, और

उसके रिक्त स्थान पर आपस की बातचीत और विश्वास की प्रणाली को प्रतिष्ठित किया। पर उसका मम उसके रचयिताओं तथा कतिपय अन्य व्यक्तियों के अलावा किसी ने ग्रहण नहीं किया। समझौते की स्याही अभी सूखी भी नहीं थी कि समझौता करनेवाले देश से विदा हो गए। यदि वे भारत में ही रहते, तो समझौता जीवित रहता। आरम्भ में ही सरकारी अमले और साधारण कांग्रेसियों ने समझौते के भिन्न भिन्न और गलत अर्थ लगाए। कांग्रेसी लोग लडना तो जानते थे पर मेल मिलाप की कला से अनभिज्ञ थे। इधर अधिकारी वर्ग ने 'बन्धमनी' फैलानेवाले आदमी के प्रति अपनी नापसन्दगी को छिपाने की कभी कोशिश नहीं की। इस प्रकार समझौते ने दोनों क्षेत्रों में अलग अलग कारणों से मन मुटाव पैदा कर दिया और पहला अवसर मिलते ही उसे दफना दिया गया।

इसके बाद संघर्ष के दूसरे दौर और आर्डिनेंसों का प्रारम्भ हुआ। गांधीवाद के विरुद्ध प्रतिक्रिया का जन्म हुआ। अपने विशुद्ध रूप में गांधीवाद अहिंसा और सत्य का प्रतीक है और स्वयं कष्ट उठाकर अंग्रेजों के हृदय परिवर्तन में विश्वास रखता है। उसमें घृणा के लिए कोई स्थान नहीं है। पर वास्तव में घृणा प्रचुर मात्रा में देखने में आई क्योंकि सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लेनेवालों ने उसे विशुद्ध रूप से नहीं अपनाया। अतिवादियों ने उसका उपयोग तो किया पर उसमें उनकी आस्था नहीं थी। उनका साध्य था—राजनैतिक स्वतंत्रता साधना की उन्हें चिन्ता नहीं थी। फलतः कांग्रेस की "पराजय" ने एक नयी शक्ति को जन्म दिया, जिसका सिद्धान्त बिलकुल भिन्न था।

'आमरण उपवास' और अस्पृश्यता निवारण आन्दोलन के बाद स्थिति ने ठोस रूप ले लिया। अतिवादियों को गांधीवाद की उपादेयता में पहले से ही विश्वास नहीं था। अब वे वामपंथियों की ओर ढुलकने लगे। साथ ही जनमत का एक अन्य महत्त्वपूर्ण अंग विधान सभाओं के बहिष्कार की क्षमता में विश्वास करने लगा। जब यह नौबत आ पहुँची तो गांधीजी ने देखा कि संसदीय मनोवृत्ति ने स्थायी रूप से घर कर लिया है। उन्होंने यह भी देखा कि हिंसा अहिंसा का छद्म वेश धारण करके कांग्रेस में आ घुसी है। फलतः उन्होंने सविनय अवज्ञा आन्दोलन उठा लिया और हरिजन-कार्य तथा ग्रामोद्धार के द्वारा सामाजिक धार्मिक और आर्थिक दूषणों पर ध्यान केंद्रित किया जिससे कांग्रेस का परिमार्जन हो सके। गांधीजी का हमेशा से यह विश्वास रहा है कि स्वराज्य आयेगा तो भीतर से ही आयेगा बाहर से नहीं। जब उन्हें लगा कि उनके विचार लोग मान ही जाय, वे हृदयंगम नहीं होंगे, तो उन्होंने कांग्रेस की सक्रिय सदस्यता छोड़ दी।

व्यवस्थापिका सभा के भंग होने से 'संसदीय मनोवृत्ति' में एक नयी स्फूर्ति

आ गई। अतिवादियों को यह मनोवृत्ति अच्छी नहीं लगी क्योंकि उन्हें आशंका थी कि उसे लेकर जनता का ध्यान कार्यक्रम की ओर से हट जायगा। पर वे इस मनोवृत्ति का प्रतिरोध करने में असमर्थ रहे। निर्वाचित कांग्रेसी लोग व्यवस्थापिका सभा में बड़ी संख्या में आ गए। व्यवस्थापिका सभा के कांग्रेसी सदस्यों के नेता श्री भूलाभाई देसाई की मनोवृत्ति और स्पीचों की गृह-सदस्य ने सराहना तो की पर मानवीय सम्पर्क की नौबत कभी नहीं आई। सरकार ने पारस्परिक सम्पर्क और आपस की बातचीत की उपादेयता का महत्त्व नहीं समझा और न उससे लाभ उठाया। उसकी यह बहुत बड़ी गलती थी। सत्र की समाप्ति के दिनों में विपक्षी दल की स्पीचें उत्तरोत्तर उत्तरदायित्वशून्य होती गई। वाइसराय की मुलाकातियों की किताब में कांग्रेसी सदस्यों ने हस्ताक्षर करने से इन्कार करके उनके मनोभावों को ठेस पहुंचाई। खाई चौड़ी होती गई। अतिवादियों को बल मिला। हाल ही में जबलपुर में कांग्रेस कार्यकारिणी की जो बैठक हुई उसमें व्यवस्थापिका सभा में कांग्रेसी सदस्यों के कार्य के सिंहावलोकन के अवसर पर इन अतिवादियों ने (अर्थात कांग्रेस समाजवादी दल ने) संसदीय कार्य प्रणाली में विश्वास रखनेवाले वर्ग के खिलाफ खुल्लम खुल्ला विद्रोह कर दिया। अनेक अतिवादी प्रस्ताव पास किये गए और इस वर्ग की विजय हुई जो वास्तव में नाम मात्र की विजय थी। दक्षिणपंथियों की विशेषकर चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की व्यवहार कुशलता तथा बुद्धिमत्ता ने स्थिति को बचा लिया। इस प्रकार कांग्रेस का दक्षिणपंथी वर्ग दो मोर्चों पर जुटा हुआ है—एक मोर्चा सरकार का और दूसरा मोर्चा कांग्रेस समाजवादी दल का। समाजवादी वर्ग नेताओं पर यह कहकर सीधा प्रहार कर रहा है कि वे कुछ भी कर दिखाने में असमर्थ रहे हैं। सरकार दक्षिणपंथियों की उपेक्षा करके अप्रत्यक्ष रूप से वामपंथी वर्ग की सहायता कर रही है। चक्की के इन दो पाटों के बीच में फंसकर दक्षिणपंथी वर्ग चकनाचूर हो रहा है। इसके दो ही परिणाम हो सकते है—या तो दक्षिणपंथी मैदान से हट जायगे और वामपंथियों को अपना पाया मजबूत करने के लिए स्वतन्त्र छोड़ देंगे या फिर वे भी सुधारों के विरुद्ध वातावरण का निर्माण करने के हेतु कोई अनिवार्य योजना अपनाकर लोकमत को अपनी ओर करने में लग जायेंगे। वर्तमान वातावरण का कांग्रेस के दक्षिणपंथी वर्ग के मानस पर यही प्रभाव पड़ा है। उधर मुसलमानों में इस वातावरण के कारण यह धारणा दृढ़ हो गई है कि वे कुछ भी करते रहें, सरकार आंखें बंद किये रहेगी। हाल ही में मुसलमानों की एक सार्वजनिक सभा में यह प्रस्ताव पास किया गया कि अमुक हिंदू को पैगम्बर की आलोचना करने के लिए मृत्यु दंड स्वीकारना होगा। पुलिस को इसका तुरत पता लग गया,

पर वह उस हिंदू के प्राण बचाने मे असमर्थ रही। किसी भी खतरनाक स्थिति का परिणाम दूरगामी होता है। जब सरकार कोई कठोर कारवाई करती है, जैसा कि कराची म किया गया तो उसकी तीव्र प्रतिक्रिया होती है।

इस वातावरण से सरकारी अमला भी प्रभावित हुए बिना नही रह सका है। ऐसी मनोदशा का, जो किसी भी लोकप्रिय आन्दोलन को सदेह और विरोध की भावना से देखती हो, आगे चलकर गम्भीर परिणाम हो सकता है। ऐसी स्थिति मे रचनात्मक काय ठप होकर रह जाता है। सरकार कानून और व्यवस्था बनाये रखने म लगी रहती है और जनता उसका प्रतिरोध करने म।

और अत म सरकार द्वारा जनता के विश्वासी नेताओ को क्वेटा जाने की अनुमति न देने की घोषणा से देश भर म रोष की लहर फैली है जिसके फल स्वरूप स्थिति म और अधिक तनाव पदा हो गया है।

भारत का नया शासन विधान ऐसे ही वातावरण मे लागू किया जायेगा, जिसम न तो पारस्परिक सम्पक है न एक-दूसरे पर भरोसा करने की प्रवत्ति है।

इग्लड मे भारत के प्रति सच्ची सहानुभूति और सदभावना देखने म आती है और लोगो का हार्दिक विश्वास है कि शासन विधान एक प्रगतिशील कदम है और इसके द्वारा भारत को अपने लक्ष्य बिन्दु के माग पर आगे बढने मे सहायता मिलेगी। इस नेकनीयती पर इग्लड के लोगो को तो भरोसा है, पर भारत के लोगो को नही है। भारत के लोग तो ऐसी भावना के अस्तित्व तक स अनभिज्ञ हैं। भारत म इस समय इस शासन विधान के प्रतिकूल वातावरण है। वहा कोई भी यह विश्वास करने को तैयार नही है कि साझेदारी, मत्री तथा सदभावना के अभाव मे चल सकती है। भारत मे लोग इस बिल का पारायण करते हैं तो गवनर-जनरल तथा गवनरो के हाथो म जो अपरिमित अधिकार केंद्रित किये गये है उन धाराओ की भाषा का शाब्दिक अथ ही लगाते हैं। मैत्री के वातावरण म ही यह कबूल हो सकता है कि परिमाजन सबधी अधिकारो की व्यवस्था सभी शासन विधानो म रखी जाती है इस दष्टि से कोई खास बात नही है।

यदि शासन विधान को सफलतापूवक और दोनो देशो के हिताथ अमल म लाना है, तो वतमान वातावरण म सुधार करने के लिए कुछ-न-कुछ तुरत करना अत्यावश्यक है। एक नये ढग की भावना का सृजन करना होगा। गाधी इर्विन पक्ट के तुरत बाद जो भावना थोडे समय के लिए बनी थी, उसमे नये प्राणो का सचार करने की जरूरत है।

भारत के समझदार स्त्री-पुरुष ब्रिटेन की सहायता को आवश्यक समझते हैं। वे ब्रिटिश मत्री की अभिलाषा रखते हैं। प्रश्न यही है कि यह कथावर सफल हो। यदि एक ओर इस बात को ध्यान म रखा जाये कि सरकार की मान-मर्यादा का आच न आये तो दूसरी ओर जनता के स्वाभिमान और गौरव को भी नहीं भुलाया जाना चाहिए।

इस लक्ष्य को ध्यान म रखकर मैं निम्नलिखित सुझाव पेश करने का साहस करता हू

१) सबसे पहला कदम पारस्परिक सम्पर्क स्थापित करने की दिशा म उठना चाहिए। इस सपर्क को आग चलकर व्यापक रूप दिया जा सकता है जिससे दोनो पक्ष एक दूसरे के दृष्टिकोण को पूरी तरह समझ सकें। यह सम्पर्क अनौपचारिक हो और इसके दौरान राजनतिक विषयो की चर्चा न की जाए। इसस किसी को परेशानी भी नही होगी और अटकलबाजी का बाजार भी गम नहीं होगा।

२) इस सम्पर्क का बराबर विकास किया जाय जिससे आपस म समझदारी की भावना को बल मिले। यदि दिल्ली म इस प्रकार के काय की सफलता सदिग्ध प्रतीत हो तो यह काम सर जान एण्डसन जसे किसी आदमी क जिम्मे करना चाहिए।

३) यदि इस काय की अतिम रूप रेखा निश्चित करने की जिम्मेवारी वाइसराय के लिए रख छोडी जाये तो अतरिम अवधि म इसके लिए जमीन तयार कर ली जाए जिससे खाई और चौडी न होने पाये।

४) सबसे अच्छा वातावरण इग्लड म है इसलिए क्या मिस्टर गाधी को किसी अन्य मिशन के बहाने इग्लड नही बुलाया जा सकता। मुझे याद पडता है कि सन १६२६ म उन्हे इग्लड के धम धुरन्धरा न अथवा किसी विश्वविद्यालय ने आमत्रित किया था।

५) आगामी शरद् ऋतु म कई एक कमीशना के भारत आने की सम्भावना ह। क्या इनम स किसी म शामिल हाकर भारत सचिव अथवा भावी वाइसराय के लिए वहा जाना सम्भव नही है ?

६) अत म किन्तु समान रूप से विचारणीय प्रश्न दोना पक्षा के विचारो को किसी तीसरे व्यक्ति के माध्यम से सग्रह करन का है। इससे दोनो ओर स यथोचित घोषणाओ का काय सहज हागा। वसी स्थिति म पारस्परिक सम्पर्क स्थापित करन का काय घोषणाओ के बाद हाथ मे लिया जा सकता है।

१३६

बिडला हाउस,
लाल घाट,
बनारस

प्रिय महादेवभाई,

आशा है बापू ने ठक्कर बापा द्वारा राजाजी को लिखे पत्र की नकल देख ली होगी, इसमे बताया गया है कि किस प्रकार लोगो को ईसाई बनाया जा रहा है, किस प्रकार मदिरो को अपवित्र किया जा रहा है और किस प्रकार उनमे से एक को रोमन काथलिक गिरजे के रूप मे बदल दिया गया है। मै कोई टीका टिप्पणी करना नही चाहता क्योकि इस विषय पर लिखते समय अपने-आपको काबू मे रखना असम्भव सा है। हिन्दू मदिरो को तोडने के अभियोग मे मिशनरियो पर मुकदमा चलाने योग्य कोई कानून है या नही मैं नही जानता। एक हिन्दू मदिर हिन्दू मदिर ही रहेगा, और यदि गाव के लोग ईसाई बन जाय तो उसके बाद उस मदिर पर उनका कोई अधिकार रह जाता है या नही सो भी मैं नही जानता, भले ही वह मदिर उन्होने ही बनवाया हो। यदि उक्त मिशनरी का यह काम गैर-कानूनी था, तो उस पर मुकदमा क्यो नहीं चलाया जाना चाहिए? मुझे यकीन है कि ईसाई लोग पादरी की इस करतूत पर अवश्य लज्जित होगे। जो भी हो गैर जिम्मेवार ईसाइयो के आक्रमणो से हिन्दू धर्म की रक्षा के निमित्त कुछ-न-कुछ करना नितान्त आवश्यक है। यदि इस मामले को हाथ मे लेने मे शिथिलता बरती गई तो ईसाइयो को बढावा मिलेगा और ऐसी घटनाओ की पुनरावृत्ति होगी जो स्वय ईसाइयो के हक मे बुरी सिद्ध होगी। आशा है बापू यह प्रसग हरिजन मे उठायेंगे। जब जनता को इस बात का पता चलेगा, तो *हिन्दुओ मे सनसनी फैलना निश्चित है और वे अवश्य भडक उठेंगे।* पर किया क्या जाए, लाचारी है। जो कुछ हुआ है स्वय मसीही धर्म के विरुद्ध है। मुझे आशा है कि बापू इस मामले के साथ जिस ढग से उचित समझेंगे अवश्य निपटेंगे।

सर जाज शुस्टर के पत्र की नकल भेज रहा हू। पत्र सुन्दर है और उसकी

नेक-नीयती का साक्षी है। यदि मैं यह पत्र उसके द्वारा बापू के नाम प्रेषित कर सका तो उनके पास अवश्य भेजूंगा।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
मारफत महात्मा गांधी,
वर्धा

१९३६ के पत्र

१

वर्धा
१ जनवरी, १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपके कई पत्रो का उत्तर मैं नही द पाया हू। पर मेरी बेबसी पर दया कीजिए। काम का पहले से ही काफी बोझ था इधर बापू की अस्वस्थता स यह बोझ और बढ गया है।

जयन्ती के लिए आपका दान आपके अनुरूप ही है। इस विषय पर दिल्ली म आप बापू से बातचीत करेंगे ही।

विनायक मेहता क सबध मे आपके मन्तव्य का समझता हू क्योकि उसके दृष्टिकोण से मैं परिचित हू। परन्तु खादी के और हिन्दुओ क प्रति काग्रेस के रवये के सबध म उसन जो कुछ कहा हे उसमे काई तथ्य नही है। यदि न्यूनतम वतन वाला मुद्दा सफल हुआ तो शुरू शुरू म खादी क धधे को आशिक रूप से धक्का लगेगा। इस विषय मे काग्रेस के दृष्टिकोण से आप स्वय भी भली भाति परिचित है मैं क्या बताऊ। विनायक मेहता का दृष्टिकोण लगभग महासभाई दृष्टिकोण जसा है।

आपके २९ तारीख के खत का मजमून मुझे नही भाया। बापू को इस सबध म बहुत-कुछ कहना है पर अभी न यह सम्भव है न आवश्यक ही। अगल हफ्त मिलेंग तब बातचीत हो जायेगी।

हम ३ तारीख को अहमदाबाद के लिए रवाना हा रहे है, २९ तक वही रहग। ३० को यहा वापस लौटेंगे। फरवरी म दिल्ली पहुचेंगे। बापू यहा २ दिन के लिए क्या आना चाहते हैं मैं स्वय नही जानता। पर वह एक बार जो निश्चय कर लेते हैं उसस उन्हे डिगाना सभव नही है। उनका रक्तचाप प्राय पहले जमा ही ह हा, ऊपर की ओर अब उतना नही जाता। डॉक्टर ने अधिक आराम करन की सलाह दी है। रक्तचाप क साधारण अवस्था म आने म काफी देर लगेगी। मैं उनका काय भार हल्का करन की भरसक कोशिश करता हू पर मर काय का मूल्य तो सीमित ही है। कुछ ऐसी चीज हैं जिन्हे केवल बापू ही कर सकते हैं और न्याय भी यही है कि वे ही उन्हें करें। उतन काम से उन्ह मुक्त करन की कोशिश निरर्थक ही है।

२

तार

६ १ ३६

महादेवभाई देसाई,
मारफत महात्मा गाधी,
वर्धा

बापू कैसे हैं ?

—घनश्यामदास

३

तार

७ १ ३६

घनश्यामदासजी,
बिडला हाउस, दिल्ली

अटूट विश्राम के बावजूद रक्तचाप भयकर।

—महादेव

४

तार

८ १ ३६

महादेवभाई,
वर्धा

मुझे सूचित रखना। विघ्न न पडे इसलिए नही आ रहा हू पर जरूरत हो तो तार देना।

—घनश्यामदास

७

वर्धा
१४ १ ३६

प्रिय घनश्यामदासजी

इधर कई दिनो से मैं आपको पत्र नही लिख पाया। समझा कि हिन्दुस्तान टाइम्स' को भेजे तार ही पर्याप्त होंगे। पर अब सविस्तार लिखना चाहता हू। बापू के रक्तचाप ने सबको चक्कर मे डाल दिया है डाक्टरो को भी। इसके कई कारण हो सकते हैं पर यह बराबर क्या बना रहा इसका कोई निदान नही कर पाया। दात निकलवाने से एक स्पष्ट शारीरिक कारण तो दूर हुआ और इसमे रक्तचाप म थोडी गिरावट भी आई। पर यहा के और बम्बई के सुदक्ष डाक्टरो के निदान मे मतभेद है। स्थानीय डाक्टरो की राय म रक्तचाप का कारण आशिक रूप से हृदय का फलाव हो सकता है इसलिए उन्होने पूर्ण विश्राम की सलाह दी। २४ घण्टे लेटे रहना तथा कोई शारीरिक श्रम नही करना। उधर बम्बई के डाक्टरो का कहना है कि हृदय बिलकुल स्वस्थ अवस्था म है उनकी राय रही कि थोडा व्यायाम किया जाय। व्यायाम करके बापू पौष्टिक पदार्थ भी कुछ अधिक मात्रा म ले सकेंगे। यो अब उन्होने थोडा दूध लेना शुरू कर दिया है और कुछ टहलते भी हैं पर कमरे म ही।

फिर बम्बई के डाक्टरो की राय म उनकी पूर्ण चिकित्सा के लिए यह आवश्यक है कि उन्हे बम्बई ले जाया जाए जहा उनके मूत्र रक्त शक्कर और गुर्दे का पूर्ण रूप स परीक्षण हो सके। अभी तीन दात और बाकी है, दो तीन पुरानी ठूठें भी हैं। इन सबको भी बम्बई म निकलवाना है। इसके बाद वह अहमदाबाद जाएगे। वायु परिवर्तन भी हो जाएगा। धन संग्रह पहले ही हो गया है इस बार मे कोई चिन्ता नही है। साथ ही उन्हे कुछ दिनो के लिए अपने मध्य पान का सतोष गुजरात को रहेगा। इन दिनो वहा मौसम प्राय ठीक ही है। दिल्ली के बारे मे अभी कोई फसला नही हुआ है। बापू का विचार वहा फरवरी के मध्य म जाने का है पर उन्होने इसका निर्णय डाक्टरो पर छोड दिया है।

अब चिन्ता का कोई कारण नही है। रक्तचाप जिस तरह बना रहा उससे हम सबको चिन्ता हो गई थी, पर अब १० दिन पहले-जसी कोई बात नही है और स्थिति म उत्तरोत्तर सुधार स्पष्ट दिखाई पडता है। बापू पहले की तरह प्रसन्न हैं शायद पहले से भी अधिक। सब-कुछ स्वाभाविक रूप स ग्रहण करते

६

बिड़ला हाउस,
नयी दिल्ली
१३ जनवरी, १९३६

महामहिम

शासन कार्य सबधी सरकारी रिपोर्ट म जवाहरलालजी का जो जिक्र आया है, उसके सबध म दिया गया वक्तव्य जब पत्रो म छपा तो मैं राजपूताना के अपने गाव (पिलानी) म था। अब दिल्ली लौटते ही इस कदम के लिए आपको बधाई का सदेश भेज रहा हू।

दुर्भाग्य स मेरे देखने म आया है कि सरकारी हल्को म एसी टेव सी बन गई है कि यदि कोई गलत कदम उठा लिया तो उसी पर अडे रहना क्योकि उनकी राय म अपनी गलती स्वीकार करने म सरकार की हेठी होती है। उधर दूसरी ओर मैंने अपने भारतीयो म यह धारणा बद्धमूल हुई देखी है कि गलत कदम उठाने के बाद सरकार की ओर स न्याय और औचित्य की आशा करना ही व्यर्थ है। मेरी अपनी राय है कि इस प्रकार की धारणाओ स सरकार की मर्यादा को आच आती रही है और यह एक ऐसा तथ्य है कि जो सरकारी हल्के मानने को तैयार शायद ही कभी पाये जाते हो। आपने यह साहसपूर्ण कदम उठाया है इससे सरकार की मर्यादा नि सदेह ऊची उठी है। भारतीय पत्रो की टिप्पणियो से मेरे इस कथन की पुष्टि होती है।

बस इस प्रकार के कदम अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण राजनैतिक सन्दर्भ मे चाहे साधारण स लगते हो पर इनस दोनो पक्षो के बीच म एक-दूसरे को समझने की दिशा म अवश्य सहायता मिलती है और इस समय इसीकी सबसे अधिक दरकार है। पिछले कुछ वर्षों म मेरे देखने मे ऐसे उदाहरण अधिक नही आए है जब सरकार की ओर स ऐसे सत्साहस का परिचय मिला हो। मैं ऐसे अवसरो का उल्लेख करने का लोभ सवरण नही कर पाया।

आपका विनीत
घनश्यामदास बिड़ला

हिज एक्सीलेंसी सर जान एण्डर्सन
बगाल के गवर्नर
कलकत्ता

७

वर्धा
१४ १ ३६

प्रिय घनश्यामदासजी

इधर कई दिनो से मैं आपको पत्र नही लिख पाया। समझा कि हिंदुस्तान टाइम्स' को भेजे तार ही पर्याप्त होंगे। पर अब सविस्तार लिखना चाहता हू। बापू के रक्तचाप ने सबको चक्कर मे डाल दिया है डाक्टरो को भी। इसके कई कारण हो सकते है पर यह बराबर क्यो बना रहा इसका कोई निदान नही कर पाया। दात निकलवाने से एक स्पष्ट शारीरिक कारण तो दूर हुआ और इससे रक्तचाप मे थोडी गिरावट भी आई। पर यहा के और बम्बई के मुख्य डॉक्टरो के निदान म मतभेद है। स्थानीय डाक्टरो की राय म रक्तचाप का कारण आशिक रूप स हृदय का फलाव हो सकता है इसलिए उन्होने पूण विश्राम की सलाह दी। २४ घण्टे लेटे रहना तथा कोई शारीरिक काय नही करना। उधर बम्बई के डाक्टरो का कहना है कि हृदय बिलकुल स्वस्थ अवस्था म ह उनकी राय रही कि थोडा व्यायाम किया जाय। व्यायाम करके बापू पौष्टिक पदाथ भी कुछ अधिक मात्रा म ले सकग। सो अब उन्होने थोडा दूध लना शुरू कर दिया है और कुछ टहलत भी हैं पर कमरे में ही।

फिर बम्बई के डाक्टरो की राय मे उनकी पूण चिकित्सा क लिए यह आवश्यक ह कि उन्हें बम्बई ले जाया जाए जहा उनके मूत्र रक्त शक्कर और गुर्दे का पूण रूप स परीक्षण हो सक। अभी तीन दात और बाकी हैं दो-तीन पुरानी ठूठें भी हैं। इन सबको भी बम्बई म निकलवाना ह। इसक बाद वह अहमदाबाद जाएग। वायु परिवतन भी हो जाएगा। धन सग्रह पहल ही हो गया है इस बार में कोइ चिन्ता नही ह। साथ ही, उन्ह कुछ दिनो क लिए अपन मध्य पान का सतोष गुजरात का रहेगा। इन दिनो वहा मौसम प्राय ठीक ही है। दिल्ली के बारे मे अभी कोई फसला नही हुआ है। बापू का विचार वहा फरवरी के मध्य मे जाने का है पर उन्होन इसका निणय डाक्टरो पर छोड दिया ह।

अब चिन्ता का कोइ कारण नही ह। रक्तचाप जिस तरह बना रहा, उसस हम सबको चिन्ता हो गई थी पर अब १० दिना पहल-जसी कोई बात नही है और स्थिति म उत्तरोत्तर सुधार स्पष्ट दिखाई पडता है। बापू पहले की तरह प्रसन्न हैं शायद पहल से भी अधिक। सब-कुछ स्वाभाविक रूप स ग्रहण करत

हैं। परशानी पास भी नही फटकन देत, और हम उन्हे जितना विश्राम लेन देते है, लेते हैं। विश्वास रखिए, यदि चिन्ता का काई लक्षण दिखाई देता, तो मैं आपको तुरत तार भेजता। सप्रेम

आपका,
महादेव

८

वर्धा
१५ १ ३६

प्रिय घनश्यामदासजी

बापू की तबीयत के बारे म आपको कल विस्तारपूर्वक लिख ही चुका हू। आज और अधिक कुछ लिखना नही है। आज वह कल स भी अधिक प्रफुल्ल दिखाई देते हैं पर उन्हें पूर्ण विश्राम की जरूरत है इस बारे म जरा भी शका नही है। तीन घटे और कभी कभी तो चार घण्टे सोते हैं विशेषकर जब मौन धारण करते हैं। साफ जाहिर है कि उन्हें काफी समय के लिए मौन और विश्राम की आवश्यकता है। कह नही सकता उन्हे कुछ दिना के लिए देश स बाहर ले जाना सम्भव है या नही। किसी अन्य दश म नही ता किसी समुद्र तट पर ही सही। एक महीने के लिए न हो तो कम-स-कम एक पखवाड़े क लिए ही सही। वस पहले से अधिक स्वस्थ खश और प्रफुल्लित हैं। उनकी दत विहीन मुस्कान पहले स भी अधिक लुभावनी है पर उन्होने एक बार मुझ स कह ही दिया कि मुझ किसी का अपने पास तक फटकना अच्छा नही लगता क्योकि तब मुझ बालना पडेगा और मैं थाडा भी बोलता हू तो थक जाता हू। यह हम लोगा क लिए गम्भीर चेतावनी है।

अब आपकी १२ जनवरी की चिट्ठी क बारे म। सच कह दू मुझे दोनो म से कोई भी पत्र अच्छा नही लगा बापू को भी। पर यह विषय क्या पत्रा द्वारा चर्चा करने योग्य है ? बाद म कभी बात करेंगे। खालिस भूल स्वीकार ठीक रहता। जो सफाई दी गई है वह मूर्खतापूर्ण है। इसस तो सरकार की पोजीशन और भी भाडी हो गई। आप कहेंगे कुछ न होन स तो कुछ होना अच्छा है। पर मेरी राय दूसरी है।

आप पिलानी क सम्बन्ध मे कुछ लिखते तो अच्छा रहता। जब कभी सम्भव

हा हरिजन के लिए भी लिखा कीजिए। भाषा का पचडा मेरे ऊपर छोड दीजिए। हा, दिनकर-सम्बन्धी लतीफे तो सुनाइये। मनोरंजन होगा यहा के चिंताकुल नीरस वातावरण मे ऐसे लतीफे प्राण डाल देंगे।

इधर जवाहरलालजी के साथ रोचक पत्राचार हुआ। विषय था बापू के साथ आपका लघु वार्तालाप जिसकी मैंने हरिजन मे चर्चा की थी। अबीसीनिया के ऊपर बापू के लेख का भी प्रसग उठा। जो युवक मेरा हाथ बटा रहा है, उसे खाली होने दीजिए। जवाहरलालजी के पत्र और अपने उत्तर की नकल तैयार कराकर आपके पास भेजूगा। आपकी प्रतिक्रिया जानना चाहूगा।

सप्रेम

महादेव

पुनश्च

पत्र अब ८६, वार्डन रोड बम्बई के पते पर भेजिएगा। हम कल बापू को बम्बई ले जा रहे हैं। वहा वह कम-से-कम पाच दिन रहेंगे।

९

२६ चेशाम प्लेस, एस० डब्ल्यू० १

१६ जनवरी, १९३६

प्रिय श्री बिडला

आपके २१ दिसम्बर के पत्र और उसके साथ भेजी दिलचस्प कटिंग के लिए धन्यवाद। इण्डिया आफिस मेरे पास समाचार पत्रों के निचोड पर्याप्त मात्रा मे भेजता रहता है पर आपको जो-कुछ रोचक और महत्त्वपूर्ण लगे, उसे भेजते रहें, मुझे प्रसन्नता होगी।

आप जिन्हे 'साम्प्रदायिक मामले' कहते हैं उनमे मुझे दिलचस्पी है। मैं यह पूर्ण आत्मविश्वास के साथ कह सकता हू कि हिन्दुओ और मुसलमानो—दोनो मे से किसी भी पक्ष की ओर मेरा झुकाव नही है। आप यह तो मानेंगे ही कि इस मामले मे आपकी कठिनाई अधिकाश मे तो आपकी युवाकालीन शिक्षा-दीक्षा मे उत्पन्न हुई है। जीवन के प्रारम्भिक दिनो मे मन फोटोग्राफी की फिल्म की तरह ग्रहणशील रहता है और यह सस्कार चिरस्थायी बनकर रह जाता है। मेरी ही

बात नीजिए। मुझे अभी तक याद है कि मेरी धाय मुझे बताया करती थी कि यहूदी लोग बुरे होते हैं क्योंकि वे ईसा मसीह को नहीं मानते और उन्होंने उनकी हत्या की थी। उस जाति के लोगों के प्रति इस अरुचि से छुटकारा पाने में मुझे काफी समय लगा और मुझे इसके लिए काफी प्रयास करना पड़ा। कहना न होगा कि किसी को उसके भिन्न धर्म में जन्म लेने के कारण बुरा समझना कितना विवेक शून्य और अनुदार विचार है।

मिस्टर गांधी की अस्वस्थता की बात जानकर बड़ा दुःख हुआ। आशा है दांत निकलवा देने के बाद उन्हें राहत मिली होगी। दांतों से कोई भी रोग हो सकता है। पर रुग्ण अवस्था में दांत निकलवाना भी पीड़ादायक ही है।

आपका
लिनलिथगो

१०

बिड़ला हाउस
नयी दिल्ली
१७ जनवरी १९३६

प्रिय महादेवभाई

तुम्हारे पत्र के लिए धन्यवाद। मेरी चिंता पूरी तरह दूर नहीं हुई है। इस बार बापू के स्वास्थ्य के संबंध में चिंता का विषय यह है कि विश्राम और चिकित्सा दोनों ही उनकी तबीयत पूरी तरह ठीक करने में असफल रहे हैं। सरदार (पटेल) और बापू से भी कह देना कि वे पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करके ही दिल्ली पधारें। वैसे दिल्ली का मौसम खासा अच्छा है पर यदि वे दिल्ली आयें तो सिर्फ आराम करने के ही खयाल से आयें। और सरदार भी उनके साथ आयें। पर यदि अहमदाबाद उनके स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त जंचे तो किसी तरह के हेर फेर की जरूरत नहीं है। सरदार ने मुझसे अहमदाबाद आने को कहा है जब वे वहां हों तो। मुझे एक ट्रस्टी के नाते एक बार साबरमती आश्रम भी जाना है पर मैं अपना कार्यक्रम कुछ दिन बाद तय करूंगा। यदि बापू यहां न आते हों तो मैं फरवरी का महीना कलकत्ता में बिताऊंगा।

खेती के क्षेत्र म हम पिछल साल १५००)का घाटा रहा। हमने देखा कि हम खती म प्रति बीघा ४) का घाटा आता है, इसलिए हमने इस क्षेत्र से हाथ खीच लिया है। केवल अच्छा बीज उगाने के लिए ५० बीघा जमीन जोती जाएगी।

दस्तकारी के क्षेत्र म हम निम्नलिखित विभाग चला रह हैं बढईगिरी टोपी बनाना चमडे का काम कम्बल बुनना कालीन बुनना रगाई, छपाई आदि। इस साल हम निम्नलिखित नय विभाग खोल रहे हैं

सिलाई भवन निर्माण जिल्दसाजी खिलौने बनाना और शहद की मक्खिया पालना। कुछ समय बाद मुर्गी पालने का विभाग भी खोलेंगे। हमने तय किया है कि अगले सत्र से निम्न श्रेणी से लगाकर मध्यम श्रेणी के सभी दर्जों के लडके उपयुक्त विषया म स कोई एक विषय अवश्य लें और प्रति सप्ताह कम से कम ३ घण्टे उक्त विभागा मे बिताए। इस प्रकार इटरमीडिएट कॉलिज छोडते छोडत प्रत्यक छात्र इन विषयो म से किसी एक म पारगत हो जाएगा। साथ ही, हमारा उद्योग विभाग अपना खच स्वय वहन करेगा, क्योकि हम छात्रा का श्रम मुफ्त मिलेगा।

हमारा खच ८० ०००) आता है। तुम कहोगे यह तो बहुत है, पर यदि हम अच्छी शिक्षा देनी है तो प्रतिछात्र पीछे १००) अधिक नही है। कुछ समय बाद हम छात्रो से फीस भी लने लगेंगे जिससे खच म कुछ कमी होगी। छात्रा की शारीरिक स्थिति सुन्दर है। चार चीजें अनिवाय है सामूहिक प्राथना सामूहिक व्यायाम और खेल-कूद दुग्धपान तथा चुनी हुई पुस्तका का स्वाध्याय। लडका का शारीरिक गठन बहुत सतोषप्रद है, और व परीक्षाओ म अच्छे नम्बरा स पास होते हैं। पर वे चरित्रबल के मामले म अन्य कॉलिजा क लडको के मुकाबले कितन श्रेष्ठ हैं यह कहना कठिन है। कुछ छात्रा न मुझे बताया कि बडे शहरो के अनेक कॉलिजा के लडके मद्यपान के चक्कर म पड जात हैं। यहा तो उनका एकमात्र पय पदाथ पानी है या दूध।

कॉलिज स्कूल और बालिका विद्यालय क अलावा हम १५ ग्राम पाठशालाए भी चला रहे हैं। इनकी सख्या अगले साल बढ जाएगी। ग्राम पाठशालाओ के सबध म हमन यह निणय लिया है कि प्रत्येक शिक्षक गाव के प्रत्येक घर मे फल क वक्ष लगवाये। इस बसत ऋतु म मैं दिल्ली से नारगी के दो हजार पौधे भेज रहा हू। राजपूताने म नारगी के पड खूब पनपते हैं। १५ साल पहल इन्हे कोई जानता भी न था हमारा प्रयोग पहला था और अब मेरे ही बाग म कोई २,००० पौधे लगे हैं जिनम से २०० न इस साल फल दिये हैं। यदि हम ५० मील की परिधि मे प्रत्येक घर म एक पौधा लगा सकें तो वह दशनीय दश्य होगा।

रही। वसे तो गाव म ही रुपय का १३ सर खालिस दूध मिल जाता है। पण्डया गाव स ही दूध खरीदकर लडका को तब तक दत रहन का कह गया जब तक गायें यथेष्ट सख्या म एकत्र न हो जाए। पण्डया परेशान था। लगभग ६ हण्डरवट दूध मोल लेना उस उबालना और लडका को दना उसके लिए उतनी ही बडी समस्या बनकर रह गई है, जितनी मेरी बडी मिला म स किसी एक म उठ खडी होती है। कभी कभी तो उसकी असहाय हालत पर तरस आता है। जो भी हो लडका को दूध मिलने लगा है और अगल दस दिना म सभी लड़के दूध पीने लगेंगे।

हमने हर ६ महीन मे डाक्टरी परीक्षा की व्यवस्था की है सतुलित आहार के वज्ञानिक परिणाम देखने की चीज होगी। रसाईघर म मिच वजित है और अब हम रसोईघर की व्यवस्था लडका पर न छोडकर अपन नियत्रण म लेन की बात सोच रहे हैं। सम्भव है पाकशास्त्र की क्लास भी खुल जाए।

हरिजन होस्टल सुचारु रूप स चल रहा है। एक हरिजन लडका जा ऊची कक्षा मे पढता है बडे होस्टलो मे जहा सवण हि दू लडके रहते हैं लाया गया है। लडका न कोई आपत्ति नही की।

इस समय हमारे पास १५० भेडें हैं। उन चार आस्ट्रेलियन भेडा म से दो ने मेमने दिये हैं दूसरी देनेवाली हैं। इम प्रकार शीघ्र ही दस आस्टलियन पशु हो जाएगे। आस्ट्रेलियन दुम्बा और बीकानेरी भेडा की मिश्रित नस्ल के पशु भी पदा हुए ह। पर प्रत्यक भेड कितनी ऊन देती है, इसका लखा-जोखा पण्डया ने नहीं रखा है। इसलिए हम आस्ट्रलियन भडा और बीकानेरी और हिसार की भेडा के ऊन उत्पादन का तुलनात्मक अध्ययन नही कर सक है।

आर्थिक दष्टि से डेयरी घाटे म नहीं रही ह। यदि हम घीज को छोड दें तो घाटा नहीं हुआ है। हम ३ पस का आध सर दध देते हैं इस प्रकार आय और व्यय का तखमीना बैठाने क बाद प्रति गाय १०) मिलता है। यदि हम घी को छोड दें तो उत्पादन को भी छोड दें।

मैं इग्लैंड स जा होल्स्टीन साड लाया था अब उसस गायें गाभिन हुइ हैं। बडा सुन्दर ढार ह गाववाल खूब चर्चा करते है। मुझ लाड लिनलिथगो न इग्लड म बताया था कि दुग्ध उत्पादन के मामल म होल्स्टीन नस्ल खूब सफल सिद्ध होगी इसलिए मैं यह तजुर्बा कर रहा हू। साहबजी महाराज[1] की भी यही राय है। परमेश्वरीप्रसाद इस परीक्षण क खिलाफ है। पण्डया की इस नस्ल के बारे म अपनी कोई राय नहीं है।

१ राधास्वामी पथ दयालबाग आगरा के अध्यक्ष।

खेती के क्षेत्र में हम पिछले साल १५००) का घाटा रहा। हमने देखा कि हम खेती में प्रति बीघा ८) का घाटा आता है इसलिए हमने इस क्षेत्र से हाथ खींच लिया है। केवल अच्छा बीज उगाने के लिए ५० बीघा जमीन जोती जाएगी।

दस्तकारी के क्षेत्र में हम निम्नलिखित विभाग चला रहे हैं बढईगिरी टोपी बनाना चमडे का काम, कम्बल बुनना कालीन बुनना रगाई छपाई आदि। इस साल हम निम्नलिखित नये विभाग खोल रहे हैं

सिलाई भवन निर्माण जिल्दसाजी खिलौने बनाना और शहद की मक्खियां पालना। कुछ समय बाद मुर्गी पालने का विभाग भी खोलेंगे। हमने तय किया है कि अगले सत्र से निम्न श्रेणी से लगाकर मध्यम श्रेणी के सभी दर्जो के लड़के उपयुक्त विषयों में से कोई एक विषय अवश्य लें और प्रति सप्ताह कम से-कम ३ घण्टे उक्त विभागों में बिताएं। इस प्रकार इटरमीडिएट कॉलेज छोडते छोडते प्रत्येक छात्र इन विषयों में से किसी एक में पारगत हो जाएगा। साथ ही हमारा उद्योग विभाग अपना खर्च स्वय वहन करेगा क्योंकि हमें छात्रों का श्रम मुफ्त मिलेगा।

हमारा खर्च ८० ०००) आता है। तुम कहोगे यह तो बहुत है पर यदि हम अच्छी शिक्षा देनी है तो प्रतिछात्र पीछे १००) अधिक नही हैं। कुछ समय बाद हम छात्रों से फीस भी लेने लगेंगे जिससे खर्च में कुछ कमी होगी। छात्रों की शारीरिक स्थिति सुन्दर है। चार चीजें अनिवार्य हैं सामूहिक प्रार्थना, सामूहिक व्यायाम और खेल कूद, दुग्धपान तथा चुनी हुई पुस्तकों का स्वाध्याय। लडकों का शारीरिक गठन बहुत सतोषप्रद है और वे परीक्षाओं में अच्छे नम्बरों से पास होते हैं। पर वे चरित्रबल के मामले में अन्य कॉलिजों के लडकों के मुकाबले कितने श्रेष्ठ हैं यह कहना कठिन है। कुछ छात्रों ने मुझे बताया कि बडे शहरो के अनेक कॉलिजों के लडके मद्यपान के चक्कर में पड जाते हैं। यहा तो उनका एकमात्र पेय पदार्थ पानी है या दूध।

कॉलिज स्कूल और बालिका विद्यालय के अलावा हम १५ ग्राम-पाठशालाए भी चला रहे हैं। इनकी सख्या अगले साल बढ जाएगी। ग्राम पाठशालाओं के सबध में हमने यह निर्णय लिया है कि प्रत्येक शिक्षक गाव के प्रत्येक घर में फल के वृक्ष लगवाये। इस बसत ऋतु में मैं दिल्ली से नारगी के दो हजार पौधे भेज रहा हू। राजपूताने में नारगी के पेड खूब पनपते हैं। १५ साल पहले इन्हे कोई जानता भी न था हमारा प्रयोग पहला था और अब मेरे ही बाग में कोई २ ००० पौधे लगे हैं जिनमें से २०० ने इस साल फल दिये है। यदि हम ५० मील की परिधि में प्रत्येक घर में एक पौधा लगा सकें तो वह दर्शनीय दृश्य होगा।

रही। वसे तो गाय मे ही रुपय का १३ सर खालिस दूध मिल जाता है। पण्डया गाव स ही दूध खरीदकर लडका का तब तक दत रहने को कह गया जब तक गायें यथेष्ट सख्या म एकत्र न हो जाए। पण्ड्या परेशान था। लगभग ६ हुण्डरवेट दूध मोल लेना उसे उबालना और लडका को देना उसके लिए उतनी ही बडी समस्या बनकर रह गई है जितनी मेरी बडी मिला म स किसी एक म उठ खडी होती है। कभी कभी तो *उसकी असहाय हालत पर तरस आता है। अब भी हा लडका का* दूध मिलने लगा है और अगले दस दिना म सभी लडक दूध पीन लगेंगे।

हमन हर ६ महीन म डाक्टरी परीक्षा की व्यवस्था की है सतुलित आहार के वनानिक परिणाम देखने की चीज होगी। रसोईघर म मिच वर्जित है और अब हम रसोईघर की व्यवस्था लडका पर न छोडकर अपन नियत्रण म लेन की बात सोच रहे हैं। सम्भव है पाकशास्त्र की कलाम भी खुल जाए।

हरिजन होस्टल सुचारु रूप से चल रहा है। एक हरिजन लडका जा ऊची कभा म पढता है बडे होस्टला म, जहा सवण हिन्दू लडक रहत हैं लाया गया है। लडको न कोई आपत्ति नही की।

इस समय हमारे पास १५० भेडें हैं। उन चार आस्ट्रलियन भेडा म से दो ने मेमने दिये है दूसरी दोनो दनवाली हैं। इस प्रकार शीघ्र ही दस आस्ट्रलियन पशु हो जाएग। आस्ट्रेलियन दुम्बा और बीकानरी भेडा की मिश्रित नस्ल के पशु भी पदा हुए है। पर प्रत्यक भेड कितनी ऊन देती है, इसका लखा जोखा पण्डया ने नही रखा है। इसलिए हम आस्ट्रेलियन भडा और बीकानेरी और हिसार की भेडा के ऊन उत्पादन का तुलनात्मक अध्ययन नही कर सके है।

आर्थिक दष्टि से डेयरी घाटे म नहा रही है। यदि हम छीज को छोड दें, तो घाटा नही हुआ है। हम ३ पस का आध सर दध दते है इस प्रकार आय और व्यय का तखमीना बठाने क बाद प्रति गाय १०) मिलता है। यदि हम छीज को छोड दें तो उत्पादन का भी छोड दें।

म इग्लड स जा होल्स्टीन साड लाया था अब उसस गायें गाभिन हुई है। बडा सुन्दर ढोर है गाववाले खूब चर्चा करत है। मुझ लाड लिनलिथगो ने इग्लड म बताया था कि दुग्ध उत्पादन के मामल म हौल्स्टीन नस्ल खूब सफल सिद्ध होगी, इसलिए म यह तजुर्बा कर रहा हू। साहबजी महाराज[1] की भी यही राय है। परमेश्वरीप्रसाद इस परीक्षण के खिलाफ है। पण्ड्या की इस नस्ल क बारे म अपनी कोई राय नही है।

१ राधास्वामी पथ, दयालबाग, आगरा के अध्य।

खेती के क्षेत्र म हम पिछले साल १५००)का घाटा रहा। हमने देखा कि हम खेती म प्रति बीघा ४) का घाटा आता है इसलिए हमने इस क्षेत्र स हाथ खीच लिया ह। केवल अच्छा बीज उगाने के लिए ५० बीघा जमीन जोती जाएगी।

दस्तकारी के क्षेत्र म हम निम्नलिखित विभाग चला रहे हैं बढईगिरी टोपी बनाना चमडे का काम कम्बल बुनना कालीन बुनना रगाई, छपाई आदि। इस साल हम निम्नलिखित नये विभाग खोल रह हैं

सिलाई भवन निर्माण जिल्दसाजी खिलौने बनाना और शहद की मक्खिया पालना। कुछ समय बाद मुर्गी पालने का विभाग भी खोलेंगे। हमने तय किया है कि अगले सत्र से निम्न श्रेणी से लगाकर मध्यम श्रेणी क सभी दर्जों क लडके उपयुक्त विषयो म से कोई एक विषय अवश्य लें और प्रति सप्ताह कम-से-कम ३ घण्टे उक्त विभागो म बिताए। इस प्रकार इटरमीडिएट कॉलेज छोडते छोडते प्रत्येक छात्र इन विषयो म से किसी एक म पारगत हो जाएगा। साथ ही हमारा उद्योग विभाग अपना खच स्वय वहन करेगा क्योकि हम छात्रो का श्रम मुफ्त मिलेगा।

हमारा खच ८० ०००) आता है। तुम कहोगे यह तो बहुत है पर यदि हम अच्छी शिक्षा देनी है तो प्रतिछात्र पीछे १००) अधिक नही हैं। कुछ समय बाद हम छात्रो स फीस भी लेने लगेंगे जिससे खच म कुछ कमी होगी। छात्रो की शारीरिक स्थिति सुन्दर है। चार चीजें अनिवाय हैं सामूहिक प्राथना सामूहिक व्यायाम और खेल-कूद दुग्धपान तथा चुनी हुई पुस्तकों का स्वाध्याय। लडको का शारीरिक गठन बहुत सतोषप्रद है और वे परीक्षाओ म अच्छे नम्बरो स पास होते हैं। पर वे चरित्रबल के मामले म अन्य कॉलेजो के लडको के मुकाबले कितने श्रेष्ठ हैं यह कहना कठिन है। कुछ छात्रो न मुझे बताया कि बडे शहरो के अनेक कॉलेजो के लडके मद्यपान के चक्कर म पड जाते हैं। यहां तो उनका एकमात्र पेय पदाथ पानी है या दूध।

कॉलेज स्कूल और बालिका विद्यालय क अलावा हम १५ ग्राम पाठशालाए भी चला रहे हैं। इनकी सख्या अगले साल बढ जाएगी। ग्राम पाठशालाओ के सम्बध म हमने यह निणय लिया है कि प्रत्येक शिक्षक गाव के प्रत्येक घर म फल क वक्ष लगवाये। इस वसत ऋतु म मैं दिल्ली से नारगी के दो हजार पौधे भेज रहा हू। राजपूताने म नारगी के पेड खूब पनपते हैं। १५ साल पहले इन्हे कोई जानता भी न था हमारा प्रयोग पहला था और अब मेरे ही बाग म कोई २,००० पौधे लगे हैं जिनम से २०० ने इस साल फल दिये हैं। यदि हम ५० मील की परिधि म प्रत्येक घर म एक पौधा लगा सकें तो वह दशनीय दश्य होगा।

सरदार से मेरा प्रणाम कहना। उनका पत्र अभी अभी मिला है। उन्हें अलग से उत्तर नहीं दे रहा हूं। मैंने समझा यही पत्र यथेष्ट होगा।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
बम्बई

११

बिड़ला हाउस,
नयी दिल्ली
१७ जनवरी, १९३६

प्रिय लार्ड लिनलिथगो,

साथ भेजी कटिंग आपको दिलचस्प लगेगी। इसमें जिन जिन लोगों के नाम हैं उनमें से अधिकांश या तो कांग्रेस के समाजवादी वर्ग से संबंध रखते हैं या वे वामपंथी हैं। वामपंथी जिस प्रचार-कार्य में लगन के साथ जुटे हुए हैं उससे गांधीजी का कार्य कांग्रेस में और भी दुरूह हो जाएगा। उनका स्वास्थ्य फिलहाल अच्छा नहीं है जो हम सबकी चिंता का कारण बना हुआ है। यदि वह आगामी अप्रैल में कांग्रेस के अधिवेशन में शरीक हुए और आशा है कि तबतक वह पूर्ण स्वास्थ्य लाभ कर चुके होंगे तो निःसंदेह बहुमत को अपने पक्ष में कर लेंगे। पर इस समय वामपंथी, जो अल्पसंख्या में हैं कभी बहुसंख्यक भी हो सकते हैं। ये वामपंथी अधिकतर नवयुवक हैं जबकि दक्षिणपंथियों में वृद्ध नेताओं की बहुतायत है।

शासन कार्य संबंधी वार्षिक रिपोर्ट में जवाहरलाल के विरुद्ध जो आरोप लगाया गया था उसे बंगाल सरकार ने न मानकर बड़ी अक्लमंदी और ईमानदारी का काम किया है। भूल स्वीकार करने से सरकार की प्रतिष्ठा घटने के बजाय बढ़ती ही है। सरकारी हल्कों में इस विषय में नाना जो धारणा रही हो इसका परिणाम बहुत अच्छा हुआ है। मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि जवाहरलाल नेहरू ने भी इस कदम को सराहा। वह इस महीने के अंत में लंदन जा रहे हैं और यह खुशी की बात है कि लार्ड लोदियन उनसे मिलेंगे। मैं उन्हें अच्छी

तरह जानता हू। हा, अन्तरग रूप से नही, पर जो लोग उन्हें अ तरग रूप से जानते है उन्होंने मुझे बताया है कि वह उग्रपथी होने पर भी यथार्थवादी है। मै आशा करता हू कि लार्ड लोदियन उनका समाधान कर सकेंगे कि इग्लैड म भारत के प्रति प्रचुर सदभावना है जिसकी सहायता स भारत बिना मुठभेड के अपनी न्यायिक आकाक्षाओ को मूर्त रूप देने म सफल होगा।

आपने पूर्व एशिया ब्लाक के गठनवाला समाचार अवश्य ही देखा होगा। म इस समाचार को असाधारण महत्त्व का समझता हू। भारत के महत्त्वाकाक्षी मुसलमान नेता पाकिस्तान का स्वप्न देखते नही अघाते।

सदाकाक्षाओ के साथ,

भवदीय,
घनश्यामदास बिडला

राइट ऑनरेबल मार्क्विस आफ लिनलिथगो,
२६, बेशाम प्लेस
लदन एस० डब्ल्यू० १

१२

गुजरात विद्यापीठ
अहमदाबाद
२४ जनवरी १६३६

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका लम्बा पत्र बडा ही दिलचस्प रहा। मै आज यहा पहुचा।

सबसे पहले बापू की बात। अब वह बिलकुल भले चगे हैं रक्तचाप अपनी साधारण स्थिति म अभी नहा आया है, पर लगभग सामान्य है। व उत्तरोत्तर बल प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने मुझसे खुद ही कहा कि वर्धा और बम्बई मे तो डाक्टरो की सलाह मानकर दिमागी काम से दूर रहते रहे पर अब दिमाग पर जोर देने म उन्हें प्रयास नहीं करना पडता। साथ ही वह यह भी जानते हैं कि अभी उन्हें फूक फूककर कदम रखना होगा। इसलिए वह अभी चार सप्ताह और आराम करेंगे। पर जहा तक उनका सबध है उनका कहना है कि अब वह अपने दिमाग को और अधिक खाली नहीं रखेंगे। वह अब सोचेंगे विचारेंगे और अपनी जानकारी बढायेंगे।

उनका कहना है कि ६ फरवरी के बाद यहा रहना अनावश्यक है,पर सरदार अभी इतनी जल्दी उन्हें स्वतत्र छोडने को तयार नही हैं। डाक्टरो ने उनके मूत्र और रक्त की परीक्षा की है। वे इस नतीजे पर पहुचे हैं कि रक्त म चीनी का अभाव है इसलिए उन्होंने खुराक में हेरफेर करने की सलाह दी है। इस नयी खुराक का प्रभाव क्या होता है इसके लिए कम-से-कम ३ सप्ताह की जरूरत होगी। मेरी समझ से उन्हें कम-से-कम १५ फरवरी तक यहा रहना चाहिए, पर अब उनकी शक्ति बढ रही है तो उन्होंने जल्दी मचाना शुरू कर दिया है। पता नही इस बार म आपकी क्या राय ह। ऐसी परिस्थिति म आपका क्या प्रोग्राम है ? कृपया लिखिए।

पिलानी के काय के सविस्तार वणन से मेरे मुह म पानी आ गया कि पिलानी जाकर छुट्टी क्यो न मनाऊ। पता नही मुझे कब छुट्टी मिलेगी अथवा मिलेगी भी या नही। आपने जो विवरण दिया ह उसका कुछ अश छापने की इच्छा होती है, पर ऐसा करने के लिए पिलानी के काय म आपका उल्लेख अनिवाय होगा, और मैं दोनो म से एक का भी दुरुपयोग न स्वय करना चाहता हू न आपके बारे मे नुक्ता चीनी होते देख सकता हू। क्या आप जानते है कि जब जब मैंने मीराबेन के ग्राम-काय के सबध म विस्तारपूवक लिखा मुझ पर उन्हें बढा चढाकर लिखने का आरोप लगाया गया ? डेली हैराल्ड ने तो अपने सवाददाता को समुद्री तार भेजा कि पता लगाओ कि क्या यह बात सही है कि मीराबेन न गाधीजी के सक्रेटरी, महादेवभाई देसाई से गाधव विवाह कर लिया है ? कितनी भोंडी और जाहिल बात है, कौन भरोसा करेगा ? पर यदि यह खबर फल जाए कि मुझे बिडला किसी न किसी रूप म पसा देते है तो इसे सब कोई मानने लगेंगे, आपका क्या खयाल है ?

अब आपके पत्र के सबध म दो चार शब्द कह दू। आपने व्यथ ही सफाई पश की। आपके व्यक्तित्व म जो मर्यादा है मने उसका इस पत्र म आभास पाया। बस, इतनी-सी ही तो बात है। और रही बगाल के गवनर की आपके नाम लिखे पत्र की बात और बगाल सरकार की विज्ञप्ति की बात, सो दोनो की एकमात्र खूबी उनकी सत्यवादिता है जबकि उन्होंने जो सफाई पश की ह वह मूखता स ओतप्रोत है।

सप्रेम

आपका,
महादेव

१३

तार

वल्लभभाई पटेल,
गुजरात विद्यापीठ
अहमदाबाद

बापू दिल्ली कब आ रहे हैं ? उनकी तबीयत की तार द्वारा सूचना दीजिए।

—घनश्यामदास

मारफत लकी,
बिडला हाउस लालघाट
बनारस
२८ १ ३६

१४

३० जनवरी, १९३६

प्रिय महादेवभाई

तुम्हारा पत्र मिला, धन्यवाद।

इस बात पर कोई भी यकीन नहीं करेगा कि महादेव भाई बिड़ला को आगे बढ़ाने के लिए पैसा लेते हैं पर जैसा कि मैंने अपने पिछले पत्र में लिखा है, मैं खुद इश्तहारबाजी के खिलाफ हूं क्योंकि अभी सब-कुछ प्रयोग के तौर पर चल रहा है। इसलिए मेरा कुछ करने का दावा करना ढीठपना होगा, जबकि वास्तव में अभी कुछ हुआ ही नहीं है। जब समय आएगा तब मैं खुद ही सब-कुछ प्रकाश में लाऊंगा पर अभी उस स्थिति तक पहुंचने में कई साल लगेंगे।

यह जानकर खुशी हुई कि बापू अच्छे हैं। उन्हें अपने विश्राम में विघ्न डालने की जरूरत नहीं है पर मैं उनका प्रोग्राम अवश्य जानना चाहूंगा, जिससे मैं स्वयं अपना प्रोग्राम बना सकूं।

रही गवर्नर को लिखे मेरे पत्र की बात, सो जब मिलेंगे तब इस विषय पर बातें होंगी। मैं तुम्हारे विचार से सहमत नहीं हूं पर तो भी तुम्हारी सम्मति

पाकर मुझे खुशी हुई क्योंकि तुम स्वय जानते हो कि मैं उसे कितना महत्त्व देता हू। मैं तुमसे अपना दृष्टिकोण मनवाने की चेष्टा करूगा।

लन्दन म जवाहरलाल की स्पीचें इतनी बुरी नही रही, जितनी कि मुझे आशका थी। पर जब उन्होंने यह कहा कि जापान कमजोर होता जा रहा है और रूस भारत का सबसे अच्छा मित्र है तो मुझे आश्चय हुआ। मैं रूस के बारे म तो कुछ नहीं जानता पर यह मैं निश्चित रूप से कह सकता हू कि जापान कमजोर नहीं हो रहा है।

वल्लभभाई को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
अहमदाबाद

१५

१८, वेडोगन गाडन्स,
एस० डब्ल्यू० ३
४ फरवरी १९३६

प्रिय श्री बिडला

आपके कृपा-पत्र के लिए अत्यत कृतज्ञ हू। ये दिन प्रयोग के हैं, और ऐसे अवसर पर यह पत्र याद दिलाता है कि मेरे कितने घनिष्ठ मित्र हैं। आपके वृत्तात से मिस्टर गाधी के सम्बन्ध म बडी दिलचस्पी हुई। कृपया उन्हें मेरी याद दिलाइए और कहिए कि मैं उनके साथ लन्दन में हुए वार्तालाप को कितनी प्रसन्नता के साथ याद करता हू।

भवदीय,
सेम्युअल होर

श्री घनश्यामदास बिडला

१६

सीमोर हाउस,
१८, वाटरलू प्लेस
एस० डब्ल्यू० १
१७ फरवरी, १९३६

प्रिय श्री बिड़ला

अभी अभी अमरीका से वापस लौटा तो मेरे आफिस में आपका भेजा चाय का बक्सा प्रतीक्षा कर रहा था। आपने बड़ी कृपा की। जब इसकी चुस्कियां लूंगा तो आपके साथ अपनी अनेक मुलाकातों की याद करूंगा।

जवाहरलाल नेहरू से देर तक बात हुई। इससे पहले उनसे नहीं मिला था। बड़े आकर्षक और बुद्धिमान हैं। उनसे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि मिस्टर गांधी का स्वास्थ्य अब सुधर रहा है। अमरीकी पत्रों में छपा था कि वह बुरी तरह बीमार हैं।

भवदीय,
लोदियन

श्री घनश्यामदास बिड़ला,
अल्बूकर्क रोड,
नयी दिल्ली

१७

वर्धा
१९ फरवरी, १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी,

सारा पत्र व्यवहार, जो श्री जाजूजी के हाथ भेजा गया है, मिला। पढ़कर तुरन्त नष्ट कर दिया है। उसके बारे में बापू कुछ बोले नहीं नहीं तो बताता।

एक छोटी सी बात के बारे में लिख रहा हूं। बापूजी पूछवाते हैं कि बिवाई के लिए आपने एक उपाय बतलाया था। तीन चीजें आपने बताई थीं। राल, मोम

और कोई एक तीसरी चीज। वह तीसरी चीज क्या है? बापू भूल गए। शलजम तो नहीं कहा था? अगर शलजम हो तो दो-तीन दिन बाद भेज देती है, लिखिएगा।

मिस रायडन की गिल्ड हाउस की स्पीच बड़ी आश्चर्यजनक थी। उसने पूज्य बापूजी के साथ जो बातें हुई थीं उनका पूरा उपयोग किया। फ्री प्रेस जर्नल के १७ तारीख के अंक में छपी है अवश्य पढ़िए।

आपका,
महादेव

१८

शेगांव, वर्धा
२४ फरवरी १९३६

भाई घनश्यामदासजी

आपका तार प्यारेलालजी के नाम अभी पहुंचा है। वह आज नागपुर गये हैं, एक मरीज को दिखाने के लिये। इसलिए मैंने तार खोला और आपकी आज्ञानुसार एक नकल बापूजी के लड़ाई के रिजोल्यूशन पर भेज रही हूं। कितना सुंदर प्रस्ताव था। मुझे तो इतना आश्चर्य हुआ कि इसके लिये कुछ थोड़ी सी भी लड़ाई वकिंग कमेटी में नहीं हुई। जवाहर भाई का प्रस्ताव तो मुझे बिलकुल पसंद नहीं है।

पू० बापूजी की तबीयत अच्छी है। काम तो काफी रहता है लेकिन रक्त का दबाव ठीक चल रहा है और मन भी प्रसन्न दिखाई देता है।

मुझे यहां आए हुए १५ रोज हो गए हैं।

आशा है आप सब अच्छी तरह होंगे।

आपकी बहन
अमृतकुंवर

१६

कलकत्ता
२४ फरवरी १६३६

प्रिय महादवभाई,

मैंने सर सेम्युअल होर का सवेदना का पत्र भेजा था उसक उत्तर म उ होंने निम्नलिखित बात कही है

'मिस्टर गाधी के सम्बन्ध म आपकी सूचना मुझ दिलचस्प लगी। कृपया उन्ह मेरी याद दिलाइए और कहिए कि मैं उनके साथ लदन म हुए वार्तालाप को आनन्दपूवक स्मरण करता हू।"

मरा खयाल है कि उनका अभिप्राय बापू के साथ हुए वार्तालाप स है, मेरे साथ हुई बातचीत से नहीं। लाड लिनलिथगो भी यदाकदा लिखत हैं और जब कभी लिखत है बापू की चर्चा अवश्य करते हैं। मैंने तुम्ह इन बातो के बारे म व्यस्त नहीं किया पर अब तो बापू अच्छे हो रहे हैं, इसलिए यह पत्र उनक सामने रख देना।

मैं दिनो म मिलने की बाट जोह रहा हू।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

२०

कलकत्ता,
२६ फरवरी, १६३६

प्रिय लाड लिनलिथगो,

आपके पत्र के लिए धन्यवाद।

देखता हू कि आपने साम्प्रदायिक मामला म मेर दृष्टिकोण के सबध म गलत धारणा बना ली है। यदि मैं किसी को उसके किसी अन्य धम म जन्म लेने के कारण ही बुरा समझने लगू तो मुझस बुरा कोई न होगा। स्वय मेरे ही परिवार

और कोई एक तीसरी चीज। वह तीसरी चीज क्या है ? बापू भूल गए शलजम तो नही कहा था ? अगर शलजम हो तो दो तीन दिन बडी बदबू देता है, लिखिएगा।

मिस रायडन की गिल्ड हाउस की स्पीच बडी आश्चर्यजनक थी। उसने पूज्य बापूजी के साथ जो बातें हुई थी उनका पूरा उपयोग किया। फ्री प्रेस जनल के १७ तारीख के अक मे छपी है अवश्य पढिए।

आपका
महादेव

१८

शगाव, वर्धा
२४ फरवरी, १९३६

भाई घनश्यामदासजी

आपका तार प्यारेलालजी के नाम अभी पहुचा है। वह आज नागपुर गये है, एक मरीज को दिखाने के लिये। इसलिए मैंने तार खोला और आपकी आज्ञानुमार एक नकल बापूजी के लडाई के रिजोल्यूशन पर भेज रही हू। कितना सुदर प्रस्ताव था। मुझे तो इतना आश्चर्य हुआ कि इसके लिये कुछ थोडी सी भी लडाइ वर्किंग कमेटी मे नही हुई। जवाहर भाई का प्रस्ताव तो मुझे बिलकुल पसद नही है।

पू० बापूजी की तबीयत अच्छी है। काम तो काफी रहता है, लेकिन रक्त का दबाव ठीक चल रहा है और मन भी प्रसन्न दिखाई देता है।

मुझे यहा आए हुए १५ रोज हो गए है।

आशा है आप सब अच्छी तरह होगे।

आपकी बहन
अमृतकुवर

१६

कलकत्ता
२४ फरवरी, १६३६

प्रिय महादेवभाई

मैंने सर सेम्युअल हार को संवेदना का पत्र भेजा था, उसके उत्तर में उन्होंने निम्नलिखित बात कही है

'मिस्टर गांधी के सम्बन्ध में आपकी सूचना मुझे दिलचस्प लगी। कृपया उन्हें मेरी याद दिलाइए और कहिए कि मैं उनके साथ लंदन में हुए वार्तालाप को आनन्दपूर्वक स्मरण करता हूं।'

मेरा खयाल है कि उनका अभिप्राय बापू के साथ हुए वार्तालाप से है, मेरे साथ हुई बातचीत से नहीं। लार्ड लिनलिथगो भी यदाकदा लिखते हैं और जब कभी लिखते हैं बापू की चर्चा अवश्य करते हैं। मैंने तुम्हें इन बातों के बारे में व्यस्त नहीं किया पर अब तो बापू अच्छे हो रहे हैं इसलिए यह पत्र उनके सामने रख देना।

मैं दिल्ली में मिलने की बाट जोह रहा हूं।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

२०

कलकत्ता,
२६ फरवरी, १६३६

प्रिय लार्ड लिनलिथगो

आपके पत्र के लिए धन्यवाद।

देखता हूं कि आपने साम्प्रदायिक मामलों में मेरे दृष्टिकोण के संबंध में गलत धारणा बना ली है। यदि मैं किसी को उसके किसी अन्य धर्म में जन्म लेने के कारण ही बुरा समझने लगूं तो मुझसे बुरा कोई न होगा। स्वयं मेरे ही परिवार

म मुसलमान नौकर चाकर हैं। जा कइ पुश्ता से काम करत आ रहे हैं। मैंने जो यह कहा था कि बहुत चेष्टा करने के बावजूद मैं इस सस्कार स पीछा छुडाने म सफल नही हुआ हू ' इसका अभिप्राय केवल यही था कि हिदुआ और मुसलमानो—दोना म यह धारणा घर कर गई है कि भारत मे और भारत के बाहर भी अग्रेज मुसलमाना का ही पक्ष लेत है चाहे उनका रवया कुछ मामलो मे कितना ही अविवेकपूण क्या न हो। मैं आपकी मीठी भत्सना को सराहता हू पर विश्वास रखिए कि मेरी शिक्षा दीक्षा जाति या कौम के आधार पर नही हुई है।

मैं यहा कुछ ही दिना के लिए आया हू। अब दिल्ली जाऊगा, क्योकि गाधी जी वहा १५ माच का पहुच रह हैं। मुझे यह कहत हप होता है कि अब वह बिलकुल स्वस्थ हैं। लखनऊ के काग्रेस अधिवेशन म उनके जाने से पहले मैं उनसे काफी बातचीत करूगा। पडित जवाहरलाल नेहरू से भी भेंट हाने की आशा है। यह भेंट उपयोगी सिद्ध होगी ऐसी आशा है। काग्रेस का अधिवेशन अप्रल के दूसरे सप्ताह म हागा, अर्थात आपके भारत के लिए रवाना होने स कुछ ही दिन पहले।

जब आप दिल्ली पधारेंगे, तो मैं वहीं होऊगा पर शायद आप वहा कुछ ही दिन ठहरेंगे और मैं समझता हू कि भारत की भूमि पर पर रखते ही आपको अनेक महत्त्वपूण समस्याआ का सामना करना पडेगा। आपको व्यस्त करने के लिए यथेष्ट सामग्री मौजूद रहगी। अत यदि आप मुझे स्वय बुला भेजें तो बात दूसरी है। वैसे मैं फिलहाल आपका समय नही लूगा। जो हित साधन आपका अभीष्ट है और जिसके लिए मैं पिछले दो वर्षों से काम करता आ रहा हू उसकी सफलता मे मरी सेवाए जसी कुछ है आपके लिए हमशा हाजिर रहेंगी। पर मैं यह भी नही चाहता कि आपको लगन लगे कि इससे तो पीछा छुडाना मुश्किल हा गया।

यह भी कह दू कि स्वतत्र वातावरण से चुन प्राइवट सेक्रेटरी की नियुक्ति का काय अत्यन्त विवेकपूण रहा है।

सदभावनाओ के साथ

भवदीय
घनश्यामदास बिडला

राइट आनरेबल मार्क्विस आफ लिनलिथगो
२६ चेशाम प्लेस
लन्दन एस० डब्ल्यू० १

२१

वर्धा

२८ २ १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी,

मैं दो दिन (९ और १०) कलकत्ते मे था पर तब आप दिल्ली मे थे। मैं १२ को दिल्ली पहुचा, तो आप कुछ ही मिनट पहले कलकत्ते के लिए रवाना हो चुके थे।

मुझे पूरा यकीन है कि "हमारे वार्तालाप से सर सेम्युअल होर का अभिप्राय उनके साथ बापू के वार्तालाप से था, पर मुझे आश्चर्य इस बात का है कि जब कुछ महीने हुए उनके भारत-सचिव पद से इस्तीफा देने से पहले बापू ने उन्हें पत्र लिखकर कुशल मगल पूछी क्योकि पत्रो मे उनकी बीमारी की खबर छपी थी तो उन्होने पहुच तक नही दी। सम्भव है उन्हे पत्र मिला ही न हो या किसी जसे विवेकशील अथवा अविवेकशील सेक्रेटरी ने वह पत्र उनके सामने रखा ही न हो।

हम ८ तारीख को दिल्ली के लिए रवाना होने की बात सोच रहे थे पर उस दिन जवाहर के आ पहुचने की सभावना है। वैसी स्थिति म हमारा जाना १२ या १३ तारीख तक के लिए रुक जाएगा।

हा लिनलिथगो ने बापू को उनके अस्वस्थ होने पर एक बडा सहृदयतापूर्ण सदेश भेजा था—कुमारी अगाथा के हाथो।

बापू का रक्तचाप अहमदाबाद मे साधारण गति पर आ गया था। जब हम वहा से चले, तो ऊपर म १५० और नीचे म ९० था। पर अब वह फिर चढ गया है। कहना पडता है कि उनका शरीर असाधारणतया तुनकमिजाज हो गया है। आपको हरिजन म उनका लेख कसा लगा ? यदि आपने अभी नही पढा हो तो किसी से कहिए, आपकी प्रति आपके सामने पेश करे। सम्भव है आप आजकल 'हरिजन पढ़ते ही न हो। उनका यह १० या ११ हफ्तो म पहला लेख है।

आपका,

महादेव

२२

कलकत्ता
२८ फरवरी, १९३६

प्रिय महादेवभाई

वापू का प्रोग्राम क्या है ? मैं १२ या १३ मार्च को दिल्ली के लिए रवाना होना चाहता हूं। इससे पहले ही चल पड़ता, पर मेरे भानजे का अपेंडिसाइटिस का आपरेशन होनेवाला है और डाक्टरों ने इसके लिए ५ तारीख निश्चित की है। अतएव उसके कुछ अच्छे होते ही मैं रवाना हो जाऊंगा।

आशा है वल्लभभाई भी वापू के साथ आ रहे हैं। कृपा करके लिखो कि वह दिल्ली में कब तक रहेंगे और दिल्ली छोड़ने के बाद उनका क्या प्रोग्राम रहेगा।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

२३

२९ फरवरी १९३६

सर जान एण्डरसन से भेंट

समय ११ बजे सुबह—भेंट ४० मिनट चली

मैंने उन्हें बताया कि लन्दन ने दिल्ली को बेखबर रखा था इसीलिए यह बेचैनी पैदा हुई। उन्होंने यह स्वीकार किया और कहा कि प्राइवेट सेक्रेटरी की नियुक्ति से यह बेचैनी और भी बढ़ गई। उनका लिनलिथगो से परिचय तो नहीं है पर उनकी राय में वह एक सुयोग्य व्यक्ति हैं।

मैंने जवाहरलाल की तारीफ की और कहा कि वह कट्टर समाजवादी हैं पर साथ ही वह काल्पनिक जगत में नहीं विचरते और वास्तव में यथार्थवादी हैं।

गवनर ने कहा कि वे इस मामले म कोई निश्चित धारणा नही बनाएग । उन्ह यह जानकर प्रसन्नता हुई कि मैं जवाहरलाल को यथार्थवादी समझता हू। उन्ह उनकी विचारधारा स चिन्ता है, पर मैंन कहा मुझे आशा है कि जवाहरलालजी जल्द बाजी से काम नही लेंगे। उनकी एकमात्र अभिलाषा जनता-जनादन का उत्थान है, और जहा आदश का प्रश्न उठेगा तो वह कभी पीछे नही हटेंगे, पर अपनी काय विधि म वह उतावली से काम नही लेंग।' उन्होने पूछा, आतकवाद और कम्यु निज्म के बारे म आपका क्या दष्टिकोण है ? मैंने उत्तर दिया 'बगाल म तो कम्युनिज्म पनपने स रहा क्याकि बगाली मानस क लिए वह ग्राह्य नही होगा, पर उत्तर भारत की बात अलग है।' मैंने बताया कि मुझे इण्डियन सिविल सर्विस के अमल से आशका है। मैं ज्या ज्या उनके सम्पक म आता जाता हू, मेरी यह धारणा पक्की होती जाती है कि उन लागो म दूरदर्शिता का सवथा अभाव है वे शान बघारते हैं और लोगो मे खीज पैदा करते हैं। उन्होने कहा, उन्ह समय के अनु रूप अपने-आपको बदलना पडेगा। नीति निर्धारित करना उनके हाथ मे नही, किसी और क हाथ म है। जो भी काय योजना बनेगी उन्ह वसा ही आचरण करना पडेगा।" मैंने कहा कि सर जेम्स ग्रिग को अपेक्षाकृत अधिक चतुराई से काम लेना चाहिए। गवनर मेरे कथन से सहमत होत दिखाइ दिय। सम्भवत वह उन्ह लिखेंगे भी।

२४

कलकत्ता

२ माच, १९३६

प्रिय महादेवभाई

तुम्हार पत्र न चिता उत्पन्न कर दी। समाचार-पत्रा म तो निकला नही कि बापू का रक्तचाप फिर बढ गया है। आशा है बापू पूण विश्राम लेना जारी रखेंग।

अभा वह लख मरी नजर स नहा गुजरा है क्याकि मरा 'हरिजन' दिल्ली जाता है और वहा स रिडाइरक्ट होकर यहा आएगा।

मैं गवनर स परसो मिला और उनस दिल खोलकर बातें की। दिल्ली म इस सबध म मिलेंगे, तब बात करेंग।

२२

कलकत्ता,
२८ फरवरी, १९३६

प्रिय महादेवभाई

बापू का प्रोग्राम क्या है ? मैं १२ या १३ मार्च को दिल्ली के लिए रवाना होना चाहता हू। इससे पहले ही चल पड़ता, पर मेरे भानजे का अपेंडिसाइटिस का आपरेशन होनेवाला है और डाक्टरों ने इसके लिए ५ तारीख निश्चित की है। अतएव उसके कुछ अच्छे होते ही मैं रवाना हो जाऊंगा।

आशा है वल्लभभाई भी बापू के साथ आ रहे हैं। कृपा करके लिखो कि वह दिल्ली में कब तक रहेंगे और दिल्ली छोड़ने के बाद उनका क्या प्रोग्राम रहेगा।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

२३

२९ फरवरी १९३६

सर जान एण्डरसन से भेंट

समय ११ बजे सुबह—भेंट ४० मिनट चली

मैंने उन्हें बताया कि लन्दन ने दिल्ली को बेखबर रखा था इसीलिए यह बेचैनी पैदा हुई। उन्होंने यह स्वीकार किया और कहा कि प्राइवेट सेक्रेटरी की नियुक्ति से यह बेचैनी और भी बढ़ गई। उनका लिनलिथगो से परिचय तो नहीं है पर उनकी राय में वह एक सुयोग्य व्यक्ति हैं।

मैंने जवाहरलाल की तारीफ की और कहा कि वह कट्टर समाजवादी हैं पर साथ ही वह काल्पनिक जगत में नहीं विचरते और वास्तव में यथार्थवादी हैं।

गवनर ने कहा कि वे इस मामले म कोई निश्चित धारणा नही बनाएगे। उन्ह यह जानकर प्रसन्नता हुई कि मैं जवाहरलाल को यथार्थवादी समझता हू। उन्ह उनकी विचारधारा स चिंता ह, पर मैंने कहा मुझे आशा ह कि जवाहरलालजी जल्दबाजी से काम नही लेंगे। उनकी एकमात्र अभिलाषा जनता-जनार्दन का उत्थान है और जहा आदर्श का प्रश्न उठेगा तो वह कभी पीछे नही हटेंगे पर अपनी काय विधि म वह उतावली से काम नही लेंगे। उन्होंने पूछा आतंकवाद और कम्युनिज्म के बारे म आपका क्या दृष्टिकोण है ? मैंने उत्तर दिया 'बगाल मे तो कम्युनिज्म पनपन स रहा, क्याकि बगाली मानस के लिए वह ग्राह्य नही होगा पर उत्तर भारत की बात अलग है।' मैंने बताया कि मुझे इण्डियन सिविल सर्विस के अमले से आशका है। मैं ज्या-ज्या उनके सम्पक म आता जाता हू, मेरी यह धारणा पक्की होती जाती है कि उन लोगो मे दूरदर्शिता का सवथा अभाव है, वे शान बघारते हैं और लोगो मे खीज पैदा करते है। उन्हाने कहा 'उन्ह समय के अनुरूप अपने-आपको बदलना पडेगा। नीति निर्धारित करना उनके हाथ मे नही किसी और के हाथ म है। जो भी काय योजना बनगी, उन्हे वैसा ही आचरण करना पडेगा।" मैंने कहा कि सर जम्स ग्रिग को अपक्षाकृत अधिक चतुराई से काम लेना चाहिए। गवनर मेरे कथन से सहमत होते दिखाई दिये। सम्भवत वह उन्ह लिखेंगे भी।

२४

कलकत्ता
२ माच, १९३६

प्रिय महादेवभाई

तुम्हारे पत्र न चिंता उत्पन्न कर दी। समाचार-पत्रा म तो निकला नहा कि बापू का रक्तचाप फिर बढ गया है। आशा है बापू पूर्ण विश्राम लेना जारी रखेंगे।

अभी वह लेख मेरी नजर स नहा गुजरा है क्योकि मेरा हरिजन दिल्ली जाता है और वहा स रिडाइरक्ट होकर यहा आएगा।

मैं गवनर स परसो मिला और उनस दिल खोलकर बातें की। दिल्ली म हम सबध म मिलेंगे, तब बात करेंगे।

२२

कलकत्ता
२८ फरवरी, १९३६

प्रिय महादेवभाई

बापू का प्रोग्राम क्या है? मैं १२ या १३ मार्च को दिल्ली के लिए रवाना होना चाहता हूं। इससे पहले ही चल पड़ता, पर मेरे भानजे का अपेंडिसाइटिस का आपरेशन होनेवाला है और डाक्टरों ने इसके लिए ५ तारीख निश्चित की है। अतएव उसके कुछ अच्छे होते ही मैं रवाना हो जाऊंगा।

आशा है वल्लभभाई भी बापू के साथ आ रहे हैं। कृपा करके लिखो कि वह दिल्ली में कब तक रहेंगे और दिल्ली छोड़ने के बाद उनका क्या प्रोग्राम रहेगा।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

२३

२९ फरवरी १९३६

सर जान एण्डरसन से भेंट

समय ११ बजे सुबह—भेंट ४० मिनट चली

मैंने उन्हें बताया कि लन्दन ने दिल्ली को बेखबर रखा था, इसीलिए यह बेचैनी पैदा हुई। उन्होंने यह स्वीकार किया और कहा कि प्राइवेट सेक्रेटरी की नियुक्ति से यह बेचैनी और भी बढ़ गई। उनका लिनलिथगो से परिचय तो नहीं है, पर उनकी राय में वह एक सुयोग्य व्यक्ति हैं।

मैंने जवाहरलाल की तारीफ की और कहा कि वह कट्टर समाजवादी हैं, पर साथ ही वह काल्पनिक जगत में नहीं विचरते और वास्तव में यथार्थवादी हैं।

गवनर ने कहा कि वे इस मामले म कोई निश्चित धारणा नही बनाएग। उन्ह यह जानकर प्रसन्नता हुई कि मैं जवाहरलाल को यथार्थवादी समझता हू। उन्ह उनकी विचारधारा स चिन्ता है पर मैंने कहा 'मुझे आशा है कि जवाहरलालजी जल्द बाजी से काम नही लेंगे। उनकी एकमात्र अभिलाषा जनता जनार्दन का उत्थान है, और जहा आन्श का प्रश्न उठेगा तो वह कभी पीछे नही हटेंगे, पर अपनी काय-विधि मे वह उतावली से काम नही लेंगे।" उन्होंने पूछा आतकवाद और कम्यु-निज्म के बार म आपका क्या दृष्टिकोण है ? मैंने उत्तर दिया 'बगाल मे तो कम्युनिज्म पनपन स रहा क्योंकि बगाली मानस के लिए वह ग्राह्य नही होगा, पर उत्तर भारत की बात अलग है। मैंने बताया कि मुझे इण्डियन सिविल सर्विस के अमले से आशका है। मैं ज्यो-ज्यो उनके सम्पक म आता जाता हू मेरी यह धारणा पक्की होती जाती है कि उन लोगों म दूरदर्शिता का सवथा अभाव है वे शान बघारत है और लोगो म खीज पदा करते हैं। उन्होंन कहा, 'उन्ह समय के अनु रूप अपने-आपको बदलना पडेगा। नीति निर्धारित करना उनके हाथ मे नही, किसी और के हाथ म है। जो भी काय योजना बनगी, उन्हें वसा ही आचरण करना पडेगा।' मैंने कहा कि सर जेम्स ग्रिग को अपेक्षाकृत अधिक चतुराई से काम लेना चाहिए। गवनर मेर कथन से सहमत होत दिखाई दिये। सम्भवत वह उन्ह लिखेंगे भी।

२४

कलकत्ता
२ माच, १९३६

प्रिय महादेवभाई

तुम्हार पत्र न चिंता उत्पन्न कर दी। समाचार-पत्रों म तो निकला नहीं कि बापू का रक्तचाप फिर बढ गया है। आशा है बापू पूर्ण विश्राम लेना जारी रखेंगे।

अभी वह लेख मेरी नजर स नहीं गुजरा है क्योंकि मेरा हरिजन दिल्ली जाता है और वहां स रिडाइरक्ट होकर यहा आएगा।

मैं गवनर स परसों मिला और उनसे दिल खोलकर बातें की। दिल्ली मे हम गवध म मिलेंगे, तब बात करेंगे।

तुमने मुझे वह पत्र नहीं भेजा, जो जवाहरलालजी ने तुम्हें बापू के साथ हुई मेरी बातचीत के संबंध में लिखा था। पर तुम्हें समय भी कहां मिला!

कमला (नेहरू) का देहावसान बड़े शोक का विषय है। जवाहरलालजी को समुद्री तार भेजूंगा, कहीं इस बिछोह के कारण उनका स्वभाव और भी तीखा न हो जाय। मुझसे यही प्रश्न एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति ने किया था। मैंने उत्तर दिया कि मैं तो नहीं समझता कि पारिवारिक संकट उनके राजनैतिक निर्णय निश्चय को प्रभावित कर सकेगा। जवाहरलालजी की क्षति के प्रति मेरी गहरी संवेदना है।

बापू ने सम्राट के निधन पर जो संवेदना संदेश भेजा था क्या उसका कोई उत्तर आया?

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

२५

सावली
५ मार्च, १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका कृपा पत्र मिला। इस पत्र के पहुंचने से पहले ही आपको मेरा तार मिल चुका होगा। हम निश्चित रूप से ८ तारीख की सुबह दिल्ली पहुंच रहे हैं और मैं १३ या १४ को आपके आने की प्रतीक्षा करूंगा आप जब तक आसानी से न आ सकें, न आइए।

आशा है आपको अब तक हरिजन का पिछला अंक मिल गया होगा। काम अधिक था इसलिए आपको बापू के साथ आपके वार्तालाप के संबंध में जवाहर लाल के पत्र की नकल नहीं भेज पाया। आप दिल्ली आएंगे तो दिखाऊंगा अपना उत्तर भी।

हां कमला का देहावसान अवश्य एक दुर्घटना है पर इससे तो जवाहर के त्याग में और भी चार चांद लग गए हैं। और जब वह किसी दिन स्वयं फांसी के तख्ते पर झूलेंगे तो उनका यश शिखर से बातें करेगा पर यह सम्भावना कल्पना

तीत है। वह तो उत्तरोत्तर यश की ओर बढ़ते जा रहे है। वाइसराय के प्राइवेट सेक्रेटरी ने बापू के सवदना-सूचक तार की प्राप्ति 'धन्यवाद सहित' स्वीकारी थी और कहा था कि तार सम्राट के पास भेज दिया गया है।

शेष मिलने पर

सप्रेम,
महादेव

२६

मगनवाडी
वर्धा
६ मार्च १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी

पोस्टकार्ड भेज रहा हू कुछ खयाल मत कीजिए। मेरा सारा सामान स्टेशन चला गया है और मैं यहा गाडी का इतजार कर रहा हू जो डेढ घटा लेट है। मेरे पास लिखने की कोई सामग्री नही है। जब हम चादा से यहा पहुचे तो आपके दो पत्र मिले और मैं उन्हे रात के ११ बजे देख पाया। बापू को हमारे बीच केवल हमारी अपनी पवित्रता और मूक प्रार्थना ही रख सकती है और चूकि मैं यह जानता हू कि उनके अनुयायियो मे कम-से कम आधा दजन तो ऐसे निष्कलुष चरित्रवान व्यक्ति मौजूद है इसलिए बापू हमारे मध्य अवश्य बने रहेगे और अनेक दिनो तक बने रहेगे। बाकी तो मिलने पर दिल खोलकर बातें होगी।

अब कुछ काम की बात। मारवाडी रिलीफ सोसाइटी हमे शहद नियमित रूप से भेजती रहती है। मैं यह नही चाहता कि वह शहद यहा आये इसलिए मैंने सोसाइटी को लिख दिया है कि जब आप दिल्ली के लिए रवाना हो तो वह आपके साथ दे दे। जल्दी नही है। केवल इतना ही काफी होगा कि कोई बजनाथजी कन्दिया को टेलिफोन कर दे कि शहद आपके दिल्ली रवाना होने से पहले आपके पास पहुचा दे। आपको बापू का गुजराती लेख अग्रेजी लेख की अपेक्षा अधिक अच्छा लगा, सो जाना। वास्तव मे, वह गुजराती लेख मैंने लिखा था। मैं लेख के

नीचे यह लिखना भूल गया कि वह अंग्रजी लेख का अनुवाद है, पर वह मुक्त अनुवाद था इसलिए मैंने सोचा कि उसे बापू का लेख ही समझा जाय।

आपका,
महादेव

श्री घनश्यामदास बिडला
८ रायल एक्सचेंज प्लेस
कलकत्ता

२७

२६, चेशाम प्लेस एस० डब्ल्यू० १
१० मार्च १६३६

प्रिय श्री बिडला

यह पत्र केवल आपके २४ फरवरी के पत्र के लिए अपना आभार प्रकट करने के लिए लिख रहा हूं। आपका अनुमान ठीक ही है कि मैं दिल्ली में सिर्फ एक या दो दिन अपना नया निवास देखने भर को ठहरूंगा।

आपने आवश्यकता पडने पर अपनी सहायता प्रदान करने की जो तत्परता दिखाई है उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

भवदीय
लिनलिथगो

२८

लखनऊ
३० ३ ३६

प्रिय पारसनाथजी

हिंदुस्तान टाइम्स में हैलिफैक्स और बापू के बीच हुए तथाकथित पत्र व्यवहार के सरकारी खण्डन को पढकर बापू को बडी मनोवेदना हुई। समझ में नहीं आता इस प्रकार की मनगढ़ंत कहानियों पर आप कैसे विश्वास कर लेते हैं

और इससे भी बुरी बात यह है कि उन्हें छपने देते है। इनसे न तो हिन्दुस्तान टाइम्स की प्रतिष्ठा बढती है, न देश का ही हित-साधन होता है। उल्टे इनसे देश का अमगल ही होता है।

बापू ने उसका खण्डन भेजा है जिसमे उन्होने आपको बुरी तरह लताडा है। हम यहा तीन तारीख तक हैं। क्या आप लिखेंगे कि इस अत्यत शोचनीय और मैं तो कहूगा शरारत से भरी कपोल-कल्पना के लिए कौन उत्तरदायी है ?

भवदीय
महादेव

श्री पारसनाथजी
हिन्दुस्तान टाइम्स,
बन वशन रोड
दिल्ली

२६

लखनऊ
२० ३ ३६

प्रिय घनश्यामदासजी,

बापूजी के आदेश से पारसनाथजी को पत्र लिखा है। उसकी नकल इसके साथ भेज रहा हू। बापू को बडा दु ख हुआ। यह सब कार्यवाही मुझे चमनलाल की मालूम होती है। यह आदमी अखबार का कभी भला करनेवाला नही है।

हम यहा ३ तारीख तक हैं। ७ तक इलाहाबाद। १२ तक फिर यहा। उसके बाद वर्धा।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा। सरदार भी अब अच्छे हो गए है।

आपका,
महादेव

३०

२ अप्रैल, १९३६

प्रिय महादेवभाई

बापू को बता देना कि 'हिंदुस्तान टाइम्स' में छपी रिपोर्ट पर निगाह पड़ते ही मैंने पारसनाथजी से टेलिफोन पर बात की। पारसनाथजी को तो सबसे ज्यादा सदमा हुआ। जब मैं ग्वालियर के लिए रवाना हो रहा था तो मैंने पारसनाथजी को सर पुरुषोत्तमदास को, जो मेरे अतिथि के रूप में ठहरे हुए थे, भोजन के समय साथ देने को कहा था। मैंने तो सोचा भी नहीं था कि उसका यह नतीजा निकलेगा। यह चमनलाल की नहीं सालीवीश्वरन की करतूत थी। मुझे बताया गया है कि स्वयं सालीवतीश्वरन कुछ निहित हितों के—जो इस प्रकार का संवाद भारतीय पत्रों में छपते देखने को बेतरह आतुर रहते हैं—हाथ की कठपुतली बन गया था। इस बात में कहां तक सचाई है कह नहीं सकता, पर स्वयं पारसनाथजी को इसमें षड्यंत्र की गंध आ रही है। इन सारी चीजों की तह में माधवराव का हाथ बताया जाता है।

जो भी हो, एक बात जाहिर है कि पारसनाथजी की अनुपस्थिति में ऐसी चीजें 'हिंदुस्तान टाइम्स' में क्या छपी? इससे सारे सम्पादकीय विभाग में उलट फेर करना अनिवार्य हो गया है। सम्पादकीय विभाग में काम करनेवालों को यह हृदयंगम कर लेना होगा कि 'हिंदुस्तान टाइम्स' में सनसनीखेज खबरों के लिए स्थान नहीं है। काम दुरूह अवश्य है पर पारसनाथजी इस मामले में मुझसे सहमत हैं कि ऐसा करना ही होगा।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
इलाहाबाद

३१

इलाहाबाद
७ अप्रैल १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपके पत्र की बहुत सराहना करता हू। आपका पत्र आने से पहले ही पारसनाथजी को मैं लिख चुका था कि सारे सम्पादक मण्डल में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है। मैंने लिखा कि पत्र के सारे विभागों पर पूर्ण नियन्त्रण रखना जरूरी है। इनमें 'कप आफ टी' और 'विज्ञापन' विभाग भी आते है। सालीवती पारसनाथजी की चिट्ठी लेकर आया था। उसने मुझसे मिलने की दो बार कोशिश की। मैंने नीचे उतरकर उसे भीड मे से खोज निकालने की कोशिश की पर वह नही मिला। बापू उससे बात करने को बिलकुल तैयार नही थे। वह कितना बदनाम है यह आप नही जानते। पर उससे मिले बगैर ही मैंने अन्दाजा लगा लिया कि वह क्या सफाई देना चाहेगा। यह सफाई खोखली है तो भी मैं उससे लखनऊ मे मिलने की कोशिश करूगा। आपको मालूम ही है कि जब मैं दिल्ली में था तो 'मैन्चेस्टर गार्जियन' के ख्यातनामा सम्पादक सी० पी० स्काट की जीवनी पढ रहा था। मैंने पुस्तक वही पूरी पढ ली थी। अब तक मैंने जितने जीवन चरित्र पढे हैं यह उनमें सर्वोत्कृष्ट है। इससे पता चलता है कि एक पत्रकार को अपना पवित्र कर्त्तव्य ठीक ढग से निबाहने के लिए किस तरह सत-जैसा आचरण करना चाहिए। मैं तो कहूगा कि हमारे संवाददाताओं का एक प्रतिशत भी इस कसौटी पर खरा नही उतरेगा—ऐसी कसौटी जिसका पुस्तक मे वर्णन है, और जिस पर कसे जाकर स्काट खरे उतरे।

पर ये सब बेकार की बातें हैं। यह उपदेश मैं आप पर क्यो लादू? किसी संवाददाता पर लादता तो बात भी थी और लादता भी तो मेरा सारा प्रयास व्यर्थ सिद्ध होता।

वर्किंग कमेटी का अधिवेशन काफी झमेले का रहा। पर वे विघ्न डालनेवालों से बच निकले—यह नही सकता कब तक के लिए। दोनो मे से किसी भी पक्ष को नतीजे से तसल्ली नही हुई। अगले कुछ दिनो मे पता लग जाएगा कि हवा का रुख किस तरफ है। बापू को काफी मेहनत करनी पडी, पर वह इस भार का निबाह ले गए, और जैसा कि होता आया है, सब पर अपनी छाप लगा दी। इससे अधिक क्या कहू?

पत्र काफी लम्बा हो गया क्षमा करिएगा।

सप्रेम,
महादेव

पुनश्च

हम घंटे भर के भीतर लखनऊ के लिए चल पड़ेंगे और यह जल्दी-जल्दी लिखा गया है।

३२

लखनऊ
१५ अप्रल १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी

जगाथा ने उस मनगन्त सवाद को लेकर काफी परेशान कर दिया मालूम होता है। आप पारसनाथजी से कहिए कि उस घटना से सम्बन्ध रखनेवाले सारे कटिंग उसके पास भेज दें और उसे बताए कि यह सब कैसे हुआ। इससे वह शांत हो जाएगी।

जवाहरलालजी नयी वर्किंग कमेटी के गठन-काय में जुटे हुए हैं। उन्हें विचित्र स्थिति का सामना करना पड रहा है। हम अपनी यात्रा कल तक के लिए स्थगित करनी पडी। हम लखनऊ बम्बई मेल से रवाना होंगे।

दिनकर पण्ड्या लिखता है कि उसने आपके साथ काफी देर तक बात की और आपने उसे बापू से मिलने की सलाह दी है। बापू जानना चाहते हैं कि आपके और उसके बीच क्या बात हुई और उसके बारे में आपकी क्या राय है और आप उसके सम्बन्ध में क्या कराना चाहते हैं।

मैंने आपको इलाहाबाद से एक लम्बी चिट्ठी लिखी थी पता नहीं आपको मिली या नहीं।

सप्रेम,
महादेव

३३

१७ अप्रल, १६३६

प्रिय महादेवभाइ,

मैं अपने सेक्रेटरी को सारे कटिंग कुमारी अगाथा को भेजने की ताकीद कर रहा हू। नयी दिल्ली क कुछ काग्रेस क्षेत्रो म अफवाह है कि उस कहानी के लिए मैं जिम्मेवार हू। फलत मेरी पाजीशन को गलत समझा जा रहा है और मरे लिए यह आवश्यक हो गया है कि मैं लाड लिनलिथगो को लिखकर उन्ह वस्तु स्थिति से अवगत करू।

हिन्दुस्तान टाइम्स के बारे म तुमने अपनी लम्बी चिटठी मे जो लिखा है सो समझा। पर मेरा कहना यह है कि 'हिन्दुस्तान टाइम्स' का अथ है पारसनाथ जी और देवदास। मैं तो एक प्रकार से बाहर का ही आदमी हू। उन्ह पत्र के प्रबन्ध म मेरा हस्तक्षेप शायद अच्छा नही लगेगा। मैंने पारसनाथजी को अपना दृष्टिकोण बता दिया और उन्होन सालीवती को अलग कर दिया है। जोसेफ इस महीने के अन्त म जा रहा है। पर पारसनाथजी चमनलाल के प्रति अभी भी आकर्षित हैं और मैं उन्हे उन्हे निकालने को बाध्य नहीं कर सकता। एक-न एक दिन पारसनाथजी और देवदास दोनो ही मुझसे सहमत होंगे।

पडितजी ने (मालवीयजी) अभी त्रावणकोर के सम्बन्ध म कोई निश्चय नही किया है कह नही सकता वह जायेंगे भी या नहीं। मैंने रामचद्रन स कह दिया है कि जब मेरी जरूरत हो बता दें। शायद बापू को पता ही होगा कि मैंने त्रावण कोर दरबार से जत्थे और जलूस की समस्या हल करवा ली है। बात केवल इतनी ही है कि हम जत्थे को प्रचारक मण्डल का नाम दें और जलूस का नगर-कीतन का नाम। उन लोगो न एक ईसाई जलूस भी रुकवा दिया था और मुझे बताया गया है कि सवर्ण हिन्दुओं के मामले म वे भेद करने को तयार नहीं हैं। आप इस उत्सवों का क्या नाम देते हैं? इन नरेशो के लिए यह बडे महत्त्व का प्रश्न बन जाता है और हम तो सार चाहते हैं नाम के पचड़े म हम क्यो पडें।

रही लिनकर पण्ड्या की बात, सो मैंने उस बापू स मिलन को हर्गिज नहीं कहा। उसके साथ मेरी काफी देर तक बात हुई और मैंने उस बता दिया कि मेरी राय म वह असफल प्रमाणित हुआ है। बाजरी के बीज नष्ट हुए हो कर्टिन के बीजो की भी वही दशा हुई। भेडें मर गइ साड काम नहीं आया और आस्ट्रेलियन भेडें और दुम्बे भी मरते-मरते बच। मेरे पिलानी पहुचन को देर थी कि एक ही

दिन म मैंने साड का एक गाय म जाडा खिला दिया। पण्डया न जा कठिनाइया गिनाई थी व उनके दिमाग की उपज मात्र थी। मुझ ता एसा लगा कि दिनकर उन लागा म से है जो पहल से यह निश्चय कर लेते है कि अमुक काम उनके वृत स बाहर है और फिर कोई खटपट नही करते। उसका स्वभाव ही ऐसा ह। बस वह बडा महनती है और लगनवाला आदमी ह। उस पर अशर्फिया लुटे कायला पर मुहर लग वाली कहावत चरितार्थ हाती है। उसन अनक बार धला बचान क लिए रुपया खच कर डाला। मैंने उसे यह भी बता दिया कि वह नया आदमी है इसलिए शुरू ही शुरू म उसस ठास नतीजा की आशा करना उचित नही है। इसलिए मैंने उससे कह दिया कि ६ महीने का प्रयाग और सही। उसने मरी त्रुटिया को समझा और मैंने उस बता दिया कि मैं भी उसकी कमजोरिया से वाकिफ हू। मैंन कहा तुम्ही बताओ तुम क्या क्या ठोस काम कर सकते हो और कितना खच हागा? इस पर उसन कहा आपकी और मरी काय प्रणाली म जमीन आसमान का अन्तर है इसलिए आपके साथ मेरी गुजर हाना कठिन है।' बातचीत प्रेमपूवक हुई साथ ही साफगोई भी बरती गई। मैंने कहा मैं कुछ कठिन आदमी हू इसलिए यदि तुम्हे लगे कि तुम्हारा मर साथ गुजारा नही हागा तो मामला खत्म हुआ समझना चाहिए। इसपर उसन कहा कि अच्छा हो कि वह और मैं दोनो बापू स साथ-साथ मिलें। मैंने कहा कि 'यह अनावश्यक ह। हरिजन सवक सघ म तो मैं बापू की हिदायतो पर चलता हू पर पिलानी मे म सब कुछ अपने ढग से चलाता हू। मैं बापू म परामश करता तो हू पर ऐसा केवल अपने भल क लिए। मैंने उस सलाह दी कि पिलानी छाडने स पहले बापू से मिल लो। इसलिए उसन बापू का लिखा था। आशा है इसस स्थिति स्पष्ट हो गई होगी। बापू का सारी बात बता देना।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाइ देसाइ

३४

१६ अप्रल १९३६

महामहिम

आपके आगमन क तुरत बाद मैं आपका कदापि न लिखता पर एक मामल म मर लिए अपनी सफाइ देना आवश्यक हो गया है।

'हिन्दुस्तान टाइम्स' दिल्ली का एक दैनिक पत्र है। मैं उसका एक प्रकार स मालिक हू। पत्र म यह गप छप गई थी कि लाड हैलिफक्स आपके और गाधीजी के बीच भेंट करान की व्यवस्था कर रहे है। पत्र क बम्बई स्थित सवाद दाता को उसके एक मित्र ने बताया था कि दिल्ली म अफवाह है कि आप गाधीजी से मिलनेवाले हैं। उसने यह कहानी गढी और दिल्ली भेज दी। यह समाचार पत्र के मनेजिंग डाइरेक्टर की थोडी सी देर की अनुपस्थिति म छप गया। म उस काम के सिलसिले म ग्वालियर गया हुआ था। ज्यो ही यह खबर पढी कि मैंने मनेजिंग डाइरक्टर को फोन किया। मनेजिंग डाइरेक्टर भी चकित हुआ। उसम इस खबर का खण्डन करने को कहा गया। यह खण्डन छपा और उसके तुरत बाद सरकारी खण्डन जारी हुआ। जो विशेष सवाददाता इस बेबुनियाद खबर के लिए उत्तरदायी था, उसे तुरत बरखास्त कर दिया गया और हम समूचे सम्पादक मण्डल म हर फेर करन की बात सोच रहे हैं। मैं यह पत्र हार्दिक खेद प्रकट करने और यह बतान क लिए लिख रहा हू कि मुझे इस घटना स कितना सदमा पहुचा है।

अन्य अनेक देशो की भाति भारत म भी यह धारणा सी बन गई है कि पत्र कारिता सनसनी पर ही पनप सकती है। हिन्दुस्तान टाइम्स की यह पालिसी नहीं है और हम पत्र के सम्पादकीय विभाग म आमूल परिवतन करन की ओर कदम उठा रहे है।

आपको यह जानने मे रुचि होगी कि एक दिन पहले लगभग इसी भाति की खबर मद्रास के 'हिन्दू' म छप चुकी थी। कलकत्ते की अमृत बाजार पत्रिका और लाहौर के पीपल म भी इसी तरह की खबर एक दिन बाद छपी। कटिंग

३५

वर्धा
२० अप्रैल १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी

आपके लम्बे पत्र के लिए धन्यवाद। जब मैंने 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के बारे में लिखा तो मैं महज बापू के विचार व्यक्त कर रहा था। एक ताजी भूल नजर से गुजरी है। अभी हाल में 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में एक वक्तव्य प्रकाशित हुआ जो अधिकृत बताया गया है, जिसमें कहा गया है कि कांग्रेस ने २० ०००) के घाटे का अनुमान लगाया है और यह घाटा नुमाइश की बदौलत हुआ है। जब बापू ने पढ़ा तो वे हक्के बक्के रह गये। बोले "यह तो खुल्लम खुल्ला मानहानि है। जहां तक नुमाइश का ताल्लुक है, अधिकारियों का अन्दाजा है कि जो व्यय हुआ है उसकी पूर्ति आमदनी में हो जायगी, जो २५ ०००) कूती गई है। इस वक्तव्य के लिए चमनलाल को छोड़ और कोई जिम्मेवार नहीं था। पर जिम्मेवार जो भी हो, यह एक ऐसी बात है जिसे 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में स्थान नहीं मिलना चाहिए था। बापू के मन में कैसी उथल-पुथल हुई इसका अन्दाजा आप उनके देवदास को लिखे पत्र से लगा सकते हैं। मैं सम्बद्ध अंश उद्धृत कर रहा हूं

'मेरी राय में तो 'हिन्दुस्तान टाइम्स' बिलकुल निकम्मा पत्र बन गया है। उसमें कोई भी सही रिपोर्ट नहीं छपती है। जो रिपोर्टें छपती हैं उनसे हानि ही होती है। यदि तुम पत्र का स्तर ऊंचा नहीं कर सकते तो उससे नाता तोड लो। मुझे तो एक भी ऐसा पत्र दिखाई नहीं देता है जो विश्वसनीय खबरें छापता हो। मेरी उदाहरण देने की इच्छा नहीं है। इस विषय पर महादेव ने पारसनाथ को लिखा था पर कोई सुधार देखने में नहीं आया। तुम कुछ कर नहीं सकते। तो फिर कौन कर सकता है?'

यह आपका पत्र पहुंचने से पहले लिखा गया था। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि सालीवटी को निकाल दिया गया। उसकी भूलें अक्षम्य हैं। मैं तो नहीं समझता कि आप जो कुछ करेंगे उससे धारणा में परिवर्तन होगा। जो-कुछ छप चुका है उससे समझौते की झीनी सम्भावना बहुत दिनों के लिए विदा हो गई और इससे हमारी प्रतिष्ठा को भी गहरी चोट पहुंची है। आप जो कदम उठाने जा रहे हैं उससे शायद स्थिति में थोड़ा सुधार हो।

दिनकर पण्ड्या के मामले में जो हुआ सो समझा। कैसी विचित्र बात है कि

वह बापू का ठीक ठीक नहीं बता सका कि आपके और उसके बीच क्या बातें हुई हैं ? आज सोमवार है इसलिए बापू से इस विषय में अभी बात नहीं हुई। उनसे बात करने के बाद आपको उनके विचार लिखूगा।

पता नहीं आपने जयप्रकाश नारायण की पुस्तक 'समाजवाद ही क्या ?' पढ़ी है या नहीं। जरूर पढ़िए। बडी योग्यता के साथ लिखी गई है।

बापू ने शेगाव जाने का सकल्प-सा कर लिया है। यहा से कोई ५ मील की दूरी पर है। छोटा-सा गाव है, कोई ६०० की आबादी है जिनमें से प्राय एक तिहाई हरिजन हैं। बरसात के दिनो में बापू अपना स्वास्थ्य बनाए रख सकेंगे या नही मुझे सशय है क्योकि वर्षा ऋतु में हमारे गाव मलेरिया की खान बन जाते हैं। पर जब वह कोई निश्चय कर लेते हैं तो किसी की नही सुनते। वल्लभभाई का विरोध निकम्मा साबित हुआ, और जमनालालजी ने तो पर्याप्त विरोध किया भी नहीं।

आपका ही
महादेव

३६

वाइसराय भवन,
नयी दिल्ली
२० अप्रैल १९३६

प्रिय श्री बिडला,

आपके १८ तारीख के पत्र के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं प्रेस की कठिनाइयो को अच्छी तरह समझता हू और मैं यह कभी नहीं सोचता कि जिस वक्तव्य का आपने जिक्र किया है वह आपकी सहमति से प्रकाशित हुआ है।

मेरे विवाह की रजत जयन्ती के उपलक्ष में भेजी गई आपकी शुभकामनाओ के लिए आभारी हू। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप मेरा ब्राडकास्ट सुन सके। उसका रिकार्डिंग कुल मिलाकर सफल रहा।

भवदीय
लिनलिथगो

श्री घनश्यामदास बिड़ला

३७

वाइसराय भवन,
नयी दिल्ली
२३ अप्रल, १६३६

प्रिय श्री बिडला

हम आज शाम को देहरादून के लिए रवाना हो रहे है। महामहिम वाइसराय ने मुझे आपसे ब्राडकास्टिंग के सम्बन्ध म एक बात कहने को कहा है। समय बहुत थोडा है पर क्या आपके लिए आज ही दोपहर को कुछ समय निकालना सम्भव होगा ? आप टेलिफोन करने की कृपा करें तो मैं आपकी सेवा म मौजूद रहूगा।

भवदीय,
जे० जी० लेथवेट

श्री घनश्यामदास बिडला
एम० एल० ए०

३८

वाइसराय शिविर
देहरादून
२४ अप्रल १६३६

प्रिय श्री बिडला

महामहिम वाइसराय के आदेश से कल मैंने दिल्ली स रवाना होने से पहले आपसे वायरलेस के सम्बन्ध म एक बात पूछने के लिए सम्पर्क साधने की कोशिश की। मुझे दुःख है कि आपके दिल्ली म न होने के कारण मैं आपसे सपर्क नही कर सका। क्या कृपा करके बतायेंगे कि निकट भविष्य म आपसे भेंट करने की कोई

संभावना है ? आपसे साक्षात्कार की प्रसन्नता का यह पहला अवसर होगा।

सद्भावना के साथ,

आपका,

जे० जी० लेथवेट

श्री घनश्यामदास बिड़ला,
एम० एल० ए०

३९

कलकत्ता
२६ अप्रल १९३६

प्रिय महादेवभाई,

मैं कलकत्ते आया हूं। कोई एक महीने यहां ठहरने का विचार है। लार्ड लिनलिथगो के आगमन के तुरंत बाद मैंने उन्हें पत्र लिखकर 'हिंदुस्तान टाइम्स' में छपी उस भूल के सम्बंध में सारी स्थिति बता दी थी। उन्होंने उत्तर में लिखा, कि यदि मैं न भी लिखता तो भी उनके दिमाग में यह बात कभी न आती कि 'हिंदुस्तान टाइम्स' में जो-कुछ छपा है वह मेरी सहमति से छपा है। मैं समझता हूं कि जहां तक उनका संबंध है अब मुझे इस विषय में किसी प्रकार की चिंता नहीं है।

पर 'हिंदुस्तान टाइम्स' की नीति में सुधार करने का बहत्तर प्रश्न मेरी परिधि से बाहर है। एकमात्र पारसनाथजी ही उसे ठीक कर सकते हैं। मेरा निजी अनुभव है कि जीवन के किसी भी क्षेत्र में कुछ-न-कुछ अयोग्यता तो रह ही जाती है, यही अयोग्यता समस्या बनकर उठ खड़ी होती है। भेड़ पालने को ही ले लो या मिल चलाने का ले लो समस्या वही है और 'हिंदुस्तान टाइम्स' को इसका अपवाद नहीं समझना चाहिए। पारसनाथजी कठिनाइयों को समझते हैं और जहां तक ध्येय का संबंध है वह मेरे साथ सहमत है, पर उनकी विचारशैली मेरी विचारशैली से भिन्न है। शायद उनकी धारणा है कि मैं कठिनाइयों को पूरी तरह नहीं समझता और इसलिए मेरे लिए उपदेश देना सहज है। पर उन्हें काम करना पड़ता है इसलिए वह फूंक-फूंककर पांव रखते हैं। मैं उनकी कठिनाइयां समझता हूं पर मुझे विश्वास है कि कड़ी कारवाई में ही उनकी कठिनाइयों का अंत होगा।

बापू ने हिन्दुस्तान टाइम्स के विषय में ऐसी निराशापूर्ण धारणा बना ली, यह देखकर मुझे दुख हुआ। मैं उस हद तक नहीं जाऊंगा। बापू को समझना चाहिए था कि हरेक की अपनी-अपनी कठिनाइयां हैं। वह स्वयं भी तो पत्रकार हैं इसलिए उन्हें यह बात औरों की अपेक्षा अधिक समझनी चाहिए थी। पर हमें आशा करनी चाहिए कि अन्ततोगत्वा हम बापू के अपेक्षित स्तर तक पहुंच जाएंगे।

तुम्हें लिखने के बाद मैंने त्रावणकोर के महाराजा और महारानी से भी और बात की। किसी दिन मैं बापू को दोनों के दृष्टिकोण की बात बताऊंगा। उन्होंने हमारे कार्य के प्रति पूर्ण सहानुभूति प्रकट की पर वे हमारी कार्य विधि से चिंतित हो उठे हैं। उन्हें सभी से भय लगता है। उन्होंने बताया कि नगर-कीर्तनों और प्रचार टोलियों पर से पाबन्दी उठाने का तार भेज दिया गया है।

मैं जयप्रकाशजी की पुस्तक पढ़ूंगा और अपनी राय तुम्हें बताऊंगा। तुमने बापू के किसी गांव में जा बसने के इरादे के बारे में जो लिखा सो जाना। मेरी टीका टिप्पणी अनावश्यक है। कुछ भी कहो बापू एक अव्यावहारिक व्यक्ति कदापि नहीं है और अपनी देखरेख स्वयं करने की उनकी क्षमता में हमें आस्था रखनी चाहिए। पर यह जानकर प्रसन्नता हुई कि वह फिलहाल बंगलोर जा रहे हैं।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

४०

२८ अप्रैल, १९३६

प्रिय श्री लेथवेट

आपका २४ तारीख का पत्र अभी अभी मिला। आपसे भेंट नहीं हो सकी इसका मुझे स्वयं दुख है। पर मैं लिख ही चुका हूं कि यदि कोई ऐसी बात हो

जिसमे मेरी जरूरत हो तो आप नि सकोच भाव से लिखिए मैं आ जाऊगा।

सद्भावनाओ सहित

भवदीय,
घनश्यामदास बिडला

श्री जे० जी० लथवेट
देहरादून

४१

८८, ईटन स्क्वेयर,
एस० डब्ल्यू० १
२९ अप्रैल, १९३६

प्रिय श्री बिडला,

आपके पत्र के लिए और आपने वाइसराय को जो पत्र लिखा है उसकी नकल के लिए धन्यवाद। कहना पडता है कि ससार भर मे भारत ही ऐसा देश नही है जहा प्रेस के कुछ कार्यकर्ता गैर जिम्मेदारी से काम लेते और शरारत करते हैं।

भवदीय
हैलिफैक्स

४२

कलकत्ता
१ मई १९३६

प्रिय महादेवभाई

इस बार 'टिब्यून' ने वह कहानी दुहराई है। मैं असमजस मे पड गया। मैं यह तो नहीं जानता कि यह सम्वाददाता कौन है जिसने सप्रू के नाम लोदियन का पत्र देखा था। यूनाइटेड प्रेस के आदमी ने मुझे फोन किया और मैंने शिकायत

री कि भारतीय पत्रों को निराधार खबरें छापने का चाव है। मैंने सुझाया कि खण्डन जारी करें तो यह सब वाहियात है कहना काफी होगा पर उन लोगों ने जोड़ दिया खबर बेबुनियाद है जो सोलह आने सच नहीं है। मैंने यह कह कर अपनी तसल्ली कर ली कि ट्रिब्यून में जो कुछ छपा है उसका अधिकांश अक्षरश असत्य है।

मैं श्री जयप्रकाश नारायण की पुस्तक पढ रहा हू। अभी समाप्त नहीं की है पर जहा तक पढा है उससे तो मैं विशेष प्रभावित नहीं हुआ। मुझे तो यह साधारण और कृत्रिम लगी। भाषा तीखी है और निहित स्वार्थों का एकत्र होकर मोर्चा लेने को बाध्य कर सकती है। इसका परिणाम यह होगा कि खाई और भी चौड़ी हो जायेगी और समाजवाद हाथ नहीं आयेगा। मेरी अपनी राय तो यह है कि जहा बापू सचमुच का समाजवाद लाने के लिए प्रयत्नशील हैं, ये लोग उसे पीछे ढकेल रहे हैं। मैं समृद्धि के समान वितरण के पक्ष में हू पर जयप्रकाश नारायण ने जो रास्ता सुझाया है उससे यह लक्ष्य पूरा होने से रहा।

एक बात और भी है। क्या किसी ने यह अनुमान लगाया है कि यदि आज सारी समृद्धि का राष्ट्रीयकरण हो जाए और उसका समान रूप से वितरण भी हो जाय तो औसत आय में अति अल्प वृद्धि होगी? परन्तु समाजवाद वर्तमान दारिद्र्य का ठोस रूप से निवारण नहीं कर सकेगा। सबसे अधिक तो जरूरी है कि उत्पादन में वृद्धि हो। समान वितरण अपेक्षाकृत कम शोषपूर्ण साधनों द्वारा हासिल किया जा सकता है। ऐसा कोई भी काम नहीं करना चाहिए जिससे विरोधी तत्त्वों को बल मिले।

देखता हू कि जवाहरलालजी और अन्य लोग आये दिन रूस की दुहाई देते हैं। वह नहीं सकता कि वे अपने तर्क की पुष्टि कैसे करेंगे। यदि वे रूस के बढ़े उत्पादन का श्रेय स्टेट को देते हैं तो वे जर्मनी और इटली के उत्पादन के साथ तुलना क्यों नहीं करते? मैं जर्मनी और इटली की बेकारी के बारे में अधिक तो नहीं कह सकता पर अन्य जनतन्त्र देशों के आंकड़ों के समान ही वहा के आकड़े भी हैं। रूस की सफलता का अधिक श्रेय वहा की तानाशाही को है। यही बात जर्मनी और इटली पर भी लागू होती है। जहा तक इन दोनों देशों के उच्चतर और निम्नतर वर्गों की आय की दूरी को कम करने का प्रश्न है इस दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हुई है।

ये लोग जिस प्रकार रूस की दुहाई देते है और जर्मनी और इटली को कोसते है देखते ही बनता है। मैं इन तीनों को एक श्रेणी में रखता हू। कुछ भी कहो हिटलर के साथ वहा की ९७ प्रतिशत जनता है। यह एक वस्तुस्थिति है भले ही

हम हिटलर की फिलासफी का मानें या न मानें। यदि जर्मनी की ६७ प्रतिशत जनता उसी पद्धति को मानने से इन्कार करती है और अपने ही ढंग की पद्धति पर चलती है तो जवाहरलालजी यह कहनेवाले कौन होते हैं कि जर्मनी के लिए यह अच्छा है और यह बुरा ? हमारे समाजवादी मतदान-पेटी और वयस्क मताधिकार से क्या बिदकते हैं ? वे यह क्या कहते हैं कि वयस्क मताधिकार के बावजूद साधारण व्यक्ति अपने हितों की रक्षा करने में असमर्थ रहेगा ? यदि इंग्लैंड के मतदाता वहां की मध्यकालीन सामंतशाही से लोहा ले सकते थे, तो वर्तमान काल में वे यदि चाहें तो पूंजीवाद से टक्कर लेने के मामले में संसार भर में सबसे अधिक सशक्त सिद्ध हो सकते हैं। वास्तव में बात यह है कि शोषित वर्ग भी यह समझता है कि शोषण को रोकने का सबसे अच्छा मार्ग समाजवाद नहीं है।

पण्ड्या के बारे में लिखते समय मैं एक बात लिखना भूल गया था। मेरे कानों में भनक पड़ी थी कि पण्ड्या की यह धारणा है कि वह पिलानी में कम वेतन पर जो काम करता है सो त्याग की भावना के वशीभूत होकर। मैंने उससे पिलानी में बातचीत के दौरान कहा कि उसे मुझसे पूरा वेतन लेना चाहिए पर यदि वह शुद्ध सेवा भाव से और त्याग के साथ काम करने का इच्छुक है तो उसे कहीं और जाना चाहिए। मैंने उससे कह दिया कि उसे पिलानी में अपने काम को शुद्ध व्यापारिक रूप में लेना चाहिए। इसलिए मैं किसी रूप में उसका ऋणी नहीं होना चाहता। मैंने कहा कि जो लोग त्याग करना चाहते हैं उनके लिए सबसे उपयुक्त स्थान गांधीजी का आश्रम है। मैं खुद भी त्याग नहीं करता हूं इसलिए मैं दूसरों से भी त्याग की अपेक्षा नहीं करता। मैं तो ईमानदारी और कार्यदक्षता चाहता हूं। वह सहमत होता प्रतीत हुआ।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

४३

कलकत्ता
५ मई, १६३६

प्रिय महादेवभाइ

पशु पालन फाम के सबध म परमेश्वरीप्रसाद न बापू को जो योजना दी थी उस पर श्री पारनेरकर की रिपोट बापू ने मरे पास भेजी है। मैं सब-कुछ प गया और रिपोट से बहुत प्रभावित हुआ हू। आदमी योग्य लगता है, यद्यपि अभी मेरा उसके साथ साक्षात्कार नही हुआ है। सम्भव है मेरे प्रभावित होने का एक कारण यह रहा हो कि यह मेरे दृष्टिकोण से बहुत मेल खाती है। मेरी यह धारणा बराबर बनी रही है कि दिल्ली मे ऐसे फाम पर घाटा बिलकुल नही होना चाहिए। यदि अबतक घाटा हुआ है और आगे भी होगा तो इसका दोष परमेश्वरीप्रसाद मे व्यवसाय बुद्धि की कमी को देना चाहिए। बापू के दिल्ली से जाने के बाद मैंने उससे काफी देर तक बात की और उसे बताया कि बापू के पास उसके निमित्त रुपया जरूर है पर वह इसी प्रकार घाटा देते रहने मे अपने ऊपर एक बड़ी जिम्मेदारी ल रहा है। उसन यह बात एक प्रकार से स्वीकार की और इस विषय मे महाबीरप्रसादजी पोद्दार से सलाह मशवरा करने का वचन दिया। मैं उसके काम म अधिक हस्तक्षप नही करना चाहता था, इसलिए मैं उसे केवल सलाह देकर ही चुप हो गया। मरी धारणा है कि वह मेरी सलाह पर विचार करेगा।

पारसनाथजी की चिट्ठी मिली होगी। उनका कहना है कि नुमाइश के सबध म जो कुछ छपा उसके लिए हिदुस्तान टाइम्स उत्तरदायी नही है। वह सूचना एक वरिष्ठ अधिकारी से प्राप्त हुई थी और पत्र क सवाददाता का उसके सही होने म शक करने की कोई गुजाइश नहीं थी।

जासफ भी गया। शायद अब चमनलाल की बारी है। म तो नही समझता कि पारसनाथजी इस सुझाव को अधिक समय तक टालत रहेंगे, पर उ हे अपने प्रयोग करन दो। मैं जब कोई चीज हाथ म ले लेता हू तो चन से नही बैठता और काफी कठिन साबित होता हू। पण्डया की भाति पारसनाथजी को भी लगन लगा है कि मैं जरूरत से ज्यादा हस्तक्षप करने लगा हू। पर मरी समझ म यह आवश्यक था। वसे कायदे कानून की दृष्टि से मैंने सारा काम पारसनाथजी और न्वैदास पर छोड दिया है।

अब यह बताओ कि बापू की तबीयत कैसी है क्या वह आराम लेते है ? दक्षिण की ओर जाने का बहुत मन करता है क्योंकि वहा बापू भी होंगे, पर अभी मेरा वहा जाना नही हो सकेगा। अन्त प्रेरणा कहती है कि शायद मुझे इस महीने मे शिमला जाना पडे।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

महादेवभाई देसाई
वर्धा

४४

भाई घनश्यामदास,

महादेव पुना गया है। चद्रशंकर बीमार है। पुना से बगलोर मिलेगा। मैं कल यहा से बगलूर जाता हू। नदीदुर्ग पर आधा महीना रहूगा। उसके बाद बगलूर मे वल्लभभाई के लिये वहा जाता हू।

परमेश्वरी के बारे मे पारनेरकर का अभिप्राय तो लिया और भी लूगा। परमेश्वरी का गो-सेवा सघ के दस हजार दिलाने मे देर हो रही है। तीन साल मे विरुद्ध मत दिया है इसलिये सभा बुलानी होगी। यह तो जुन मास मे ही हो सकती है। अब पारनेरकर का विरुद्ध मत आया है। इसलिये और भी मुश्किल आवेगी। पारनेरकर अनुभवी तो है ही, साबरमती मे बरसो तक काम किया है। आजकल धुलिया मे गो-सेवा सघ की तरफ से काम कर रहा है।

दिनकर मुझे मिल गया। उसे कहा है हारना नही चाहिये। तुमको सतोष देना ही चाहिये। तुमारी सच्चाई के बारे मे अथवा तुमारी महनत के बारे मे कुछ शक नही है। लेकिन तुमारी कार्यदक्षता के बारे मे घनश्यामदासजी को अवश्य सदेह पैदा हुआ है। ऐसा मैंने उसको कह दिया है। तुमको वह मिल जायगा। उचित किया जाय।

मुझको शेगाव अच्छा लगा है।

आवश्यकता पैदा होने पर बगलूर आ जाना—वहा का जलवायु तो अच्छा ही है।

बापु के आशीर्वाद

७-५-३६

४५

नन्दी पर्वत,
बरास्ता बंगलोर
१२ मई १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी

मुझे पूना जाना पड़ा। मेरी अनुपस्थिति में बापू ने आपकी चिट्ठी खोल ली और मैं देखता हूं कि चिट्ठी पर बापू का नोट है कि उत्तर दे दिया गया है। मैं समझता हूं बापू ने अपने उत्तर के दौरान परमेश्वरीप्रसादवाले मामले को पूरे तौर से निपटा दिया होगा। मेरी धारणा है कि बापू कुल मिलाकर आपसे सहमत हैं।

हिन्दुस्तान टाइम्स में छपी उस बेबुनियाद खबर के बारे में मैंने देवदास और पारसनाथजी से पत्र-व्यवहार किया था। मुझे बताया गया है कि वह सूत्र श्रीप्रकाश थे पर मुझे यह भी बताया गया है कि चमनलाल ने अपनी रिपोर्ट पहली रिपोर्ट के खण्डन होने के बाद भेजी थी। इस दूसरे अवसर पर पारसनाथजी को या जो भी काम देखता हो वह रिपोर्ट नहीं देनी चाहिए थी। मैंने श्रीप्रकाश को भी लिखा है—निःसन्देह बापू के आदेशानुसार।

बापू असाधारण रूप से स्वस्थ हैं। सर मिर्जा इस्माइल और मेडिकल अफसर ने हठ पकड़ी कि बापू कुर्सी पर बैठकर पहाड़ी पर जाएं, पर बापू ने ५ मील का पूरा रास्ता पैदल तय किया और तिस पर भी थके नहीं।

स्वच्छता और नैसर्गिक शांति के मामले में यह पहाड़ी भारत भर में अपना सानी नहीं रखती। डा० अंसारी के बारे में हमें तार कल कुछ देर से मिला। हम सब हक्के-बक्के रह गये। बापू ने अपनी सारी शोक विह्वलता 'हरिजन' के लिए लिखी एक छोटी सी टिप्पणी में उड़ेल दी है। डा० अंसारी जैसा आदमी मिलना असम्भवप्राय है। क्या ही अच्छा होता यदि आप प्रबंधकारिणी की बैठक कलकत्ते की बजाय यहां करते। अब तो शायद आपका यहां आकर बापू से मिलना सम्भव दिखाई नहीं देता। त्रावणकोर का काम आपको यहां छुट्टी मनाने का समय कहां देगा। क्या आप लालाजी-स्मृति-कोष के ट्रस्टियों के नाम बता सकते हैं? कोष कुछ वर्ष पहले खोला गया था। बापू कहते हैं आपको शायद पता हो।

सप्रेम,
महादेव

४६

कलकत्ता
२० मई १९३६

प्रिय महादेवभाई

मैं दक्षिण आने को आतुर हूं, पर कह नहीं सकता कौन से दिन आना हो। सर मिर्जा ३० तारीख से पहले-पहल आने को और जन्म दिवस के उत्सव में भाग लेने को कहते हैं, पर शायद यह सम्भव न हो। ब्रजमोहन कलकत्ते से बाहर गया हुआ है और उसकी गैर मौजूदगी में मुझ अकेले पर सारा भार आ पड़ा है। तो भी तुम मुझे बापू का प्रोग्राम बता दो। यदि मैं वहां बापू की मौजूदगी में न आ सकूं, तो शायद बरसात शुरू होने के बाद जाऊंगा। पर मैं वहां बापू की मौजूदगी में ही आना पसन्द करूंगा, जन्म दिवस समारोह में पहले या बाद में।

मुझे लालाजी स्मृति-कोष के ट्रस्टियों के नाम मालूम नहीं हैं।

यह जानकर खुशी हुई कि बापू स्वस्थ हैं। देवदास यहां आये थे, पहले से स्वस्थ दिखाई देते थे। वह होमियोपैथी की भूरि भूरि प्रशंसा कर रहे थे। मैं तो इस पथी को अन्धविश्वास मानता हूं।

'हिन्दुस्तान टाइम्स' की पालिसी के बारे में देवदास से काफी देर तक बात हुई। वह मेरे विचारों से सहमत थे। पारसनाथजी और देवदास दोनों ही पत्र का स्तर ऊंचा करने की दिशा में कठोर परिश्रम करेंगे, पर उन्हें सफल-मनोरथ होने में देर लगेगी। वे चमनलाल और भारती दोनों को अलग करने की सोच रहे हैं। देखें वे क्या करते हैं।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
नन्दी पर्वत

४७

कलकत्ता
२३ मई, १६३६

प्रिय श्री लेथवेट

मैं दो डयरियो म रुचि रखता हू, एक तो दिल्ली म है जहा पशुपालन दोनो कामो क लिए होता है दूसरी मेरे राजपूताना स्थित गाव म है, जो दिल्ली स १०० मील दूर पश्चिम म है। इस दूसरी डेयरी का एकमात्र लक्ष्य दुग्ध उत्पादन ह जिसके निमित्त मैं गत वप इग्लड से एक हौलस्टीन साड लाया था। अब अन वरत प्रयत्न करने क बावजूद मैं हरियाणा से अच्छी गायें नही पा सका। दस साल पहले ऐसी स्थिति नही थी। मुझे याद पडता है कि तब मैं रोहतक स प्रतिदिन १३ स १५ सेर तक दूध देनेवाली गायें खरीद सका था। आजकल ८ सेर स अधिक दूध देनेवाली गायें पाना कठिन हो रहा है। बढिया गायो को बडे शहरो म भेज दिया जाता है जहा स वे वापस नही आती।

जब मैं लन्दन म था तो मैंने महामहिम स पूछा था कि क्या गायो की बडे शहरो स अपने मूल स्थान को वापसी की कुछ एसी व्यवस्था हो सकती है जिसस उन्हें कसाईखाना म भेजने के बजाय वापस गाव भेजना उनके मालिको के लिए अधिक लाभदायक लगे ? अपनी डेयरी के लिए हरियाणा से अच्छी गायें पा सकने म मुझे जो कठिनाई हो रही है उस ध्यान म रखते हुए मैं यह सोचने लगा हू कि यदि कलकत्ता म ही अच्छी सूखी गायें खरीदकर उन्हे अपने गाव भेजा जाए तो कसा रहे। ऐसा करना उलटे बास बरेली को भेजने के समान होगा !

मुझे यह देखकर पीडा होती है कि हम भारत म गोधन की नस्ल म सुधार करने के इच्छुक होने पर भी परिस्थितियो स विवश होकर ऐसा नही कर पा रहे हैं। अतएव क्या उस सुझाव को जो मैंने महामहिम को लदन म दिया था, उनक विचाराथ दुहरा सकता हू ? महामहिम ने दो साड भेंट करने के अवसर पर जो अपील की थी उस पर अमल करने की इच्छा स्वाभाविक है। पर प्रश्न यह है कि अच्छे साड कस मिलें ?

ाशा है, महामहिम पूण स्वस्थ होग।
दभावनाआ के साथ,

आपका,
घनश्यामदास बिडला

। जी० लेथवट, सी० आई० ई०
।

४८

वाइसराय भवन,
शिमला
२६/२७ मई, १६३६

ी बिडला,
ापक २३ तारीख क पत्र के लिए धन्यवाद। मैंने पत्र महामहिम को दिखाया उन्होंने मुझे आपको यह बताने को कहा है कि आपन अपने पत्र म जिस की चर्चा की है, उसकी महत्ता को वह अच्छी तरह समझत हैं। उन्होंन कहा वह इस बार म पूछताछ कर रहे हैं और ठीक समय पर आपको परिणाम स त करेंगे।
शुभाकाक्षाओं सहित,

आपका,
जे० जी० लथवेट

ानश्यामदास बिडला
ायल एक्सचेंज प्लेस
त्ता

४६

वाइसराय भवन
शिमला
६ जून १६३६

प्रिय श्री बिड़ला,

महामहिम ने मुझे आपको यह बताने के लिए कहा है कि आपने जिस विषय पर उनसे चर्चा की थी और जिसका जिक्र आपने अपने २ मई के पत्र में भी किया है अर्थात पशुपालन, उसके संबंध में उन्होंने भली भांति विचार किया है।

अच्छी नस्ल के पशुओं को अपने मूलस्थान पर वापस भेजने के लिए भाड़े को नियंत्रित करने के प्रश्न पर, जिससे उन्हें वापस भेजना अधिक आसान सिद्ध हो सके, सविस्तार चर्चा हुई है। विशेषकर शिमला की मीटिंग में। कृषि-समिति की बैठक में जिसमें रेलवे बोर्ड का प्रतिनिधि भी मौजूद था। पता चला कि भाड़ा इस समय भी कम-से-कम है। विचार विमर्श में पशु विशेषज्ञ, इम्पीरियल डेयरी विशेषज्ञ और प्राइवेट पशुपालक शामिल हुए थे। यह तय पाया कि यदि सूखे ढोर वापस ले जाए जाएँ तो भी इससे कसाईखानों के धंधे पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। यह तथ्य भी सामने आया कि शहरों में गायें तबेलों में इतनी गंदी दशा में रखी जाती हैं और उन्हें सानी में रासायनिक द्रव्य इतनी अधिक मात्रा में दिया जाता है कि वे कुछ समय बाद गाभिन होने योग्य नहीं रहतीं। इसलिए साधारण ढोर पालनेवाले उन पशुओं के लिए कसाइयों की अपेक्षा अधिक या उतना भी मूल्य देने को राजी नहीं होते। वाइसराय महोदय ने बताया कि कंट्रैक्टर-जैसे दो एक फार्म अपने बढ़िया ढोरों को गाभिन कराने उत्तर भारत के कुछ प्रदेशों में ले जाते हैं। उन्होंने कहा कि इस प्रणाली को व्यापक बनाया जा सकता है, जहां गायें धंधे की दृष्टि से कम दूध देने लगें, उन्हें गाभिन कराने के लिए वापस भेजा जा सकता है। वे समस्या के इस पहलू पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। यह तो आप मानेंगे ही कि इस समस्या को सुलझाने में अनेक कठिनाइयाँ हैं। उन्होंने इम्पीरियल कृषि परिषद के पशु पालन विशेषज्ञ को समय पाते ही बम्बई और कलकत्ता जाने को कहा है ताकि यह पता लगाया जा सके कि इस दिशा में क्या कुछ किया जा सकता है।

आपके पत्र के संबंध में महामहिम ने जो पूछताछ की है उससे पता चलता है कि कुछ सरकारी फार्मों को छोड़कर जहां उन प्रांतों में नस्ल अच्छी बनाने के लिए काफी खर्च करके सांड पाले जाते हैं, अच्छी नस्ल के सांड पाना प्रायः कठिन है।

पर साधारण तौर पर कई प्रदेशो म अच्छे खास बछडे उपलब्ध हैं जिनस गावा के द्वारा की नस्ल बढिया बनाई जा सकती है। रोहतक-जस इलाका मे पशुपालन का काम नियोजित रूप से हाथ म लिया जा रहा है। महामहिम न इस समय साडा के सबध म जो प्रचार-काय जारी कर रखा है, यदि वह सफल हुआ तो वह समय दूर नही है जब विभिन्न प्राता म अच्छी नस्ल के साड तयार करने के प्रारम्भिक केन्द्र खोल दिये जाए।

भवदीय
जे० जी० लेथवेट

पुनश्च

महामहिम न मुझे आपके ३१ मई के पत्र और उसके साथ भजी गई कतरना के लिए धन्यवाद दने को कहा है।

श्री घनश्यामदास बिडला,
८ रायल एक्सचेंज प्लेस
कलकत्ता

५०

तार

५ जून, १६३६

महादवभाई,
मारफत महात्मा गाधी
बगलोर

कल मद्रास के लिए रवाना हो रहा हू।

—घनश्यामदास

८ रायल एक्सचेंज प्लेस,
कलकत्ता

५१

कलकत्ता
६ जून, १९३६

प्रिय श्री लेथवट

आपके ४ जून के अत्यत रोचक पत्र के लिए धन्यवाद।

रलवे क दृष्टिकोण से पशु भेजने का भाडा न्यूनतम हो सकता है पर पशुओ का व्यापार करनेवालो का यह दष्टिकोण नही है। यदि १० ढोरा का पूरा वगन हरियाणा ले जाया जाए तो हरक ढार पर ३०) खच आता है। यदि ढार कम हुए तो भाडा और भी अधिक हागा। एक सूखी गाय की कलकत्ते मे ३०) कीमत होगी ३०) उसे रोहतक ले जाने म लगेंगे और उनके बच्चा देने तक खिलान के लिए ३०) और मानिए। इस प्रकार खच की दष्टि से यह धधा निषधात्मक ही सिद्ध हागा। रलवे के दष्टिकोण स भी कलकत्त का ढोर निर्यात करन के लिए अधिक भाडा और वापस ले जाने क लिए कम भाडा व्यवहाय हा सकता है। अब भी कलकत्ते स कुछ ढार छपरा क इलाके म वापस भेज जात हैं और मैंने जसा सुना है उसके आधार पर कह सकता हू कि यह बात सही नही है कि शहरा म रहने के बाद गायें गाभिन हान योग्य नही रहती। मेरे एक मित्र पशुपालन म विशेष रुचि रखते है। अभी हाल ही म वे २० गायें गोरखपुर ल गए थे और उनका तजुर्बा सतोषप्रद रहा। पर मैंने इस बार म कोई मत निश्चित रूप म स्थिर नही किया ह। मैं तो केवल इतना ही कहूगा कि हमे कठिनाइया का सामना करना चाहिए और उनका हल ढूढना चाहिए। वापसी के सस्ते भाड स अच्छी नस्ल की गायो का कसाईखाना म जाना कम हो जाएगा और इसका गोमास के व्यापार पर कोइ गहरा असर नहीं पडगा क्योकि केवल अच्छी नस्ल की गायें ही वापस भेजी जाएगी। जसा कि महामहिम स्वय कहत ह 'अच्छी गाया को शहरो मे खरीदने और उन्हें गाभिन करान के लिए वापस भेजने की दिशा में जो भी किया जाएगा, उसका ठोस परिणाम निकलेगा।' यह जानकर प्रसन्नता हुई कि महामहिम न पशुपालन विशषज्ञ का यह पता लगान के लिए कि क्या कुछ किया जा सकता है, कलकत्ता और बम्बई जाने का कह दिया है।

बलो के बारे मे एन० सी० मेहता को लिखूगा कि क्या अच्छे बल मिल सकत हैं। मैंने उन्हें अभी तक इसलिए नहा लिखा कि सरकारी महकमे के पास इस विषय मे उत्साह रखनेवाले गर सरकारी लोगो की सहायता करने योग्य यथेष्ट

साधन नही हैं। उदाहरण के लिए मुझे अच्छी गायें दिलाने म पूसा सहायता नही कर सका, न वह शहद की मक्खियों के पालन की दिशा म ही मरा सहायक हुआ। मैं मधुमक्षिका-पालन का धधा दिल्ली म कायम करने की काशिश कर रहा हू। यदि सफल हुआ, ता मैं उसे अपने इलाके म चलाऊगा।

मैंने हाल ही म पत्रा म पढा था कि महामहिम के कलकत्ता पधारने की सम्भावना है। भारत आगमन के बाद मेरी उनसे भेंट नही हुई है। आप कृपा करके बताएग कि क्या महामहिम कलकत्ते आ रहे हैं? यदि न आ रहे हो, तो अगर मैं जुलाई म शिमला आऊ तो क्या मेरे लिए भेंट का अवसर देना उनके लिए सुविधाजनक रहेगा?

सदभावनाओं के साथ

भवदीय,
घनश्यामदास बिडला

श्री जे० जी० लेथवेट
शिमला

५२

वाइसराय भवन,
शिमला
१७ जून १९३६

प्रिय श्री बिडला,

मैं आपके पशुपालन विषयक पत्र का उत्तर देना तब तक के लिए स्थगित करता आ रहा हू जब तक कि उन मुद्दो पर जिनकी आपने अपने पत्र मे चर्चा की है मुझे विशेषज्ञा से ताजी रिपोट न मिल जाए। पर अभी उसके तयार होन मे देर मालूम देती है, इसलिए मैंने यह अतरिम उत्तर भेजना उचित समझा, जिससे आपको पता रहे कि इस विषय की छानबीन हो रही है।

आपके पत्र के अतिम पैरे के बारे म मुझे यह कहना है कि महामहिम ने अभी अपना कायक्रम तय नही किया है। पर वह निकट भविष्य मे कलकत्ता नही जा रहे हैं। उन्होंने मुझे आपको यह बताने के लिए कहा है कि यदि आप शिमला मे हो तो उन्हें आपसे मिलकर निश्चय ही हर्ष हागा, पर उन्हें आपको केवल उनसे

मिलने के लिए यहा आने का कष्ट देने म सकोच है। यदि आपका इधर आन का सयाग हो, तो आप कृपा करके मुझे सूचना द दीजिए जिसस मैं उनस आपकी भेंट क लिए सुविधाजनक समय निकाल सकू।

सदभावनाओ के साथ

आपका
जे० जी० लेथवेट

श्री घनश्यामदास बिडला
८ रायल एक्सचेंज प्लेस
कलकत्ता

५३

२१ ६ ३६

एक्सप्रेस तार

महात्मा गांधी
वर्धा

भारत माता के चरणो से भक्तिपूर्ण अभिवादन भेजता हू। महाराजा स दो बार मिला। उन्होने आगामी वर्षगाठ के उत्सव पर सतोषजनक परिणाम का वचन दिया है।

—घनश्यामदास

स्टेट गेस्ट हाउस कन्याकुमारी

५४

तार

वर्धागंज
२३ जून, १९३६

घनश्यामदास बिड़ला
गेस्ट हाउस त्रिवेंद्रम

मिला। आशीर्वाद।

—बापू

५५

२७ जून १९३६

पूज्य बापू

वल्लभभाई आपको सारी बात बताएंगे। दक्षिण में मेरे दौरे के संबंध में ऐसी ढेर की ढेर बातें हैं जो केवल जबानी ही बताई जा सकती है। इसलिए मैंने वल्लभभाई को बता दिया है। वही आपको सारी कहानी सुनाएंगे।

मुझे महाराजा और महारानी दोनों ने निश्चित रूप से वचन दिया है कि महाराजा की अगली वर्षगांठ के उत्सव के अवसर पर वे मंदिरों के द्वार खोल देंगे, और उसी अवसर पर इसकी घोषणा कर देंगे। वे इस बात पर दृढ़ हैं कि इस 'उपहार' को नम्रता से ग्रहण किया जाए। यह न जताया जाए कि हमने उन्हें ऐसा करने को विवश कर दिया था। इस बार मैंने उन्हें पूरा आश्वासन दिया। इस बीच वे पुजारियों से निपटेंगे। उनमें से तीन से तो उन्होंने मंदिर प्रवेश के पक्ष में हस्ताक्षर ले भी लिये हैं। जमोरिन भी राजी हो गए हैं। आशा है, अगले दरबार के अवसर पर वे आवश्यक कदम उठा लेंगे, जैसा कि उन्होंने वचन दिया है।

मैंने मैसूर के महाराजा से भी बात की। उन्होंने हरिजनों को दरबार में जाने देने के मामले में पूरी तत्परता दिखाई और कहा कि वह अपने सलाहकारों के साथ विचार करेंगे। इस प्रकार मुझे आशा है कि अगले दशहरा-दरबार के अवसर पर मैसूर में भी हरिजनों को उसमें जाने की अनुमति मिल जाएगी। पर मैसूर के

महाराजा हरिजनों के मन्दिर प्रवेश के मामले में अभी उतने तत्पर नहीं दिखाई दिये।

रही बात हमारे काम की। यदि आपके स्वप्रेरणा भरे काम को छोड़ दिया जाये तो मुझे कहना पड़ता है कि मैं उससे विशेष प्रभावित नहीं हुआ हूं। न बुद्धि कौशल है न काम दक्षता किसी प्रकार गाड़ी चल रही है। पैसा फेंका तो नहा जा रहा है पर मेरा खयाल है कि इतने ही रुपये से अधिक उपयोगी काम हो सकता है। इसके अलावा, रुपया भी काफी बड़ी मात्रा में इकट्ठा किया जा सकता है। अभाव है काम दक्ष कार्यकर्त्ताओं का। पर मैं इन सारी बातों पर कमेटी की बैठक के अवसर पर आपसे विचार विमर्श करूंगा। हमारे कार्यकर्त्ताओं में बगनोर का रामचंद्र चोटी का आदमी है उसके बाद त्रिवेंद्रम के रामचंद्रन का नम्बर है बाकी सब या तो साधारण श्रेणी के हैं या निकम्मे। इस ढांचे के आदमियों को लेकर सुनियोजित रूप से काम करना असम्भव-सा है।

श्रद्धा के साथ

आपका स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

५६

२८ जून १९३६

प्रिय लार्ड लोदियन

क्षमा करिये यदि मैं कहूं कि जब आप लार्ड सभा में सुधार संबंधी निर्देशों पर बोले तो एक यथार्थवादी की तरह नहीं बोले। जब आप आनेवाले दिनों का इतने लुभावने ढंग से वर्णन करते हैं और वर्तमान वातावरण की ओर से आंखें मूंदे रहते हैं तो हम भारतवासी विशेष प्रभावित नहीं होते। क्या मैं वही बात फिर दोहराऊं जो मैं लंदन में आपसे तथा अन्य मित्रों से बार-बार कह चुका हूं कि वर्तमान वातावरण में सुधारों के सफल होने की एक प्रतिशत भी आशा नहीं है यदि सफलता का अर्थ शांति और संतुष्टि लगाया जाए तो ? लन्दन से लौटने पर मैंने बापू से वचन लिया कि नये वाइसराय के आने तक वह सुधारों के संबंध में कुछ नहीं कहेंगे। उन्होंने अपना वचन निबाहा और कांग्रेस की ओर से कुछ नहीं किया गया है। हां जवाहरलाल ने सुधारों का विरोध करने का निर्णय अवश्य ले लिया

है। पर पहले की भांति अब भी पारस्परिक सम्पर्क का अभाव बना हुआ है। मैं तो यही आशा लगाये बैठा हूं कि लार्ड लिनलिथगो इस गतिरोध का अंत करने में सफल होंगे। यदि पारस्परिक सम्पर्क स्थापित हो, और दोनों पक्ष एक-दूसरे को समझने लगें, तो कांग्रेस पद ग्रहण कर सकती है, और सुधार सफल हो सकते हैं। इसके विपरीत, यदि वातावरण जैसा है वैसा ही बना रहा तो कांग्रेस अवश्य ही तीव्र विरोध की नीति अपनायगी। भारत-सचिव कहते हैं, जैसा कि उन्होंने अपनी स्पीच के दौरान कहा, कि ऐसी स्थिति में विशेष अधिकारों का उपयोग किया जाएगा। जवाहरलाल यही तो चाहते हैं।

आपकी ही तरह मैं भी यह मानता हूं कि यदि पूंजीपतियों और समाजवादियों का विरोध विधान सभाओं तक ही सीमित रहे तो संघर्ष का भय नहीं है। पर यह भी वातावरण के ऊपर निर्भर करेगा। यदि कांग्रेस ने पद ग्रहण किया, तो संघर्ष विधान-सभाओं में होगा। ऐसी स्थिति में कांग्रेस का दक्षिणपंथी वर्ग खुल्लमखुल्ला जवाहरलाल से लोहा लेगा। तस्वीर का दूसरा पहलू यह है कि मैं जवाहरलाल के जेल में जाने की कल्पना करूं। वैसी स्थिति में युवा-समुदाय समाजवाद से कम्युनिज्म की ओर झुकेगा और सरकार फासिज्म की ओर। मुझे इसी दूसरे प्रकार की सम्भावना की आशंका अधिक है। यदि आप यथार्थवादी हों, तो इन सम्भावनाओं के प्रति उदासीन नहीं रह सकेंगे।

मैं यह बम्बई से लिख रहा हूं। यहां मैं कुछ दिन रहूंगा, फिर दिल्ली चला जाऊंगा।

शुभेच्छाओं के साथ

आपका,
घनश्यामदास बिड़ला

राइट आनरेबल मार्क्विस ऑफ लोदियन,
लन्दन

५७

वाइसराय शिविर,
भारत
३ जुलाई १९३६

प्रिय श्री बिडला

आपके २८ जून के पत्र के लिए धन्यवाद। मैंने पत्र महामहिम को दिखा दिया है। उनका दौरे का प्रोग्राम अब अधिक निश्चित है। वह नयी दिल्ली में ४ और ८ अगस्त को रहेंगे। यदि इन दोनों में से कोई दिन आपके लिए सुविधाजनक रहे तो वह आपको मुलाकात के लिए शिमला आने का कष्ट नहीं देना चाहेंगे। कृपा करके बताइएगा।

आपने गोरखपुर से जो अत्यंत रोचक पत्र भेजा है उसके लिए अनेक धन्यवाद। हम इम्पीरियल कृषि विशेषज्ञ के साथ इस मामले में छानबीन कर रहे हैं। कर्नल आलिवर इस वक्त कलकत्ते में हैं और मैं समझता हूं कि पूछताछ करने में लगे हुए हैं।

सदभावनाओं सहित

भवदीय
जे० जी० लेथवेट

श्री घनश्यामदास बिडला
बिडला हाउस
अल्बूकर्क रोड
नयी दिल्ली

५८

शेगांव,
वर्धा
४ ७ ३६

भाई घनश्यामदास

मैंने म्यूज़ियम के बारे में लिखने का महादेव को नहीं कहा था। मैंने तो अन्य मकानों के बारे में लिखने का कहा था। तुमको याद होगा कि जब मेरी हाजतों की

मैं बात करता था तब मैंने कहा था कि मुझे दूसरे मकान बनाने के लिये एक लाख की आवश्यकता बताई थी बाद में उन मकानों में जो विद्यालय बना है उसका भी मैंने समावेश किया था। यद्यपि एक लाख की बात के समय विद्यालय मैंने अलग रखा था क्योंकि विद्यालय के अलावा एक लाख के मकान बनाने का मैंने सोचा था। लेकिन विद्यालय ने काफी पैसे खाये। इतना द्रव्य संघ के भण्डार मे नही है। मेरी कुछ समझ थी कि तुमने इस एक लाख में से कुछ तो वच्छराज कं० में भेज दिये थे। अब पता चला है कि वहां इस बारे में कुछ पैसे जमा नही हुए हैं इसलिये मैंने त्रिवद्रम तुमको एक पत्र भेजा था। यह पत्र शायद नही मिला होगा। अब इस एक लाख में से कुछ रकम अब निकल सकती है तो निकाली जाय।

डा० मुंजे को मैंने लिखा है कि उसकी नकल मिली होगी। पारनेरकर के साथ क्या तय हुआ ?

बापु के आशीर्वाद

५६

सीमोर हाउस
१७ वाटरलू प्लेस एस० डब्ल्यू० १
६ जुलाई, १६३६

प्रिय श्री बिडला,

आपके २८ जून के पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। मैं नही समझता कि लार्ड-सभा में मैंने जो कुछ कहा था वह भारतीय पत्रों मे पूरी तौर से छपा है। आपने अपने पत्र में जो लिखा है उससे यही अन्दाज लगता है। अतः में हेन्साड की एक प्रति भेज रहा हूं।

मुझे पूरी आशा है कि जिस व्यक्तिगत सम्पर्क पर आप इतना जोर देते हैं और ठीक ही देते है, वह शीघ्र ही स्थापित किया जाएगा। मेरी धारणा है कि

वाइसराय औपचारिक कारवाइ को एक ओर रखकर व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करने के लिए कटिबद्ध हैं।

भवदीय,
लादियन

श्री घनश्यामदास बिडला
बिडला हाउस,
माउण्ट प्लेजेंट राड
बम्बइ

६०

वाइसराय भवन
शिमला
१३/१८ जुलाई, १९३६

प्रिय श्री बिडला

आपके १ जुलाई के पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। मैंने पत्र महामहिम को दिखा दिया है। उन्हें ५ अगस्त को आपसे मिलकर हर्ष होगा। उनका सुझाव है कि यदि आपको कोई असुविधा न हो तो आप सवा बारह बजे वाइसराय भवन में पधारें।

आपने और कई नागरिकों ने महामहिम को उन पशुओं की बाबत लिखा था, जो कलकत्ता और अन्य बड़े शहरों में ले जाये जाते हैं और दूध सूखने के बाद प्राय कसाईखाना के सुपुर्द कर दिये जाते हैं। वे इस अत्यंत जटिल प्रश्न में दिलचस्पी ले रहे हैं। रेलवे बोर्ड ने इन पशुओं की वापसी आसान बनाने के हेतु चार पहिया के *वैगनों में प्रति मील ६ आने का रिआयती किराया जारी करने का निर्णय किया है।* यह सुविधा हावडा को आनेवाली नार्थ वेस्टर्न रेलवे के किसी भी स्टेशन से सभी मालगाडियों पर लागू होगी। एक वापसी टिकट मिलेगा बशर्ते कि वह टिकट ६ महीने के भीतर काम में लाया जाए। इस रिआयत का ज्ञापन जन साधारण की जानकारी के लिए किया जाएगा। रेलवे बोर्ड देखेगा कि इस सुविधा से किस हद

तक लाभ उठाया जाता है, और यदि यह प्रयोग सफल सिद्ध हुआ, तो बोर्ड यह रिआयत अन्य सभी लाइनों पर लागू करने को राजी हो जाएगा।

सदभावनाओं के साथ,

आपका
ज० जी० लेथवेट

श्री घनश्यामदास बिड़ला

६१

हरद्वार
१६ जुलाई १९३६

प्रिय श्री लेथवेट

आपके १४ जुलाई के पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। मैं यहां अपने माता पिता को देखने कुछ समय के लिए आया हूं और शीघ्र ही दिल्ली लौट जाऊंगा। ५ अगस्त को १२। बजे वाइसराय भवन में उपस्थित हो जाऊंगा।

आपके पत्र के दूसरे पैरे को पढ़कर मुझे बड़ा संतोष हुआ और मैं इसके लिए महामहिम का बड़ा आभारी हूं। मुझे यकीन है कि इस रिआयत का अच्छा नतीजा निकलेगा और यदि नहीं निकला तो हम उसकी असफलता के कारणों का विश्लेषण करेंगे। पर हमें आरम्भ में ही यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि ग्वाले जो यह व्यापार चलाते हैं बिलकुल अशिक्षित होते हैं उन्हें इस रिआयत से लाभ उठाने में देर लगेगी।

यदि मैंने आपके पत्र को ठीक समझा है तो मैं मानता हूं कि रेलवे से ढोरों का निर्यात करनेवाले को छूट रहेगी कि वह चाहे तो वापसी टिकट ले चाहे तो एक तरफ का। क्या मैं ठीक समझा हूं? यदि ऐसी बात है तो जो कोई एक तरफ का अर्थात हावड़ा तक का टिकट लेगा, तो उससे क्या भाड़ा लिया जाएगा? मुझे आशंका है कि शुरू शुरू में ग्वाला वापसी टिकट नहीं लेगा। इसका नतीजा यह होगा कि गाय के सूखते ही यदि कोई उसे पंजाब वापस भेजना चाहे तो भी गाय के लिए कसाईखाने में जाने के सिवा और कोई उपाय नहीं रहेगा। क्या महामहिम को दो प्रकार का भाड़ा रखना—अर्थात गाय को हावड़ा भेजने का एक और हावड़ा से वापस भेजने का उससे कम, ठीक नहीं जंचेगा? फर्ज करिए हावड़ा

वाइसराय औपचारिक बातचीत से पहले उनसे व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करने के लिए कटिबद्ध हैं।

भवदीय,
लाथियन

श्री घनश्यामदास बिडला,
बिडला हाउस,
माउण्ट प्लेजेंट रोड
बम्बई

६०

वाइसराय भवन
शिमला
१३/१४ जुलाई १९३५

प्रिय श्री बिडला

आपके ६ जुलाई के पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। मैंने पत्र महामहिम को दिखा दिया है। उन्हें ५ अगस्त को आपसे मिलकर हर्ष होगा। उनका सुझाव है कि यदि आपको कोई असुविधा न हो तो आप सवा बारह बजे वाइसराय भवन में पधारें।

आपने और कई नागरिकों ने महामहिम को उन पशुओं की बाबत लिखा था, जो कलकत्ता और अन्य बड़े शहरों में ले जाये जाते हैं और दूध सूखने के बाद प्रायः कसाईखाना के सुपुर्द कर दिये जाते हैं। वे इस अत्यंत जटिल प्रश्न में दिलचस्पी ले रहे हैं। रेलवे बोर्ड ने इन पशुओं की वापसी आसान बनाने के हेतु चार पहियों के वैगनों में प्रति मील ६ आने का रियायती किराया जारी करने का निर्णय किया है। यह सुविधा हावड़ा को जानेवाली नार्थ वेस्टर्न रेलवे के किसी भी स्टेशन से सभी मालगाड़ियों पर लागू होगा। एक वापसी टिकट मिलेगा बशर्ते कि वह टिकट ६ महीने के भीतर काम में लाया जाए। इस रियायत का ज्ञापन जन साधारण की जानकारी के लिए किया जाएगा। रेलवे बोर्ड देखेगा कि इस सुविधा से किस हद

तक लाभ उठाया जाता है, और यदि यह प्रयोग सफल सिद्ध हुआ, तो बोर्ड यह रिआयत अन्य सभी लाइनों पर लागू करने को राजी हो जाएगा।

सद्भावनाओं के साथ,

आपका
जे० जी० लेथवेट

श्री घनश्यामदास बिड़ला

६१

हरद्वार
१६ जुलाई १९३६

प्रिय श्री लेथवेट,

आपके १४ जुलाई के पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। मैं यहां अपने माता पिता को देखने कुछ समय के लिए आया हूं और शीघ्र ही दिल्ली लौट जाऊंगा। ५ अगस्त को १२। बजे वाइसराय भवन में उपस्थित हो जाऊंगा।

आपके पत्र के दूसरे पैरे को पढ़कर मुझे बड़ा संतोष हुआ और मैं इसके लिए महामहिम का बड़ा आभारी हूं। मुझे यकीन है कि इस रिआयत का अच्छा नतीजा निकलेगा और यदि नहीं निकला तो हम उसकी असफलता के कारणों का विश्लेषण करेंगे। पर हमें आरम्भ में ही यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि ग्वाले जो यह व्यापार चलाते हैं बिलकुल अशिक्षित होते हैं उन्हें इस रिआयत से लाभ उठाने में देर लगेगी।

यदि मैंने आपके पत्र को ठीक समझा है तो मैं मानता हूं कि रेलवे से ढोरों का निर्यात करनेवाले को छूट रहेगी कि वह चाहे तो वापसी टिकट ले चाहे तो एक तरफ का। क्या मैं ठीक समझा हूं? यदि ऐसी बात है तो जो कोई एक तरफ का अर्थात हावड़ा तक का टिकट लेगा तो उससे क्या भाड़ा लिया जाएगा? मुझे आशंका है कि शुरू शुरू में ग्वाला वापसी टिकट नहीं लेगा। इसका नतीजा यह होगा कि गाय के सूखते ही यदि कोई उसे पंजाब वापस भेजना चाहे तो भी गाय के लिए कसाईखाने में जाने के सिवा और कोई उपाय नहीं रहेगा। क्या महामहिम को दो प्रकार का भाड़ा रखना—अर्थात गाय को हावड़ा भेजने का एक और हावड़ा से वापस भेजने का उससे कम, ठीक नहीं जंचेगा? फर्ज करिए हावड़ा

तक आने का ४ आने प्रति मील और हावड़ा से जाने का २ आने प्रति मील भाड़ा रखा जाए तो कैसा रहेगा ? मैं ठीक तो नहीं कह सकता पर शायद भाड़े की वर्तमान दर ४ आने प्रतिमील है। मेरी समझ में तो एक ही प्रकार का भाड़ा, अर्थात ढोर लाने का ४ आने प्रतिमील और ६ महीने में वापस भेजने का कुछ नहीं ठीक रहेगा। इससे ढोर भेजनेवाले के लिए वापसी टिकट लेने के सिवा और कोई चारा नहीं रहेगा। यह वापसी टिकट ढोर बेचनेवाला ग्वाला गाय को वापस ले जाने की इच्छा रखनेवाले व्यक्ति के हाथ गाय के साथ ही बेच देगा। मैं तो नहीं समझता कि इससे गोमांस के व्यापार को धक्का लगेगा। हां, यह सम्भावना अवश्य उठ खड़ी होगी कि कसाई के हाथ बेची जानेवाली सूखी गाय की कीमत वापस भेजी जानेवाली सूखी गाय की कीमत से नीची हो जायगी। मेरी राय में यह प्रयोग अधिक सफल रहेगा। महामहिम को इस प्रयोग से निराशा हाथ लगी तो मुझे दुःख होगा। इसीलिए मैंने यह पत्र इतने विस्तार के साथ लिखा है।

सद्भावनाओं सहित

भवदीय
घनश्यामदास बिड़ला

श्री जे० जी० लेथवेट
शिमला

६२

हरद्वार
१६ जुलाई १९३६

प्रिय महादेवभाई

इसके साथ भेजा पत्र[१] बापू को दिलचस्प लगेगा।

तुम्हारा
घनश्यामदास

१ श्री जे० जी० लेथवेट को लिखे उपर्युक्त पत्र की नकल।

की चर्चा की थी उसके बारे में महामहिम ने पूछताछ करने की मुझे हिदायत कर दी थी। मुझे अब यह कहना है कि आपकी यह धारणा बिलकुल ठीक है कि पशुओं का हावड़ा निर्यात करनेवालों को एक तरफ का या वापसी का भी टिकट लेने के मामले में छूट रहेगी। अगर एक तरफ का टिकट लिया जाएगा तो भाड़ा उतना ही लगेगा जितना अब लगता है अर्थात् इधर से या उधर से ४ आने प्रतिमील।

आपका यह सुझाव कि कलकत्ते के लिए ६ आने प्रतिमील भाड़ा हो और ६ महीने के बाद वापसी निःशुल्क रहे तथा भेजनेवालों को चार आने मील पर एक तरफ का टिकट लेने की छूट न रहे इससे वह कठिनाई दूर नहीं होगी जिसकी आशंका आपको भी होती है क्योंकि वैसी अवस्था में ढोर भेजनेवाले ईस्ट इण्डियन रेलवे लाइन पर लखनऊ जैसा या अन्य किसी मध्यवर्ती स्टेशन के लिए टिकट ले लेगा और फिर वहाँ से कलकत्ते के लिए उसी पुराने भाड़े पर अर्थात् ४ आने प्रतिमील पर भेजने की कोशिश करेगा। यदि आपकी राय में यह प्रबन्ध ठीक जँचे कि कलकत्ते के लिए चार पहियों की गाड़ी में ४ आने प्रतिमील लिया जाए और कलकत्ते से वापसी के लिए २ आने प्रतिमील रहे तो महामहिम ने रेलवे बोर्ड से पूछताछ करने के बाद इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि बोर्ड नार्थ वेस्टर्न रेलवे लाइन पर पड़नेवाले स्टेशनों के लिए हावड़ा से ढोरों की वापसी के लिए २ आने प्रतिमील का भाड़ा जारी करने को तैयार हो जाएगा और ६ आने मील वाली दर रद्द कर दी जाएगी। लेकिन ऐसा किए जाने पर भी उससे कोई विशेष लाभ नजर न आता हो तो महामहिम की राय है कि जबकि ६ आने मील की दर का ज्ञापन कर दिया गया है (पण्डित मालवीयजी ने कहा है कि वह इस रिआयत से लाभ उठाने के प्रचार का आयोजन कर रहे हैं) तो फिर फिलहाल इस मामले को जैसा तय हुआ है चलने दिया जाय।

सद्भावनाओं सहित

आपका

जे० जी० लेथवेट

श्री घनश्यामदास बिड़ला

६५

२६ जुलाई १९३६

प्रिय श्री लेथवेट,

आपके पत्र के लिए धन्यवाद।

ठीक है मैं कुछ पहले आऊंगा और आपसे मिलने का आनन्द उठाऊंगा।

पशुओं के भाड़े के विषय में मेरा अब भी यह विश्वास है कि ६ आने मील वाली दर लागू करने के बजाय दो भिन्न प्रकार की दरें अर्थात ४ आने ढोरों को कलकत्ता भेजने के लिए और २ आने उनकी वापसी के लिए अच्छी रहेंगी। मेरी धारणा है कि ग्वाले को पैसा की तंगी रहती है इसलिए वह वापसी टिकट में रुपया फसाते हुए झिझकेगा। मैं यह तो नहीं कहता कि वह इस रिआयत से लाभ उठाने से कतई इन्कार कर देगा, पर परिणाम शायद उतना उत्साहवर्द्धक न हो। इसलिए यही ठीक रहेगा कि कलकत्ते के लिए ४ आने रखा जाए और २ आने वहां से वापसी के लिए। यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि ढोरों की वापसी में मेरे जैसे स्वतंत्र व्यक्तियों की रुचि हो और वे अच्छे ढोर कलकत्ते से वापस भेजने में तभी दिलचस्पी दिखायेंगे जब दोनों तरफ की अलग दरें होंगी। पर यह रिआयत केवल नार्थ वेस्टर्न रेलवे लाइन पर ही लागू करना काफी नहीं होगा क्योंकि अनेक व्यक्ति ढोरों को पंजाब वापस भेजने के बजाय संयुक्त प्रांत या बिहार को जो कलकत्ते के अधिक निकट है भेजना पसंद करेंगे। अतएव यदि रिआयत लागू करनी है तो सभी लाइनों पर लागू करनी चाहिए अर्थात नार्थ वेस्टर्न रेलवे पर वापसी के लिए भाड़े में जो ५० प्रतिशत की कमी की जाए वह सभी लाइनों पर लागू हो। यदि महामहिम समझें कि अगला कदम उठाने से पहले यह देखा जाए कि कैसा फल निकलता है, तो मुझे कुछ नहीं कहना है क्योंकि कुछ महीने और प्रतीक्षा करने में कुछ बिगड़ता नहीं। पर इसमें मुझे तनिक भी संदेह नहीं है कि योजना को सफल बनाने के लिए अंत में इस ढंग का संशोधन जरूरी हो जाएगा, इसलिए यही बेहतर रहेगा कि शुरू में ही अलग अलग दरें लागू की जाए।

सद्भावनाओं सहित

आपका,
घनश्यामदास बिड़ला

श्री जे० जी० लेथवेट
शिमला

६६

सेगांव वर्धा
२६ जुलाई १६३६

प्रिय रावबहादुर[1]

आपने डा० मुंजे को जो पत्र लिखा है, उसका समर्थन करने में मुझे कोई कठिनाई नहीं है। डॉ० मुंजे या डा० अम्बेडकर का दृष्टिकोण मेरी समझ में बिलकुल नहीं आया। मेरे लिए तो अस्पृश्यता निवारण एक अलग ही मौलिक महत्त्व रखता है और मैं इसे एक धार्मिक प्रश्न मानता हूं। सवर्ण हिन्दुओं द्वारा स्वेच्छा से और पश्चात्ताप के रूप में अस्पृश्यता निवारण पर ही हमारे धर्म का अस्तित्व निर्भर करता है। मेरे लिए यह गोदेराजी का प्रश्न कभी नहीं रहा। मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि इस मामले में आपका दृष्टिकोण प्रायः मेरे ही जैसा है।

आपका
मो० क० गांधी

1 प्रसिद्ध हरिजन-नेता एम० सी० राव।

६७

वर्धा
२६ जुलाई, १६३६

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका पत्र आने से पहले रावबहादुर एम० सी० राजा के प्रसिद्ध पत्र व्यवहार की नकल आ गई थी। अब मैं रावबहादुर को लिखे बापू के उत्तर की नकल भेज रहा हूं। यह पहली बार नहीं है जबकि हमने यह अनुभव किया हो कि यह गोमांस भक्षक डाक्टर हिन्दू धर्म को जलाकर भस्म करनेवाले शत्रु की तरह ही एक बड़ा शत्रु है। डाक्टर अम्बेडकर कुछ महीने पहले भी यही योजना लेकर आये थे और बोले थे कि वे मालवीयजी और कुर्तकोटि के शंकराचार्य का

आशीर्वाद प्राप्त हो चुका है। पर बापू ने उन्हें कह दिया कि उनके लिए यह विचार मात्र अरुचिकर है कि एक धार्मिक प्रश्न का समझौते और सौदेबाजी का रूप दिया जाए। तब वह अपना-सा मुह लेकर चले गए। उनके इस हथकण्डे ने एक बड़े सौदे का रूप धारण कर लिया मालूम होता है, पर पश्चात्तापरत व्यक्तियों को ऐसे सौदों से भयभीत नहीं होना चाहिए। हम जानते हैं कि जुगलकिशोरजी बहुत भोले हैं कोई भी उनका दुरुपयोग कर लेता है। पर ऐसे मामलों में आप उनके प्रति जरूरत से ज्यादा नरमी बरतते हैं। मुझे मालूम हुआ है कि जिस आदमी को आपने ऊबकर निकाल बाहर किया था वही जुगलकिशोरजी के यहां ऊंची तनख्वाह पा रहा है। जब आपने यह स्पष्ट कर दिया था कि आप अपने यहां उसकी शक्ल तक देखना गवारा नहीं कर सकते तो वह वहां क्या कर रहा है ?

पर यह लिखकर मैं अपनी मर्यादा का उल्लंघन कर रहा हूं और उस उदारता का दुरुपयोग कर रहा हूं जिसकी अनुमति आपने कृपापूर्वक दे रखी है। इसके लिए कृपया मुझे क्षमा करिएगा।

बापू शेगांव में सुखी दिखाई देते हैं पर उन्हें शांति नहीं है। वहां भी उन पर एक बड़े भारी कुटुम्ब की चिन्ता सवार रहती है। कभी-कभी उन्हें बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ता है और उनकी शान्ति में बाधा पड़ती है।

आपका,
महादेव

६८

नयी दिल्ली
२८ जुलाई, १९३६

प्रिय महादेवभाई,

मेरी यह पक्की राय है कि अम्बेडकर के प्रति डा० मुंजे की प्रतिक्रिया से संबंधित पत्र-व्यवहार की बापू हरिजन में चर्चा चलाएं। यह बहुत गम्भीर मामला है। मेरी राय है कि यदि सारा मामला जनता के सामने रख दिया जाएगा तो शरारत के पनपने से पहले ही उसका अंत हो जाएगा।

जहा तक ठक्कर बापा के २७ तारीख के बापू के नाम पत्र की बात है सो उन्होने तो मुझ उस घटना के बारे मे नही बताया। पर उन्होंने जिन जिन घटनाओ का जिक्र किया है वे सब मेरे कानो म पडती रही हैं इसलिए यह नही कहा जा सकता कि इस मामले मे मैं बिलकुल अधकार म रहा हू। मेरा विचार था कि वर्धा आऊगा तो बापू को खत बताऊगा पर जब ठक्कर बापा ने लिख ही दिया है।

एक दूसरी बात जो मेरे सुनने मे आई है और जिसके बारे म ठक्कर बापा ने कुछ नही कहा है वह यह है कि एक महिला हरिजन निवास म आकर ठहरी थी उसकी ख्याति कुछ अच्छी नही है। मुझे यह भी मालूम हुआ है कि जब ठक्कर बापा ने उससे हरिजन निवास से चल जाने को कहा तो वह बिगड खडी हुई और वहा के वासियो की मौजूदगी म उसने बडे उत्तेजनात्मक ढग से बात की। पर म वही लिख रहा हू जो मेरे कानो तक पहुची है मुझे प्रत्यक्ष कुछ पता नही है।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

६९

वर्धा
२८ ७ ३६

प्रिय घनश्यामदासजी

कुछ ही क्षण पहले आपका तार मिला। मैं इसे बापू के पास भेज रहा हू। म आपसे पूर्णतया सहमत हू कि इन लोगो का पूरी तरह पर्दाफाश करना चाहिए पर बापू भी सहमत होगे या नही कह नही सकता।

बापू ने आपको याद दिलाने को कहा है कि जब कुछ समय पहले आप दक्षिण का दौरा कर रहे थे तो उन्होने आपको लिखा था कि आपने जो रकम ग्रामोद्योग सग्रहालय के लिए देने का वचन दिया था उसमे से कुछ भेज दें। उन लोगो ने सामग्री आदि खरीदने मे कोई २ ०००) खर्च कर डाले हैं और उसका कुछ अश

उन्होंने अन्य बापा स लिखा है। शायद आपको वह पत्र नही मिला। क्या इस मामले म आवश्यक कारवाई करेंगे?

आपका
महादेव

७०

वर्धा
२६ ७ ३६

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका तार बापू को दिखाया। उनका कहना है कि इस मामले का प्रकाशित करने म जल्दबाजी नहीं करनी है। पत्र पर गोपनीय लिखा हुआ है और जब तक रावबहादुर एम० सी० राजा स्वय इस मामले म अगला कदम नहीं उठाते ह तब तक हम कुछ नही कर सकते। वास्तव मे राजा न यह पत्र-व्यवहार प्रकाशित करने की धमकी ता दी थी पर अभी तक किया कुछ नही। बापू सीधे मुझे का लिखकर उनसे कफियत लेने की बात सोच रहे हैं पर अभी उन्होने कोई निणय नहीं लिया ह। जस-जस घटनाए घटती जायेंगी मैं आपको सूचित करता रहूगा।

सप्रेम
महादेव

७१

शेगाव, वर्धा
३० ७ ३६

प्रिय वेंकटरमण[१]

श्री बिडला के आग्रह के अनुसार मैंने चर्खे के लिए अपील का मसौदा तयार किया है। अपना समथन भी साथ भजता हू। पाण्डुलिपि तयार करने का मेरे पास समय नही है। यदि श्री बिडला का विचार भिन्न हो तो मसौदे म सशोधन

१ श्री ठक्कर बापा के हरिजन-सेवक-संघ के सहायक।

किया जा सकता है। मेरी सम्मति में अपील तब तक जारी रहनी चाहिए, जब तक थोड़े बहुत समय तक आश्वासन न मिल जाए और भारत भर में धन संग्रह करने की व्यवस्था न हो जाए।

भवदीय,
मो० क० गांधी

गांधीजी का समर्थन

मैं इस अपील का दिल से समर्थन करता हूं। अस्पृश्यता निवारण हृदय परिवर्तन की चीज है। हृदय परिवर्तन करने से इन्कार करते चाहे वह पगा कितने ही विवेक के साथ क्यों न व्यक्त किया जाए। हृदय तो तभी बदलेंगे जब हमारे पास प्रचुर संख्या में स्वार्थत्यागी और पवित्र मानसवाले कार्यकर्ता होंगे। ऐसे लोग मौजूद हैं। इसकी एक कसौटी होगी धन-दान क्योंकि हृदय-परिवर्तन का एक परिणाम यह होगा कि हरिजनों में अहर्निश काम जारी रहे। ऐसा प्रचुर मात्रा में धन संग्रह के बगैर सम्भव नहीं है। प्रचुर धन के बगैर न पाठशालाएं खोली जा सकती हैं न होस्टल खड़े किए जा सकते हैं और न कुएं ही खोदे जा सकते हैं। इसलिए मुझे आशा है कि इस अपील को धनवान और गरीब सभी अपनी ताकत के अनुसार मान देंगे।

मो० क० गांधी

अपील

[हरिजन-सेवक संघ की ओर से यह सार्वजनिक अपील धन के लिए की जा रही है। जिस प्रकार गांधीजी ने १९३३-३४ में देश भर में भ्रमण कर जनता की सोई आत्मा को जगाया था और धन संग्रह किया था उस प्रकार अब वह उनके लिए सम्भव नहीं है। जो सवर्ण हिन्दू अस्पृश्यता को हिन्दुत्व के नाम पर कलंक का टीका समझते हैं उनके लिए हरिजनों वाले कार्य के समर्थन से अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य और कुछ नहीं हो सकता है। अब जनता के निर्णय करने के लिए केवल एक ही बात रह जाती है और वह यह कि हरिजन-सेवक संघ ने जिस काम का बीड़ा उठाया है उसे निभाने में वह समर्थ है या नहीं।]

७२

शेगाव, वर्धा
३१ ७ ३६

प्रिय डॉ० मुंजे

रावबहादुर एम० सी० राजा ने मेरे और सेठ बिड़ला के पास यरवडा समझौते पर उनके और आपके साथ हुए पत्र व्यवहार की नकलें भेजी हैं, तथा अनुमति दी है कि इसका हम जैसा चाहें उपयोग करें। पर आपकी ओर से जो पत्र गए हैं, उन पर 'गोपनीय' लिखा है। मेरी सम्मति में यह एक ऐसा विषय है जिसमें गोपनीयता की गुंजाइश नहीं है। पर रावबहादुर की अनुमति से लाभ उठाने से पहले मैं इस पत्र-व्यवहार के प्रकाशन में आपकी रजामंदी भी चाहूंगा। साथ ही, मैं यह भी कह दूं कि आपका प्रस्ताव यरवडा समझौते की जड़ें खोखली करता है और अस्पृश्यता निवारण-आंदोलन के उद्देश्य के सर्वथा प्रतिकूल है।

भवदीय,
मो० क० गांधी

७३

वर्धा
३१ ७ ३६

प्रिय घनश्यामदासजी

साथ भेजी सामग्री शेगांव में बापू की नयी सेक्रेटरी द्वारा तैयार की गई है। वह केवल अस्थायी सेक्रेटरी है। पर मुझे खुशी है वह है तो, क्योंकि वह इस ढंग के काम करने में समर्थ है और बहुत कुछ कर सकती है।

मैं समझता हूं मुंजे के नाम लिखा बापू का पत्र एकदम मौजूं रहा। पता नहीं आपने 'हरिजन' के गतांक में मेरा लेख 'पाप और अन्याय' पढ़ा या नहीं। यदि नहीं पढ़ा तो पढ़िए और अपनी प्रतिक्रिया लिखिए।

आपका,
महादेव

७४

३१ जुलाई १९३६

प्रिय महादेवभाई,

बापू ने मुझे ग्रामोद्योग संग्रहालय की बाबत लिखा यह याद नहीं पड़ता। दो एक और ऐसी बातें थीं जिनकी बाबत बापू का खयाल था कि उन्होंने मुझे लिखा है पर वास्तव में लिखा नहीं दीखता। मुझे ठीक याद नहीं वे बातें क्या थीं पर काम की अधिकता के कारण बापू समझ बैठते हैं कि अमुक काम कर लिया है पर वह होता नहीं है। यदि उनकी स्मरण शक्ति की यह नगण्य सी त्रुटि कार्यभार के फलस्वरूप है तो उन्हें सामर्थ्य से अधिक काम नहीं करना चाहिए। जो हो मैं ग्रामोद्योग संग्रहालय के लिए आवश्यक कारवाई करने को बम्बई लिख रहा हूं। मेरा बम्बई का आफिस जमनालालजी के साथ सम्पर्क स्थापित करेगा।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

७५

जियाजीराव काटन मिल्स लिमिटेड
ग्वालियर
१ अगस्त १९३६

प्रिय महादेवभाई

मैं दिल्ली जा रहा हूं जब मैंने कहा था कि बापू को यह मामला हरिजन में उठाना चाहिए तो मैंने यह मान रखा था कि बापू ऐसा करने से पहले डा० मुंजे से कैफियत तलब करेंगे। मेरी अब भी यही राय है कि सारा मामला जनता के सम्मुख रख देना चाहिए और ऐसा करने से पहले बापू का डॉ० मुंजे से कैफियत तलब करनी चाहिए।

'स्टेटसमन' की एक कटिंग भेजता हू। यह स्पष्ट है कि वह सरकारी दृष्टिकोण है और मेरी राय मे ठीक भी है।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

७६

नयी दिल्ली
४ अगस्त १६३६

प्रिय महादेवभाई,

डॉ० मुजे के साथ बापू के पत्र-व्यवहार की नकल श्रीमती अमृतकौर ने भेजी है। तुम्हारा पत्र भी मिल गया है। तुमने लिखा है कि श्रीमती अमृतकौर बापू की अस्थायी सेक्रेटरी है इसलिए मैं यह पत्र उन्हे नही, तुम्हे लिख रहा हू। यदि वह अभी वहा हो तो उन्हें मेरा हार्दिक प्रणाम कहना और बताना कि मैं उनके पत्र का उत्तर सीधे उन्ह क्यो नही भेज रहा हू।

यह प्रसन्नता की बात है कि बापू ने डा० मुजे के साथ प्रसग उठाया है। पर यदि वह पत्र-व्यवहार के प्रकाशन के लिए राजी न हुए तो क्या हमे हाथ-पर-हाथ रख बठे रहना चाहिए ? यह मामला इतने महत्व का है कि मैं तो सोच भी नही सकता कि हम खामोश बठे रहगे।

हा मैंने तुम्हारा 'पाप और अन्याय' शीर्षक लेख पढा। अच्छा लगा। कम से कम ईसाइयो म ऐसी साधु आत्माए हैं जो सच्ची बात कह डालती हैं। काश मैं मुसलमानो के बारे म यही बात कह सकता। हीरालाल के धर्म परिवर्तन के मामले म उन्होने कितना निन्दनीय आचरण किया था।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

७७

नयी दिल्ली
५ अगस्त, १६३६

वाइसराय के साथ भेंट
समय १२। बजे—भेंट ५० मिनट चली

मैंने कहा कि उनसे लन्दन में मिलने के बाद कई घटनाएं हुई हैं अतः मेरी समझ में आद्योपान्त सारी कहानी कह सुनाना ठीक रहेगा। मैंने उन्हें बताया कि किस प्रकार लंदन में उनके साथ दोपहर का भोजन करने के बाद मैं लार्ड जेटलैंड लार्ड हैलिफक्स और लार्ड लोदियन से मिला और उनसे मुझे पता लगा कि भारत के साथ पत्र-व्यवहार करने के बाद यह निर्णय किया गया है कि जब तक पुराना वाइसराय मौजूद है कोई लाभदायक कदम नहीं उठाया जा सकता। खासकर व्यक्तिगत सम्पर्क तो नये वाइसराय के आने पर ही हो सकता है। मैंने उन्हें बताया कि तबतक बहुत-कुछ हो चुकेगा क्योंकि कांग्रेस का अधिवेशन अप्रैल में होनेवाला है इसलिए यदि कोई कदम उठाना है तो इससे पहले ही उठाना ठीक रहेगा। यह भी कि किस प्रकार तब जेटलैंड हैलिफक्स लोदियन और होर ने सलाह दी कि नये वाइसराय से मिलने तक गांधीजी को किसी नये आन्दोलन का जिम्मा नहीं लेना चाहिए। किस प्रकार भारत लौटने पर मैंने गांधीजी को उनके संदेश दिये, और अपनी धारणा भी बताई। किस प्रकार गांधीजी ने मेरी आशावादिता में शरीक होने से इंकार कर दिया तब भी उन्होंने वचन दिया कि वह कांग्रेस अधिवेशन में कोई नयी पहल नहीं होने देंगे। यह भी मैंने बताया कि किस तरह लार्ड विलिंग्डन ने लार्ड लिनलिथगो के गांधीजी से मिलने का हौवा फ्लान में सक्रिय भाग लिया। (वाइसराय ने कहा कि उन्हें यह बात मालूम है)। किस प्रकार लार्ड लोदियन ने सर तेजबहादुर सप्रू को पत्र लिखा और उन्होंने वह पत्र अखबारवालों को दिखाया। किस प्रकार इससे सरकारी अमले और अधिकारियों में बेचैनी फैल गई। मैंने कहा कि मुझे पता नहीं था कि सरकारी अमले को मेरे लन्दन के कार्य की जानकारी है। इसलिए मैंने समझ लिया कि भारत सचिव ने अमले को लिखा होगा। यह सारी कहानी सुनाने के बाद मैंने कहा "गांधीजी ने अपने वचन का पालन किया है। मैं नहीं जानता कि आप अब भी गतिरोध दूर करने के अपने पुराने निर्णय पर दृढ़ हैं अथवा आपके विचारों में कुछ परिवर्तन

हुआ है। मने लन्दन म तो अपना मुद्दा अच्छी तरह स पश किया पर अब मैं एसा नही करुगा। जब मने लन्दन म बातचीत की थी तो आप भारत की स्थिति से अवगत नही थे और मैं था। पर अब यह नही कहा जा सकता कि आपको भी स्थिति का अध्ययन करन की सुविधा मेरी ही तरह नही मिली है। मेरे विचार से आप परिचित हैं और मैं पहले जैसी दढता से ही उनका प्रतिपादन करता हू। अब यदि आप समझते हैं कि गतिरोध का अन्त होना चाहिए और आग कदम बढाना चाहिए, तो आप मरा पथ प्रदशन कीजिए। इसके विपरीत, यदि आपके विचारो म परिवतन हुआ है और आपने उसी पुरानी नीति को चलने दने का फैसला किया है तो मैं केवल इतना ही कहूगा कि यह भयकर भूल होगी। बस, मं इससे अधिक कुछ नही कहूगा। वाइसराय कुछ क्षण मौन रह फिर उन्होने पूछा, 'मिस्टर गाधी और मिस्टर जवाहरलाल के सम्बन्ध कसे हैं?' मैंने उत्तर दिया, 'स्थिति को समझने के लिए यह जरूरी हैं कि आप दोना के मानस को जानें। दानो के मानस और दष्टिकोणा और विचारा म आकाश पाताल का अन्तर है। पर इससे उनके पारस्परिक अतरग सम्बन्ध म कोई अन्तर नही पडता। यह सम्बन्ध सदव की भांति ही घनिष्ठ है। जब तक गाधीजी जीवित हैं मेरी समझ म काग्रेस मे फूट नही पडेगी। उन्होने कहा मैं मानता हू। फिर उन्होने प्रश्न किया "क्या मिस्टर गाधी निर्वाचना का खच उठाएग?' मैंने उत्तर दिया 'मैं तो नही समझता। यह सब कुछ काग्रेस ही करगी और जहा तक मेरी दृष्टि जाती है, काग्रेस बडी खूबी के साथ निर्वाचन लडेगी और कम से-कम पाच प्रान्तो म बहुमत प्राप्त करेगी।" पर मैंने कहा निर्वाचना क लिए प्रचार करना गाधीजी के स्वभाव म नही है।' तब वह बोले, "मैं आपस साफ साफ कह दू। जब मैं यहा पहुचा तो सरकारी हल्का म आतक फला हुआ था। हिन्दुस्तान टाइम्स' वाला मामला बडा ही भोन्ा रहा। मैंन सर हेनरी नेक क साथ खुलकर बात की। मुझे कहना पडता है कि अभी मरे लिए कोई कदम उठाना सम्भव नही है। मैं मानता हू कि काग्रेस एक बहुत शक्तिशाली पार्टी है और निर्वाचना मे उसका अनेक प्रान्तो म विजयी होना सम्भव है। मैं यह भी स्वीकार करता हू कि उसने जनता म स्वाभिमान और राष्टीयता के भाव जाग्रत किये हैं, और भारत के शासन विधान म जो अनेक सुधार हुए हैं उनका श्रेय उसी को है। पर और भी कई महत्त्वपूण पार्टिया हैं। यदि मैं काग्रेस के साथ घनिष्ठता का आचरण करू, तो उससे अन्य पार्टिया को भारी क्षति पहुचेगी। और, ऐसा करने से निर्वाचनो के दौरान काग्रेस को बल मिलगा और मैं पक्षपात करने का दाषी ठहराया जाऊगा। सम्राट के प्रतिनिधि की हैसियत से मेरे लिए ऐसा कोई काम करना, जिसस पक्ष

पात की गध आये उचित नही होगा। इसके अलावा एक बात और भी है। अभी मैं मिस्टर गाधी से क्या बात करू? मैं उनके साथ खिलवाड ता करना नहा चाहता। मं भारत शासन विधान का एक अद्धविराम तक नही बदल सकता। न मैं बगाल क बन्दियो को रिहा कर सकता हू। फिर मैं उनसे किस विषय पर बात करूगा? यदि कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति मुझसे मिलना चाहे ता मैं उससे मिलने को हमेशा तयार हू। पण्डित मदनमोहन मालवीय मुझसे मिले। आप मुझसे मिले ही हैं। यदि मिस्टर गाधी का मैं विशेष रूप से निमन्त्रण दू ता ऐसा करना न्यायोचित नही होगा।' मैंने उत्तर दिया मैं आपकी कठिनाई समझता हू। फिलहाल गाधीजी आपसे मुलाकात करने को नही कहेंगे। इसका अथ यह नही है कि वह औपचारिक बधनो म विश्वास रखते हैं। आपके उनसे मिलन की इच्छा व्यक्त करने की देर है, कि वह तुरत मुलाकात के लिए लिखेंगे। पर यदि सब-कुछ उन्हीं पर छोड दिया जाय तो उन्हें कुछ नही कहना है। मेरे लिए काग्रेस की सफाई करना एक दुरूह काय है। मैं काग्रेस म नहा हू और जब मुझे काग्रेस की पोजीशन आपको और आपकी पोजीशन काग्रेस को बतानी पडती है तो मैं अपने-आपको असुविधाजनक स्थिति म पाता हू। आप काग्रेस की राजनीति का समझने क लिए गाधीजी जसे किसी काग्रेसवाले स ही क्या नहा मिलते? ऐसा करने स आपको काग्रेस की स्थिति सीधे जानने का और अपनी स्थिति उसे समझाने का अवसर मिलेगा। मैंने यह कभी नहा सुझाया कि वतमान स्टेज पर भारत शासन विधान म हेर फेर करना सम्भव है पर बहुत-सी ऐसी चीजें हैं जो की जा सकती हैं और की जानी चाहिए। क्या आतकवाद से निपटने क लिए कोई सवमान्य फामूला नही खोजा जा सकता? ऐसा करने स बन्दियो की रिहाई एक सवमान्य आधार पर हो सकती है। ऐसी कई चीजें है जो की जा सकती हैं। मै नही समझता कि सरकार निष्पक्ष है। खान साहब क रिहा होते ही उनके सीमात प्रदेश और पजाब म प्रवेश पर पाबन्दी लगा दी जाती है। फज कीजिए कि खान साहब मत्री बनने वाले हैं। आप उन्हें निर्वाचन सम्बन्धी प्रचार काय करने की सुविधा से वचित कर रहे हैं। यह उचित नही है न पक्षपात शून्य है। इन सारी धाधलियो के निवारण से वातावरण म सुधार सम्भव है पर जसा कि मैं कह चुका हू म इस मामले म और अधिक जोर नही दे सकता। मुझे जो कहना था वह कह चुका। अब आप जो उचित समझे करें। पर मैंने पूछा क्या आप समझते है कि इस समय जो स्थिति है वह निर्वाचनो के बाद बदल जायगी? उन्होंने उत्तर दिया हा हा सम्भव है। निर्वाचनो के बाद बिलकुल दूसरी ही तस्वीर सामने आयगी। निर्वाचनो के बाद मैं काफी ठोस काम करूगा, पर मैं वचन नही देता। हम यह नही

जानते कि निर्वाचनों के बाद क्या परिस्थिति होगी और हम क्या कदम उठाने होंगे।' इसके बाद उन्होंने कहा कि उन्हें सूचना मिली है कि कांग्रेसवाले मंत्रियों के ओहदे लेने में हिचकते हैं, क्योंकि तब उन्हें रचनात्मक काय करना पड़ेगा और शिक्षा और अन्य महकमों पर कर लगाने पड़ेंगे, जिससे वे बदनाम हो जायेंगे। मैंने उत्तर दिया, 'आपकी सूचना बिलकुल निराधार है। मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि यदि उभय पक्षों ने एक दूसरे के विचारों को उचित ढंग से समझा और वातावरण में सुधार हुआ तथा कांग्रेस ने पद-ग्रहण करना स्वीकार किया तो कांग्रेस सरकारें उन लोगों पर कर लगाने के मामले में जरा भी नहीं हिचकिचायेंगी जो शिक्षा और सफाई और उसी प्रकार के अन्य क्षेत्रों में विकास के व्यय का भार उठाने की स्थिति में हैं। उलटे इससे कांग्रेस की प्रतिष्ठा बढ़ेगी ही।' उन्होंने सहमति प्रकट की पर कहा कि 'यह बात उन्हें एक कांग्रेसी ने बताई थी।' इसके बाद उन्होंने कहा, 'फर्ज कीजिए मैं मिस्टर गांधी से मिलूं और कहूं कि मैं यह करूंगा और वह करूंगा और शासन विधान को उदारतापूर्वक लागू करूंगा, तो क्या आप पद ग्रहण करेंगे? मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि उनका उत्तर होगा नहीं।' मैंने उत्तर दिया, 'महामहिम, आपने पहले से ही बहुत-कुछ मान लिया है।' उन्होंने पूछा, 'आपका खयाल है कि वह पद ग्रहण करने को राजी हो जायेंगे?' मैंने उत्तर में कहा, 'हां, बशर्ते कि उन्हें यह विश्वास हो जाए कि जनता के मंगल के लिए रचनात्मक काय करने योग्य अनुकूल वातावरण है। गांधीजी जीवन भर रचनात्मक काय में जुटे रहे हैं—इसलिए कांग्रेसियों के पद ग्रहण करने की सम्भावना से वह तनिक भी भयभीत होनेवाले नहीं हैं। पर आवश्यकता है समुचित वातावरण की।" इसके बाद मैं बोला, "अब मैंने आपके विचार जान लिये हैं। इन्हें मैं गांधीजी के सामने पेश करूंगा। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि आपने सारी बातें इतने खुले दिल से और इतने स्पष्ट रूप से बताईं। अब मैं इस मामले को लेकर आपको और अधिक व्यस्त नहीं करूंगा। आपको जब कभी मेरी सहायता की जरूरत हो, मैं हाजिर हूं, पर अब तो आपको स्वयं स्थिति का अध्ययन करने की सुविधा प्राप्त है। इसलिए मेरा और अधिक कहना अनावश्यक है। यों मैं आपके निष्कर्षों से सहमत नहीं हूं।"

इसके बाद हमने पशु पालन के सम्बन्ध में थोड़ी बातचीत की। उन्होंने कहा, 'यदि मैं किसानों की जेब में कुछ डाल सका तो मेरी आत्मा को शांति मिलेगी। यदि मैं इस दिशा में सफल-मनोरथ हुआ तो मुझे इसकी चिन्ता नहीं है कि लोग मेरे बारे में कैसी धारणा बनाते हैं।' इसके बाद वह बोले, "मिस्टर

गाधी स कहिए राष्ट्रीयता मेरी राय म अपराध नही है और मैं ईमानदारी का दृष्टिकोण अपनाऊगा। फिर वह बोले, 'जब मैं भारत पहुचा, तो आपको पता नही है कि अधिकारी वग म कैसी घबराहट फली हुई थी।' मैंने कहा "मुझे सब पता है मैंने तो आपको अपने पत्र म भी चेतावनी दी थी। उ होने उत्तर दिया म नही जानता था कि स्थिति इतनी खराब है।'

यह कहना अनावश्यक है कि बातचीत के दौरान सौहार्द रहा और मैं अपनी इस राय पर अब भी दढ हू कि वह एक अच्छे और ईमानदार आदमी ह। उन्ह अपना विचार बदलने को विवश कर दिया गया है और यद्यपि निर्वाचनो क बाद वह प्रगतिशील कदम उठाने की आकाक्षा रखते हैं उन्हाने कोई वचन नही दिया है। जब मैंने कहा कि मुझे आपसे फिर भेंट करने की आशा है तो उन्होंने कहा मरे पास अधिक मत आइये नही तो यह धारणा फल जायेगी कि आप मुझे प्रभावित करने की चेष्टा कर रहे हैं। पर लिखते रहिये मैं आपसे सहमत होऊ या न होऊ।"

७८

नयी दिल्ली
६ अगस्त, १६३६

पूज्य बापू

जी हा, मुझे याद है मेरी आपके साथ इमारतो के बारे म और सग्रहालय के बारे म भी बात हुई थी। अतएव जब महादेवभाई ने मुझे पत्र लिखा तो मैं समझ गया कि क्या कुछ करना है। पर जो भी हो अभी तक मुझे आपका कोई पत्र नही मिला है। मैंने आपको इमारतो के लिए रुपया भेजने की सूचना द दी थी। मैं समझता हू आपके पास रुपया पहुच गया होगा।

पारनेरकर ने आकर पशुपालन फाम देखा और पिलानी दुग्ध फाम का निरीक्षण भी किया। वह वर्धा वापस लौटने स पहले मुझसे नहीं मिल पाये क्योकि मैं दिल्ली म नही था। उन्होने मुझे बताया कि वह आपसे बात करेंगे। यहा का काम ठीक ढग से नही चल रहा है। परमेश्वरीप्रसादजी को पैसे का अभाव खल रहा है। उनकी कठिनाइयो को देखते हुए मैंने उनसे दो साड और एक-दो गायें जिन्हें वह बेचना चाहते थ, खरीदने का निश्चय किया। इससे उनका काम कुछ दिनो के लिए चल जायगा। पर हम किसी-न किसी नतीजे पर पहुचना

है। मेरी दृढ राय है कि इस डेयरी पर साल मे ३ ०००) से अधिक घाटा नही लगना चाहिए। पता नही पारनरकर की क्या सम्मति है, पर परमेश्वरीप्रसादजी का कहना है कि रु० १०,०००) से कम म काम नही चलगा। गाडादिया कोई रुचि नही दिखा रहे हैं। आपने मुझे डाइरेक्टर तो बना दिया पर मेरा न प्रवध से कोई वास्ता है न निर्देशन से। और वस्तुस्थिति यह है। मेरी राय म आपको निणय करना है कि ऐसे म क्या करना चाहिए।

आपने जो अपील मेरे पास भेजी है उसके सबध म मुझे कहना पडता है कि वेंकटरमण आपको स्थिति पूरी तौर से नही समझा सके। आपका मालूम ही है कि हम एक सक्षिप्त रिपोट जारी कर रहे हैं जिस पढकर हरिजन सेवक सघ के काय के बारे म पूरी जानकारी मिल जाती है। रिपोट के पहल पष्ठ पर हम आपका कोई सदेश छापना चाहते है और वह भी आपकी ही लिखावट म। वास्तव म यह अपील तो नही है, पर आप चाह तो इसे अपील कह सकते हैं। यदि इसे अपील का रूप देना है तो इसका लक्ष्य हृदय और थली दोनो होने चाहिए।

धन सग्रह के बारे म मेरा कहना यह ह कि कलकत्ते मे जो थोडा-बहुत इकट्ठा हुआ है और जो-कुछ मैंने सघ को दिया है उसे छोडकर हम बिलकुल असफल रहे। मैंने बम्बई म सर पुरुषोत्तमदास और मथुरादास से बात की थी। उन्होंने मेरी बात बडी शिष्टता स सुनी, पर किया कराया कुछ नही। अतएव आप मेरे पास कुछ-न-कुछ भेजिए—अपील कहिए, सदेश कहिये। उसका उपयोग हम उपयुक्त ढग से करेंगे।

कृपा करके लिखिये मेरी वाइसराय से मुलाकात के बारे म आपकी क्या धारणा है। आपने वल्लभभाई के द्वारा मुझे चेतावनी दी थी कि सम्भव है वाइसराय व्यस्त हो उठें। आपने वातावरण का ठीक अदाजा लगाया था, पर मुझे इस बात का सतोष है कि मैं उनसे मिल लिया। शायद यह आवश्यक भी था, और अब आपको मालूम हो गया कि हवा का रुख किधर है।

अभी अभी मुझे लार्ड लादियन का पत्र मिला है जिसमे वह कहते हैं, 'मुझे पूरी आशा है कि जिस व्यक्तिगत सम्पर्क की बात आप इतने आग्रह के साथ करते हैं, वह शीघ्र ही स्थापित होगा। मेरी धारणा है कि वाइसराय औपचारिक बधनो को तोडकर व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करने को कटिबद्ध है।" कह नही सकता मुलाकात सबधी जो नोट मैं आपको भेज रहा हू उसे पढने के बाद आपकी क्या धारणा बनती है। मेरे दिमाग म एक बात बिलकुल साफ हो गई है। फिलहाल व्यक्तिगत सम्पर्क के विचार को तिलाजलि दे दी गई है, अथवा यो कहिये कि उन्हे तिलाजलि देने को बाध्य कर दिया गया है। सम्भव है उनकी यह अभि

लापा अब भी हो, या जसा कि उन्होंने मुझे बताया उनकी यह अभिलाषा हो कि निर्वाचनों के बाद वातावरण म सुधार करने की दिशा म व कोई ठोस कदम उठा सकेंगे। पर इन उद्गारों से आप जसा चाहें अथ ग्रहण कर सकते हैं। आप अपनी प्रतिक्रिया से मुझे अवश्य अवगत कीजिए। मैं यह अनुमान लगाने का साहस करता हू कि मैंने उनसे जो-कुछ कहा सब आपको पसन्द आया होगा। आशा है आप निर्वाचनों के प्रति बिलकुल उदासीन नहीं रहेंगे। मैं निर्वाचनों के महत्त्व को उत्तरोत्तर अधिकाधिक समझता जा रहा हू।

सप्रेम

आपका,
घनश्यामदास

पूज्य श्री महात्मा गांधीजी

७६

वर्धा
६ अगस्त, १६४६

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका तार मिल गया था। इस पत्र के साथ डॉ० मुजे के पत्र की नकल नत्थी करने भर का समय बचा है। पत्र अभी आधा घण्टे पहले मिला था, जो अपनी बात आप कहेगा। सम्भव है बापू उन्हें आने को कह। पर यदि वह ऐसा करेंगे, तो मैं आपको खबर दूगा।

आपका,
महादेव

८०

तार

विडला हाउस, नयी दिल्ली
७ ८ ३६

महादेवभाई देसाई,
वर्धा

यदि राजा मुजे पत्र यवहार के सम्ब ध म समय रहत माग दशन नही दिया गया, तो आशका है कि हि दू महासभा कोई नया कदम उठायगी और तब स्थिति विगड जायेगी।

—घनश्यामदास

८१

भाई घनश्यामदास,

दोना खत पढ गया। बाकी सब बाद मे। परमेश्वर अब तक मुझे मिला नही है।

इ टर यू ठीक है। मुझे उसम से कुछ आशाजनक नही दीखता है वह कुछ भी कर नही पायेगा। उनकी नीति और हमारी नीति मे जमीन आसमान का फरक है। अब उसकी ओर जाना ही नही, एसा मेरा दढ विश्वास है। मैंने किसी प्रकार का वचन दिया था ऐसा कहना ठीक नही। जो-कुछ भी किया वह सब करने योग्य था इसलिय हुआ। कुछ प्रतिज्ञा के कारण नही। आगे बढन म प्रजा-हित नही था। इतना भविष्य की स्पष्टता क लिय लिखता हू

इलेक्शन म मैं क्या कर सकता हू ? हा काग्रेस म झगडा रोकन की चेष्टा अवश्य करूगा। कर रहा हू।

बापु क आशीवाद

शेगाव, वर्धा
७ ८ ३६

८२

वर्धा
७ ८ ३६

प्रिय महात्माजी

आपके १ जुलाई के पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। पत्र नागपुर और पूना से होता हुआ अभी पहुंचा है।

मैंने रावबहादुर एम० सी० राजा को पत्र बिलकुल निजी और गोपनीय करके भेजा था और मेरा यह अनुरोध है कि आप पत्र को वैसा ही समझें। सशंकित होने की कोई बात नहीं है। वह समय आ सकता है जब या तो सारा पत्र व्यवहार प्रकाशित होगा या इस मामले को इस प्रकार लिया जायगा मानो कुछ हुआ ही नहीं।

यदि आपको लगे कि इस मामले पर व्यक्तिगत रूप से विचार विमर्श की जरूरत है तो मैं आपसे भेंट करने सहर्ष आ जाऊंगा।

आदर-सहित

आपका
बाल शिवराम मुंजे

८३

७ अगस्त १९३६

प्रिय लार्ड लोदियन,

आपके ६ जुलाई के पत्र के लिए आभारी हूं। हां मैं अनुभव करता हूं कि आपकी स्पीच भारतीय पत्रों में पूरी प्रकाशित नहीं हुई। अब आपके द्वारा भेजी स्पीच पढ़ी तो मुझे खासी अच्छी लगी। मैं इसे स्थानीय पत्र में प्रकाशन के लिए दे रहा हूं।

आपसे यह जानकर खुशी हुई कि आपकी यह धारणा है कि वाइसराय औपचारिक बंधनों को तोड़कर व्यक्तिगत संपर्क स्थापित करने को कटिबद्ध हैं। पर मुझे तो वैसा कोई लक्षण दिखाई नहीं देता। मैं परसों वाइसराय से मिला तो पता लगा कि कुछ होने जानेवाला नहीं है। वह कुछ पीले से और उदास दिखाई दिये। सम्भव है ऐसा गर्मी के कारण हो।

मैं पूर प्रश्न पर आपको और लाड हैलिफक्स को लिखने की बात सोच रहा था। आपके पत्र ने मुझे यह अवसर प्रदान किया है।

मैं भारत लौटा तो मैंने देखा कि लाड विलिंग्डन के नये वाइसराय के इरादों के बारे में घबराहट फलाने का खेल आरम्भ कर दिया है ' नया वाइसराय गाधी से मिलेगा और पुरानी नीति को बदल डालेगा। मानो गाधी के वाइसराय भवन में पाव रखते ही आसमान टूटकर गिर पड़ेगा ' मानिंग पोस्ट में एक समाचार छपा और उसके तुरत बाद ही सर तेजबहादुर सप्रू ने अखबारवालों को आपका वह पत्र दिखाया जिसमें आपने कहा था कि मैंने गाधीजी से वचन ले लिया है कि नये वाइसराय से मिलने तक वे नया कदम उठाने की हामी नहीं भरेंगे। आशा है आप मुझे गलत नहीं समझेंगे क्योंकि मैं आपको दोष नहीं दे रहा हू। पर इस सारी सामग्री का उन लोगों ने पूरा उपयोग किया जो व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित न होने देने में रुचि रखते थे। स्वय मेरा अखबार 'हिन्दुस्तान टाइम्स' अपने बम्बई स्थित विशेष सम्वाददाता के हवाले से लाड हैलिफैक्स द्वारा गाधीजी से पत्र व्यवहार करने की झूठी कहानी छापने की भूल कर बैठा। इस गलती के लिए सम्पादक और सवाददाता दोनों को ही नौकरी से हाथ धोना पड़ा, पर शरारत तो हो ही गई।

सरकारी अमला तो हमेशा से ही सरकार के शीर्षस्थ व्यक्ति और विपक्षी दल के बीच पारस्परिक सबध स्थापित होने के खिलाफ रहा है। अब उसने इस बेसिर पर के आतक का पोषण किया फलत जब लाड विलिंग्डन आए तो उन्होंने वातावरण को घबराहट और बेचैनी से भरा पाया। यह तो मैं नहीं जानता कि उन्होंने क्या किया और क्या सोचा, पर वस्तुस्थिति यह है कि उन्होंने फिलहाल व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करने का विचार त्याग दिया है। मेरी धारणा है कि उन्हें ऐसा करने को विवश कर दिया गया है।

सम्भवत उन्हें सलाह दी गई है कि उन्होंने निर्वाचनों से पहले कुछ किया तो उससे काग्रेस को बल मिलेगा। कहना पड़ता है कि उन्हें ठीक सलाह नहीं दी गई। व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करना एक साधन मात्र है। सारा प्रश्न यह है कि हम भारत की शक्ति-सामर्थ्य को हमेशा के लिए वधानिक दिशा में मोड़ने के लिए गम्भीर भाव से कोशिश करनी चाहिए या नहीं ? ऐसा केवल आपके ही शब्दों में 'पुलिस राज का अत कर एक दूसरे को समझने के लिए अनुकूल वातावरण तयार करके ही हो सकता है, ऐसा करने से सीधी कारवाई करने की सम्भावना बहुत दिनों के लिए दूर हो जायगी।

आपसी बातचीत के दौरान नेताओं के लिए यह जानना आवश्यक है कि

ब्रिटेन के अच्छे-से अच्छे दिमाग भारत की प्रगति में वहाँ तक सहयोग देंगे, जिस प्रकार सुधारों का उपहारतम (वास्तव में जाहिरा उद्धार तक उपहार) अब समझकर उन्हें मंजूर किया जायगा। ये सारी बातें व्यक्तिगत रूप से और अभी होनी चाहिए निर्वाचनों के बाद नहीं। इस काम के लिए समय उपयुक्त समय इस वक्त बहुत था। बिहार के भूकम्प ने मिल जुलकर काम करने और एक-दूसरे के साथ पारस्परिक सम्पर्क रखने का सुन्दर अवसर दिया था। आज यदि उतना सुन्दर अवसर तो नहीं है पर निर्वाचनों के बाद जब कांग्रेस कई प्रान्तों में बहुमत प्राप्त करेगी—जो प्रायः निश्चित है—समय और भी खराब हो जायगा। जब कांग्रेस विजयी होगी तब सरकार ने अब तक जो नीति अपनायी थी उसका प्रभाव नहीं के बराबर होगा। इसके विपरीत यह भी आशंका है कि निर्वाचन के दिनों में ही संघर्ष हो जाए जिससे वातावरण का दूषित होना अनिवार्य है। निर्वाचनों के प्रति सभी प्रान्तीय सरकारें निष्पक्ष ही का रुख अपना रही हों, ऐसी बात नहीं है।

एक बात और है। लाड लिनलिथगो ने अपने लिए बड़ा अनुकूल वातावरण तैयार किया है। उनके गांधीजी से भेंट करने से भारत ने उन्हें कुछ लोकप्रिय बना लिया है, और यहाँ से अपनी अभिरुचि प्रदर्शित करके वह इस लोकप्रियता में और भी वृद्धि करने में सफल हुए हैं। पर यह जादू निर्वाचनों के बाद उतर जाएगा।

ऐसी घटनाएँ घट रही हैं जिनके लिए उन्हें दोष दिया जा सकता है। सीमा प्रांत का ही उदाहरण लीजिए। अब्दुल गफ्फार खाँ को पंजाब और सीमांत प्रदेश में प्रवेश करना वर्जित करार दे दिया गया है। और सीमा प्रांत में वह जितने लोकप्रिय हैं उसे देखते हुए यदि इस अंचल में कोई व्यक्ति सुधारों को सफल बनाने की क्षमता रखता है तो वह अब्दुल गफ्फार खाँ ही हैं। इस प्रकार से उन्हें अपना निर्वाचन संबंधी प्रचार कार्य करने से वंचित कर दिया गया है। हम यह क्या नहीं समझ लेना चाहिए कि नये सुधारों के अंतर्गत वह सीमा प्रांत के मुख्य मंत्री नहीं बनेंगे। वर्तमान सरकार ने उनके सीमा प्रांत में प्रवेश पर रोक लगाकर वर्तमान मंत्रियों के प्रति जो उनके खिलाफ हैं पक्षपात से काम लिया है। अभी तक वाइसराय के विरुद्ध एक शब्द तक नहीं कहा गया है। वास्तव में कांग्रेसी पत्र या तो मौन साधे हुए हैं या कुछ कहते हैं तो अच्छी बात ही कहते हैं। पर मुझे आशंका है कि यह सब बहुत दिनों तक नहीं चलता रहेगा। मेरी तो कामना है कि ऐसा ही चलता रहे। पर जहाँ वातावरण एक बार विपाक्त हुआ कि उभय पक्षों के लिए मित्रता का आचरण करना कठिन हो जाएगा। जैसी कुछ स्थिति है, उसमें विलम्ब करना मेरी समझ में ठीक नहीं रहेगा।

मैं यह देखकर बड़ा हताश हुआ हूं कि इंग्लैंड से इतनी स्वस्थ धारणा लाने और आपका और अन्य मित्रों के गांधीजी के नाम संदेश लाने, तथा गांधीजी से समुचित उत्तर पाने के बाद मुझे इस असफलता का सामना करना पड़ रहा है। पर भगवान की इच्छा दूसरी ही प्रतीत होती है। मैं लार्ड हैलिफैक्स को नहीं लिख रहा हूं, क्योंकि आप शायद यह पत्र उन्हें भी दिखायें। मेरी तो भगवान से अब भी यही प्रार्थना है कि वाइसराय स्वस्थ वातावरण का निर्माण करने के मामले में विलम्ब न करें। कुछ हद तक वह असहाय हैं। वह जब कभी कोई दृढ़ कदम उठाने का फैसला करते हैं, उन्हें अपने ही आदमियों के प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है। मैं कह सकता हूं कि जब लार्ड हैलिफैक्स ने गांधीजी को बातचीत के लिए बुलाया था, तो उन्हें भी ऐसी ही स्थिति का सामना करना पड़ा होगा।

मेरे दुःख की यही कहानी है।

सद्भावनाओं के साथ,

आपका,
घनश्यामदास बिड़ला

राइट आनरेबल मार्क्विस आफ लोदियन
लंदन

८४

वर्धा
८ अगस्त १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी

मैं समय बचाने के लिए यह पत्र बोलकर लिखवा रहा हूं। दिनकर यहां ६॥ बजे आया था, शगाव चलना है। मैं हैरान था कि वह सुबह होने तक भी नहीं रुका इतनी जल्दी में है। मैं ११ मील का नियमित दैनिक व्यायाम सुबह ही निपटा चुका था और ५ मील की फिर यात्रा करने में हिचकिचाया। पर बहुधा कौतूहल आदमी से ऐसे ही मूर्खतापूर्ण काम करा लेता है। सो मैंने कमर कसी और हम दोनों रात के पौने नौ बजे 'मार्च' करते हुए वहां पहुंचे। बापू दिनकर की बात सुनते ही बोल उठे "गडरिया संदेश-वाहक बन गया।" बाकी सब आप जानते ही हैं।

का ठीक अदाजा लगा सकगे।

विश्वास है आप सकुशल होंगे।

आपका,
महादेव

श्री घनश्यामदास बिड़ला
नयी दिल्ली

८७

नयी दिल्ली
२३ अगस्त, १९३६

प्रिय महादेवभाइ

हमने कश्मीर म जितने दिन ठहरने का सोचा था उससे पहले ही लौट आये। तुम्हारा हृदय कुछ कवियो जसा है। यदि मैं कहू कि मुझे वह स्थान बिलकुल अच्छा नही लगा तो तुम विरोध करोगे। वह न स्वास्थ्य-वद्धक है न सुदर। इसकी तुलना स्विट्जरलड स करना मखौल करना है। स्वय भारत म ही कश्मीर की अपक्षा अधिक सुदर स्थान है। उदाहरण के लिए दार्जिलिंग और उसक आसपास का अचल कही अधिक सुदर है। और भारत म ही कश्मीर से कही अधिक स्वास्थ्यवद्धक स्थान हैं। हा यह बात दूसरी है कि मुझे भारत म ऐसा कोई स्थान नही मिला जहा सुदरता और स्वास्थ्य दोना का योग हो। स्विटजरलड म ये दोनो गुण साथ मिलग। कश्मीर म हमारे अधिकाश नौकर चाकर बीमार थ और हम म से अधिकाश आधा खुराक पर रहते थ।

मेरा वहा जाने का मन नही था पर मेरे भाइ रामेश्वरजी को कश्मीर देखने का बडा चाव था इसलिए मैं साथ हो लिया। पर अत म हम सब ऊब उठे और एक हफ्ते तक डेरे बदलने के बाद वहा स चल पडे।

परसो कलकत्ता जा रहा हू। हरिजन सेवक सघ की कायकारिणी की बठक क लिए तारीख निश्चित करूगा। मुझे यह निश्चय नही है कि बठक कहा करनी है। हो सकता है वर्धा म ही हो। पर मालूम पडता है कि बठक लम्बी चलेगी शायद एक हफ्ते तक। वसी हालत म मुझे बठक कलकत्ते म बुलानी पडेगी। उसके बाद ठक्कर बापा और मैं वर्धा जा सकते है।

जब मैं वर्धा आऊ, तो बापू के साथ कुछ समय के लिए एकान्त चाहूगा। यदि मैं मीटिंग के समय गया तो मेरा अधिकाश समय उसी म लग जायेगा और बापू से बात करन के लिए बहुत कम समय बचेगा। इसके अलावा, अब जबकि बापू शेगाव म रह रहे हैं, बैठक वधा म बुलाई जाय या कलकत्ते म, एक ही बात है। वर्धा म ठहरने का प्रबध करने मे भी कठिनाइ हागी। इन सारी बाता को ध्यान म रखते हुए फिलहाल मेरा झुकाव कलकत्ते की तरफ है।

अब जब मैं शेगाव आऊ—और मैं केवल शेगाव आना चाहता हू वर्धा नहीं—तो क्या मैं वहा ठहर सकूगा या मुझे भी तुम्हारी तरह वर्धा से आना और जाना पडेगा ? मैं बापू के पास ४ ५ दिन या और भी अधिक ठहरना चाहूगा। आशा है, इमसे उन्हें कोई असुविधा नही होगी। इसलिए मुझे बताओ कि मुझे क्या करना चाहिए। यदि मेरे आन से कोई व्यवधान पडता हो तो मैं न भी आऊ। कम-से-कम मैं यही चाहूगा कि ४ ५ दिनो क चौबीसो घण्टे बापू के साथ बिता सकू।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

८८

वर्धा
२५ ८-३६

प्रिय घनश्यामदासजी

आपन बौद्ध विहार के भवन क लिए धन दिया था। बापू न उसकी देख रेख का काम श्री खेर के सुपुर्द किया था। अब श्री खेर ने विहार के बारे मे एक महत्त्व पूर्ण प्रश्न उठाया है। इस पत्र के साथ श्री खेर के पत्र तथा बापू के उत्तर की नकल भेजता हू।

आपका,
महादेव

नकल

११ अगस्त १९३६

प्रिय महात्माजी

श्री धर्मानन्द कोसम्बी कहते हैं कि आप देखना चाहेंगे कि बिडलाजी ने नगाव विहार के लिए जो रकम दी थी वह किस ढंग से खर्च की जा रही है। जबतक भवन तयार न हो जाए मैं रकम के खर्च पर निगाह रखूगा। उसके बाद की बात मैं नही कह सकता क्योंकि मैं हरिजन-सेवक संघ के साथ संबद्ध हूं। बौद्ध विहार समिति में मैं कैसे रह सकता हूं? क्या ये सब हरिजन बौद्ध बनेंगे? इसकी क्या जरूरत है? जो हो मैं भवन बन जाने के बाद इस प्रश्न को फिर उठाऊंगा। इस बीच मैं उस समय तक के खर्च का लेखा-जोखा देखता रहूंगा। मैंने श्री कोसम्बी और श्री नटराजन से भी यही कहा है। मुझे यकीन है आप इसका खयाल नही करेंगे।

श्रद्धापूर्वक,

आपका आज्ञाकारी,
जी० जी० सेर

प्रतिलिपि

श्री घनश्यामदास बिड़ला

प्रिय सेर

समय नहीं था इसलिए तुम्हारे जरूरी पत्र का उत्तर देने में देर लगी। बौद्ध बनने का तो कोई प्रश्न ही नहीं है। मंदिर उसी प्रकार बुद्ध भगवान को अर्पित रहेगा जिस प्रकार अन्य मंदिर राम कृष्ण आदि को अर्पित रहते हैं। इसमें धर्म परिवर्तन की गंध तक नहीं है। अधिक-से अधिक इतना ही कहा जा सकता है कि यह एक प्रगतिशील ढंग का हिंदू मन्दिर होगा जिसका संरक्षक या पुजारी एक प्रकाण्ड विद्वान् होगा। मैंने प्रोफेसर कोसम्बी की योजना को इसी रूप में ग्रहण किया है। यह पत्र प्रो० कोसम्बी को दिखाना और यदि वह मेरी बात का समर्थन करें तो श्री नटराजन को दिखाना जिससे मंदिर के मामले में सबका एक जैसा विचार हो।

तुम्हारा
मो० क० गांधी

सेवाग्राम, वर्धा
२४ ८ ३६

८६

मगनवाडी,
वर्धा
२७ अगस्त, १६३६

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका २३ तारीख का पत्र मिला। आपकी कश्मीर यात्रा के अचानक अत की बात जानकर दु ख हुआ। मैं तो कभी कश्मीर गया नही, इसलिए आप उसके सम्बन्ध म जो चाहे कहिए मेरी कविता-जसी भावुकता को ठेस लगने से रही। वास्तव मे, मैं आपके इस कथन को पूरी तरह मानने को तयार हू कि वह न कोई असाधारणतया स्वास्थ्यप्रद स्थान ह न असाधारणतया सुन्दर जगह है। पर मेरी समझ म यह नही आया कि सारे-के-सार नौकर चाकर बीमार कसे पड गये और वहा से सभी लाग पहले स भी बुरी हालत मे क्या लौटे ?

यदि कायकारिणी की बठक लम्बी चलेगी, और उसम भाग लेने अनेक सदस्य आएगे तब तो शायद बठक कलकत्ते म ही बुलाना ठीक रहेगा।

शेगाव म आपके ठहरने का इन्तजाम करने मे कोई कठिनाई नही होगी। मैंने हरिजन' म बापू के एक कमरे के बारम जो कुछ लिखा वह आपने पढा ही होगा पर इस समय वहा उतनी भीड नही है जितनी पिछले सप्ताह तक थी, और जितनी एक पखवाडे पहले थी उसस तो कही कम ह। मुझे भरोसा है कि आपके कपडे धोने और सब तरह की सुख सुविधा का ध्यान रखने के लिए कोई न-कोई आदमी तो आपके साथ जायगा ही। वर्षाकाल प्राय समाप्त हो गया है, और कमरे में क्या बरामदे तक मे कोई भीड भाड नही ह। आजकल प्राय सभी खुले आकाश के नीचे सोते हैं और बाहर मच्छर लगभग नही के बराबर हैं। पर बापू का कहना ह कि आप बठक के पहले आयें बाद म नही। सरदार वल्लभभाई भी यही हैं। उनका भी यही कहना है कि आप उनके रहते यहा आयें। पता नही, आपके लिए सितम्बर के पहले हफ्ते म आना सम्भव होगा या नही। कृपा करके अविलम्ब सूचना दीजिए।

आपका,
महादेव

श्री घनश्यामदास बिडला
बिडला हाउस,
अल्बूकर्क रोड
नयी दिल्ली

पुनश्च

आपकी २४ तारीख की चिट्ठी अभी मिली है। बापू का उत्तर कल भेजूंगा।

९०

वर्धा
२८ अगस्त, १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका २४ तारीख का पत्र बापू को दिखाया। आपने जो-कुछ कहा है उन्हें ठीक लगा है और उनकी भी यही राय है कि आपको मैनेजिंग डाइरेक्टर के पद से जल्दी-से जल्दी त्याग-पत्र दे देना चाहिए पर उन्होंने आपको कुछ दिन ठहरने की सलाह दी है। यह मामला बापू के दिमाग में इधर कई दिनों से रहा है। पर हम जमनालालजी और परमेश्वरीप्रसाद से मशवरा किये बगैर कोई फैसला नहीं करना चाहते। शायद अगले महीने तक ठहरना ठीक रहेगा।

आपका,
महादेव

श्री घनश्यामदास बिडला,
बिडला हाउस
अल्बूकर्क रोड,
नयी दिल्ली

९१

बनारस,
२९ अगस्त १९३६

प्रिय महादेवभाई,

ठक्कर बापा ने २६ तारीख को बापू को जो पत्र लिखा था वह मैंने देखा है। पत्र वर्धा में चमड़े की चीजें बनाने के संबंध में है। हमारे पास धन का अभाव हो सकता है, पर बापू जो छोटे छोटे प्रयोग कर रहे हैं उनके लिए हम उन्हें धन का अभाव नहीं खलने देंगे। अतएव हम औपचारिक रूप से यह मामला कार्यकारिणी समिति के सामने भले ही रखें, अन्त में होगा वही जो बापू चाहेंगे।

म कलकत्ता पहुचन पर सतीश बाबू के चमडे के उद्योग की छानबीन करूगा, पर उसक सम्ब ध म मेरी धारणा अच्छी नही है। मैं यह अवश्य कहना चाहूगा कि वर्धा म जा कुछ हा रहा है, पूरी जानकारी के साथ हा रहा होगा। इसम स दह नही कि कलकत्ते म यह भूल की गई कि उद्योग को एक छोटी माटी फक्टरी का रूप दे दिया। वर्धा की बात भिन्न है, इसलिए वहा भारी घाटा उठान की आशका नही है।

डा० राजन न अपना इस्तीफा भेजा है। अभी मैंन वह मजूर नही किया है। मैंने उन्ह गोल माल जवाब भेज दिया है। पर क्या सघ को काग्रेस की राजनीति म घसीटना उचित होगा ? साथ ही यह भी कहा जा सकता है कि उनका प्रभाव कम हो जान के कारण उनकी काय क्षमता अब सीमित रह गई है। दानो पलडो के भार को ठीक ठीक जाचने के बाद यह कहा जा सकता है कि यदि उनका इस्तीफा मजूर कर लेते हैं, तो हम पर राजनीति मे भाग लेने का आरोप लगाया जायगा। कुछ भी कहो, हमारी सस्था कोई राजनतिक सस्था तो है नही। लिखो बापू क्या कहते हैं। मैं जल्दी ही कलकत्ता जानेवाला हू इसलिए पत्र वही भेजना।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

९२

तार

३० ८ ३६

महादवभाई देसाई,
मगनवाडी,
वर्धा

तार मिला, बापू सितम्बर क पहल सप्ताह म मुझे चाहत हा ता मैं आ सकता हू, समिति की बठक स्थगित कर दूगा। लक्ष्मी' क पत पर तार भेजो।

—घनश्यामदास

६३

बिड़ला हाउस,
लालघाट,
बनारस
३१ अगस्त, १६३६

प्रिय महादेवभाई

कल मैंने तुम्हें तार भेजा था कि यदि बापू वहां समिति की बैठक होने से पहले मुझे वहां चाहते हैं तो मैं ८ और १० सितम्बर के बीच पहुंच जाऊंगा अन्यथा २६ के आसपास पहुंचूंगा।

परमेश्वरीप्रसाद का उत्तर मिलने तक त्याग पत्र नहीं दे रहा हूं।

शेष मिलने पर

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

६४

तार

वर्धा
२१ अगस्त, १६३६

घनश्यामदास
मारफत नकी
बम्बई

यथासम्भव शीघ्र आओ वल्लभभाई आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, तार से उत्तर दो।

—बापू

६५

वर्धा
१ सितम्बर १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी,

घटनाएं इतनी बौखलानेवाली शीघ्रता के साथ घट रही है कि मैं आपको प्रत्येक क्षण की सूचना देने में असमर्थ हो गया। बापू यहां २७ को अखिल भारतीय चरखा संघ की बैठक में भाग लेने आए थे। २९ को वह शेगांव पैदल ही वापस लौटे जिससे उन्हें हल्का सा बुखार आ गया पर शरीर बिल्कुल चूर हो गया। दूसरे दिन वह यथास्तूर काम में लग गये। ३१ की सुबह को आपका तार मिला, जिसे मैंने उनके पास भेज दिया और फिर उनका उत्तर मिलते ही आपके पास रवाना कर दिया। तीसरे पहर हस्बमामूल शेगांव गया तो क्या देखता हूं कि बापू १०६ डिग्री बुखार में चारपाई पर पड़े हैं। मुझे शनिवार को ही डर था कि कहीं मलेरिया न हो यदि हुआ तो सोमवार को भी बुखार चढ़ेगा। पर बापू ने हंसकर बात टाल दी। जमनालालजी इतने डर गए कि उन्होंने आपको तार भेजकर यहां आने से मना कर दिया। मुझे आज सुबह ही पता चला कि उन्होंने आपको तार भेजा था। आज बापू को ज्वर नहीं है पर कल ज्वर चढ़े तो कोई ताज्जुब नहीं। कुल मिलाकर अच्छा ही हुआ कि आप नहीं आ रहे हैं क्योंकि उनका स्वास्थ्य इस समय जैसा कुछ है, उसमें आप उनसे अपनी बात कहना पसन्द नहीं करते। मैं अब सिविल सर्जन के साथ नहीं जा रहा हूं। वह उन्हें कम-से-कम बुखार रहने तक वर्धा आने को राजी करने की कोशिश करेंगे। पर मैं तो नहीं समझता कि वह ऐसा कोई सुझाव मानेंगे।

मैं आपको नियमित रूप से सूचित करता रहूंगा। चिन्ता न करें।

आपका
महादेव

पुनश्च

सुबह लिखवाया हुआ।

९६

मगनवाडी,
वर्धा १ सितम्बर, १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी

यह पत्र मैं आज सध्या के समय शगाव से लौटन क बाद लिख रहा हू।

मुझे आपको यह बतात हप होता है कि आज बापू को ज्वर नही हुआ। आज सुबह सिविल सजन उनका खून ले गया था, कल तक बतायेगा कि यह मामूली मलेरिया है अथवा साघातिक मलेरिया। यदि वह दूसरे प्रकार का मलेरिया निकला तो बापू परसो मगनवाडी आन के लिए राजी हो गए हैं जिससे उनकी चिकित्सा में सुविधा रहे।

वधा क चमडे के उद्योग के बारे म आपका कहना ठीक ही है। ठक्कर बापा को वह पत्र बापू के पास नही भेजना चाहिए था। चमडे के उद्योग के लिए रुपया उसके निमित्त बन कोष मे स निकलना चाहिए। सतीश बाबू के उद्योग के बारे म भी आपका कहना उतना ही ठीक है।

मैंने डा० राजन क इस्तीफे के बारे म बापू की राय मालूम कर ली है। उनका कहना है कि इस्तीफा तब तक मजूर नही करना चाहिए जब तक डा० राजन अपने इस्तीफे का सतोषजनक कारण न बता दें। अब आपको उन्हे लिखना है कि हरिजन सेवक सघ के अध्यक्ष पद के लिए उन्हें जो लिया गया है सो उनकी राजनीति के कारण नही बल्कि उनकी हरिजन कल्याण म गहरी दिलचस्पी क कारण। यह भी कहिए कि आपके लिए इस बाबत सन्देह करने का कोई कारण नही है कि उनकी राजनतिक पोजीशन म चाहे जो भी अन्तर पडा हो हरिजन कल्याण म उनकी दिलचस्पी पूववत रहेगी यह भी कि उनके काग्रेस की राजनीति स हटना एक और भी बडा कारण है कि वे हरिजन सेवक सघ के अध्यक्ष बन रहे, क्योंकि उनकी सारी शक्ति हरिजन काय म ही लगगी। पर यदि उनक पास काग्रेस से रिटायर होने के अलावा और कोइ ठोस कारण हो तो समिति को उन पर विचार करना चाहिए।

बहुत सम्भव है कि यदि आप उन्हें उपयुक्त ढंग से लिखें, तो वह इस्तीफा देने का विचार त्याग दें।

आपका,
महादेव

श्री घनश्यामदास बिड़ला,
८, रायल एक्सचेंज प्लेस,
कलकत्ता

पुनश्च

यह रात के नौ बजे लिखवाया। कल 'लेट फीस' लगाकर जाएगा। कृपया बापू की चिन्ता मत कीजिए। मैं नित्य लिखता रहूंगा।

९७

वर्धा
२ सितम्बर, १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी,

आज सुबह बापू को देखा। बड़े कमजोर हो गए हैं। पर दिन में बुखार नहीं चढ़ा। वह पूरी सावधानी बरत रहे हैं और कुनैन भी ले रहे हैं। यदि आज बुखार चढ़ा तो उन्होंने कल वर्धा जाने का वचन दिया है। सम्भवतः वह यहां तब तक रुके रहेंगे जब तक डाक्टर उन्हें मलेरिया से बिलकुल मुक्त घोषित न कर दें।

आज परमेश्वरीप्रसाद की चिट्ठी मिली। उससे पता चलता है कि वह आपके यहां होने पर खुद भी मौजूद रहना चाहेंगे। साथ ही, वह पण्ड्या और पारनेरकर की भी मौजूदगी चाहते हैं जिससे विचार विमर्श में सहायता मिले। यदि आप अब यहां आने की ठीक ठीक तारीख तय करने की स्थिति में हों और यह भी बता सकें कि मैं इन मित्रों को कब बुलाऊं, तो कृपा करके सूचित करें। आपसे खबर मिलने तक मैं उन्हें नहीं लिख रहा हूं।

वल्लभभाई आपकी बाट जोहनेवाले थे। आज वह बम्बई के लिए रवाना हो रहे हैं। पर उन्होंने वचन दिया है कि आपके आने पर वह भी आ जाएंगे।

आपका,
महादेव

९८

कलकत्ता
३ सितम्बर, १९३६

प्रिय महादेवभाई

तुम्हारे दो पत्र अभी अभी मिले। जमनालालजी के तार से चिन्ता अवश्य हो गई थी। उन्हें अपने तार को कुछ अधिक स्पष्ट करना चाहिए था। पर अब पूरी खबर मिली है तो तसल्ली हो गई है। यदि मलेरिया है तो बापू को कुनैन लेनी चाहिए और अपने आपको डाक्टरों के हाथों में सौंप देना चाहिए। आशा है अब बुखार नहीं चढ़ता होगा।

तुमने पढ़ा होगा कि मुझे भारत ब्रिटिश व्यापार सम्बन्धी बातचीत में वाणिज्य-व्यवसाय का प्रतिनिधित्व करने के लिए गैर-सरकारी परामर्शदाता नियुक्त किया गया है। यह बातचीत ओटावा पैक्ट के खारिज किये जाने के फल स्वरूप होगी इस बार सरकार ने व्यवसायी समाज को अपने साथ लेने की बुद्धि मानी दिखाई है। मैं कस्तूरभाई और सर पुरुषोत्तमदास भारतीय वाणिज्य व्यवसाय का प्रतिनिधित्व करेंगे। मुझे प्रोग्राम के बारे में कोई जानकारी नहीं है पर मुझे शिमला शायद शीघ्र ही जाना पड़े। बापू के अच्छे होने पर मुझे वर्धा भी आना है।

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

तुम्हारा
घनश्यामदास

पुनश्च

यह लिख चुकने के बाद अभी-अभी जमना[illegible]
१०२ डि[illegible] [illegible] है कि बुखार
अक्सर [illegible] गया है। बात डरानेवाली [illegible] रिया में ऐसा
आशा है [illegible] सन्तोष हुआ कि बापू [illegible] और मुझे
अधिक अच्छी खबर

९९

तार

४ सितम्बर, १९३९

लकी
कलकत्ता

नींद अच्छी आई, आज बुखार नहीं चढ़ा।

—जमनालाल

१००

कलकत्ता
८ सितम्बर, १९३९

प्रिय महादेवभाई,

अब हमें प्रेम के तार मिल रहे हैं जिनमें बापू की तबीयत के बारे में ताजी से-ताजी खबरें मिल जाती हैं। मुझे आशा है दो एक दिन में वह बिलकुल ठीक हो जाएंगे।

अब मेरे वर्धा आने के संबंध में। कैसी मजे की बात है कि कुछ किये बिना ही चीजें आप-से-आप हो जाती हैं। जिस दिन बनारस से कलकत्ते के लिए रवाना होनेवाला था मुझे बापू का तार मिला कि वर्धा जल्दी-से जल्दी आओ। मैंने वर्धा जाने की पूरी तैयारी कर ली तो दूसरा तार मिला कि मत आओ। अब कलकत्ता आने पर देखता हूं कि मुझे भारत ब्रिटिश-वार्ता में भारतीय व्यवसायी-समाज का प्रतिनिधित्व करने के लिए गैर-सरकारी परामर्शदाता नियुक्त किया गया है। यह बिलकुल अप्रत्याशित नहीं था। फिर भी मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि सबसे पहले मुझी को उस काम के लिए चुना गया है। कस्तूरभाई और सर पुरुषोत्तमदास को भी निमंत्रण मिला है अतएव मैं वाणिज्य-व्यवसाय का प्रतिनिधित्व करने के लिए राजी हो गया। अब समाचार मिला है कि मुझे बैठक में भाग लेने के लिए १३ तारीख तक पहुंच जाना चाहिए। यह बैठक कोई एक पखवाड़े चलेगी, इसलिए मैंने ठक्कर बापा को तार दिया कि वह कार्यकारिणी की बैठक सितम्बर के अंत

म दिल्ली म बुलायें, जिसक बाद मेरा वर्धा आने का इरादा है। ऐसा शायद अक्तूबर क आरम्भ म होगा पर मैं निश्चित रूप स कुछ नही कह सकता क्योकि यह सब मेरे हाथ की बात नही है। शिमला पहुचने पर अपना प्रोग्राम अधिक निश्चित रूप से बना सकूगा। तभी मैं तुम्हे लिखूगा।

तुम्हारा
घनश्यामदास

१०१

मगनवाडी,
वर्धा ५ सितम्बर, १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका ३ सितम्बर का पत्र मिला। मैंने आपको लिखा था कि मलेरिया का आक्रमण होते ही बापू ने कुनैन लेना शुरू कर दिया था। अब वह अस्पताल म हैं और डाक्टरो की देख रख म हैं इसलिए कुनैन अधिक मात्रा मे ले रहे हैं। पिछले ६० घण्टो से बुखार नही चढा है। मैं समझता हू कि अब बुखार से पिण्ड छूट गया। मलेरिया मे ऊचा बुखार चढ जाना कोई अनहोनी बात नही है इसलिए मैं बिलकुल नही घबराया। मैं तो प्रेस को भी तार नही भेजता पर एसोसिएटेड प्रेस का तार आ गया। मैं स्वभाव से घबरानेवाला आदमी नही हू और इस बार मैंने निश्चय कर लिया था कि किसी को भी खबर न दू पर आप जानते ही हैं कि बापू के मामले म मामूली स बुखार की बात भी गुप्त रखना असम्भव है।

मैं तो समझता हू कि आपके जिम्मे एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण और उत्तरदायित्वपूर्ण काम सौंपा गया है। आपकी शक्ति-सामर्थ्य म उत्तरोत्तर वृद्धि हो, यही कामना है। मैं आपसे आने की निश्चित तारीख बताने का अनुरोध कर ही चुका हू जिससे डेयरीवालो को यथेष्ट समय दे सकू।

मैं समझता हू बापू अस्पताल मे दो-तीन दिन और ठहरेंगे। यदि उन्हे एक पखवाडे या उसस भी अधिक ठहरने को राजी किया जा सकता तो बडी बात होती। यदि वह शेगाव वापस लौटेंगे तो इसका अर्थ तुरत उसी भीडवाले एक

कमरे में लौटना होगा जहां मच्छरों का राज्य है, और वह जगह चारों ओर से पेड़-पौधों से घिरी हुई है ही। जो हो, हमें मंगल की कामना करनी चाहिए।

सप्रेम,
महादेव

श्री घनश्यामदासजी बिड़ला,
८ रायल एक्सचेंज प्लेस
कलकत्ता

पुनश्च

आपका दूसरा खत मिल गया। अब तो आप अक्तूबर से पहले नहीं आयेंगे।

१०२

कलकत्ता
८ सितम्बर, १९३६

प्रिय महादेवभाई,

मलेरिया रुक-रुककर आक्रमण करता है इसलिए अधिक कुनैन लेना ही पर्याप्त नहीं होगा। डॉक्टरों ने बताया ही होगा कि कुनैन का प्रभाव दूर होने के बाद कुछ समय तक रक्त की परीक्षा जारी रखनी चाहिए। यदि उनकी भली भांति देखभाल नहीं की गई, तो सम्भव है मलेरिया फिर आक्रमण करे। जब तक वह इस रोग से पूरी तरह त्राण नहीं पा लेते, शेगांव तो उनके लिए बिलकुल ही उपयुक्त नहीं है। वह नवम्बर के अंत तक वर्धा में ही क्यों न रहें? मेरी ओर से इसका आग्रह करना। वह शेगांव में मलेरिया से नहीं बच सके। हमारे आग्रह का एक यह भी आधार होना चाहिए।

मैंने प्रसिद्ध डाक्टरों से सुना है कि कुनैन खाने के बजाय उसके इंजेक्शन अधिक प्रभावकारी होते हैं। मैं यह सब केवल विचारार्थ लिख रहा हूं।

मैं यहां से शायद परसों रवाना हो रहा हूं। शिमला में एक पखवाड़े रहूंगा।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

१०३

कलकत्ता
१० सितम्बर, १९३६

प्रिय महादेवभाई

इस पत्र के साथ जो कटिंग भेजी जा रही है वह अमृत बाजार पत्रिका से ली गई है। लेखक हैं नगेन्द्रबिहारी मजूता। यह तुम्हें दिलचस्प लगेगी।

जब मैंने बापू का लेख पढ़ा तो मुझे ऐसा लगा कि वह बहुतों को प्रभावित नहीं कर पायेगा। कुछ भी कहो जिसे बापू भगवान में जीवन्त आस्था कहते हैं साधारण कोटि के मनुष्य में उसका अभाव सा है और जब तक उसमें वह आस्था न हो उससे बापू के ही शब्दों में अहिंसा की बात करना व्यर्थ है। दूसरे शब्दों में अहिंसा एक साधारण मनुष्य के लिए कोई बहुत बड़ी चीज बनकर रह जाती है। तुम कहोगे कि अहिंसा के द्वारा मनुष्य स्वयं बड़ा बन सकता है, पर इस तर्क को ध्यान में रखा जाए तो यह घोड़े के आगे गाड़ी जोतने के समान है। प्रारम्भ छोटी मोटी चीजों से ही करना ठीक होगा। पर यह तो मैंने यों ही लिख दिया। मेरे लिए अगला कदम क्या होगा यह मैं जानता हूं, और यह कदम उठाना है बजाय इसकी चर्चा भर करने के। इसलिए मैं अपने आपसे कहता हूं कि ये सारी चीजें एक न एक दिन मेरे ऊपर भी बीतेंगी आज न सही कल सही।

मैं एक-दो दिन में तुम्हें अपने प्रोग्राम के बारे में लिखूंगा। अभी तक इस मामले में बिलकुल असहाय रहा हूं। शिमला से तार आया है कि बैठक नहीं होगी, कब और कहां होगी यह कुछ नहीं बताया। जब तक मुझे यह न मालूम हो मैं अपना प्रोग्राम नहीं बना सकता। मैंने तार भेजा है उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा हूं। सम्भव है अगली बैठक अक्तूबर के पहले हफ्ते में दिल्ली में हो। ऐसा हुआ तो मैं पहले वर्धा आऊंगा फिर बैठक में भाग लूंगा।

आशा है अब बापू स्वस्थ होंगे।

तुम्हारा
घनश्यामदास

१०४

भाई घनश्यामदास,

मेरा अभिप्राय दिन प्रतिदिन दृढ होता जाता है कि सब प्रान्तो को हरिजन सेवा काय के लिए अपने अपने प्रान्तो म आवश्यक धन इकट्ठा करना चाहिये। मध्यवर्ती केन्द्र स पसे जायें और प्रान्तो का काम चले वह काम चिरस्थाई कभी नही हो सकता है और इसस हमे सवण हिन्दू दिल की स्थिति का भी पूरा ख्याल नही मिलगा। मजबूर होकर हमारे काम को कम करना पडे उससे अच्छा यह होगा कि हम अपनी मर्यादा को पहचान लें।

सार यह है कि सब प्रात अपना बजट उपरोक्त दष्टि से देवें और उस देखकर हम प्रत्येक को जो सहाय १ २ वष के लिये द सकें सो देवें। मै इस काय को सिफ धार्मिक दष्टि से देखता हू इसलिये हमारे काय का विस्तार धार्मिक भावना ले त्यागी सत क मिलने पर निभर रहेगा। धन उनके पीछे पीछे चलेगा धन के पीछे वे नही आवेंग। यदि यह बात हमारी कौंसिल के सामने स्पष्ट नही हुई है तो दुर्भाग्य की बात है।

इस बात का आखरी फसला करने के लिये अगर कौंसिल की बैठक वर्धा रखना आवश्यक समझा जाय तो रखी जाय।

आपका
मोहनदास गाधी

शेगाव, वर्धा
११ ६ ३६

१०५

तार

वर्धा
१५ सितम्बर, १९३६

घनश्यामदास,
लकी,
कलकत्ता

बापू अच्छे हैं—हार्दिक स्वागत है।

—महादेव

१०६

तार

महादेवभाई देसाई
मगनवाडी वर्धा (सी० पी०)

१७ को वर्धा के लिए रवाना हो रहा हू। बापू को असुविधा हो तो मध्य अक्तूबर मे आ सकता हू तार दो।

—घनश्यामदास

८ रायल एक्सचेंज प्लेस
कलकत्ता
१५ ६ ३६

१०७

भाई घनश्यामदास

परमेश्वरी पारनरकर, सरयूप्रसाद दिनकर और धर्माधिकारी को तीन दिन दिये पेट भरके बातें की। सबके अभिप्राय भिन्न हैं। पारनेकर डेरी का कब्जा लेने के लिए तयार नही है। परमेश्वरी के १६ साल का प्रयोग मिटा देना अच्छा नही लगता है। पूर्ण निर्णय मैं नही कर सका हू क्योंकि इस काम को खतम करने मे दो तीन मास तो चल ही जायेंगे। मेरा अभिप्राय है कि परमेश्वरी को और २००० दिसम्बर ३१ के खर्च के लिये दिये जायें। फसल बोने की कुछ बात है सो तो बोने का मैंने कह ही दिया है। जैसे ५०० दिये हैं एसे ही २००० उसको दिये जाय और अन्त मे जो-कुछ भी हो रुपये २५०० काम पर फस्ट चार्ज रहे। इतने मे हमारे कही भी मिलकर अतिम निर्णय कर लेना चाहिये। अक्टूबर २५ को तो मुझे बनारस जाना ही होगा। जमनालालजी वहीं होंगे। परमेश्वरी को मैंने यह भी कहा है कि वह गवर्नमेंट एक्सपर्ट का अभिप्राय लेवे।

बापु के आशीर्वाद

शेगांव वर्धा
२० ६ ३६

१०८

होटल सिसिल
शिमला
४ अक्तूबर, १९३६

पूज्य बापू

आपके पत्र के लिए धन्यवाद। यदि मैंने आपके आशय को ठीक ठीक समझा है तो आप मुझे परमेश्वरीप्रसाद को २०००) और देने को कहते हैं बशर्ते कि पहले ५००) और ये २०००) डेयरी का सबसे पहले भुगताने होंगे। इसमें इतना और जोडना चाहूंगा कि मैंने उन्हें पिछले साल जो २०,०००) दिये थे उनका भुगतान भी पहले किया जाए। मेरी परमेश्वरीप्रसाद में पहले जैसी आस्था नहीं रही है इसीलिए ऐसा लिख रहा हूं। दिल्ली पहुचने पर रुपया दे दूगा।

भविष्य में पैसा लगाने के बारे में कार्यकारिणी समिति ने जो निर्णय लिया है उसकी बाबत मुझे आपको लिखना चाहिए था। मैंने आपका पत्र सदस्यों को पढ सुनाया और उन्होंने उसे सराहा, पर जब सिद्धान्त को कार्य रूप में लागू करने की बात उठी तो उन्हें बेचैनी हुई। वास्तव में बात यह है कि कोई भी उस दुर्दिन का सामना करने को तैयार नहीं है और साथ ही कोई मामले को टालना भी नहीं चाहता। पर हमने कटौती का बजट तैयार किया है, आपको विवरण देकर व्यस्त करने की इच्छा नहीं है। इस समय हमारी आर्थिक अवस्था ऐसी है कि यदि हम मदों के लिए निश्चित की गई रकम को हाथ नहीं लगाना है तो पहली अक्तूबर से शुरू होनेवाले वर्ष से प्रान्तों को अनुदान के रूप में एक पाई भी नहीं देनी चाहिए। पर चारों ओर से दबाव पडने के कारण हम अनुदानों के प्रस्ताव मानने पडे, जिसके परिणामस्वरूप केन्द्रीय बोर्ड को ८० ०००) का घाटा होगा। यह रकम इकट्ठी करनी है। मैंने लगभग ४० ०००) तक इकट्ठा करने की भरसक कोशिश करने का वचन दिया है, पर ४० ०००) तो फिर भी कम रहे। स्पष्ट बात यह है कि हमने अब तक जो कुछ किया है उससे मैं पूरी तरह सतुष्ट नहीं हूं। पर तो भी हमने ठीक दिशा में एक बडा कदम उठाया है। जब मैं अनुदानों की रकमों में कतर-ब्योंत करने लगा तो मैं अच्छी तरह समझ रहा था कि मैं कैसा अप्रिय काय कर रहा हूं। मैंने आपका अरुचिकर सदेश पढकर सुनाया तो अधिकांश सदस्य चिढ गये। मैंने उनसे आपके पास जाने को कहा पर ऐसा करते उन्हें डर लगता है। वे जानते हैं कि यदि वे आपके पास पहुचे तो उन्हें

जाना भी उन्होंने मिलना जितना व मुनासिब समझे हैं।

मैंने अच्छी तरह समझ लिया है कि यदि दो महीने तक वहां रहा तो हरिजन सेवक-संघ के अध्यक्ष की हैसियत से मैं अप्रिय हो जाऊंगा। शायद मेरी धारणा गलत है कि मेरे अध्यक्ष रहते हुए ऐसे सवाल उठाने ही नहीं चाहिए।

मैं यहां एक हफ्ता या १० दिन तक और हूं। इसके बाद कुछ दिनों के लिए दिल्ली जाऊंगा फिर कलकत्ता। कृपा करके महादेवभाई से कह दीजिए कि जब आपका बनारस जाने का प्रोग्राम बने तो वह मुझे खबर कर दें जिससे मैं भी अपना प्रोग्राम बना सकूं और आपसे बातचीत करने के लिए ठहरने वालों को भी साथ ले आऊं।

श्रद्धापूर्वक

आपका स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

पूज्य श्री महात्मा गांधीजी
सेगांव

१०६

मगनवाड़ी,
वर्धा
८ अक्तूबर, १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका बापू के नाम पत्र कुछ ही मिनट पहले मिला और झटपट उसका उत्तर दे रहा हूं क्योंकि उसमें आपने बापू का प्रोग्राम पूछा है। अन्य बातों के बारे में फिर बापू को आपका पत्र दिखाकर लिखूंगा।

हरिजन-सेवक संघ के लिए धन की बाबत 'हरिजन' के वर्तमान अंक में बापू का लेख पढ़िए जिसमें उन्होंने अपनी पोजीशन को और भी खुलासा कर दिया है।

ईश्वर ने चाहा तो हम बनारस के लिए २२ की शाम को चल पड़ेंगे, और वहां २४ की सुबह पहुंचेंगे। वहां २६ तक ठहरने के बाद अहमदाबाद के लिए

रवाना हो जायेंगे। अहमदाबाद म २ नवम्बर तक रुकने की सभावना है—यदि वहा मिल मालिक बापू स मिलन आये तो ५ या ६ तारीख तक भी रुक सकते हैं, पता नही बनारस मे बापू अधिक समय निकाल सकेंगे या नही क्याकि वहा उन दिना पालियामटरी समिति के सदस्य और अधिकाश काग्रेसी मौजूद रहेंगे, पर यदि आप और ठक्कर बापा आयें तो बापू आपके लिए समय अवश्य निकाल पायेंगे।

सप्रेम,
महादेव

श्री घनश्यामदास बिडला,
सिसिल होटल,
शिमला

११०

बिडला हाउस,
नयी दिल्ली
११ अक्तूबर, १९३६

प्रिय महादेवभाई,

मैं शीघ्र ही कलकत्ते के लिए रवाना हो रहा हू इसलिए मुझे भय है कि बापू के रहते मैं बनारस नही पहुच पाऊगा। आप कहते ही हैं कि वहा बापू पालियामटरी समिति का लेकर उलझे रहेंगे इसलिए उस अवसर पर हरिजन-सेवक-सघ के विषयो पर बातचीत करना ठीक नही जचता।

हरिजन-सवक-सघ के लिए धन के बारे म 'हरिजन' के ताजा अक म बापू का लेख पढूगा।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादवभाई दसाई

१११

दिल्ली कैटिल ब्रीडिंग फार्म लिमिटेड
पमवाड़ी पुनिया, दिल्ली
ता० १८ १० ३६

पूज्य बापूजी

प्रणाम।

मेरे पास खर्च के लिए कुछ बचा नहीं है। मुझे रुपये की सख्त आवश्यकता है। कृपया २००० रुपया दिसम्बर तक के खर्च के लिए भिजवाने का शीघ्र प्रबंध कीजियेगा।

मिस्टर स्मिथ साहिब को स्कीम भेज दी है।

सेवक,
परमेश्वर।

घनश्यामदासजी ने लखज्यो। जेमने लख्यो छे के में तो बंदोबस्त करयो छे हवे नथु छु।

११२

वर्धा
२१ १० ३६

प्रिय घनश्यामदासजी

साथ भेजा पत्र[1] अपनी बात स्वयं कहेगा। मैं समझता हूं बापू ने इस बारे में आपको कुछ दिन पहले लिखा था। अच्छा है उन्हें रकम दे दीजिये।

हमारा प्रोग्राम यह रहा

बनारस	—	२५ २६
दिल्ली	—	२७
राजकोट	—	२९
अहमदाबाद	—	३० ३
वर्धा	—	५

आपका
महादेव

१ देखिए उपर्युक्त पत्र।

११३

बनारस
२५ १०-३६

प्रिय घनश्यामदासजी

मुझे पता नहीं था कि आप दिल्ली म है। मैंने आपको कलकत्त चिट्ठी भेजी। बापू यहा २७ को पूरे दिन है ही। हम दिल्ली प्रात काल ६ ४३ पर पहुचेंग और रात ८ ३० बजे छोटी लाइन स अहमदाबाद के लिए रवाना हो जायेंग। मैं समझता हू, आप और देवदास दाना उन्ह हरिजन निवास म ठहराना चाहत ह। यदि एसा न हा ता आप बापू का स्टेशन पर ही बता देंगे। बापू आपके यहा ठहरन का भी राजी हैं पर सबस उत्तम यही होगा कि वह अपना दिन हरिजन निवास म बिताए।

सप्रेम
महादव

११४

बनारस
३१ अक्तूबर, १९३६

प्रिय महादवभाई

मुझे अभी-अभी मिजा (सर मिर्जा इस्माइल) स मालूम हुआ है कि प्रतिनिधि-सभा के हरिजन सदस्या का राज दरबार म प्रवेश करन की अनुमति मिल गई है, और इस प्रकार उनके प्रवेश पर लगी पुरानी पाबन्दी हटा ली गई है। यह केवल बापू की सूचनाथ है।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई दसा
वर्धा

११५

तार

महादेवभाई दसाइ
वर्धा

राजाजी का सुझाव है बापू घाषणा को सफल बनाने की विशेष अपील जनता मे करें। ठक्कर बापा एक विशेष समिति बनाने का कहते हैं। बापू के निणय की सूचना दें।

—घनश्यामदास

८ रायल एक्सचेंज प्लेस
कलकत्ता
१५ ११ ३६

११६

तार

१६ नवम्बर १९३६

घनश्यामदास
मारफत लकी
कलकत्ता

अखिल भारतीय दिवस मनान की जरूरत नहीं है तुम दरबार को सघ के अधिकारी की हैसियत स बधाई दा मैं अपना लख हरिजन म दे रहा हूँ जिसम नरशा स त्रावणकार का अनुसरण करन की अपील है।

—बापू

११७

कलकत्ता
२८ नवम्बर, १९३६

प्रिय महादेवभाई

बापू की भेंट वार्ता और त्रावणकोर की राजघोषणा पर लिखे उनके लेख ने कुछ हिचकिचाहट पैदा कर दी। जब उन्होंने कूट-कथन की चर्चा की तो मेरी समझ से प्रशंसा की सब भावनाएं फीकी पड़ गईं। मैंने तुम्हें इस बार में इसलिए नहीं लिखा कि मैं यह समझे बैठा था कि इस पर किसी की निगाह नहीं पड़ेगी। पर अब देखता हूं कि ठीक उसी जगह निगाह गई जिसका कि मुझे भय था। उन लोगों की धारणा है कि बधाइयों और लेख में गम जोशी का अभाव है। मैं यह केवल बापू की सूचनार्थ लिख रहा हूं क्योंकि त्रावणकोर में इस बात पर ध्यान जाय इसके पहले ही मेरा ध्यान इस पर चला गया। संसार तो अहंकार से भरा पड़ा है। इसलिए जब कोई प्रशंसा का पात्र हो तो उतनी सराहना उसे मिलनी चाहिए। शैतान भी अपना हकविभाग चाहता है। और त्रावणकोर दरबार ने तो बड़े साहस से काम लिया है, इसलिए उसे बापू के प्रोत्साहन की आवश्यकता थी।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

११८

भाई घनश्यामदास

त्रावणकोर के बारे में तुम्हारा दुःख समझता हूं। राजाजी को भी ऐसे ही हुआ है। तथापि मेरा मन दूसरी ओर जाता ही नहीं। जो मेरे दिल में है उसे मैं कैसे छुपाऊं? जब कुछ भी कहना आवश्यक हो जाता है तब मेरे धन्यवाद तो ऐसे हार्दिक हैं कि इस हुक्म के पालन का उत्तरदायित्व अपने सर पे रख चल रहा हूं। अब तो कानन मंदिर प्रवेशकों के लिये निकले हैं उसे पत्थर बताओ कि मेरी

सावधानी उचित थी या अनुचित। हुक्म एक, उसस पालन के कानून, उसे टालन वाले इसी नीति का हम कहा नही जानत है? दरबार की मुसीबत मैं नही जानता हू। एसा कुछ नही है। लेकिन इस नान का अथ यह हुआ कि हम सावधान रहें।

बापु के आशीर्वाद

शगाव
वधा
२८ ११ ३६

११६

शेगाव
२ १२ ३६

भाई घनश्यामदास

मैं खा रहा हू और यह लिखा रहा हू। परमश्वरीप्रसाद यहा दो दिन से आये हैं। मर साथ और जमनालालजी क साथ बात हुइ। और परमश्वरीप्रसाद स्मिथ इत्यादि क अभिप्राय लाय हैं। इसस यह सिद्ध होता है कि उनकी योजना शास्त्रीय है। और चलाने के याग्य है। यदि समय मिल तो उस पढ लेना। परमेश्वरीप्रसाद की दरख्वास्त यह है कि जितनी शअर होल्डर है वे सब अपने शअर का दान करें और इतन दान स लिमिटेड कपनी पबलीक एसासिएशन बन। इतन दान से आरभ किया जाय। और बाकी के लिय पबलीक डानेशन मागी जाय। जमनालालजी और मैंने ऐसा तय किया है कि जसा आप कहे वसा किया जाय। अब बात रहती ह हर हालत म जो आपने लोन दिया है उसके लिये तो मैंने यही सलाह दी है कि जस दूसरं कज रह जायेंग ठीक उसी तरह यह भी कज रह जायगा। और वो दिया जायगा। अगर वाइडप हुआ तो उसम ता नाथुरामजी के पस के साथ फस्ट चाज है ही। और अगर पबलीक एसासिएशन बनगा तो उसका सब कर्जा की जिम्मवारी लनी ही ह। परमश्वरीप्रसाद कलकत्ता आत हैं और सब बातें सुनायग। और उनकी बात सुनकर जो याग्य समझा जाय वो किया जाय।

आपकी बेटी अनसूया न यह लिखा है।

बापु के आशीर्वाद

१२०

६ १२ ३६

पूज्य बापू

आपका पत्र मिला और परमेश्वरीप्रसादजी भी मुझसे मिल लिये है। इस विषय मे दो बातें है, एक तो भविष्य के सबध म और दूसरी पिछली बातो के बार म।

भविष्य के सबध म मुझे किसी तरह का उत्साह नही ह। अच्छा या बुरा जो भी प्रभाव दिल पर पड गया है वह चाहे गलत भी हो तो भी जब तक वह नही मिटता तब तक उस डेरी के प्रबध म किसी तरह का सहयोग देन म मै अपने-आप को असमथ पाता हू। मेरा विश्वास हट गया है यह आप जानते है।

जो पीछे के लेन देन की बात है वह मेरे निकट इतने महत्व की नही है। मैंने जो भी रुपया लगाया है वह आपकी इच्छा से। रुपये पसे के सबध मे आपको जो निणय करना हो वह बिना किसी हिचकिचाहट के करें मुझसे पूछने की आवश्यकता नही है। मैं डेरी के साथ के अपने सबध को बिलकुल भूल गया हू। मेरे दिल पर कोई बेजा बात जम भी गई है तो उससे कोई अच्छा बुरा परिणाम नही निकलेगा। इसलिए उसे महत्व देने की कोई आवश्यकता नही है। ये ही बातें मैंने परमेश्वरीप्रसादजी को भी कह दी है। आप जसा उचित समझें निणय करें।

मुझे यदि ऐसी आशा होती कि परमेश्वरीप्रसाद से मैं कोई काम ले सकता हू तो मैं अवश्य सहयोग देता। पर ऐसी आशा मुझ नही है। व्यथ प्रयत्न करने से उल्टा काम बिगडेगा।

विनीत
घनश्यामदास

१२१

भाई घनश्यामदास

तुमारे दो खत मेरे सामने पडे है। परमेश्वरी के बारे म समझा हू। मैंने उसको नकल भी भेज दी है। और लिखा है कि दिल्ली फाम छोड देना चाहिये। मैं भी समझता हू कि रुपये का प्रश्न नही ह। वह मेरे लिए मर्यादा और विवेक का है। तुमारे विश्वास और तुमारी उदारता का मैं दुरुपयोग न करु न किसी को

करन दूँ इसमें क्या हाता है ?

त्रावणकोर के बारे में तुमारी बात समझता हूँ। तथापि मैं । जो किया है उसमें अधिक करना मेरे लिये अनावश्यक था। मेरे मन पर जो असर होता जाता है उसे मैं प्रगट कर रहा हूँ। अब जो हो रहा है उस बारे में मैंने हरिजन में लिखा है सो पढ़ेंगे।

तुमारी तबीयत कुछ बिगड़ी है ऐसा ठक्कर बापा लिखते हैं। क्या हुआ है, क्या खजूर नियम से आ रहा है। नमदा मिल गया है। खूब गरम है।

बापु के आशीर्वाद

शगाव
वर्धा
११ १२ ३६

१२२

शगाव,
वर्धा
१८ १२ ३६

भाई घनश्यामदास,

मेरा लेख इस वक्त अच्छा लगा उसका मुझे हर्ष है। लेकिन बात यह है कि जो दिल में है वही मेरी कलम पर चढ़ सकता है यही ठीक है।

त्रावणकोर से जब रामचंद्रन का तार आया ऐसे ही मुझे लगा कि जान का मेरा धर्म है।

जैसे त्रावणकोर के अधिकारियों से मिले ऐसे ही सर अकबर को क्या न मिले ?

वायसराय से और दूसरे बड़े लोगों से कानून की आवश्यकता की बात क्या न करें? गुरुवायूर खोलने के लिए शायद कानून की आवश्यकता है। सिर्फ सम्मति देनेवाला होना चाहिये। मालवीजी अब भी नहीं मानेंगे ? पारनेरकर को मैं भूल ही गया। मैं उसको भेजने की कोशिश करूंगा। मैं कल फैजपुर जाता हूँ। पारनेरकर वहीं है। मिलने बाद लिखूंगा।

परमेश्वरी के बारे में मैंने तुम्हारे अभिप्राय को स्वीकार कर लिया है क्योंकि

मेरे पास निश्चयात्मक कोई अभिप्राय नहीं है। मेरे भीतर में कुछ ऐसा है सही कि मौजूदा कम्पनी को सार्वजनिक बनाकर परमेश्वरी को अपना प्रयोग करने देना। मुझको लगता है कि वह अप्रमाणिक नहीं है। नसल सुधार के काम में उसका रस है। दूसरे विशारदों का अच्छा अभिप्राय पास का है। मेरा पक्षपात उसकी ओर है सही, लेकिन मैं *क्या जानूं? मैं तो उसको आप ही लोगों के मार्फत पहचानता हूं।* इसलिए स्वतंत्र अभिप्राय से कुछ करना नहीं चाहता।

बापु के आशीर्वाद

१२३

पिलानी
२६ दिसम्बर, १९३६

प्रिय महादेवभाई

बापू का एक पत्र मेरे पास पड़ा है। इसका उत्तर दिल्ली पहुंचने पर दूंगा। इस बीच क्या तुम कुछ अधिक खुलासा करके लिखोगे कि मुझे मंदिर प्रवेश बिल के संबंध में वाइसराय से क्या कहना है और सर अकबर हैदरी से हम क्या चाहते हैं?

आज सुबह के पत्रों में निकला है कि मजदूरों के झगड़े का फैसला श्री मट-गावकर पर छोड़ दिया गया है। आशा करें कि फल उनके चुनाव के औचित्य को प्रमाणित करेगा पर मुझे तो काफी शक है।

सप्रेम,

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

१२४

पिलानी
२६ दिसम्बर १६३६

प्रिय महादेवभाई

पता नही बापू फजपुर स सीधे सावणवार जायेंगे या नही पर जो भी हो, पत्र मगनवाडी के पते पर भेजना ही अधिक सुरक्षित लगता है।

देखत हो हो यह पत्र पिलानी से लिख रहा हू। मैं बापू को यहा के काम के बारे म बताना चाहूगा। हम सभी दिशाओ म लगातार प्रगति कर रहे हैं। अब कालेज के अतगत छात्रो की सख्या ७० तक पहुच गई है। जितनी जल्दी हो, इस सख्या को २०० तक ले जाने की योजना है।

स्कूल खोलने क मुख्य उद्देश्यो म से एक उद्देश्य ग्रामोद्धार का था पर अभी इस दिशा मे विशेष काम नही हुआ ह। रचनात्मक काय का हाथ म लत ही चारो ओर स कठिनाइया आ धरती हैं। अच्छी श्रेणी क अध्यापक पाना कठिन है और गाववाले अपना सहयोग नही देते हैं। उन्ह तो सारी चीजें मुफ्त चाहिए। और तो और वे अपन बच्चो को स्कूल भजने तक का मुआवजा चाहते हैं। हम भिक्षावृत्ति को तो प्रोत्साहन दन स रह और स्कूल खोलन की एक शत यह ह कि कम स कम २५ प्रतिशत व्यय भार गाववाले स्वय उठाए। अतएव प्रगति धीमी ह पर हो रही है। ग्राम पाठशाला म अभी प्रत्यक ग्रामीण क घर म फल के वृक्ष लगान एक अच्छा साड पालने बीज बाटन और दस्तकारी की शिक्षा दन आदि कामो को हाथ नही लगाया गया ह। कालजो म इसका आरम्भ बहुत पहल स कर दिया गया था और प्रगति सतोषजनक है।

हाल म बापू को जो कम्बल भजे गय थ वे कालज की शिल्प शाला म तयार किय गए थ। बढई का काम कालीन बुनना टोपी बनाना, दर्जी का काम चमडे का काम रगाइ, धुलाई जिल्दसाजी आदि का प्रशिक्षण भी सतोषजनक ढग से प्रगति कर रहा है। तुम्ह शायद पता ही होगा कि प्रत्यक छात्र को चाह वह कालज म हो या स्कूल म किसी न किसी प्रकार का दस्तकारी का प्रशिक्षण, सप्ताह म तीन घटे क लिए लना पडता ह। वह कौन सी दस्तकारी पसद करगा यह उसकी इच्छा पर ह। बस यह काफी नही ह पर फिर भी उस श्रम करन की आदत तो पड ही जाती ह।

दो ट्यूब वैल लगवा दिय गए है। इजन लगन के बाद फी घटा २८,००० गैलन पानी निकलने लगेगा। हमने इन कुआ पर बडी आशाए बाध रखी हैं। आगामी माच से यह काम हाने लगेगा। यदि यह प्रयाग सफल हुआ, और न हाने का कोई कारण नहीं ह, तो दश के इस अचल म खेती का कायाकल्प हो जाएगा।

हमने खती कराने म मजदूरो से काम लेना चाहा था पर यह प्रयोग सफल सिद्ध नही हुआ। अत हमन किसाना को २५ २५ बीघे जमीन देकर उनसे खेती कराने का फसला किया। शत यह रहेगी कि जमीन और पानी हमारा और मेहनत किसानो की। ये किसान अपनी-अपनी जमीन पर स्थायी रूप म बस जाएग। उपज आधी आधी बाट ली जाएगी। इस प्रकार इस जमीन पर किसाना की बस्ती हो जाएगी। हम उ ही किसानो को चुनेंगे जो अच्छी खेती कर रह हाग। उ ह हम बीज देंगे। खेती क जोत बोये जान का काम हमारी निगरानी म होगा। हम एक अच्छा-सा साड रखेंगे और इन किसानो के घर किस ढग के हा और इ ह कसे स्वच्छ रखा जाए इसकी निगरानी भी हम करेंगे। अभी तो यह स्वप्न ही है पर मैं नही समझता कि उसे मूत रूप देना एक असम्भव कल्पना-मात्र क्यो होगा। कोई एक साल बाद दखेंग कि क्या कुछ हासिल किया है। जो भी हो मैंने तो इन कुआ पर बडी आशाए बाध रखी हैं।

डेयरी का काम मुझे सतुष्ट करने म असफल रहा है। इस समय हमार पास २० गायें हैं जा लगभग एक मन दूध रोज देती ह। यह सारा दूध छात्रो के काम आ जाता है। पर इसे आधुनिक डेयरी नही कहा जा सकता। गायें दुबली दिखाई देती हैं और विशेष सफाइ भी नही बरती जा रही है। वास्तव म किसाना के अपने निजी पशुआ की अपेक्षा य पशु अधिक दयनीय दशा म हैं। पण्डया यहा दा साल स है पर न तो विज्ञान क मामले म, और न साधारण जानकारी के क्षत्र मे वह औसत दर्जे के किसान की अपक्षा बहतर साबित हुआ ह उसन कुछ जड धारणाए बना रखी ह और जब उसकी आलोचना की जाती ह तो उसके उत्तर आशाजनक नहीं हात। में उस दो साल से देख रहा हू और आगे भी देखूगा पर मुझे उसके द्वारा सफलता प्राप्त करने म अब सशय हान लगा है। आदमी अच्छा है, ईमानदार है, लगन से काम करता ह पर काम म निपुण नही ह। सबस बडी बात ता यह ह कि उसक दिमाग म यह बात बठ गई है कि याजना सफल होन वाली नही है। मैं उस छाड दू ता वह क्या करगा ? मुझे यह साचकर भी परेशानी होती है। इस ससार म सबका अपना अपना उपयाग है। पण्डया का भी उपयोग है। पर म उसका विशेषताआ का अपने हित म उपयोग करने म अब तक असफल रहा हू। काफी माथापच्ची करने के बावजूद मैं उसका ठीक ठीक उपयाग नही

कर पाया हूं। मैं उससे काम चला रहा हूं। बापू से कहा है कि यदि वह उस काम का आदमी बना सकें तो यहां ले आवें। उसका स्थान कौन लेगा इस बारे में मैंने अभी तक कोई निर्णय नहीं लिया है, पर वह जो काम कर रहा है वह कोई मामूली दर्जे का आदमी भी कर सकता है। अबकी बार मैं किसी को चुनूंगा, तो किसानों में से चुनूंगा। अच्छा आदमी मिलना आसान नहीं है, पर फण्डमा आदर्श सिद्ध नहीं हुआ है।

त्रावणकोर में क्या देखा, क्या सुना, क्या धारणा कायम की, सो सब लिखना। हिन्दुस्तान टाइम्स में प्रकाशनार्थ एक विशेष लेख क्यों नहीं भेजते?

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

१२५

बिड़ला हाउस
नयी दिल्ली
३१ दिसम्बर, १९३६

प्रिय महादेवभाई,

मैंने 'हरिजन' में तुम्हारा एक लेख में पढ़ा है कि किसी महिला ने तुम्हारे पास ग्लोब थिसल वह जानवाले कनाडियन कांटेदार पौधे के बीज भेजे हैं, जिनसे कहा जाता है कि मधु मक्खिकाएं अच्छी तरह मधु संग्रह करती हैं। थोड़े-से मुझे भी दोगे? तुम जानते ही हो, मधु-उत्पादन और मधु सेवन में मेरी कितनी रुचि है, पर जहां तक मधु उत्पादन का संबंध है, मैं अभी तक असफल रहा हूं।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

१२६

उत्तरायण,
शान्तिनिकेतन,
(बगाल)

महात्माजी,

म स्वधम के विरुद्ध जा रहा था। आपने उस दुर्भाग्य स मेरा उद्धार किया है। *विश्वास रखिये अब इस ढग के जीवन मे मुझे कोई अनुराग नही है।* मेरा आशीर्वाद।

प्रगाढ प्रमपूवक।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

१९३७ के पत्र

१

नयी दिल्ली
१ जनवरी १९३७

प्रिय महादेवभाई,

'हरिजन-बंधु' में हिंदू आचार शीर्षक से जो लेख निकला है उससे हरिजन कार्य में रत कार्यकर्त्ताओं का अच्छा पथ-प्रदर्शन होगा। पर मुझे उसकी १४वीं धारा पसंद नहीं आई क्योंकि उसके अनुसार जो आचरण करेगा वह कायरता का बीजारोपण करेगा। आदमी को आत्मरक्षा के निमित्त क्या करना चाहिए? यदि कोई किसी की बहू बेटी के साथ छेड़छाड़ करे तो क्या वह चुप बैठ जाय? इस १४वीं धारा का यही अर्थ लगाया जाएगा। इस ओर बापू का ध्यान दिलाना आवश्यक है।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

२

विवलान
१७ जनवरी, १९३७

प्रिय घनश्यामदासजी,

यह पत्र जान-बूझकर हिंदी में लिख रहा हूं। बापू के यहां आने की आवश्यकता थी, ऐसा तो प्रतिक्षण महसूस होता है। महारानी और महाराजा ने सब स्पष्ट किया। दोनों बहुत ही प्रेम से मिले। महारानी ने तो माना पूज्य बापू को अपना पिता ही मान लिया है। इस सारे सुधार के पीछे रानी ही हैं, इसमें कोई शंका नहीं।

परंतु इन लोगों के हाथ मजबूत करने के लिए भी हमको और राज्यों में यह शुरू कर देना चाहिए। महारानी ने खुद पूछा भावनगर और काठियावाड़ के और

राज्या का क्या है ? बापूजी कहते हैं कि आप ग्वालियर से कुछ नहीं करा सकते हैं ? अगर बाहर इसकी प्रतिध्वनि नहीं हुई तो यह सुधार निकम्मा हो जाएगा और शायद प्रतिक्रिया पैदा होगी। आज भी सवर्ण लोग उदास है, कुछ गुप्त विरोध तो करते ही हैं। यह परिस्थिति तब ही मिट सकती है जब और स्थानों पर भी मंदिर खुल जाय।

पूज्य मालवीयजी ने उसके बारे में कुछ कहा नहीं है, न राजा और रानी को धन्यवाद दिया है। आप उनसे आग्रह करेंगे ? मैं भी लिख तो रहा हूं।

आपका,
महादेव

बापू का स्वास्थ्य ठीक है कुछ सर्दी जरूर है।

३

नयी दिल्ली
१७ जनवरी १९३७

प्रिय महादेवभाई

मैंने हरिजन सेवक संघ के केंद्रीय बोर्ड की पिछली बैठक के बारे में तुम्हें कुछ नहीं लिखा। हो सकता है ठक्कर बापा ने लिखा हो। मैंने इसलिए नहीं लिखा कि बापू दौरे पर थे। इतना तो कह ही दूं कि यह बैठक बहुत ही ढीली रही। मैं 'आर्थिक अर्थ शब्द' का प्रयोग विनोद भाव से अनेक मामलों में करता आ रहा हूं पर बोर्ड की इस बैठक का और कोई अर्थ लगाया ही नहीं जा सकता। सदस्यगण पूछते हैं हमारा आपके बोर्ड के साथ सम्बद्ध रहने से फायदा ही क्या हुआ जब आप हमें कुछ देने की स्थिति में नहीं हैं ? मैंने उनसे कह दिया कि यह तो उन्हीं के तय करने की बात है कि वे केन्द्र के साथ संबंध रखना चाहेंगे या नहीं। मुझे ऐसा लगता है कि जब उन्हें पैसा मिलना बन्द हो जायगा तब कहीं जाकर हमें पता लगेगा कि कौन कितने पानी में है। इस प्रकार से यह अच्छा ही है क्योंकि अब तक अकेले बापू के नाम को छोड़कर अन्य सारी कार्यशीलता का आधार पैसा ही रहा है।

जब बापू से मिलूंगा तो उनसे एक और बात की भी चर्चा करूंगा। अब तक

उद्योगशाला के ऊपर ६०००) प्रति वर्ष खर्च होते रहे है, पर केवल ३५ के आस पास लडको का प्रशिक्षण दिया जाता है। मेरी समझ मे यह व्यय अधिक है। प्रशिक्षण भी साधारण कोटि का है। उधर केन्द्रीय बोर्ड का बजट जिसमे कार्यालय का खर्च शामिल है, प्रति वर्ष १०,०००) का बनता है। इस रकम का आधा वेतनो पर खर्च हो जाता है। इन दोनो मदो मे किफायत बरती जा सकती है। मैं इस बाबत ठक्कर बापा से बात करूगा। व्यावहारिक पहलू से देखेंगे तो इस दिशा मे कोई कठिनाई पैदा होने की आशका नही है। फिलहाल हमारे पास ठक्कर बापा वेंकटरमण श्यामलाल और करणसिंह हैं और उद्योगशाला मे गलवानी, हरिजी और त्यागी है और एक क्लर्क है। इस थोडे से काम के लिए इतने आदमियो की जरूरत है क्या ? पर किफायत तभी बरती जा सकेगी जब केन्द्रीय बोर्ड के कार्यालय और उद्योगशाला का काम एक ही आदमी के जिम्मे कर लिया जाए। मेरा खयाल है कि यह सारा काम ठक्कर बापा श्यामलाल और हरिजी सभाल लेंगे, पर मैं १२ महीने आगे की बात सोच रहा हू। किसी दिन बापू से इस बात की चर्चा करूगा। मुझे आशा है कि बापू का दौरा सफल रहा होगा। मेरी कुछ धारणा सी बन गई है कि बापू को त्रावणकोर मे सुख नही मिला।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

४

तार

महादेवभाई देसाई
मगनवाडी वर्धा

बडौदा जाच की बाबत। आनन्दप्रिय के दल को जाच बडौदा के बाहर किये जाने पर आपत्ति है। सरदार सहज ही बडौदा मे साक्षी पेश नही कर सकते। इसके अतिरिक्त भाईजी बडे असमजस मे हैं बडौदा निर्णायक की हैसियत से नही जाना चाहते। उनके जाने मात्र से कोई प्रयोजन सिद्ध नही होगा। मुझे घोर आशका

है कि उन्हें स्वार्थी लोग ठगेंगे। इस मामले में पड़ने में उन्हें सकोच है। वह बापू के आग्रह की रक्षा करना चाहते हैं पर जाने का कोई सुफल निकलेगा, इसमें उन्हें सदेह है। वह आनन्दप्रिय के प्रति झुकाव की बात स्वीकार करते हैं। इनकी इस मामले में भी रुचि नहीं है। अतएव उन्हें इस कार्य से मुक्त रखने का अनुरोध है। आज सविस्तार पत्र भेजा है।

—घनश्यामदास

बिड़ला हाउस, लालघाट बनारस
२० जनवरी, १६३७

५

बिड़ला हाउस,
लालघाट,
बनारस २० जनवरी १६३७

प्रिय महादेवभाई

मैं दिल्ली से आ गया हूं। शीघ्र ही कलकत्ता जा रहा हूं। भाईजी (जुगल किशोरजी) दिल्ली में ही है। वह अभी यह तय नहीं कर पाये हैं कि बड़ौदा जाए या न जाए। उन्होंने बड़ौदा जाने का एक प्रकार से निश्चय ही कर लिया था पर सरदार (पटेल) का तार आ पहुचा जिसमें उन्होंने कहा था कि वह न तो बड़ौदा जायेंगे और न वहां सबूत पेश करने में ही समर्थ होंगे। उनका कहना है कि उन्हें एक सप्ताह का समय मिले तो वह सारे सबूत बम्बई में पेश कर सकते हैं। अब भाईजी को इस सारे मामले को लेकर घबराहट होने लगी है। उनके मन में बापू के प्रति अपनी भक्ति और आनन्दप्रिय के प्रति अपने अनुराग में द्वन्द्व चल रहा है। उनका कहना है कि यदि वह बड़ौदा गए भी तो एक निर्णायक की हैसियत से नहीं जायेंगे वह तो दोनों पक्षों के बयान चुपचाप सुन लेंगे और सारी बात बापू के सामने रख देंगे अपनी तरफ से कोई टीका टिप्पणी नहीं करेंगे। भाईजी को जांच करने के तरीके का बिलकुल ज्ञान नहीं है साथ ही वह मामले की तह में पैठने को भी तयार नहीं हैं। इस बात को वह स्वयं स्वीकार करते हैं और उन्होंने शायद बापू को भी लिख दिया है कि आनन्दप्रिय के प्रति उनके मन में अनुराग है।

कठिनाई केवल इसी बात को लेकर हो ऐसा नहीं है। उन्हें बड़ौदा भेजा

गया तो उनके ठग जाने का खतरा भी है। बडोदा मे उन्हे आनदप्रिय की दान दक्षिणा लेनी होगी, यह रकम पन्द्रह-बीस हजार तक पहुच सकती है। इस प्रकार एक और सस्था का मामला विचाराधीन रहेगा दूसरी ओर भाईजी उस पर धन की वर्षा करने मे लगे रहेंगे। यह विरोधाभास कदापि वाछनीय नही है।

भाईजी ने यह सब मुझे गुप्त ही बताया है। उनका कहना है कि यदि महात्माजी का आदेश हो तब तो बात दूसरी है अन्यथा उनकी बडौदा जाने की इच्छा नही है। मै उनकी कठिनाई को समझता हू और मेरी राय मे उनके वहा जाने की हठ करने का अर्थ यह होगा कि कुछ लोग उनसे रुपया ऐंठेंगे। मेरा तो यही मन्तव्य है कि उनका बडौदा जाना दो कारणो से ठीक नही होगा पहला कारण तो यही है कि वह वहा एक निर्णायक की हैसियत से छानबीन नही कर पायेंगे और दूसरा कारण यह है कि उन्हे वहा जाकर पैसा गवाना पडेगा। यदि आनद प्रिय की निष्पक्ष जाच का विचार रुचिकर न लगता हो तो मेरी राय मे या तो इस मामले को रफा-दफा कर देना चाहिए या फिर सरदार पटेल को कठोर रवया अख्तियार करना चाहिए। मेरी तो यही सलाह है कि इस मामले को रफा-दफा कर दिया जाए। पर शायद सरदार पटेल को इस बारे मे कुछ अधिक कहना है। जहा तक भाईजी का सबध है उन्हे बडोदा भेजना न उनके हित मे ठीक होगा न सस्था के हित मे।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

६

कोट्टायम त्रावणकोर
२० जनवरी १९३७

प्रिय घनश्यामदासजी

इस सप्ताह के दौरान हमे चिरस्मरणीय सौदर्य और गम्भीरता के दृश्य देखने को मिले। बापू ने एक सभा मे बोलते हुए कहा कि यदि वह अन्यमनस्क भाव से त्रावणकोर आने का निमत्रण अस्वीकार कर देते, तो बडी मूर्खता कर

बढते। यह गौरवमयी भूमि है। अस्पश्यता का निवारण पलक मारत कर दिया, इसके लिए इसका नाम इतिहास म अमर रहगा।

आपने मुझस हिन्दुस्तान टाइम्स को तार द्वारा सम्वाद भेजत रहने को कहा था। यह यात्रा बडी थकावटवाली रही है और हम ऐस अचला म स होकर गुजरना पडा है जहा स तारघर कासा दूर है। डाक क जरिये कुछ भेजना निरथक सा लगा। इसके अलावा जब मैं अपन-आपको इन अलौकिक दृश्या स घिरा पाता हू तो मैं भूल जाता हू कि मुझ सम्वाददाता की जिम्मेदारी निभानी है या इन दृश्यो का लेखनीबद्ध करना है। मैं तो अपने-आपको जन समुदाय म खोया हुआ सा अनुभव करता हू।

परन्तु यह पत्र आपको त्रावणकोर क बार म नही काम की बात कहन क निमित्त लिख रहा हू। पारनेरकर कलकत्ता जाने को तयार है। बताइए, कब जायें। हम वर्धा २४ को जा पहुचेंगे। वही क पत पर पत्र भेजिए तार द दें ता और भी उत्तम कि वह कलकत्ते म कब हाजिर हो।

आपका
महादेव

७

बिडला हाउस,
बनारस
२३ जनवरी, १९३७

प्रिय महादेवभाई

तुम्हार त्रिवलाम स लिख १७ तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद। हाल म तुम्हे कई पत्र लिखे पर तुम इतने व्यस्त रहे कि मुझे एक का भी उत्तर नही मिला। मेरा अन्तिम पत्र भाईजी क बडोदा जाने के बारे म था। इसी विषय पर मैंने एक तार भी भेजा था। अपने तार के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा हू शायद वह किसी भी समय आ पहुचे।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आप सबकी त्रावणकोर-यात्रा आनन्ददायिनी रही। मेरे मन मे थोडी बहुत आशका थी कि शायद बापू का वहा जाना सुखकर नही हुआ होगा। इसी आशका का कोई बुद्धिसगत कारण नही था। खैर तुम्हार

पत्र ने उस आशंका का पूर्णतया निवारण कर दिया।

अन्य देशी रियासतों में भी ऐसा ही काम शुरू करने के बारे में यह बात है कि अन्य रियासतों में ही क्या ब्रिटिश भारत में भी बहुत कुछ किया जा सकता है। निर्वाचनों के बाद ऐसे प्रान्तों में जहां कांग्रेस की विजय हो इस काम को लगन के साथ हाथ में लेना चाहिए। नये सुधारों के फलस्वरूप हमें किसी भारत व्यापी सुधार कानून की जरूरत नहीं रही है। धार्मिक तथा इसी प्रकार के अन्य मामले अब प्रान्तीय विषय हैं और अब हमें विभिन्न प्रान्तों में सम्बद्ध बिल पेश करने में देर नहीं करनी चाहिए और यदि संयोगवश कांग्रेस पद ग्रहण करने को सहमत हो गई तो इस दिशा में किसी प्रकार की कठिनाई उपस्थित नहीं होगी।

ग्वालियर के बारे में मेरा कहना है कि जब वहां मेरा जाना होगा तब इस ओर ध्यान दूंगा। यह विषय ऐसा है कि पत्र-व्यवहार में कुछ करना सम्भव नहीं रहता। तुम्हारी इस बात से मैं पूर्णतया सहमत हूं कि यदि त्रावणकोर के बाहर कुछ नहीं किया गया तो यह सुधार निरर्थक सिद्ध होगा।

मालवीयजी के बारे में कुछ न कहना ही ठीक रहेगा। तुम्हें यह लिखते हुए मुझे पीड़ा का अनुभव होता है कि वह बातों का सीधा जवाब नहीं देते। सनातन धर्म महासभा एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण संस्था है। मैंने उससे त्रावणकोर के महाराजा को बधाई का तार भिजवाया है। तारीफ की बात यह है कि मालवीयजी सीधा सादा 'न' भी नहीं कहते। वह तो केवल इतना ही कहकर रह जाते हैं कि अब बहुत देर हो गई है। जब हमने राज घोषणा के तुरंत बाद उनके पास उतावली से भरे तार और पत्र भेजे तो वह चुप्पी साध गए। पंजाब में निर्वाचनों के सिलसिले में जो-कुछ किया उससे बड़ी निराशा हुई पर इन सारी बातों के बावजूद वह महान हैं और उनमें कुछ ऐसे गुण अवश्य हैं जिन्होंने उन्हें महान् बनाया है, पर व्यावहारिक कार्यशीलता में वह कोरे प्रतीत होते हैं।

सप्रेम

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

८

भाई घनश्यामदास

मैं त्रावणकोर जाने में हिचकिचाता था लेकिन जाने से अच्छा ही हुआ। दूसरा को तो क्या मिला प्रभु जाने मुझे तो बहुत धन मिला। थोड़ा वर्णन तो 'हरिजन' में देखोगे। उसे कम से कम दुगुना किया जाय तब कुछ पता मेरे कहने का लग जायगा।

महाराजा और महाराणी से मिला था। मुलाकात अच्छी हुई। पेट भर के बिना संकोच सब बातें हुई। हरिजनों की जागति इतनी और ऐसी और किसी प्रकार से असम्भव थी।

मेरा तो विश्वास दृढ़ होता जाता है कि केन्द्र से शाखा को धन नहीं लेकिन नैतिक सहाय और प्रतिष्ठा मिल सकती है। यदि इससे शाखाओं को संतोष न मिले तो भले बंद हो जाय अथवा स्वतंत्र चलें। ऐसी अवस्था में एजेंसी द्वारा जो-कुछ हो सकता है हम करें। जिन शाखाओं में अपने खर्च के लिए द्रव्य इकट्ठा करने की शक्ति नहीं है वह निकम्मी मानी जाय। इस बारे में कुछ एक वर्ष तक ठहर जाने की आवश्यकता मैं महसूस नहीं करता हूं। अब हरिजन निवास के बारे में जो कुछ परिवर्तन आज करना आवश्यक समझा जाय उसे एक वर्ष तक न रोका जाय। आज से क्या फिजूल खर्च कम न किया जाय? हां ठक्कर बापा की सम्मति चाहिये सही। मलकानी से भी मशवीरा करना आवश्यक है।

दिनकर का खीचने की कोशिश कर रहा हूं। दिनकर का खत तो लिखा ही है।

परमेश्वरी से बात चल रही है। एक और खत उसके पास से चाहिये। आ जाने पर मैं लिखूंगा। उसको नयी संस्था निकालने की परवानगी देने पर मैं राजी हो गया हूं। और जबतक अपना काम चलता रहे तबतक जो करता है उसके पास रहूं। शर्त यह है कि मौजुदा मिलकत से बगर करजा किये हुए मौजुदा काम जारी रखने की ताकद हो।

समय मिलने पर थोड़े दिनों के लिए आ जाना अच्छा होगा।

बापु के आशीर्वाद

सेगाव, वर्धा
२५ १ ३७

६

८ रायल एक्सचेंज प्लस,
कलकत्ता
२५ जनवरी १९३७

प्रिय महादेवभाइ

पारनेरकर के बारे में मेरा कहना यह है कि विजरापोल के प्रधान के नाम कल या परसों बद्रीदास गोयनका के बम्बई से आ जाने पर मैं तार करूंगा या खत लिखूंगा।

मैं यहां आज सुबह ही लौटा हूं। दिनकर पण्ड्या जो यहां काम काज के सिलसिले में आया हुआ है कहता है कि उसे बापू की चिट्ठी मिली है। उसने मुझे वह चिट्ठी भी दिखाई। सच बात तो यह है कि मैं पण्ड्या के बारे में अभी कुछ निश्चय नहीं कर पा रहा हूं। जब वह मेरे सामने मौजूद नहीं रहता है तो जी में आता है कि उसे अलग कर दूं क्योंकि उसने कुछ करके निहाल नहीं किया है पर जब वह सामने होता है तो मुझे मेरा है उसका खयाल आ जाता है। आदमी इमानदार है पर उसमें तीक्ष्ण बुद्धि का अभाव है और समझदारी भी कम है। मैंने उससे कह दिया है कि उसके बारे में सोचकर बताऊंगा। उस पर कठिन मुसीबत अवश्य आएगी, पर शुद्ध काम काज की दृष्टि से देखा जाय तो वह विशेष काम का सिद्ध नहीं हुआ है। भेड़ें मरती जा रही हैं और एक जर्सी गाय भी अचानक चल बसी। हो सकता है कि यह अवश्यम्भावी था पर यदि कोई अधिक दक्ष आदमी होता तो कम-से कम मुझे यह तो बताता कि इन असफलताओं की तह में क्या बात है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

१०

तार

महादेवभाई देसाई
मगनवाड़ी
वर्धा

अभी विज्ञापन का काम पसन्द आ कर रहा है। यदि और अधिक विज्ञापन की आवश्यकता हुई तो तुमसे परामर्श करने के लिए कहूंगा।

—घनश्यामदास

बिड़ला ब्रदर्स कलकत्ता
१ फरवरी, १९३७

११

कलकत्ता
३ फरवरी १९३७

प्रिय महादेवभाई

ऐसा लगता है कि तुम दौरे पर हो, क्योंकि मेरी सारी चिट्ठियों का उत्तर खुद बापू दे रहे हैं। आशा है अब तक तुम वापस लौट आए होगे। बापू का समय नष्ट न हो इसलिए मैं यह पत्र तुम्हें लिख रहा हूं।

अभी-अभी बापू का पत्र मिला है उसमें उत्तर देने लायक कोई बात नहीं लिखी है पर तुम उनसे कह देना कि मेरा विचार वर्धा इस महीने के अन्त में आने का है। पर यदि वह वहां मेरी मौजूदगी और भी जल्दी चाहें तो मुझे लिख भेजें, मैं तुरत आ जाऊंगा। यह बताओ कि बापू कौन-कौनसी तारीख को खाली रहेंगे। मैं समझता हूं कार्यकारिणी की बैठक भी इस महीने के अंत में ही होनेवाली है। क्या तारीख निश्चित हो गई? मैं बापू की सुविधा के अनुरूप जैसा उचित होगा करूंगा।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

१२

वर्धा
५ फरवरी १६३७

प्रिय घनश्यामदासजी,

कृपा पत्र मिला। मैं बापू को छोडकर प्रवास म कसे जाता ? मैं तो त्रावण कोर स लौटन के बाद यहीं हू। परतु जब आपके पत्र म बापू को पूछकर बताने की कोई बात रहती है, तो बापू को आपके पत्र भेज देता हू और जब मैं सेगाव नहा जा पाता तो वही उत्तर दे देते हैं।

आप पूछत ह बापू कौन-सी तारीख को फुरसत मे हैं। बापू का काम और समय तो आप जानते ही हैं वसा ही है। आप जब भी आयेंगे तब आपका तो समय दिया ही जाएगा। आपको समय न दिया गया हो कभी ऐसा मौका आया है क्या ?

काग्रेस वर्किंग कमेटी की तारीख निश्चित नहीं हुई। अगर बापूजी आपके आन की कोई तारीख देंगे तो आपको बता दूगा। पारनेरकर के बारे म दो तार मिले। अभी वे आयेंगे या वे धूलिया वापिस जानेवाले थे।

आपका,
महादेव

१३

कलकत्ता
८ फरवरी, १६३७

प्रिय महादेवभाई

तुम्हे अपना पिछला पत्र लिखने के तुरत बाद मुझे यह खयाल आया कि मैंने तुमसे यह पूछने म कितनी मूर्खता की कि क्या तुम दौर पर गए थ। मैं हरिजन' नियमित रूप से पढता हू उसम तुम्हारे लेख भी पढता हू। इसीसे मुझे पता रहना चाहिए था कि तुम त्रावणकोर के दौरे पर बापू के साथ रहे थ। वह पत्र डाक म जाने के तुरत बाद मुझे अपनी गलती का भान भी हुआ।

तुमने मुझसे यह प्रश्न क्या किया, "आपको समय न दिया गया हो कभी ऐसा मौका आया है क्या ?" मैं तो नहीं समझता कि मेरे पिछले पत्र में इस बात का संकेत तक भी था। जब मैंने यह पूछा था कि बापू को कब अवकाश रहेगा तो मेरा अभिप्राय केवल यही था कि मेरी तारीखों का कार्यकारिणी की तारीखों के साथ कोई मेल न रहे। इसके अलावा यह भी सम्भव था कि बापू ने अन्य किसी राजनैतिक कार्य के निमित्त या और किसी निमित्त समय दे रखा हो। मैं उन तारीखों को बचाना चाहता था। पर अब देखता हूं कि सब कुछ अनिश्चित है। इसलिए यदि बापू मेरे लिए कोई विशेष तारीख निश्चित करें तब तो बात दूसरी है वरना मैं अपना समय स्वयं ही निश्चित करूंगा।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

१४

वर्धा
१० फरवरी १९३७

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका कृपा पत्र मिला। मैंने ऐसा मूर्खतापूर्ण प्रश्न किया जिससे आपको अचरज हुआ इसका दोष मेरी टूटी फूटी हिन्दी को है। मेरा तो केवल यह अभिप्राय था कि आप कभी भी आएं बापू आपके लिए सब समय निकाल पाएंगे भले ही कार्यकारिणी की बैठक चल रही हो क्योंकि बापू उसमें भी सारा समय नहीं देते हैं। बैठक शायद २४ के आसपास हो। बापू कहते हैं आप जब इच्छा हो आ जाएं। बापू २० अप्रैल से पहले बाहर नहीं जाएंगे। वह गांधी सेवा संघ की बैठक में भाग लेने सब बेलगांव जाने का विचार रखते हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी के पत्र 'कर्मवीर' ने एक ज्योतिषी की भविष्यवाणी छापी है जिसमें बापू की जन्म पत्री के विभिन्न नक्षत्रों की चर्चा करते हुए बताया गया है कि २० अप्रैल से २७ अगस्त तक का समय बापू के स्वास्थ्य के लिए हद

र्जे का मारक सिद्ध होगा। सम्भव है उनके प्राणों पर आ बने। ये लोग ऐसी सनसनीखेज खबरें क्यों छापते हैं?

सप्रेम,
महादेव

१५

कलकत्ता
१२ फरवरी १९३७

प्रिय महादेवभाई

पत्र के लिए धन्यवाद।

मैं इसी महीने में वर्धा पहुंचने की आशा करता हूं। मैंने अभी कोई तारीख तो निश्चित नहीं की है, पर जहां तक हो सकेगा मैं उन तारीखों को बचाऊंगा जब कार्यकारिणी की बैठक होनेवाली होगी। पर यह भी हो सकता है कि मैं उन्हीं दिनों पहुंचूं क्योंकि तब सरदार पटेल और राजाजी से भी मिलना हो जाएगा।

माखनलाल को ऐसी वाहियात चीजें अपने पत्र में क्यों छापनी चाहिए थीं? लगता है हम लोगों ने शिष्टता और सौजन्य से हाथ धो लिये हैं।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

१६

बिड़ला हाउस,
मलाबार हिल,
बम्बई
२७ फरवरी, १६३७

पूज्य बापू

हरिजन म अहमदाबाद क निणय' क सबध म आपका जो लख निकला है उस पर आपके साथ बातचीत हुई थी। अब मैं उसके सबध मे अपना दृष्टिकोण पेश करता हू। मुझ लगता है कि आपन अपने लेख मे जो सिद्धात प्रतिपादित किए हैं उन्ह राज्य की सहायता के बगर कार्यान्वित करने म तो कठिनाइया हैं ही किसी के व्यक्तिगत रूप से उन पर आचरण करने के माग मे तो और भी अधिक रुकावटें हैं।

पर मेरे लिए सारी स्थिति हृदयगम करने के लिए यह आवश्यक है कि पूरी योजना तयार की जाए। यदि ऐसी कोई योजना तयार की जा सके तो उसके द्वारा विचारो को प्रोत्साहन मिलेगा जिसका परिणाम वाछनीय ही होगा। वसी कोई रूप रेखा निर्धारित करने की दिशा म मैं निम्नाकित मुद्दे पेश करता हू।

सबसे पहला विचारणीय प्रश्न यह है कि न्यूनतम वेतन का आपका मापदण्ड क्या है? एक वयस्क व्यक्ति के लिए निम्नलिखित चीजें अनिवायतया आवश्यक हैं

पदार्थ	मात्रा	कलोरी	मूल्य
दालें और अन्न	१२ छटाक	१३००	रु० ० ० ११
घी	१ छटाक	५००	० १ ०
दूध	४ छटाक	१५०	० ० ६
चीनी	२ छटाक	४००	० ० ४॥
		२३५०	० २ ६॥
साग सब्जी और इंधन आदि		१००	० १-२॥
		२४५०	० ४ ०

अर्थात रु० ७॥ माहवार

दिल्ली के हरिजन-आश्रम म तथा पिलानी के बिडला छात्रावास मे खच इसस अधिक नही आता है और मैं समझता हू एक आदमी के भोजन व्यय का यह मुनासिब तखमीना है। अतएव दिल्ली म काम करनेवाले आदमी का बजट इस प्रकार होना चाहिए

भोजन	७॥) मासिक
मिट्टी का तल	१) मासिक
मकान का किराया	१॥) मासिक
कपडा (१०० गज प्रति वष)	१।) मासिक
	११।) मासिक
और फुटकर	१।)

कुल मिलाकर १२॥) मासिक हुआ।

अब आपका मानना ह कि प्रति आदमी पीछे १॥ प्राणी भी जोडना चाहिए। इस प्रकार कुल मिलाकर २॥ प्रणिया का न्यूनतम वेतन खच के आधार पर निश्चित हाना चाहिए। यदि यह स्वीकारा जाए ता १॥ प्राणियो का खच और जुडेगा। यह दिल्ली म रहकर काम करनवाले क खच के आधार पर निश्चित नहीं किया जा सकता क्योकि उसक आश्रितो म बच्चे भी हाग और गाव मे रहने वाल भी हाग। यदि हम अतिरिक्त १॥ प्राणिया के लिए ६) फी आदमी का तखमीना रखें ता फी आदमी १२॥ तथा १३॥ और जोडकर रु० २६) होत है।

यदि मेरा तखमीना स्वीकार करने याग्य समझा जाए, तो आपके कथनानुसार यही न्यूनतम वेतन हाना चाहिए। मैंने बिडला काटन मिल क औसत मजदूर का न्यूनतम वेतन के आधार पर तखमीना लगाकर देखा है कि हम २७०० आदमिया को लगाए हुए हैं और यह औसत वेतन २६) बठता है। इनमे सबसे ऊचा वेतन लाइन बीवस को मिलता है, अर्थात १००) मासिक और कम-से कम वेतन डॉफिग बाय का मिलता है, अर्थात १२) मासिक। यदि न्यूनतम वेतन को मान्यता दी जाए ता कम-स-कम पानवाल क वतन म भी वढोतरी होगी। इसका अथ यह हागा कि बहुता क वतन म कटौती भी होगी।

हम इस नतीजे पर पहुचे कि मिल पर मशीना की घिसाई का पावना सबस पहले लगाना चाहिए। इस समय बिडला मिल की मशीनरी का मूल्य ३६ लाख के लगभग कूला गया है। मिल दो शिफ्टो मे चल रही है इसलिए १० प्रतिशत मशीनरी की घिसाई का और ५ प्रतिशत बिल्डिंग के उपयोग का लगाना चाहिए।

इस प्रकार प्रतिवर्ष यह रकम ३ लाख आती है। जबसे मिल चली है हमने इससे अधिक कभी नहीं कमाया। यदि पिछले १५ वर्षों का औसत लगाया जाए तो यह रकम इससे भी कम बैठती है।

इस समय बिडला मिल की जो स्थिति है वही प्राय सभी भारतीय मिलों की स्थिति है। मैं वर्तमान स्थिति की बात कह रहा हू पहले की नहीं। यदि इस मूल्याकन को मान्यता दी जाए तो कहना होगा कि मशीनरी की घिसाई और बिल्डिंग के उपयोग का जो मूल्याकन किया गया है उससे अधिक मिल ने नहीं कमाया। बिडला मिल की अपेक्षा अन्य कुछ मिलों की स्थिति अच्छी है, कुछ की बुरी है। यदि घिसाई के पावने को प्रथम स्थान दिया जाए तो मिल की आय में से ३ लाख कम करने होंगे। उसके बाद न्यूनतम वेतन की अदायगी की बारी है तो उपयुक्त आकडो के अनुसार प्रतिमास २६) रुपये फी आदमी आते है। उसके बाद तीसरा नम्बर मिल के सचित कोष का चौथा नम्बर मनेजिंग एजटो की फीस का तथा पाचवा नम्बर डिविडेंडो का है।

इस प्रकार मिल के शेयर होल्डरो के हिस्से में प्राय नहीं के बराबर डिविडेंड आएगा। और उन्हें सचमुच क्वचित ही डिविडेंड मिला है। जब कभी हमने डिविडेंड दिया, घिसाई के लिए निर्धारित राशि में से ही निकालकर दिया। मैं यह स्वीकार करता हू कि मेरी एक अन्य मिल की आर्थिक स्थिति बिडला मिल से अच्छी है पर एक और भी मिल है जिसकी हालत उससे भी बदतर है।

छोटे स्थानो में अदक्ष मजदूर की औसत दैनिक मजदूरी।) से।=) तक है। मेरे देश में घरेलू नौकर चाकर का वेतन १०) १२)से अधिक नहीं है कलकत्ता जैसे बडे नगरो में यह वेतन १५) से २०)तक है। यदि फैक्टरी में काम करनेवाले मजदूर का न्यूनतम मासिक वेतन २६) रखा जाए तो उसके मुकाबले में खेतिहर मजदूरो और घरलू चाकरो का वेतन बहुत कम रह जाता है। असमानता तो रहेगी ही पर इतना अन्तर अस्वाभाविक है और अधिक दिनो तक नहीं टिक पाएगा।

सारी परिस्थितियो को ध्यान में रखा जाए और उद्योग की आम स्थिति पर विचार किया जाए, तो २६) मासिक को न्यूनतम वेतन नहीं अधिकतम वेतन मानना होगा। स्थिति का इस रूप में ग्रहण करना अनुचित कदापि नहीं है क्योंकि देशवासियों की औसत आय बहुत कम है तथा निम्न श्रेणी के सरकारी मुलाजिमो का औसत वेतन भी २६) से कम है। यदि फैक्टरियो में काम करनेवालो का न्यूनतम वेतन निश्चित किया जाए तो अन्य नौकरो तथा सरकारी महकमो में काम करनेवालो का न्यूनतम वेतन भी निश्चित करना जरूरी है। और क्या राज्य

रलव कमचारियो क लिए सय विभाग के लिए तथा अय विभागो के लिए इतना वतन दना स्वीकारगा ? मैं यह नही कह रहा हू कि वतन के स्तर म कमी होनी चाहिए। मेरा कहना तो यही है कि २६) यूनतम वतन बहुत अधिक है। और आप शायद इसस भी अधिक वेतन के पक्ष म होगे। पर इस निमित्त रपया कहा से आएगा ? आप ३ म स ४ ता नही घटा सक्त ?

पर फज कीजिए इस समस्या क समाधान क लिए यूनतम वेतन २६) से घटाकर २०) कर दिया जाए ता एसी नीति अपनान का क्या परिणाम होगा ? हरक मिल का वतन २०) के हिसाब स देना होगा, और जो अतिरिक्त पारिश्रमिक दिया जाएगा वह मिलो के मुनाफ म से दिया जाएगा, यह भी फज कीजिए कि मेरी मिल कोई मुनाफा नहा कमा रही है और पडोस की मिल अपक्षाकृत बडी होन के कारण और नयी मशीनरी बठाने क फलस्वरूप अच्छा मुनाफा कमा रही है, इसका परिणाम यह होगा कि मरी मिल २०) देती रहेगी जबकि पडोस की मिल ३०) ४०) भी द सकेगी। वसी स्थिति मे मैं अपनी मिल के लिए मजदूर नही जुटा सकूगा और अत म मुझे अपनी मिल बन्द करनी पडेगी। आप कहगे कि वसी परिस्थिति म मजदूर आधा पेट खाकर भी काम करता रहेगा। इसक उत्तर म मेरा कहना है, क्या आज हम ऐसी स्थिति मे हैं कि मजदूर को ऐसा करने क लिए राजी कर सकें ? इसक लिए तो राय के हस्तक्षप की जरूरत होगी।

जसा कि मैं ऊपर बता चुका हू, यदि हम भारतीय मिलो के आकडे एकत्र करें, तो पता लगगा कि वे मशीनरी को घिसाई स प्राप्त रकम क अलावा और किसी प्रकार का मुनाफा नही कमा रही हैं और व जो वेतन दे रही हैं, वह भी २५) मासिक से अधिक नही है। मरी समझ मे तो स्थिति यही है। पर यदि वेतन के स्तर मे वद्धि की जाए तो तभी जब युक्ति-युक्त ढग स काय सचालन की प्रणाली भी अपनाइ जाए जिसका अथ यह होगा कि बहुत-से लागो को काम से हटाना पडेगा। युक्ति-युक्त प्रणाली का अपनाया जाना अनिवाय है भल ही वह ऊपर से अनुचित दिखलाई दे।

आपने जो सुझाव दिया है मैं उसके महत्त्व स इकार नही करता। मैं तो केवल यही जानना चाहता हू कि उसे अपनाने म मिल मालिक को किन कठिनाइयो का सामना करना पडेगा। जहा तक मैं दख पाता हू मेरी समझ म यह समस्या हल होती नही प्रतीत होती। पर आपके सुझाव का यह परिणाम अवश्य आएगा कि लोग-बाग गरेबान मे मुह डालकर दखने लगेंगे।

पर जहा मैं यूनतम वेतन म वद्धि की कोई गुजाइश नही देख पाता हू वहा

मैं यह भी सम्भव समझता हूँ कि अन्य तौर तरीके अपनाने से मजदूरों को राहत पहुँचाई जा सकती है। वे तौर-तरीके कुछ-कुछ इस प्रकार के हो सकते हैं

१) नौकरी का स्थायित्व
२) भ्रष्टाचार का निवारण
३) इन्सानियत का बर्ताव
४) निःशुल्क चिकित्सा की व्यवस्था
५) मजदूरों के बच्चों की निःशुल्क शिक्षा
६) रहने-सहने की अधिक उत्तम व्यवस्था
७) समाज कल्याण सम्बन्धी काय
८) मजदूरों के बच्चों को मुफ्त दुग्ध वितरण
९) वृद्धावस्था पेंशन
१०) रुग्णावस्थाकालीन शुल्क
११) और अन्त में अति महत्त्व का पहलू—पारस्परिक सम्पर्क।

इनमें से अनेक उपायों को मेरी मिल इस समय भी व्यवहार में ला रही है। उदाहरण के लिए १, २ ४, ५ ६ और ७। हाँ इन पर कुछ यान्त्रिक ढंग से अमल अवश्य किया जा रहा है। अभी पारस्परिक सम्पर्क का अभाव है। पहले जो थोड़ा बहुत था वह इधर दो-तीन वर्षों से गायब हो गया है। मजदूरों को अच्छा खासा पारिश्रमिक दिया जाता है। समाज कल्याण काय भी होता ही है। पर पारस्परिक सम्पर्क नहीं के बराबर है। इसका दोष अंशतः साम्यवादी प्रचार को देना होगा, जिसका कुप्रभाव दोनों ही ओर पड़ता है, और अंततः समाज कल्याण-काय को चलाने में सक्षम लोगों की कमी हो जाती है। पर जो कुछ हो रहा है उसे अधिक अच्छे ढंग से किया जा सकता है। इस मामले पर मैं अपने मैनेजरों से गम्भीरता पूर्वक विचार विमर्श कर रहा हूँ। हम समस्या के इस पहलू की ओर से नेत्र मूँदे हुए नहीं हैं और हम इस दिशा में कितनी सफलता मिलेगी यह केवल समय ही बताएगा। अक्सर समाज कल्याण-काय के गलत अर्थ लगाए जाते हैं। पर लगाए भी जाते रहें तो क्या हुआ। कुछ लोगों का कहना है कि यह मजदूरों का अधिक शोषण करने के लिए पूँजीपतियों का हथकंडा भर है।

जो भी हो कृपा करके ऊपर बताये मुद्दों पर आप अपनी टीका टिप्पणी भेजिए। यदि मैं आपके सुझावों के खिलाफ दलीलें पेश करता प्रतीत होऊँ तो आप इसके गलत अर्थ कदापि न निकालें। मुझे अपने अंतःकरण को संतुष्ट करने के साथ-साथ अपनी मिलों की आर्थिक स्थिति को भी ध्यान में रखना है। एक असफल मैनेजिंग एजेंट न अपने मजदूरों के लिए राहत का सामान जुटा सकता

भारतीय मिल मालिक ता एक प्रमुख आरोप स बचा ही रहा है यह यह है कि वह अव्वल दर्जे का स्वार्थी है कजूस है और किसी न किसी प्रकार धन सग्रह करन की लालसा म पडा हुआ है यह नही जानता कि इस धन का सदुपयाग किस प्रकार हा। यह सभी पूजीपतिया पर समान रूप स लागू हाता है। मैं आपसे इस मामल म सालह आने सहमत हू कि आदमी का अपने दिमाग और योग्यता का उपयोग सेवा क निमित्त करना चाहिए न कि अपनी सुख-सुविधाए जुटान क निमित्त। मिला का सचालन वह आपक सुझाए ढग स करने म भले ही समथ न हा पर इसम मुझे तनिक भी सदह नही है कि वह चाहे ता एक ट्रस्टी के नात राष्ट्र की सेवा कर सकता है। यदि वह त्याग कर सके तो वह अपनी मिला का प्रब ध राष्ट्र की जरूरता का पूरा करन म कर सकता है।

स्नह भाजन,
घनश्यामदास

पूज्य श्री महात्माजी
शेगाव

१७

१२ माच १९३७

वाइसराय लाड लिनलियगो के साथ मुलाकात

समय प्रात काल ११॥ बजे—बातचीत ३५ मिनट चला

उन्होंने काम धधे क बारे म पूछा। मैंने कहा कि हालत पहले स अच्छी है। उ होंने पूछा कि क्या मैं माटर-कार तयार करन की बात सोच रहा हू। मैंन कहा 'नहा।' उन्होंने पूछा 'वाशिंग्टन आपक भाई ही ता गय है न ?' मैं बाला 'हा।' इसके बाद उ होने पूछा, 'आप नही जायेंगे क्या ?' मैंन कहा 'नही।' वह बाल 'मैंन सुना था कि आप न्यूयाक जानेवाल हैं।' मैंन उत्तर दिया 'मोटर कार के उद्योग को हाथ लगान का मरा इरादा जरूर है पर यह विचार हुआ कि वहा किसी ऐस आदमी का भेजा जाय, जा इस उद्याग म दिलचस्पी रखता हो।' वह बोले 'आपका प्राग्राम क्या है ?' मैंने उत्तर दिया 'मैं हल्की कारें और बसें तैयार करना चाहता हू। अगर मैं साल म १२ ००० कारें बच पाऊ ता

आर्थिक दृष्टि से ठीक रहेगा। प्रत्येक बार पर जहाज के महसूल और चुंगी पर जो १०००) खर्च होता है, वह बच जायगा। यह भारी बचत होगी। मैंने सुझाया कि अंग्रेजों को भारत में कारें तैयार करने में केवल आर्थिक योगदान करके संतोष मानना चाहिए, प्रबन्ध की जिम्मेवारी भारतीयों को सौंप देनी चाहिए। मैंने बताया कि पटसन और सूती कपड़े के क्षेत्र में हमने देखा है कि अंग्रेजों का खर्च हमारे खर्च की अपेक्षा काफी अधिक बैठता है। वाइसराय ने यह बात स्वीकार की।

मैंने उनसे कहा कि मैं तो राजनैतिक चर्चा करने आया हूं। वह बोले "हां, हां, कीजिए न। हम दोनों पुराने मित्र हैं और एक दूसरे के साथ इत्मीनान के साथ बात कर सकते हैं। आपको सिर्फ यह खयाल रखना है कि बातचीत हमीं तक रहे, बाहर न फूट निकले।' मैंने उत्तर दिया कि इस बाबत वह निश्चिंत रहें, यदि वह चाहते हैं कि बात मिस्टर गांधी तक न पहुंचे, तो भी वैसा ही होगा। उन्होंने उत्तर में कहा 'यह मैं जानता हूं, मगर मैं आपको जो कुछ बताना चाहता हूं वह कोई ऐसी बात नहीं है जो आप मिस्टर गांधी तक न पहुंचाएं। कांग्रेस ने बहुमत प्राप्त किया यह खुशी की बात है। इससे मुझे जरा भी ताज्जुब नहीं हुआ। मैं जानता था, पर मेरे आदमी नहीं जानते थे। मुझे अंग्रेज निर्वाचन प्रणाली का अनुभव है। मैं जानता था कि मैदान में अन्य कोई इतनी सुगठित पार्टी नहीं है। लोग-बाग भी कांग्रेस की बात सुनेंगे। कांग्रेस विजय की अधिकारी थी। मुझे तो केवल यही आश्चर्य है कि बम्बई में कांग्रेस बहुमत प्राप्त नहीं कर पाई। यदि वह वहां दस और सीटें हासिल कर पाती तो अच्छा होता। मैंने कहा कि ऐसा केवल महाराष्ट्र की बदौलत हुआ, वहां के देहातियों के साथ कांग्रेस का गहरा सम्पर्क नहीं है।" वाइसराय सहमत हुए।

इसके बाद मैंने कहा, 'अब अगला कदम क्या होगा? कांग्रेस का दिमाग किस दिशा में काम कर रहा है आप जानते ही हैं। मैं सीधा वर्धा से आ रहा हूं और गांधीजी का दिमाग किस दिशा में काम कर रहा है सो जानता हूं। उनकी विचार धारा कुछ कुछ इस प्रकार है। आप लोग अपनी स्पीचों में बराबर कहते आये हैं कि हम सचमुच के अधिकार दिये जा रहे हैं। आपने संरक्षण अवश्य रखे हैं पर आपका कहना है कि वे जोखिम का बीमा मात्र हैं, इससे अधिक कुछ नहीं। गांधीजी आपकी बात का भरोसा करना चाहते हैं उनका कहना है कि यदि हम लोग शासन विधान को भंग करने पर अथवा आप लोगों का अस्तित्व मिटाने पर उतारू दिखाई पड़ें तब तो बात दूसरी है, पर स्वाभाविक स्थिति में इन संरक्षणों का प्रयोग करने से दूर रहिये। हमें काम करने दीजिए।' उन्होंने

कहा मैं स्थिति को अच्छी तरह समझता हू। वास्तव म गाधीजी की पोजीशन म और मेरी पोजीशन म कोई भेद नही है। अग्रेज जाति समझ-बूझकर चलती है अब जबकि हमने आपको यह शासन विधान दे दिया है यदि हम काग्रेस को उसपर अमल करने की पूरी स्वतत्रता नही देंगे तो उसका क्या परिणाम होगा! हम बात बात पर टाग अडायेंगे और गतिरोध उत्पन्न करेंगे तो आप लोग एक बार फिर मतदाताओ के पास जायेंगे और पुन बहुमत प्राप्त करके आ जायेंगे। इसलिए हमने जो सरक्षण रखे हैं वे केवल अडगे के लिए नहा रखे हैं। पर यदि आप विधान-सभाओ म आने के बाद हमसे कहने लगेंगे—हम शासन विधान को भग करने के लिए आये हैं—तो वसी अवस्था म हम सरक्षणो स काम लेने को बाध्य होना पडेगा। आप जसा चाहे मैं खुल्लम-खुल्ला कहने को तयार हू, मैं आप लोगो को पूरा समाधान देना चाहता हू कि मेरी सहानुभूति आपके साथ है। मैंने अपने गवनरो स जो कहा यह आपको बताने लगू तो आप आश्चर्यचकित हो जायेंगे। पर यदि कोई मुझसे यह कहलाना चाहेगा कि सरक्षणो को स्थगित कर दिया गया है तो यह असम्भव कल्पना है क्योकि शासन विधान म हेर फेर करना मेरे अधिकारो की परिधि के बाहर की बात है और मेरी बात के गलत अथ लगाए जायेंगे। क्योकि यदि कोई आकर मुझसे कहे सरक्षणो को स्थगित कीजिए और मेरा उत्तर चाहे तो मैं कहूगा यह असम्भव है। समाचार-पत्र कहना शुरू कर देंगे कि सरक्षणो का दौर-दौरा रहेगा जबकि वास्तव म ऐसी कोई बात नही है। फलत इस स्थिति से मुझे कुछ चिता होती है। मैंने बताया कि जहा तक मुझे ज्ञात है गाधीजी यह कदापि नही चाहते कि शासन विधान म हेर फेर हो वह तो केवल भद्र पुरुषो के बीच हुए कौल करार मात्र के इच्छुक हैं। मैंने कहा मैं जिस स्थिति की कल्पना कर सकता हू वह यह है कि गवनर लोग काग्रेसी नेताओ को बुला भेजेंगे पर वे लोग गवनरो के सामने वही फार्मूला पश करेंगे जो काग्रेस ने तयार कर रखा है और उत्तर म कहेंगे नहा। अकेले मद्रास को छोडकर जहा चक्रवर्ती राजगोपालाचारी है अय प्रातो के काग्रेसी नेता द्वितीय श्रेणी के हैं। वाइसराय ने बीच ही म टोकते हुए कहा मैं जानता था आप उन्हें इस कोटि स पृथक रखेंगे। मैंने अपना कथन जारी रखते हुए कहा इसलिए क्या यह अधिक वाछनीय नही होगा कि इस बातचीत के लिए प्रातो को नही दिल्ली को चुना जाए जिससे दोनो पक्षो म समझदारी की बातें हो सकें? यदि ऐसा किया गया तो समस्या का हल तलाश करने म कठिनाई नहा होगी। साथ ही मैंने यह भी कहा कि यदि वह गाधीजी से मिल सकें तो गाधीजी अपनी बात मेरी अपेक्षा कहा अधिक सजीव भाषा म पेश कर सकेंगे

परन्तु साथ ही, वह कोई हल भी खोज पायेंगे। मैंने कहा कि वैसा होना सम्भव है या नहीं, यह मैं नहीं जानता। उन्होंने कहा ऐसा करना कठिन अवश्य है। यदि गांधीजी मुझसे अभी मिलने आए (उनके कानों तक यह बात पहुंची थी कि गांधीजी उनसे मिलने आ रहे हैं) तो वह एकमात्र इसी विषय की चर्चा करेंगे। छह महीने पहले मैं एक भिन्न प्रकार का मिशन लेकर आया था पर मेरे आदमियों ने तब साक्षात्कार के खिलाफ राय दी थी। यदि गांधीजी एक सप्ताह बाद आए तो भी स्थिति भिन्न होगी। पर इस समय तो मैं आपको जो कुछ बता चुका हूं उससे अधिक उन्हें क्या बताऊंगा? मैंने उनका भ्रम निवारण करते हुए कहा कि गांधीजी दिल्ली उनसे मिलने नहीं जवाहरलाल के आग्रह पर आ रहे हैं पर जो कुछ होगा उसकी सभावनाओं की ओर सकेत करते हुए मैंने कहा कि क्या कुछ करना ठीक रहेगा यह वह स्वय ही तय करेंगे। वह बोले मैं समझ गया। फिलहाल न गांधीजी मुझसे मिलने आ सकते हैं न मैं उन्हें बुला सकता हूं। साथ ही, मुझे यह लगता है कि हम दोनों में किसी प्रकार का मतभेद नहीं है। मुझे आशा है कि उन्होंने यह अच्छी तरह समझ लिया होगा कि हम दोनों के बीच किसी तरह की गलतफहमी नहीं है।' मैंने इस बारे में उनको आश्वस्त किया।

बातचीत का कोई नतीजा नहीं निकला क्योंकि वह सौहार्द से ओतप्रोत तो थे और उनकी विचार शैली भी यथेष्ट प्रगतिशील थी—इतनी प्रगतिशील कि मैं अधिक अच्छे शब्दों में उसका बखान नहीं कर सकता—पर वह यह नहीं समझ पा रहे हैं कि क्या करें। जब मैं सरकारी अमले की आलोचना करने लगा और यह बताने लगा कि निर्वाचनों के दौरान उसने युक्त प्रांत और सीमा प्रांत में कांग्रेस के विपक्षियों का साथ दिया तो उन्होंने अमले की ओर से सफाई पेश करने की कोशिश नहीं की। उन्होंने तो बार-बार कांग्रेस की विजय पर सतोष ही प्रकट किया। उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि वह किसी भी गवर्नर को अपने विशेषाधिकारों का प्रयोग नहीं करने देंगे। पर अपनी सद्भावना और सहानुभूति का आश्वासन देने के अतिरिक्त वह यह नहीं बता सके कि सरक्षणों को स्थगित करना क्योंकर सम्भव होगा। जहां तक मैत्री भावना का सम्बन्ध है वह उसकी घोषणा सार्वजनिक रूप से करने को तैयार लगे। साथ ही उन्हें इस बात का भी विश्वास है कि गांधीजी शासन विधान के स्थगित किये जाने के पक्ष में नहीं हैं।

जवाहरलालजी की भी चर्चा उठी। उन्होंने कहा मेरी यह धारणा सही है न कि गांधीजी और जवाहरलाल के बीच गहरा प्रीति भाव है? मैंने स्वीकारात्मक उत्तर दिया। उन्होंने कहा कि उन्हें यकीन है कि देश में जवाहरलाल के लिए

निश्चित स्थान है। पर उ होने जिनासा प्रकट की कि 'फज कीजिए जवाहरलाल किसी प्रकार क समझौते का विरोध करत ह ता क्मी हालत म क्या गाधीजी उनका सामना करेंगे ? मैंने उत्तर दिया जवाहरलाल गाधीजी का अनुकरण करने के अतिरिक्त कुछ और नही करेंगे।' उ ह यह बात जची। इसके बाद हम दोनो ने बिडला कालज की चर्चा की। उ्होने सारी बाता पर विचार करन का वचन दिया।

१८

१२ माच, १९३७

प्रिय लाड हैलिफक्स

आपक विचार को भारत के राजनतिक क्षेत्रा म कितना महत्त्व दिया जाता है यह मर लिए बताना अनावश्यक है। आपकी ईस्ट इडिया एसोसिएशनवाली स्पीच यहा बहुत ध्यान और रुचि के साथ पढी गयी यह भी कहने की जरूरत नही है। पर मैंने ल दन म पिछली बार आपस जो कहा था, उसे आप मुझे दुहरान की अनुमति दें तो मैं कहूगा कि सुधार न एकमात्र अपन निजी गुणा क कारण सफल होग न दोषा क कारण असफल सिद्ध होग। सबसे अधिक महत्त्व की चीज है वातावरण और फिलहाल यहा का वातावरण अच्छा नही है। मैंने इग्लड म जिस मित्रता और भरोसे की भावना को प्रचुर मात्रा म देखा था वह यहा सरकारी क्षेत्रा म अब भी मौजूद नही है जब तक उस भावना का यहा सृजन नही होगा सुधार निकम्मे साबित होंगे भले ही वे आला दर्जे के हो।

इन अनेक वर्षो म जिस चीज का नितात अभाव रहा ह वह है दोना भागी दारा क बीच मानवीय सम्पक। भारत म ब्रिटिश शासन के सम्पूण इतिहास म आप पहल व्यक्ति थ जि होने पारस्परिक सम्पक का महत्त्व समझा था और इसके लिए आपने जो कदम उठाये थे व आपके विदा होते ही समाप्त हो गये हैं। मैंने लाड विलिंग्टन का समथन का भरसक कोशिश की पर असफल रहा। म जब इग्लड स लौटा था तो आशाओ स ओतप्रोत था। पर अब मुझ ऐसा लगने लगा है कि लाड लिनलिथगो को भी ठीक विपरीत सलाह दी जा रही है क्योकि सर कारी अमल की यह धारणा बन चुकी ह कि यदि वाइसराय ने ऐसा कुछ किया तो काग्रस की जड मजबूत होगी। फलत मुझ घोर निराशा हुई है। मैंने पिछले

अगस्त म लाड लादियन को लिखा था और यह अनुरोध भी किया था कि वह मेरा पत्र आपका भी दिखा दें। मैं महसूस करता हू कि नूतन विधान का शुभारम्भ करने के निमित्त अनुकूल वातावरण तैयार करने के अवसर हाथ म गवाये जा रहे है।

काश, मैं आपकी इस धारणा म हाथ बटा पाता कि अमला अपने-आपको परिवर्तित परिस्थितियो के अनुरूप ढाल लेगा। अभी तक मुझे वसा कोई लक्षण दिखाई नही पडा है। युक्त प्रात और सीमा प्रान मे निर्वाचना के दौरान प्रातीय सरकारा ने खुल्लमखुल्ला काग्रेस के विपक्ष मे सहायता दी। काग्रेस एसे ही प्रतिकूल और अविश्वास के वातावरण म पद ग्रहण करने का तत्पर हो रही है और मुझे आशा है कि जब आपका यहा क लाग इग्लड क मित्रा के आशावाद का ग्रहण करने म असमर्थ दिखाई दें, तो आप उनकी आलाचना करते समय इन सारी बाता को ध्यान म अवश्य रखेंगे।

मैं गाधीजी के मानस को थोडा-बहुत समझने का दावा करता हू। वह पद ग्रहण करने के पक्ष म हैं पर शत यह है कि पुराने भागीदारो की ओर स सद्भावना और सहानुभूति दिखाई दे और उनकी ओर स यह आश्वासन मिले कि सुधारो को बगैर किसी हस्तक्षेप क अमल म आने दिया जायगा। आप तो उनकी 'हृदय परिवतन' वाली पुरानी उक्ति से भली भाति परिचित ही ह। उन्हे अभी तक इस परिवतन की झाकी नही मिली है आप उनकी आलोचना भी कैसे कर सकते हैं? जरा सोचिए तो नय भागीदारा न पुराने भागीदारा क साथ किसी प्रकार का पारस्परिक सम्बध स्थापित किये बिना ही धधे का सभालने का जिम्मा ले लिया है। ये पुराने भागीदार अभी तक मत्री का आचरण नही बना सके हैं, अत मुझे तो एसी आशका होने लगी है कि गतिरोध जल्दी ही होगा। जब प्रातीय गवनर अपने-अपने प्रात के काग्रेसी नेताओ को नया मत्रिमण्डल बनाने की दावत देंगे तो वे उत्तर मे वही नपी तुली बात कहेंगे, जो केन्द्रीय काग्रेस न उनके लिए निर्धारित कर रखी है। गवनरो और प्रातीय काग्रेसी नेताओ का महत्त्व दूसरी श्रेणी का है इसलिए वे ठोस उपलब्धि प्राप्त नही कर सकेंगे। वस्तुत बुद्धि विवेक-युक्त विचार विमर्श तक असम्भव प्रतीत होगा।

इस स्थिति म कोई सुधार वाइसराय और गाधीजी के पारस्परिक सपक क द्वारा ही सम्भव है। एसे सपर्क स काग्रेस को इस बात की प्रतीति होगी कि ब्रिटेन सहानुभूति और सदभावना क साथ भारत को प्रगतिशील कदम उठाने म सहायता देगा तथा आगे ही मन्त्रियो म प्राता को अपना काम-काज खुद चलाने का पूरा अधिकार रहेगा। दूसरी ओर सरकारी अमले का भी यह लगने लगेगा कि

वास्तव म कांग्रेस उनकी मित्र है शत्रु नही है, इसलिए उसे भूले करने की भी आजादी रहनी चाहिए। साथ ही सरकारी अमल का अपना आपका "परिवर्तित परिस्थिति के अनुरूप ढालन की आवश्यकता भी प्रतीत हागी।

पर जो-कुछ हो रहा है उसस ता मुझे यही लगता है कि भारत सीधी कारवाई की ओर ढकलता जा रहा है। गाधीजी पूरी तरह स्पष्ट हैं कि वह घडी न आय पर जब दूसरी ओर से कोई उत्तर न मिले, तो वह क्या कर सकते हैं?

सर सम्युअल होर ने एक बार मुझे लिखा था कि सरक्षणो को बाधा-स्वरूप न मानकर जोखिम का बीमा मात्र समझना चाहिए। मैं सहमत हू। पर जसा कुछ वातावरण है उसे देखते हुए सरक्षणो को जोखिम का बीमा मानने के लिए दिल गवाही नहीं देता। अत हम पुन उसी मुख्य बात पर आ गये हैं पारस्परिक सम्पर्क की उपादेयता। केवल उसी के द्वारा वातावरण स्वच्छ हो पायगा और यदि वातावरण एक बार स्वच्छ हुआ तो स्वच्छ ही रहेगा।

आपका समय ले रहा हू क्षमा करियेगा। पर मैं क्या लाचार हू। मैं जानता हू कि आप भारत को समझते हैं बस यही बहाना मेरे लिए पर्याप्त है। मैंने वाइसराय से भी इस बारे म दुबारा बात की है। मुझे लगता है कि वह मेरी बात से सहमत हैं पर वह मामले को आगे कसे बढायें इसका निर्णय नही कर पाये हैं।

सदभावनाओ के साथ

आपका
घनश्यामदास बिडला

राइट आनरेबल
मार्क्विस आफ हैलिफक्स

१९

डी० ओ० न० १७०८ काम०

वाइसराय भवन
नयी दिल्ली
१५ मार्च १९३७

प्रिय श्री बिडला,

आपके आज के पत्र और उसके साथ भेजी कटिंग के लिए अनेक धन्यवाद। मैंने महामहिम को वे सब दिखा दिये। आपने जो कष्ट किया उसके लिए वह आपको धन्यवाद देते है और कहते हैं कि वह स्थिति को अच्छी तरह समझते हैं।

मैं कल सध्या के ५ बजे चाय के लिए आने का विचार करता हू यदि आपको असुविधा हो तो दूसरी बात है।

भवदीय,
जे० जी० लेथवेट

श्री घनश्यामदास बिडला
बिडला हाउस
अल्बूकर्क रोड
नयी दिल्ली

२०

१६ मार्च, १९३७

प्रिय श्री लेथवेट

जो कटिंग भेज रहा हू वे ५ तारीख के ट्रिब्यून और ६ तारीख के नेशनल कॉल से ली गई हैं। इन कटिंगो की कहानी पर ध्यान कल पहली बार गया। जब मैंने १४ तारीख के ट्रिब्यून म उनके नयी दिल्ली स्थित विशेष सवाददाता द्वारा दी गई एक भिन्न प्रकार की कहानी देखी तो मैंने तुरत उसका खण्डन किया।

महामहिम के साथ अपनी मुलाकात के दौरान जब उन्होंने प्रश्न में घन रह

प्रकार की चर्चा की, तो मेरी समझ में बात नहीं आई थी, यद्यपि मैंने तब तक ८ तारीख का 'ट्रिब्यून' और ६ तारीख का 'नेशनल काल' नहीं देखा था। यह सब-कुछ बड़ी जघन्य बात है। इसे लेकर महामहिम व्यस्त हुए, इसका मुझे दुःख है।

मैं समझता हूं ये तार दुर्गादास और आयंगर ने भेजे थे। उन्होंने मेरे नाम का इस प्रकार दुरुपयोग किया इसका मैंने बड़ा विरोध किया है। आशा है आप यह महामहिम को बता देंगे।

कल भेंट होने पर और अधिक बातें होंगी।

सद्भावनाओं के साथ

आपका
घनश्यामदास बिड़ला

श्री जे० जी० लेथवेट
नयी दिल्ली

२१

१७ मार्च १९३७

प्रिय श्री लेथवेट

आपने देखा ही होगा कि गांधीजी के फार्मूले को कार्यकारिणी ने स्वीकृति प्रदान कर दी है और मुझे इसमें सन्देह नहीं है कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी भी स्वीकृति दे देगी। अब यदि मुख्य मंत्रियों का समाधान हो जाए कि गवर्नर अपने विशेषाधिकारों का प्रयोग नहीं करेंगे तो इसकी सार्वजनिक घोषणा करके अपने गवर्नरों को सुविधा देने का भार मुख्य मंत्रियों पर ही रहेगा। इस फार्मूले के अंतर्गत गवर्नरों के लिए ऐसे महत्त्वपूर्ण मामलों से जो मुख्य मंत्रियों के साथ में हों, विवेकपूर्ण विचार विमर्श करने की भी मनाही नहीं है।

शासन विधान के भीतर रहकर —यह एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण वाक्य है जिसके द्वारा कांग्रेस की ओर से यह गारंटी दी जा सकती है कि गतिरोध उत्पन्न करने के लिए गतिरोध पैदा करने की कोई नीति नहीं है। अब यदि गवर्नर लोग सहानुभूति बरतें तो आपस में एक दूसरे के विचार को समझने के मार्ग में कोई कठिनाई नहीं आयगी। मेरी समझ में कांग्रेस के दक्षिणपंथियों की यह एक भारी

विजय है, और बदले में समुचित भावनाएं व्यक्त करने में दक्षिणपंथियों के हाथ मजबूत होंगे। आशा है, महामहिम इसे हृदयंगम करेंगे।

सद्भावनाओं के साथ,

भवदीय,
घनश्यामदास बिड़ला

श्री जे० जी० लेथवेट
सी० आइ० ई०
नयी दिल्ली

२२

डी० ओ० न० १८४४ जी० एम०

वाइसराय भवन
नयी दिल्ली
१८ मार्च, १९३७

प्रिय श्री बिड़ला

आपके कल के पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। यह पत्र मैं यह बताने के लिए लिख रहा हूं कि मैंने आपका पत्र महामहिम को दिखाया और उन्होंने बड़ी रुचि से साथ पढ़ा।

सद्भावनाओं के साथ,

भवदीय,
जे० जी० लेथवेट

श्री घनश्यामदास बिड़ला

२३

भाई घनश्यामदास

परमश्वरीप्रसाद कहते हैं कि वे फाम वि० का कब्जा आज ही देने के लिये तयार हैं। जो दस्तखत चाहिये वह कर देंगे। चार पाच रोज म फाम छोड सकते हैं।

मो० क० गाधी

हरिजन निवास
दिल्ली
२२ ३ ३७

२४

हरिजन सेवक सघ
किग्सवे दिल्ली
३० ३ १९३७

पूज्य बापू,

जिस विषय पर मुझे नही लिखना था तथा मन म भी सकल्प था कि नही लिखूगा उसी विषय पर लिखन क लिए बाध्य हुआ हू। विषय है श्री मलकानी तथा श्री घनश्यामदासजी के बीच का विवाद।

वर्धा म फरवरी के अत म इस महीने के तीसरे सप्ताह म मलकानी का यहा से और कहा भेजने के बारे म घनश्यामदासजी ने चर्चा चलाई थी। इसका कोई रास्ता नही निकला। मलकानी को आप दिल्ली के ही वतमान काम पर चलने देन की इच्छा रखते है। यह जानकर घनश्यामदासजी को थोडी निराशा हुई और हरिजन उद्योगशाला क काम म वे जितना रस लते थे उतना लते दिखाइ नही दते हैं। यहा वे जो प्रयोग करन की भावना रखत थे व प्रयोग अब वे पिलानी म कर रहे हैं।

इस मतभेद म मैंने अपनी तटस्थ नीति अब तक रखी थी। लेकिन अब इस मयादा को तोडकर मैं आपको सूचित कर रहा हू। सघ क अध्यक्ष के मन म कुछ

कुछ तलवार के शासन की बात कहते हैं तो दोनो का एक जसा विचार प्रतीत होता है। मैं जानता हू कि आप दानो को ही वसी स्थिति अरुचिकर है। मैं गाधी जी के मानस का अच्छी तरह समझता हू और मैं आश्वासन देता हू कि वह किसी भी प्रकार की सीधी कारवाई का हमेशा के लिए अत करना चाहते हैं। उन्होंने अपनी प्रेस मुलाकात म भी स्पष्ट रूप स कहा है कि यदि उनके फामूले को मान लिया जाता तो सकट टल जाता और नौकरशाही दुनिया के सबस बडे और सबस अधिक सम्पूण प्रजातत्र को अधिकारो का हस्तातरण स्वाभाविक व्यवस्थित और शातिपूण ढग से कर सकी होती।

मैं तो कहूगा कि लाड लिनलिथगो का विचार भी इसी प्रकार का है और तिस पर भी भारत म बडी विनाशपूण घटना घटित हो रही ह क्योकि पारस्परिक सम्पक का अभाव है। मैं पूछता हू कि क्या शीषस्थ व्यक्तियो के मिल बठकर बात करके आपस की गलतफहमी और सन्देह दूर करना सम्भव नही था और अब भी सम्भव नही है? इस समय भारत म गलतफहमी और सदह का वातावरण व्याप्त है और यह अकारण ही नही है। इस गलतफहमी के ठोस कारण है। पिछले अगस्त म जब मुझे लगा कि एक बहुत बडा मौका हाथ स निकल गया तो मैंने आपको एक लम्बी चिट्ठी लिखी थी और अब भी मेरा यही विश्वास है कि इस गुत्थी को पारस्परिक सम्पक के द्वारा ही सुलझाया जा सकेगा।

इस समय जसी कुछ स्थिति है, वह ठीक मेरी फम के एक अग्रेज कमचारी की स्थिति जसी है जिसने अपनी यूरोप यात्रा के दौरान एक हगेरियन लडकी स विवाह कर लिया था। न लडकी अग्रजी जानती थी न अग्रेज हगेरियन जानता था। मैंने उसस पूछा कि व एक दूसरे के इरादे स किस प्रकार परिचित हुए। उन्होंने बताया कि नक्शे खीचकर उन्हाने अपनी-अपनी अभिलाषा व्यक्त की। यह विवाह बहुत ही दुखद प्रमाणित हुआ और होना भी था। पर जहा तक भारत और इगलड का सम्बध है दोनो अपने भागीदारो की भाषा से अवगत है इस लिए उन्हें नक्शे खीचने की जरूरत नही है। ब्राडकास्टो और प्रेस मुलाकाता के माध्यम से बात करना न व्यावहारिक दष्टि से उपादेय है न मानवीय दष्टि से। क्या वाइसराय भेंट करके बात नही कर सकते है? यदि कोई मतभेद होता अथवा कथनी और करनी म किसी प्रकार का भेद भाव रखने का इरादा होता तब तो यह सकोच समझ म आ सकता था। वसी स्थिति म यह मानकर सतोष कर लिया जाता कि बडे आदमियो की कथनी और करनी म अतर रहता ही है। पर जहा तक म समझ सका हू जब लक्ष्य के प्रति दोनो मे किसी प्रकार का मतभेद नही है तो मुलाकात से बचने का कोई उचित कारण दिखाई नही देता। हा मेरी यह

२७

डी० ओ० नं० २२५१—जी० एम०

वाइसराय भवन,
नयी दिल्ली
२ अप्रैल, १९३७

प्रिय श्री बिड़ला

आपने लार्ड लोदियन को जो पत्र लिखा है उसकी नकल भेजने की कृपा के लिए अनेक धन्यवाद। मैंने वह नकल महामहिम को दिखाई तो उन्होंने बड़े मनोयोग से पढ़ा और मुझे आपको धन्यवाद देने का आदेश दिया कि आपने उन्हें उसे देखने का अवसर प्रदान किया।

सद्भावनाओं के साथ

आपका,
ज० जी० लथवेट

श्री घनश्यामदास बिड़ला

२८

तार

४ अप्रैल १९३७

महात्मा गांधी
वर्धा

ठक्कर बापा के पत्र से आश्चर्य हुआ। निराधार। पत्र लिख रहा हूं। उन्होंने गलत समझा। हमने खुलकर बात की थी। मैं आपसे पूर्णतया सहमत हूं कि इस बाबत हम दोनों में कोई मतभेद नहीं है।

—घनश्यामदास

२६

बिड़ला हाउस
नयी दिल्ली
५ अप्रल १६३७

प्रिय महादेवभाई

कल बापू का पत्र लिखने के बाद मैंने ठक्कर बापा से फोन पर बात की। उन्हें तुरत लगा कि उन्हें एक ऐसी बात का विश्वास करा दिया गया है जिसका वास्तव में कोई अस्तित्व नहीं है। जब मैंने उनसे पूछा कि उनकी यह धारणा क्योंकर बनी हमने तो कभी इस विषय पर बातचीत नहीं की थी तो उन्होंने कहा कि हरिजी ने उनकी यह धारणा बनाई थी। फलत मैंने आज दोनों को अपने यहां बात करने के लिए बुलाया था पर यहां आने से पहले ही दोनों को अपनी गलती महसूस हुई। अब ठक्कर बापा बापू को लिखकर सारी बात बताएंगे।

बापू का स्वास्थ्य ठीक नहीं लगता, मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि बापू ने कल्पना की नींव पर यह महल खड़ा कर लिया। हो सकता है यह उनकी तबीयत ठीक न रहने के कारण हुआ हो। मैंने कल बापू को भी लिख दिया था और अब भी लिख रहा हू कि मैंने उनके रुख के कभी गलत मानी नहीं लगाए। वास्तव में उनके और मेरे बीच मतभेद उत्पन्न होना सम्भव ही नहीं है। मलकानी को मेरी पूरी रजामन्दी से रखा गया था इसलिए मेरे हताश होने का सवाल ही नहीं उठता। यह सही है कि मैं उद्योगशाला के काम में खुद प्रत्यक्ष रूप से कोई रस नहीं लेता हू, पर मैंने ठक्कर बापा को बताया कि मैं उनके आफिस के काम-काज में भी तो रस नहीं लेता हू। यदि मैं ऐसा करने लगू तो टकराव होगा। मैं तो तभी सहायता करता हू जब सहायता की जरूरत होती है और ठक्कर बापा तो मेरे पास आते ही रहते हैं। हां मलकानी कभी नहीं आते। पर यह उनके देखने की बात है। जहां तक मेरा सम्बन्ध है मैं उनके कार्यक्षेत्र में कभी हस्तक्षेप नहीं करता। ठक्कर बापा ने भी यह स्वीकार किया।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

३०

१० अप्रैल, १९३७

प्रिय लार्ड लोदियन

लार्ड जेटलैंड की स्पीच की भारत में जो प्रतिक्रिया हुई है उसका आभास इस पत्र के साथ नत्थी कटिंग से मिलेगा। आपकी स्पीच बड़ी सुंदर रही, पर लार्ड जेटलैंड की स्पीच ने तो स्थिति को और भी बिगाड़ दिया। वह कुछ न कहते तो बेहतर रहता। उनकी स्पीच का सबने एक स्वर से बुरा बताया है—स्टेटसमैन तक ने। वास्तव में स्टेटसमैन का निशाना बिलकुल ठीक बैठा है। लार्ड जेटलैंड की स्पीच से जवाहरलाल के हाथ मजबूत हुए हैं। उन्होंने तुरंत वक्तव्य जारी किया जिसका उद्देश्य यह लगता है कि गांधीजी मेल जोल की बात को आगे न बढ़ायें। लार्ड जेटलैंड की स्पीच के बाद और-तो और गांधीजी के लिए भी कुछ कहना कठिन हो गया है। महान कार्यों पर अमल कितने सुंदर ढंग से हो रहा है! कार्यदक्षता लाजवाब है!

यह जाहिर है कि जब आपने सामंत-सभा में स्पीच दी उस समय तक आपको मेरा पिछला पत्र मिल चुका था क्योंकि उसमें ट्रिब्यून का उल्लेख किया था और गांधीजी की मुलाकात के उन अंशों की भी चर्चा की थी जिनकी ओर मैंने आपका ध्यान आकृष्ट किया था। क्या अब आप यह बताएंगे कि मुझे क्या करना है? यदि दोनों पक्ष अपनी-अपनी बात पर अड़े रहेंगे तो कुछ भी करना सम्भव नहीं होगा, पर क्या कोई बीच का रास्ता खोज निकालना सम्भव नहीं है? मैं कुछ स्थिर नहीं कर पाया हूं पर यदि आप कुछ काम की बात सुझाएं तो मैं उस रास्ते पर आगे बढ़ूं। मुझे तो ऐसा लगता है कि मेरी भांति आप भी किंकर्त्तव्यविमूढ़ हैं।

मैं दिल्ली छोड़ने से पहले वाइसराय से एक बार फिर मिलने की कोशिश करूंगा। मैं भारत ब्रिटिश वार्ता के सिलसिले में जून के मध्य तक इंग्लैंड पहुंचने की आशा करता हूं। जब वहां रहूंगा तो आपसे भी मिलूंगा।

सद्भावनाओं के साथ

आपका
घनश्यामदास बिड़ला

राइट आनरेबल मार्क्विस आफ लोदियन
सीमोर हाउस
१७ वाटरलू प्लेस
लंदन एस० डब्ल्यू० १

३१

वर्धा
१२ अप्रैल, १६३७

प्रिय घनश्यामदासजी

ठक्कर बापा न क्या घोटाला किया ? मैंने तो बापू को जब ठक्कर बापा का पत्र आया तब ही कह दिया था कि इसमे कही बडी गलतफहमी दीखती है क्योकि आपन तो स्पष्ट ही कहा था कि आप मलकानी को तुरत विदा देना चाहते हैं। खैर !

अब रहा परमेश्वरीजी का प्रकरण। उसका कल आया हुआ खत भेज रहा हू। बापू न उसे लिखा है कि अगर तुमम कुछ कलक देखूगा तो मुझे बडा धक्का पहुचनवाला है।"

जटलड को दिया हुआ जवाब देखा ? परिणाम तो क्या होनेवाला है? लडाई तो एक दफा लडनी ही होगी। यह तो एक चुनौती है।

आपका
महादेव

हम सबको बेलगाव जाना है।

३२

शेगाव
१३ अप्रैल १६३७

श्री घनश्यामदासजी

बापूजी को आपका ११ तारीख का पत्र आज मिला है और वह उन्ह पसद भी आया है।

तीन चार दिन ऊपर आपके एक भाषण की रिपोर्ट दैनिक पत्रो म मैंने देखी थी। उसम मुनाफावाद वग का आग्रह करन की कोशिश की गई थी। सारा भाषण मुझे बहोत अच्छा लगा था। मैंने बापूजी का ध्यान उसकी ओर खेंचा था, परन्तु उन्होंने वह नहीं पढ़ा था। उसके लिए तलाश तो यहा मैं कर रहा हू परन्तु अगर

आपके पास उसकी पूरी रिपोर्ट हो और वह आप सुभीता से भेज सकें, तो और भी अच्छा होगा।

भवदीय,
प्यारेलाल

३३

बिड़ला हाउस,
लाल घाट
बनारस
१६ अप्रैल, १९२७

प्रिय महादेवभाई

तुम्हारे पत्र के लिए धन्यवाद।

तुम देख ही रहे हो कि मैं यहां आया हुआ हूं और शीघ्र ही कलकत्ते के लिए रवाना हो जाऊंगा।

परमेश्वरप्रसाद की बाबत मैंने अपने कल के पत्र में गारोडिया को सारी स्थिति बता दी है और उसकी नकल बापू के पास भेज दी है।

रही राजनैतिक संकट की बात, सो लड़ाई के लिए उतावली से काम लेना ठीक नहीं है। बापू की सहिष्णुता से बहुत बड़ा काम हुआ है और परिणामस्वरूप लार्ड जेटलैंड के खिलाफ सारा भारत उठ खड़ा हुआ है। 'स्टेट्समैन', 'टाइम्स आफ इंडिया' और यूरोपियन व्यापारी समाज को अपने पक्ष में करना कोई साधारण उपलब्धि नहीं है। लार्ड लोदियन का यह सुझाव कि सारी बात मत-दाताओं पर छोड़ देनी चाहिए, एक अच्छा खासा सुझाव है, पर वह स्वीकार किया जाएगा, ऐसा मुझे नहीं लगता। हो सकता है, बापू का 'सहज बने रहनेवाला' नुस्खा कभी काम आए।

दिल्ली का अधिकारी वर्ग बड़ा क्षुब्ध है। मुझे तो ऐसा लगता है कि इस सारे मामले की जड़ में लार्ड जेटलैंड और कैबिनेट है। यदि वर्तमान स्थिति बनी रहने दी गई, तो समस्या का हल निकल आयेगा और सम्मान के साथ निकल आयेगा। मैं तो यही आशा लगाये बैठा हूं कि बापू ने जिस वातावरण का सृजन किया है

उस कार्यकारिणी भंग नहीं करेगी। बापू ने समस्त भारत को न्याय के पक्ष में प्रमाणित कर दिया है और दिखा दिया है कि उनके विपक्षी गलती पर हैं। उनका टाइम्स के नाम अंतिम तार बहुत बढ़िया रहा। उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि वह झूठ मूठ की मान मर्यादा में विश्वास नहीं रखते हैं।

मैं दिल्ली और इंग्लैंड के साथ सम्पर्क बनाये हुए हूं—बगैर कोई छेड़छाड़ किये जैसा कि बापू का कहना है।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

३४

कलकत्ता
२२ अप्रैल १९३७

प्रिय महादेवभाई,

जूट मिलों की हड़ताल संक्रामक रोग की तरह फैली हुई है। मेरी जूट मिल अभी तक बची रही, पर इधर ५-६ दिन से केसोराम काटन मिल के बुनाई विभाग में आंशिक रूप से हड़ताल चल रही है। मैं यह पत्र उसी संबंध में लिख रहा हूं। इसे बापू के सामने रख देना।

यह हड़ताल अचानक ही आरम्भ हुई। हड़ताल होनेवाली है इसका किसी को आभास तक नहीं था। मजदूरों की ओर से कोई नोटिस भी नहीं दिया गया था। मेरा अनुभव तो यही रहा है कि जब कभी कोई हड़ताल अकारण होती है तो उसकी जड़ में कुप्रबन्ध अथवा कार्य-कुशलता का अभाव पाया जाता है। जहां तक मेरा सम्बन्ध है, मैनेजर ईमानदार है, पर उसमें व्यावहारिक बुद्धि नहीं है। इस हड़ताल की जिम्मेदारी उसी पर है। जो हो, मुझे ज्योंही पता लगा कि कुछ बुननेवालों ने काम बन्द कर दिया है, मैंने मजदूरों के नेता को बुला भेजा। फणी बाबू सुरेश बाबू के साथियों में से हैं। मैंने उनसे पूछा कि इस हड़ताल का क्या कारण है, मजदूरों की क्या-क्या मांगें हैं और यदि किसी मामले को लेकर समझौता करना हो तो मैं तैयार हूं। फणी बाबू ने बताया कि मजदूर लोग चाहते

हैं कि उनकी यूनियन को मान्यता दी जाए, १९३५ की हड़ताल के बाद उनसे अच्छे आचरण की जमानत के बतौर जो रकम ली गई थी उसे वापस किया जाए, तथा नियत मात्रा से अधिक काम न लिया जाए। मैंने उत्तर दिया कि उनकी यूनियन को मानने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है और यदि यूनियन मजदूरों के अच्छे आचरण का जिम्मा ले तो मुझे जमानत का रुपया वापस करने में भी कोई एतराज नहीं है। रही मात्रा से अधिक काम कराने की बात सो यह तो मैं भी कदापि सहन नहीं करूंगा। यदि उनसे काम लेनेवाले इसका आग्रह करें तो उन्हें उनकी आज्ञा मानने से इन्कार कर देना चाहिए। मजदूरों को मेरा पूरा समर्थन मिलेगा।

इसके बाद फणी बाबू कुछ प्रमुख मजदूरों को मेरे आफिस में लाये और मैनेजर से भी बात की पर जब दुबारा बातचीत हुई तो उसने बताया कि उसने मजदूरों की बात ठीक तरह से नहीं समझी थी वास्तव में वे अपने वेतन में २५ प्रतिशत की वृद्धि चाहते हैं। मैनेजर ने मेरी ओर से बताया कि वेतन वृद्धि का प्रश्न ही नहीं उठता, क्योंकि हम लोग और अधिक वेतन देने की स्थिति में नहीं हैं। कम्पनी ने पिछले १२ वर्षों में दो एक बार से अधिक डिविडेंड भी नहीं बांटा है। अधिक वेतन की मांग करने के लिए वर्तमान समय उपयुक्त नहीं है पर साथ ही मैनेजर ने फणी बाबू को मेरी ओर से यह भी आश्वासन दिया कि यदि मिलों का काम काज अच्छा रहा तो मिल-मालिक इस विषय पर दोनों पक्षों के लिए संतोषप्रद बातचीत करने को प्रस्तुत रहेंगे। फणी बाबू संतुष्ट हो गये और उसने मजदूरों को काम पर जाने को कहा पर इसका कोई नतीजा नहीं निकला।

मैं दो दिन तक और रुका रहा पर अन्त में मैंने देखा कि मजदूर लोग अपनी मांग पर अड़े हुए हैं। यह हड़ताल सम्पूर्ण नहीं है पर जो लोग काम पर आते हैं उन्हें डराया धमकाया जा रहा है। साथ ही, कुछ ऐसे भी मजदूर हैं, जो हमारे क्वार्टरों में रहते हैं पर काम पर नहीं आते। मैनेजर ने नोटिस लगा दिया है कि जो लोग काम पर जाने को तैयार न हों वे क्वार्टर खाली कर दें। मैंने मैनेजर से कह रखा है कि नोटिस तो दे दिया पर इससे अधिक कुछ मत करना। साधारण मजदूरों को भी नोटिस दे दिया गया है कि उनमें से जो लोग हड़ताल में शामिल हैं वे अपना वेतन लेकर क्वार्टर खाली कर दें हम नये आदमी भरती करेंगे।

मैंने समझाने बुझाने का तरीका अपनाया पर विफल रहा। मजदूरों के नेता भी विफल रहे। अब या तो मुझे अन्य स्थान से आदमी लाकर पुलिस की सहायता से हड़ताल भंग करनी होगी या फिर हड़तालियों की मांग के आगे झुकना होगा। मैं वेतन बढ़ा नहीं सकता और बाहर से आदमी लाना नहीं चाहता। इसलिए मैं

अभी भी शिवनाथ बनर्जी तथा अनेक मजदूर नेताओं के पीछे दौड रहा हू। मैं हैरान हू कि क्या करू, क्या न करू। ऐसी जटिल परिस्थिति मे नैतिक मार्गदर्शन मिले तो अच्छा हो।

अगर तुम्हें लगे कि बापू कार्य-व्यस्त हैं तो यह पत्र उनके सामने मत रखना। यह सब तो मैंने अपना मन खोलने के लिए लिखा है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

३५

शेगाव
२३ अप्रैल, १९३७

प्रिय घनश्यामदासजी

बापू के आदेशानुसार मैं इस पत्र के साथ वह पत्र भेज रहा हू जो उनके पास आया है। क्या यह सब-कुछ सत्य है? पढकर व्यथा होती है। इस बारे मे जब आपको सुभीता हो आप उन्हे लिखेंगे ही।

श्री परमेश्वरीप्रसाद के बारे मे आपने जो लिखा बापू को ज्ञात हो गया और वह सतुष्ट हैं। हम लोग यहा से इलाहाबाद के लिए २५ तारीख को ग्राड ट्रक एक्सप्रेस से रवाना हो रहे हैं। वहा कार्यकारिणी की बैठक मे भाग लेने के बाद यहां २९ को वापस लौट आएगे। अगले महीने की १० तारीख के आसपास तीथल के लिए रवाना होगे वहा सरदार के पास कोई छह सप्ताह ठहरेंगे। सरदार के सामने कुछ पचीसो सवाल पेश हैं और उन्हें बापू की सहायता की जरूरत है। सयोगवश सरदार की निगरानी मे बापू वहा विश्राम करके स्वास्थ्य-लाभ कर सकेंगे। साथ ही जून मास की यहा की भयकर गर्मी से भी छुटकारा मिलेगा।

सद्भावनाओं के साथ,

आपका,
प्यारेलाल

३६

कलकत्ता
२६ अप्रैल १९३७

प्रिय प्यारेलाल

श्री आनन्दन का पत्र ओकाडा की सतलज काटन मिल के मनेजर को भेज रहा हू। उन्होने जो कुछ लिखा है सचमुच वैसा ही है यह विश्वास करने को जी नही करता। इसका एक कारण है।

श्री आनन्दन ने मेरे साथ सम्पर्क बनाये रखा है और बीच बीच मे वह मुझे चिट्ठी पत्री भी देते रहते हैं। हाल ही मे मैं ओकाडा गया तो मैंने उनसे पूछा कि कोई तकलीफ तो नही है सब ठीक ठाक है न? उन्होने कहा सब ठीक है। या अलबत्ता यह कहा था कि उन्हे यह काम रुचिकर नही लगा दक्षिण भारत के लिए गश्ती एजेंट का काम मिल जाये तो अच्छा रहेगा। मैंने उन्हें बताया कि उत्तर भारत की मिल द्वारा तैयार कपडा दक्षिण भारत मे खपाने की आवश्यकता नही है। इसलिए उन्हे वहा गश्ती एजेंट बनाकर भेजना निरर्थक होगा। उन्होने कहा कि वैसी स्थिति मे उन्हे उत्तर भारत मे ही कपडा बेचने का काम दे दिया जाए, क्योकि उन्हे क्लर्की की अपेक्षा वह काम अधिक रुचिकर लगेगा। मैंने उन्हे बताया कि यह भी सम्भव नही है क्योकि एक तो इस काम के लिए तकनीकी ज्ञान चाहिए दूसरे कमीशन एजेंटो को जमानत के रूप मे रकम जमा करानी होती है।

मेरी किसी भी मिल मे कोई भी रूढ़िवादी मनेजर नही है इसलिए उनके इस कथन पर कि उन्हे घृणा और उपहास की दृष्टि से देखा जाता है विश्वास करने को दिल गवाही नही देता। मैं आनन्दन का बापू के नाम लिखा पत्र ओकाडा मिल के मनेजर के साथ इसलिए भेज रहा हू कि वह उन्हे बुलाकर पूछें कि उन्होंने जो आरोप लगाया है उसमे कहा तक सचाई है। यदि उनके सभी आरोप प्रमाणित हुए तो मैं आवश्यक कारवाई करूगा।

भवदीय
घनश्यामदास

३७

ओकाडा
२७ अप्रल, १९३७

प्रिय महात्माजी,

मुझ पता चला है कि आपने मेरा पत्र विडलाजी के पास भेज दिया है। मैंने वह पत्र कोई शिकायत के रूप म नही लिखा था।

मैं आपको अपने जीवन के एकमात्र पथ प्रदर्शक के रूप मे मानता हू और आपकी प्रतिदिन उपासना करता हू। इस कारण मैं भी आपके ऊपर अपना थोडा बहुत अधिकार समझने लगा हू। इसलिए मैंने अपनी कठिनाइया आपके सामने रखी, जसे कोई अपने पिता के सामने रखता है। मुझे यकीन है कि आपने विडला जी को मेरा पत्र मेरे प्रति अपने वात्सल्य भाव मे प्रेरित होकर ही भेजा था पर अब जाच पडताल होगी और मेरी स्थिति पहले की अपेक्षा और भी खराब हो जाएगी।

विडलाजी जब यहा पिछली बार आये थे तो उन्होने पूछा था कि क्या मैं आराम स हू? मैंने कहा था जी हा क्योकि मैं अपनी कठिनाइया सर्वोच्च के सामने नही रखना चाहता था और अपने आपको परिस्थितियो के अनुकूल ढालने म लगा था।

आपका भक्त,
एम० पी० आनन्दन

३८

८ रायल एक्सचेंज प्लेस
कलकत्ता
१ मई १९३७

प्रिय महादेवभाई

केसोराम काटन मिल म आशिक हडताल अभी चल रही है और मजदूर नेताओ के अवतक के सारे प्रयास निष्फल सिद्ध हुए हैं। मैंने मजदूरो को जो ताजा वचन दिया वह था कि वे तुरन्त काम पर आ जाए और अपनी मागें पंच-फैसले के

लिए दे दें। मैंने यह भी कहा कि यदि पच लोग आपस म एकमत न हो सकें, तो मामला अतिम निणय के लिए राजेन्द्र बाबू अथवा टण्डनजी के सुपुद कर दिया जाए। शिवनाथ बनर्जी तथा अन्य लोगों को यह सुझाव पसद आया। वे मजदूरों को प्रभावित कर पाएगे इसम मुझे शका है। मैं तो यह महसूस करता हू कि मजदूर नेता मजदूरों को हडताल के लिए उकसा तो सकते हैं, बस उसके बाद स्थिति उनके बूते के बाहर हो जाती है। अब मैं स्वतत्र रूप स काम करूगा। पर कलकत्ते म हडतालें व्यापक रूप धारण कर रही हैं इसलिए मुझे लगता है कि इस हडताल का अत होने म अभी कुछ समय लगगा। मुझे तो यही आशा है कि मैं मिल का दरवाजा बन्द करने को बाध्य नही होऊगा क्योकि वसा करने से और भी ३ ४ हजार आदमी बेकार हो जाएगे।

सप्रेम

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

वर्धा

३६

तार

१ ५ ३७

महादेवभाई देसाई

वर्धा (मध्य प्रात)

क्या बापू गुजरात म पूरी मई भर रहेंगे ? प्रोग्राम लिखो।

—घनश्यामदास

बिडला ब्रदस

कलकत्ता

वर्धा गज
१ मई, १६३७

घनश्यामदासजी
मारफत लकी,
कलकत्ता

६ तारीख का रवाना होंगे। पूरी मई भर गुजरात म ठहरेंगे।

—महादेव

४०

तार

महादेवभाई देसाई,
वर्धा

तार मिला। यूरोप-यात्रा से पहले बापू से कहा मिलू—गुजरात म या वर्धा म ?

—घनश्यामदास

२ ५ ३७

४१

भाई घनश्यामदास

मिल के बारे म नैतिक दृष्टि यह कहती है कि मजदूरा से कह देना जब तक व न्याय पुर मर नही चलेंगे तब तक मिल बन्द रहेगी नये आदमी नही लिये जायेंगे। व मकान खाली करके चले जायेंगे और हल्ला नही मचायेंगे। तब हो नये आदमी से काम चलेगा। मेरा तो ख्याल है कि यह माग नैतिक ता है ही आर्थिक भी है। इसमे पूण उत्तर न आ जाय तो पूछो। ६ तारीख को बारडोली जाता हू।

१२ ता० तीथल Bulsar हरिजन-सेवक संघ की कार्यकारिणी समिति तीथल मिल सकती है।

बापू के आशीर्वाद

शेगांव
वर्धा
२ ५ ३७

४२

मगनवाड़ी
वर्धा (मध्य प्रान्त)
४ मई १९३७

प्रिय घनश्यामदासजी

मैं यह नहीं जानता था कि आप यहां कब आ रहे हैं, इसलिए मैं आपको अधिक निश्चित उत्तर नहीं दे सका। आजकल मुलाकातियों का जमघट कुछ कम है और ६ तारीख की संध्या तक बापू से मिलना सुगमतर है। उस दिन संध्या को हम बारडोली के लिए चल पड़ेंगे। बारडोली में मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप उनसे मिलने की कोशिश न करें, क्योंकि वहां एक गांव से दूसरे गांव का भ्रमण करने में इतने संलग्न रहेंगे कि शायद आप उन्हें वहां पकड़ भी न पाएं। तीथल एक छोटा सा कस्बा है पर आप तो जानते ही हैं, बापू जहां जाते हैं, वह जगह धर्मशाला का रूप धारण कर लेती है। इसके अलावा वहां ठहरने के लिए भी पर्याप्त जगह नहीं होगी। पर आप अपनी सुविधा के अनुसार स्वयं ही सोच लेंगे कि क्या करना ठीक रहेगा।

बापू का नैतिक नुस्खा आपको अबतक मिल चुका होगा। आशा है, वह आपको रुचेगा।

सप्रेम
महादेव

४३

वर्धा
५ मई १९३७

प्रिय घनश्यामदासजी

मैं जो चिट्ठी इसके साथ आज भेज रहा हू वह मुझे अपने पत्र के साथ कल भेजनी चाहिए थी। इससे पहले का पत्र भी आपके पास पहुच चुका होगा और आपने जाच पडताल का काम शुरू कर दिया होगा। यदि यह मामला सच्चा है, तो मैं अच्छी तरह जानता हू कि आपके हाथो न्याय ही होनेवाला है, अन्यथा नही। मैंने इस भलेमानस को तसल्ली दी है कि उसने इस मामले म जब बापू क माध्यम से आपका ध्यान आकृष्ट किया है तो इसमें उसे भयभीत नही होना चाहिए। मैं जानता हू कि आपकी विदेश यात्रा का समय निकट है इसलिए इस बारे मे जाच पडताल करने के लिए समय नही रह गया है। पर मुझे आशा है कि आप यह मामला किसी ऐसे आदमी के सुपुर्द कर जाएग, जो यह देख सकेगा कि इस बेचारे क साथ यदि अन्याय हुआ है तो उसे न्याय मिले।

जमनालालजी एक ऐसे मानहानि के मामल म फसे हुए हैं जो उन्होने एक समाचार-पत्र के खिलाफ दायर कर रखा है। इस समाचार पत्र की पीठ पर इस प्रान्त के सनातनी और काग्रेस विरोधी ब्राह्मण है और इस पत्र ने नागपुर के एक ख्यातनामा पर छिछोरे वकील को लगाया है जो जमनालालजी को कभी समाप्त न होनवाली जिरह करके परेशान कर रहा है।

आज आपके तार की बाट जोह रहा हू।

क्या हडतालियो को समझ आ गई ?

सप्रेम
महादव

श्री घनश्यामदास बिडला
८ रायल एक्सचेंज प्लेस
कलकत्ता

४४

कलकत्ता
६ मई, १९३७

प्रिय महादेवभाई

मैं २७ को जहाज पर सवार हो रहा हू । तुम्हारा पत्र आज सुबह ही पहुचा । उसे पढकर मुझे लगा कि वर्धा मे ही बापू से मिलना ठीक रहता । वसे तीथल जाने से दुहरी यात्रा स बच जाता क्योकि हर हालत म मुझे बम्बई तो जाना ही है । पर तुम्हारी चिट्ठी स लगता है कि तीथल मे ठहरने की समुचित व्यवस्था नही हो पाएगी । मुझे ठहरने के लिए स्थान की जरूरत नही है । यदि वर्षा न होती हो, तो मैं तो खुल आकाश के नीचे बिस्तर लगा सकता हू । पर जिस चीज की जरूरत रहेगी वह है पाखाना । मैं अपना रसोइया साथ लाऊगा जो मेर भोजन की व्यवस्था करेगा । और यदि जमनालालजी के यहा जसा खाना मिल जाता है वसा मिल जाए तो मुझे रसोइये की भी जरूरत नही रहेगी ।

अगले सोमवार को बनारस के लिए रवाना होऊगा । २० के आसपास बम्बई पहुचने की उम्मीद है । उसके बाद तीथल के लिए निकलूगा । आशा है बापू को मेरा यह यात्रा क्रम पसद आएगा ।

हडताल की बाबत मुझे बापू का उत्तर मिल गया है । उनका नुस्खा बडे काम आया । जसी कि मुझे आशका थी मजदूरो ने वापस आकर मुझे बताया कि ऐस पच का निर्णय वे नही मानेंगे जिनका अच्छा प्रभाव न हो । पर मजदूर लोग काम पर आने लग है । हा उन क्वाटरो क मजदूरो को छोडकर जहा उन्हे डराया-धमकाया जा रहा है । डराने धमकाने का सिलसिला अब भी जारी है । केसोराम म नामी मुसलमान गुडो की भरमार है । उनम पार पाने क लिए हद दर्जे की व्यवहारकुशलता और चतुराई की जरूरत है । पर मुझे इस बारे म कोई सन्देह नही रह गया है कि मनेजर का भी दोष है । मुझे मालूम हुआ है कि मजदूरो के साथ उसका व्यवहार बिलकुल यात्रिक था और उसम पारस्परिक सम्पर्क का अभाव था । इसके विपरीत मेरी जूट मिल ने बडी खूबी के साथ निभाया जिससे आसपास की जूट मिलो म चल रही हडताल से मेरी जूट मिल के मजदूर जरा भी प्रभावित नही हुए । हाल ही म मैंने मजदूरो की सभा करके उसमे भाषण दिया और मुझे सारे क सारे मजदूर प्रसन्न और सतुष्ट मालूम पडे । मैंने उन्हें यूनियन बनाने की सलाह दी तो इसक लिए वे बड सकोच के बाद राजी हुए ।

अपने २० वर्ष की हड़तालों के अनुभव के आधार पर मैं कह सकता हूं कि जितनी हड़तालें होती हैं, प्रबन्धकों और हड़तालियों में पारस्परिक सम्पर्क न होने के कारण होती हैं।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

४५

कलकत्ता
७ मई, १९३७

प्रिय महादेवभाई

श्री परमेश्वरन पिल्लई ने कोचीन के मामले में लिखा है। उन्हें काम जारी रखने के लिए पैसे की जरूरत है। पता नहीं बापू की क्या धारणा है पर मैं तो कोचीन को तरजीह देना पसन्द नहीं करता। शायद वैसा करने से हम काम को आगे नहीं बढ़ा सकेंगे। पर जब तक बापू का उत्तर न आ जाए तब तक मैं पिल्लई को उत्तर नहीं लिख रहा हूं।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

४६

८ रायल एक्सचेंज प्लेस
कलकत्ता
७ मई १९३७

प्रिय महादेवभाई

श्री आनन्दन के बारे में मुझे प्यारेलाल ने लिखा था। जांच-पड़ताल का काम पूरा हो गया है और उसका परिणाम प्यारेलाल के पास भेज दिया है। तुम्हारी

नजरा स वह गुजरा या नही सो मैं नही जानता। पर इस जाच पडताल के बाद आनन्दन कुछ उद्विग्न सा हो गया है। मैंने उस लिख दिया है कि उसे कोई क्षति नही पहुचायगा और मनजर को इसका जरा भी क्षाभ नही है कि उसन बापू को क्या लिखा। पर वह कुछ परेशान हो गया है क्योंकि उसने जो लाछन लगाये थे उनम से अधिकाश बेसिर पर के साबित हुए। हा सके तो उसे इस बात की तसल्ली दे दो कि जबतक वह ईमानदारी के साथ काम करता रहेगा तब तक निश्चिन्त रह। पर उस मैंन यह भी लिख दिया है कि यदि वह जाना चाहे तो उस ओराडा तक का रेल भाडा और एक महीने का वेतन मिलेगा।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादवभाइ देसाइ
वर्धा

४७

८ रायल एक्सचेंज प्लेस,
कलकत्ता
७ मई, १९३७

प्रिय महादेवभाई

मेरे और लाड लोदियन के बीच तथा मेरे और लाड हैलिफक्स के बीच काफी पत्र-व्यवहार हो रहा है। इसी प्रकार मैं दिल्ली के साथ भी पत्र-व्यवहार के माध्यम से सम्पर्क बनाये हुए हू। लाड लोदियन और लाड हैलिफक्स दोनो ने मुझे आश्वासन दिया है कि सम्मानपूर्ण समझौते के निमित्त जो-कुछ करना आवश्यक होगा उसे करने म कोई कसर नही छोडी जाएगी। मैं इन दोनो को विशेष रूप स बापू के दृष्टिकोण और भारत के आम जनमत की जानकारी देता रहा हू। मैंने चर्चिल को भी चैन की नींद नहीं लेने दी है।

मैं एक मामले म जानकारी हासिल करना चाहता हू। अपनी एक निजी मुलाकात के दौरान बापू ने कुछ खास परिस्थितियो म गवर्नरों के हस्तक्षेप करने के अधिकार को मान्यता दी है। शायद बापू ऑर्डिनरिली—साधारणतया शब्द के इस्तेमाल के बाद म एक ही जैसा रुख अपनाते आ रहे हैं। पर यह शब्द

काग्रेस के प्रस्तावों में ढूढे नही मिलता। इलाहाबादवाले प्रस्ताव में भी यह कहने के साथ-ही-साथ कि भारत शासन विधान को भग करने का कोई इरादा नही है यह मानने से इन्कार कर दिया है कि विरले मामलो में भी गवनरो को हस्तक्षेप करने का अधिकार है। बापू इस प्रस्ताव के साथ अपने उद्गारों का कैसे तालमेल बठाते हैं? क्या बापू की यह धारणा है कि विरले मामलो मे गवनरो के हस्तक्षेप के अधिकार की बात इलाहाबाद के प्रस्ताव मे निहित है?

मुझे 'दिल्ली' ने बताया है कि फामूला के बारे में सबसे बडी कठिनाई यह है कि आगे चलकर दोनो पक्ष उसके अलग-अलग अथ निकालने लग जाते हैं। मैंने इसका उत्तर व्यक्तिगत रूप से दे दिया है, और लाड लोदियन को भी बताया है। अब लाड जेटलैड ने भी फामूला तैयार करने के बारे मे यही आशका प्रकट की है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि 'दिल्ली' की विचारधारा को ह्वाइट-हाल मे जन्म मिला है। बापू ने इस बात का उत्तर अपनी एक प्रेस मुलाकात के दौरान दे दिया है। सम्भव है किसी ने बापू को इन लोगो के मशय की बात बताई हो। पता नही किसने बताई क्योकि जिन लोगो ने वाइसराय से भेंट की उनमे से कोई भी बापू से नही मिला था। हो सकता है, बापू ने इसका अनुमान लगा लिया हो, पर अब जबकि जेटलैड ने इसी आशका को इतने स्पष्ट शब्दो मे व्यक्त किया है, तो शायद यह पत्र पहुचते पहुचते बापू उसका समुचित उत्तर दे चुके होगे।

प्रेस मुलाकात मे काग्रेस के प्रति बरती गई अभद्रता की बात को अधिक स्पष्ट नही किया गया। बापू का कहना है "मैंने यह समझ रखा था कि स्वायत्त शासन व्यवस्था के अन्तगत मन्त्रियो को गवनरो से भेंट करने का औपचारिक अनुरोध मात्र करना पडता है और भेंट हो जाती है।" इसका तो यही अथ हुआ कि गवनरो से भेंट का अनुरोध किया गया और उन्होने भेंट करने से इन्कार कर दिया। बापू का यह आशय कदापि नही था, पर उन्होंने यह स्पष्ट नही किया।

यदि बापू अपने इन उद्गारो का, जिसमे उन्होने गवनरो द्वारा विरले मामलो मे हस्तक्षेप करने की बात स्वीकार की है इलाहाबादवाले प्रस्ताव के साथ तालमेल बठाते हैं तो क्या वह उनके पत्र का आवश्यकता पडने पर उपयोग करने की मुझे अनुमति देंगे?

मेरी राय मे तो लाड जेटलैड की स्पीच बटलर की स्पीच की अपेक्षा अधिक उत्कृष्ट थी और बढिया थी। एक जगह उन्होने कहा "काग्रेस ने जिस विशेषाधिकारों की बात का बतगड बनाया है उनका 'स्वाभाविक स्थिति मे प्रयोग नहीं किया जाएगा।'" और फिर वह श्री बटलर के कथन को दुहराते हैं। देखा जाए तो साधारणतया की अपेक्षा स्वाभाविक स्थिति मे अधिक दम है। पर जिस चीज

का अभाव है वह है सौहार्द । अपने पत्र व्यवहार से मुझे तो यही प्रतीत हुआ है कि ७५ प्रतिशत गलतफहमी है और २५ प्रतिशत पारस्परिक आशका । हम यह मान लेना चाहिए कि ब्रिटेन को काग्रेस के इरादो के बारे मे आशका है।

मेरी व्यक्तिगत धारणा तो यही है कि मतभेद ने बहुत सकीर्ण रूप धारण कर लिया है । बापू ने अपनी आला दर्जे की व्यवहार कुशलता से काम लेकर इन लोगो का मार्ग बहुत कुछ सुगम कर दिया है । पर मुझे कहना पडता है कि खाई को पाटने के लिए अन्तिम पटला भी बापू को ही बिछाना होगा । अग्रेज शासन विशारदो ने यह भली भाति प्रमाणित कर दिया है कि उनमे शासन-काय सम्बन्धी सूझ बूझ और दक्षता दोनो का ही अभाव है । वे स्थिति से जिस ढग से निपट रहे हैं उसके लिए वे प्रशसा के पात्र कदापि नही हैं । पर उनकी त्रुटिया का दण्ड भी तो हम ही भोगना है और इस प्रकार हमारा उत्तरदायित्व दूना हो जाता है । इस विषय पर इतना अधिक विचार विमश हो चुका है कि अब जेटलैंड की स्पीच के बाद यदि कोई गवनर हस्तक्षेप करने का दुस्साहस करेगा तो उसकी खैर नही है ।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

४८

मगनवाडी
वर्धा (मध्य प्रात)
७ मई १६३७

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका पत्र मिला । सयोग की बात जिस समय आपका पत्र पहुचा मैं बापू के पास ही था इसलिए मैंने तुरन्त वह पत्र बापू को पढ़ सुनाया और उन्हें यह जानकर आनन्द हुआ कि उन्होने जो नैतिक नुस्खा बताया वह कारगर साबित हुआ और जहा तक आपकी मिल का सम्बन्ध है वहा किसी प्रकार की गडबडी नहा है । बस असली चीज पारस्परिक सम्पर्क ही है और जितनी हडतालें होती हैं उनमे इसी चीज का अभाव पाया जाता है । उदाहरण के लिए अहमदा

बाद के मिल मालिक अपने मिल-मजदूरो से बात करने म अपनी हठी समझते है। लन्दन म भी ऐसे ही हेठीपन ने घर कर रखा मालूम होता है। यदि उनका बस चले तो वे बापू से कोई वास्ता न रखें। वास्तव म मेरे कानो मे यह बात आई है कि हैलिफक्स न किसी प्रकार का नया पैक्ट न होने देने का सकल्प कर रखा है और वह समझौते की बातचीत चलाए जाने के खिलाफ पूरा जोर लगा रहे है। जेटलड की स्पीच को ही देखिए। यदि वह प्रारम्भ मे ही कह देते, तो यह गति रोध की अवस्था तो उत्पन्न न होती। पर अब क्या होगा—मैं नही जानता। आज बापू न रायटर को इन्टरव्यू दिया। इस पत्र के पहुचने स पहले ही आप अखबारो मे वह पढ चुके हागे। वसा ही इन्टरव्यू उन्होने लन्दन टाइम्स के सवाददाता को भी दिया है।

मेरा मतलब उस असुविधा से नही था जो आपको तीथल मे झेलना पडेगी। मैं अच्छी तरह जानता हू कि आप सब तरह का कष्ट झेलने म समथ हैं। मेरा मतलब भीड भडक्के से था, जिसके कारण आपकी बापू के साथ शातिपूवक बात करने की योजना मे विघ्न पडने की आशका है। यदि इस चीज को छोड दिया जाए तो हम आपके आराम का पूरा बन्दोबस्त करेंगे। तीथल का पता है तीथल डाकखाना वलसाड (बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे)।

सप्रेम,
महादेव

पुनश्च

लक्ष्मीनिवास से कह दीजिए कि मैं अलग डाक से भगवदगीता की एक प्रति बापू के हस्ताक्षरो-सहित भेज रहा हू। वास्तव म, मुझे यह बहुत पहले कर देना चाहिए था।

४६

मगनवाडी
वर्धा
६ मई, १६३७

प्रिय घनश्यामदासजी

आपके विस्तृत पत्र के लिए धन्यवाद। सामन्त-सभा म गत ४ तारीख को लाड जेटलैंड की स्पीच के बाद बापू ने जो दो प्रेम मुलाकातें दी हैं उनसे आप

देख ही लेंगे कि वह सरकार का काम आसान करने में किस प्रकार लगे हुए हैं। आपके अवलोकनार्थ उन दो मुलाकातों का विवरण इस पत्र के साथ रख रहा हूं। चिह्नित वाक्य को पढ़िए। क्या उसमें कांग्रेस की मांग को कम-से-कम करके नहीं दिखाया गया है ? इतनी कम मांग की गई है कि वह तुरंत स्वीकारी जा सके। बापू का तो अब सिर्फ यही कहना रह गया है कि संकट उपस्थित होने पर मंत्रियों को त्यागपत्र देने के लिए बाध्य करने की अपेक्षा उन्हें बर्खास्त कर दिया जाए। ऐसा कौन मूर्ख गवर्नर होगा जो आए दिन इन्हें बर्खास्त करने की धमकी देने की बात सोचेगा ? अब आपको इसी चिह्नित वाक्य को सामने रखकर पत्र-व्यवहार का सिलसिला जारी रखना चाहिए। आप इस मामले से इतने सवधित हैं कि उचित लगे तो समुद्री तार भी भेज सकते हैं क्योंकि मेरी समझ में हाल की इस प्रेस मुलाकात के बाद अब सरकार का काम बहुत सहज हो गया है। पर वे लोग अपने पत्रों में तो सहायता देने की तत्परता व्यक्त करते हैं पर क्या आपको भरोसा है कि वे वास्तव में वैसी सहायता देने के लिए प्रस्तुत हैं ? मुझे तो यह खबर मिली है कि एकमात्र हैलिफक्स ही ऐसा व्यक्ति है, जो समझौते की बात चलाए जाने के विरुद्ध है। दूध का जला छाछ को फूंक फूंककर पीता है, इसीलिए उसने भारत सचिव को यह सुझाया मालूम होता है कि गांधी से समझौता करना वांछनीय नहीं है। जेटलैंड और बटलर के मुकाबले में तो लन्दन टाइम्स' का लहजा बापू के प्रति अधिक मैत्रीपूर्ण और आदरसूचक है। हां यह अवश्य है कि जेटलैंड के इधर के उदगारों में सुधार हुआ है। यदि जेटलैंड कांग्रेस के प्रति अपमानजनक भाषा का व्यवहार करने के बजाय दिल्लीवाले प्रस्ताव के तुरंत बाद वह सब कहता जो वह अब कह रहा है तो मांग अधिक सुगम हो जाती। अब हमें उस न्यूनतम आश्वासन की मांग पर अड़े रहना चाहिए जो बापू ने प्रस्ताव में प्रस्तुत की है। मूल प्रस्ताव में उसका उल्लेख नहीं था पर जैसा कि बापू ने अपनी अनेक मुलाकातों में कहा है वह उस प्रस्ताव में अंतर्निहित था। एक पखवाड़े पहले बापू ने मैनचेस्टर गार्जियन के संवाददाता के साथ जो मुलाकात की थी, उसके दौरान उन्होंने इस बात का विशेष रूप से इंगित किया था।

सप्रेम
महादेव

५०

८, रायल एक्सचेंज प्लेस,
कलकत्ता
१० मई, १९३७

प्रिय महादेवभाई

तुम्हें लार्ड हैलिफक्स के बारे में गलत खबर मिली मालूम होती है। मैं अपने नाम आए उनके एक पत्र से उद्धरण देता हूं, "मैं अच्छी तरह जानता हूं कि पारस्परिक सम्पर्क स्थापित करने की दिशा में क्या क्या कठिनाइयां हैं और यदि ऐसे सम्पर्क स्थापित हो सकें, तो आपकी भांति मैं भी उन्हें असाधारण उपलब्धि समझूंगा। इस समय हम बड़ी कठिनाई के दौर से गुजर रहे हैं और मेरी यह धारणा है कि एक बार शासन विधान अमल में आना शुरू हुआ कि इस कठिनाई से पार पाना सहज बात हो जाएगा।" लार्ड लोथियन और लार्ड हैलिफक्स के पास से जो पत्र मुझे मिले हैं उनसे पता लगता है कि वह कठिनाई क्या है जैसा कि इस पत्र के साथ नत्थी लार्ड लोदियन के पत्र की नकल से तुम्हें जाहिर होगा। उन्हें जिस बात की आशंका है, वह यह है कि दोनों ही ओर से विश्वासघात के आरोप और प्रत्यारोप का सिलसिला शुरू हो जाएगा। मैं अपने एक पत्र में तुम्हें इसका संकेत दे भी चुका हूं। मैं लार्ड लोथियन के कथन से सहमत नहीं हूं पर हम उन लोगों की आशंका की भी जानकारी रखनी चाहिए।

मुझे अब कहीं जाकर पता लगा कि बापू से इस आशंका की बात किसने कही। यह जाहिर है कि लार्ड लोदियन ने ही बापू के नाम अपने पत्र में यह कहा था। पर अब लार्ड जेटलैंड की अन्तिम स्पीच पढ़ने के बाद बापू के वक्तव्य से सहमत होने में मैं कठिनाई अनुभव करता हूं। मैं बराबर उनकी पोजीशन समझता आ रहा हूं। साथ ही जब मैंने लार्ड जेटलैंड की स्पीच पढ़ी, तो मुझे लगा कि दोनों की पोजीशन प्रायः एकसमान है। इसलिए जब मैंने बापू की प्रेस मुलाकात का ब्योरा पढ़ा, तो मुझे लगा कि या तो मैं बापू की पोजीशन को गलत समझता आ रहा था, अथवा उनका रुख अब पहले से कठोर हो गया है। मेरी तो अब भी यही धारणा है कि मैंने बापू की पोजीशन को गलत नहीं समझा था। अब उनके रुख में ही कठोरता आ गई है। तुमने भी अपने पत्र में कहा है कि "यदि जेटलैंड प्रारम्भ में ही यह बता देते तो यह गतिरोध उत्पन्न नहीं होता। इससे पता लगता है कि लार्ड जेटलैंड की स्पीच निर्दोष है पर वह गलत समय पर दी गई है।

मेरा यह अनुभव रहा है कि जब कोई उनसे मैत्री की भावना लेकर बात करता है तो वह तुरत उसे ग्रहण करके वैसा ही उत्तर देते हैं। प्रारम्भ मे जेटलैंड का रवैया वैसा नहीं था और यदि उसमे कोई अन्तर हुआ है तो लोकमत के दबाव के कारण ही हुआ होगा। पर क्या अब बापू के लिए कठोरता का रुख अपनाना उचित होगा ? और यदि दोनो के दृष्टिकोणो मे नहीं के बराबर भेद है जैसी कि मेरे अलावा अन्य अनेक लोगो की धारणा है तो क्या बापू के लिए जेटलैंड की स्पीच को अपेक्षाकृत अधिक सहानुभूति के साथ ग्रहण करना उचित नहीं होगा ? बापू जब किसी पर विश्वास करते है, तो आखें मूदकर, और जब किसी पर से उनका विश्वास उठ जाता है तो वह बेहद कठोर हो जाते हैं। प्रारम्भ मे उनकी कठोरता न्याय सिद्ध होती है, पर उस समय वैसा रुख जाहिर नहीं हुआ। अब दूसरा पक्ष झुकता दिखाई दे रहा है तो उन्होने कठोरता का रुख अपना लिया है। कम-से कम मेरी तो यही धारणा है।

आज दिल्ली से एक पत्र मिला है जिसमे मुझे यह पढने को मिला है, भारत सचिव की स्पीच सदभावना से परिपूर्ण थी और उससे परिस्थिति अब पूर्णतया स्पष्ट हो गई है। यदि कोई शक शुबह की गुजाइश रह गई हो तो अब इस स्पीच से वह दूर हो जाना चाहिए।

यह बात ध्यान मे रखनी चाहिए, और मैंने बापू तथा वाइसराय दोनो से यही कहा था कि द्वितीय श्रेणी के आदमियो की मेल मुलाकात मे कठिनाइया पैदा होगी क्योकि दोनो ही पक्षो के इस श्रेणी के आदमी स्वय कुछ करने मे समर्थ नहीं होंगे। बापू और वाइसराय की भेंट से यह गुत्थी शायद बहुत पहले सुलझ जाती। पर किसी-न किसी कारणवश वैसा सम्भव नहीं हुआ, क्योकि दूसरे पक्ष के दिमाग मे आशका बनी हुई है। गवर्नरो और प्रान्तीय नेताओ की मुलाकात के अवसर पर भी वैसी ही कठिनाइया पैदा हो सकती हैं। इसलिए मुझे आशका हो रही है कि कहीं इतिहास की पुनरावृत्ति न होने लगे। इसलिए गवर्नरो और प्रान्तीय नेताओ की भेंट से पहले यदि भारत-सचिव की स्पीच का आधारस्वरूप मानकर आगे कदम न उठाया गया तो सकट अनिवार्य हो जाएगा और यदि वैसा हुआ तो बडे दुर्भाग्य की बात होगी क्योकि बापू की ओर से हद दर्जे की सहिष्णुता बरते जाने और भारत सचिव की ओर से स्थिति के पूर्ण स्पष्टीकरण के बाद अब सकट आने का कोई उचित कारण बाकी नहीं रह गया है। इतने वाद विवाद के पश्चात् अब पोजीशन को इतना खुलासा कर दिया गया है कि मत्री लोग कोई बहुत ही मूर्खता का काम कर बैठे तो बात दूसरी है वरना गवर्नरो को हस्तक्षेप करने का कोई अवसर मिलेगा ऐसा नहीं लगता। मैं समझता

है कि मंत्री लोग भी आत्म-सम्मान रख सकें। इस स्थिति पर बापू को पुनर्विचार करना चाहिए।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
[illegible]

५१

रायटर, बम्बई को भेजे गये तार की नकल
(गांधीजी से मुलाकात)

जब गांधीजी से पूछा गया कि लार्ड जेटलैंड की स्पीच का उन पर क्या असर हुआ तो उन्होंने कहा: इस विषय पर भारत-सचिव ने पिछली बार जो-कुछ कहा था उसके मुकाबले उनकी यह स्पीच अच्छी है। पर इसमें गतिरोध दूर करने की दिशा में कोई प्रगति नहीं हुई है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के जिस प्रस्ताव के द्वारा आश्वासन की माँग की गई थी, कार्यकारिणी का अन्तिम प्रस्ताव उसकी सम्यक् व्याख्या है। यदि गवर्नर लोग यह आश्वासन दे दें कि असह्य प्रतीत होनेवाली स्थिति पैदा होने पर वे मंत्रियों से त्याग-पत्र की माँग करेंगे या उनके गवर्नरों की इच्छा के अनुकूल काम करने के बजाय वे उन्हें स्वयं बर्खास्त करने की जिम्मेदारी ले लेंगे तो इससे भारतीय शासन-विधान में किसी प्रकार का खिंचाव पैदा नहीं होगा, क्योंकि गवर्नरों को उन्हें बर्खास्त करने का अधिकार है ही। व्यापक विरोध के रहते गवर्नरों द्वारा गठित मंत्रि-संस्था की कार्य-सिद्धि के दृष्टान्त देने से स्थिति में सुधार होना तो दूर, उलटे संदेह को ही बल मिलता है। मेरी राय में कांग्रेस सच्चे दिल से आचरण कर रही है और यदि उसने पद-ग्रहण किया तो वैधानिक उपायों का अवलम्बन करके वह पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति के लिए आगे बढ़ने की अपनी शक्ति के अनुसार भरपूर प्रयत्न करेगी।

५२

लन्दन 'टाइम्स' को भेजे गये समुद्री तार की नक्ल

मैं कह चुका हू कि जहा तक लहजे का सम्बन्ध है लाड स्नेल के प्रश्न क उत्तर म लाड जेटलड की स्पीच उनकी पिछली स्पीच के मुकाबले बेहतर है पर उससे कायकारिणी के अन्तिम प्रस्ताव म निहित अपेक्षा की पूर्ति नही होती। वह प्रस्ताव बिलकुल स्पष्ट है। यदि ब्रिटिश सरकार सचमुच यह चाहती है कि जहा वहा काग्रस को बहुमत प्राप्त हो वहा वह पद ग्रहण करे तो जिस आश्वासन की माग की गई है उसे देने म उस कोई सकोच नही होना चाहिए। यदि लाड जेटलड को यह आशका है कि वसे आश्वासन के अथ लगाने मे आग चलकर गलतफहमी पदा हो सकती है तो काग्रसी नेताओ का भी तो यही तक है और उसे सामने रख कर पद ग्रहण करने का विचार उस त्याग देना होगा। क्योकि पद ग्रहण करने के फलस्वरूप मत्रिया और गवनरो की भेंट मुलाकात का सिलसिला शुरू हो जाएगा। आश्वासन देने क जो गलत मानी लगाए जा सकते हैं तथा उससे जो गलतफहमी पैदा हो सकती है वह इन भेंट मुलाकाता के द्वारा भी सम्भव है। मेरा कहना यह है कि कायकारिणी क जिस प्रस्ताव क आधार पर यह स्पीच दी गई है उससे किसी प्रकार की गलतफहमी पदा हो ही नही सकती और मुझे अभी तक ऐसा कोई कानून विशारद नही मिला है, जिसने यह कहा हो कि काय-कारिणी क प्रस्ताव म इगित आश्वासन देन मात्र से शासन विधान की धाराआ का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप म कोई उल्लघन होता है।

५३

१३ मई १९३७

प्रिय महादेवभाई

पत्र के लिए धन्यवाद। मैंने राजनैतिक स्थिति क बारे म जो दूसरा पत्र लिखा था अब उसक उत्तर की बाट जोह रहा हू।

मैं बग्गास्तगी बनाम इस्तीफ की बारीकी का पूरे तौर स समझन म अभी

तक असफल रहा हू। अब बापू से मिलगा तो इस विषय पर बातचीत करूगा। इस बीच 'स्टेटसमैन' का साथ भेजा यह लेख तुम्हें रोचक लगेगा। यदि बापू की नजरो म यह न गुजरा हो तो उन्हें दिखा देना। ऐसा लगता है कि यह धारणा फलती जा रही है कि बापू के सीधे-साद उदगार के पीछे कोई गूढ बात छिपी है, जो भाषा क पारायण मात्र से हृदयगम नही की जा सकती। आम धारणा तो यही है कि लाड जेटलैंड की स्पीच से उद्देश्य सिद्ध हो गया समझना चाहिए। मुझे आशका है कि जब तक बापू और वाइसराय मे भेंट नही होगी और दोनो इस विषय पर विचार विमश नही करेंगे तब तक गलतफहमी दूर नही होगी।

बापू ने तथाकथित विश्वासघात के आरोपो के खिलाफ प्रस्तुत तर्कों का उत्तर दे दिया सो ठीक, पर उससे आग का रास्ता मुझे दिखाई नही पड रहा है। मुझे इसम तनिक भी सदेह नही है कि उभय पक्ष सकट की घडी को टालना चाहते हैं पर तो भी हम उसी ओर अग्रसर हो रहे है। हा धीरे-धीरे बढ रहे हैं पर बढ अवश्य रहे हैं।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
तीथल

५४

तीथल
बरास्ता बलसाड
१३ मई १९३७

प्रिय घनश्यामदासजी

कोचीन के बारे म आपके पत्र का उत्तर देना शेष रह गया। इस मामले को साधारण समझकर छोड नही देना चाहिए। बापू की राय म यह एक गम्भीर बात है और इसके लिए डटकर प्रचार करना आवश्यक है। पर यह भी स्पष्ट है कि हम इस प्रचार-काय का व्यय नही उठा सकेंगे। इस प्रकार की सहायता अधिक दिना तक जारी नही रखी जा सकती। बापू का विचार है कि आप परमेश्वरा पिल्लई स कहें कि वह पूरा बजट तयार करके आपको भेजे। तब हम उस पर

विचार करके ठीक ठीक निर्णय कर सकेंगे।

हम २० तारीख को आपके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

सप्रेम
महादेव

५५

तीथल (वरास्ता वलसाड)
१४ मई १९३७

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका १० तारीख का विस्तृत पत्र तथा उसके साथ भेजी कटिंग मिली। बापू ने पत्र भी पढ़ा और कटिंग भी देखी। उनका कहना है कि आपने भी स्टेटसमन की भांति ही यह गलत धारणा बना ली मालूम होती है कि यह कोई नयी माग पेश की गई है। वास्तव में कांग्रेस की माग के स्पष्टीकरण ने सरकार का काम आसान कर दिया है और अब लार्ड जेटलैंड अथवा और किसी के लिए यह कहना सम्भव नहीं होगा कि यदि वैसा आश्वासन दिया गया तो उसके अर्थ निकालने और विश्वासघात करने के आरोप लगाने का सिलसिला शुरू हो जाएगा। अब बापू द्वारा कांग्रेस की माग को सक्षिप्त रूप दिए जाने के बाद यदि आश्वासन दे दिया जाए तो न तो उसके अर्थ लगाने का प्रश्न उठेगा और न विश्वासघात के आरोप लगाने का ही। आप इस दृष्टि बिंदु को नहीं पकड़ पाए यह जानकर थोड़ा आश्चर्य हुआ।

आपने मेरे वाक्य का उद्दिष्ट से अधिक अभिप्राय ग्रहण किया प्रतीत होता है। मेरा अभिप्राय तो यही था कि लार्ड जेटलैंड ने जो स्पीच दी है यदि वह दो महीने पहले दी जाती तो उससे समझौता करने में बहुत सहायता मिलती। दूसरे शब्दों में उस वक्तव्य के बाद बापू द्वारा मागे गये आश्वासन को स्वीकारना सहज हो जाता। बापू ने यह बात सार्वजनिक रूप से स्वीकार की है कि स्पीच का लहजा बड़ा मैत्रीपूर्ण है पर यह कहने की गुजाइश तो रह ही जाती है कि भारत शासन विधान में जो कुछ कहा गया है उससे अधिक कुछ नहीं कहा गया। भारत सचिव को इस वस्तु स्थिति का सामना करने को तैयार हो जाना चाहिए कि जिस पार्टी को देश में सबसे बड़ा बहुमत प्राप्त हुआ है उसके द्वारा एक नयी परिपाटी को जन्म देने की माग पेश की जा रही है, अतएव यह माग पूरी करनी ही होगी।

लाड लोथियन के पत्र म कोई नयी बात नही है, न कही गई है। उन्होंने बापू को इसी तरह की इससे भी बडी चिट्ठी लिखी थी।

जब मिलेंगे तो और अधिक बातें होगी।

सप्रेम,
महादेव

५६

बिडला हाउस,
मलाबार हिल, बम्बई
२६ मई १९३७

प्रिय महादेवभाई

मैंने बापू का तक सम्बद्ध क्षेत्र तक पहुचा दिया है। मैं यह मानता हू कि इस्तीफे की अपेक्षा बर्खास्तगी से हमे अधिक सुविधा मिलती है पर मेरी धारणा है कि उसके बाद हस्तक्षेप की गुजाइश नही रहेगी, ऐसी कोई बात नही है। तुमने देखा ही होगा कि बगाल मे मत्रियो न मजिस्ट्रेटो को कतिपय हडतालियो पर मामला चलाने के लिए जो निर्देश दिये थ, उसका उ होने तत्परता के साथ पालन नही किया। जब सम्बद्ध मत्री ने इस्तीफा देने की धमकी दी तब कही जाकर सब कुछ ठीक-ठाक हुआ। इतने पर भी मुझे यह लगा कि बर्खास्तगी की माग पूरी करने क बाद भी गवनर के लिए परोक्ष रूप से हस्तक्षेप करना सम्भव रहेगा। उदाहरण के लिए यदि सरकारी कमचारी मत्रिमडल की नीति का यथाथ पालन न करें और तब भी गवनर मत्रिमडल को बर्खास्त करने का आश्वासन मौजूद रहने के बावजूद बर्खास्त न करे तो ऐसी स्थिति म सम्बद्ध मत्री को क्या करना होगा ? और तब उसके पास इस्तीफा देने के सिवाय और क्या चारा रहेगा ? इस प्रकार यदि ऊपर से गवनर का तथा नीचे से सरकारी अमले का सहयोग न मिले तो वैसी स्थिति म इस्तीफे की ही नौबत आएगी। इसलिए मेरी अभी भी यही राय है कि एकमात्र इस बात को लेकर नाता तोडना ठीक नहीं रहेगा।

यहा और कलकत्ते में काग्रेसी विचारधारावाले जो गर काग्रेसी मुझसे मिल हैं उन्हें यह बर्खास्तगीवाली बात बिलकुल पसन्द नही आई है। सबका यही कहना है कि जेटलैंड की स्पीच के बाद अब पद-ग्रहण करने म इनकार करने म भारी चूक होगी। मुझे विश्वस्त सूत्रो से पता चला है कि सरकार भी झुकने को

तयार नहा है और यदि काग्रेस पद ग्रहण करने से इकार करती रही तो वह ९३ (ज) धारा लागू करन की तयारी कर रही है।

बापू को इन तयारियो स परेशान होन की जरूरत नही क्याकि वसी स्थिति उत्पन्न होने पर सरकार जो कुछ करेगी, घबराहट म करेगी। मैं यह बात स्वीकार करने का तैयार नही हू कि सरकार यह नहीं चाहती कि काग्रेस पद ग्रहण करे। वास्तव म मरी तो यह धारणा है कि सरकार न केवल यही चाहती है कि काग्रेस पद ग्रहण करे बल्कि यदि मत्रि मडला म उपयुक्त लोग लिये गये तो गवनरो का पूण सहयाग भी उपलब्ध रहगा। वास्तव म सरकारी क्षेत्रो म यह धारणा व्याप्त है कि काग्रस पद ग्रहण करन की इच्छुक नहीं है वह तो शासन विधान को भग करवाना चाहती है इसीलिए दुनिया भर क बहानो म काम ले रही है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि अविश्वास की भावना दाना ओर काम कर रही है। अत मरी अब भी यही राय है कि अब जबकि लाड जेटलड की स्पीच के द्वारा हम *इच्छित वस्तु की प्राप्ति हो गई है नाता तोडना एक चूक ही होगी।* मैंने बापू के निणया की उपादेयता क बारे म आज तक सशय नही किया पर इस मामले म मुझ सशय है इसीलिए यह सब लिख रहा हू।

मैं काग्रेसवादी नही हू और काग्रेस म मेरी काई हैसियत भी नही है पर मैं यह सब बताना अपना कत्तव्य समझता हू। आशा है बापू स्थिति पर पुर्नविचार करेंगे।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

५७

तीथल, बलसाड
२६ मई, १९३७

प्रिय श्री लथवट

आपन मुझे लिखा यह ठीक ही किया। मरे बाद क वक्तव्यो से मरी नीति म काई फक नहीं पडा है। बर्खास्तगीवाला फामूला तो इस प्रश्न का तोड है कि यदि शासन विधान म गवनर क विशेषाधिकार की धारा बनी रहती है तो यह मान ही लिया गया है कि एसी परिस्थिति आ सकती है जबकि गवनर का हस्त

क्षप जरूरी हो जाएगा और उसे हस्तक्षेप करना पडेगा। मैंने तो कहा ही है कि मैं ऐसे मत्रि मडल की कल्पना नही करता जिसे विधान-सभा के अविश्वास प्रस्ताव के बिना हटाया ही न जा सके, पर मैं किसी ऐसी स्थिति की भी कल्पना कर सकता हू जब गवनर और मत्रि मडल मे मतभेद उत्पन्न हो जाए और तब विवेक के द्वारा वह मतभेद दूर करना असम्भव प्रतीत हो। मैंने स्वेच्छापूवक त्यागपत्र पर बर्खास्तगी को इसलिए तरजीह दी है कि मैं मत्रियो को बर्खास्त करने की जिम्मेदारी गवनरो के कधे पर रखना चाहता हू। वैसा करने से छेड-छाड की आशका दूर हो जाएगी, और उस पार्टी के लिए जो ब्रिटिश साम्राज्यवाद की शासन प्रणाली तथा शासन विधान की विरोधी है शासन-काय निभाने का काम आसान हो जाएगा। अब यदि बर्खास्तगी और लाड जेटलड ने जो कहा है उसमे सचमुच अधिक अन्तर नही है तो काग्रेस से झुकने को कहने के बजाय सरकार के लिए वह बचा खुचा अन्तर भी दूर करना श्रेयस्कर होगा। यह प्रमाणित करने के लिए कि मेरी मूल स्थिति मे कोई अन्तर नही पडा है मैं अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के मूल प्रस्ताव मे जो उचित आश्वासन पाया गया है उसकी पूर्ति से ही सतुष्ट हो जाऊगा। कायकारिणी का हाल का प्रस्ताव वास्तव मे अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के प्रस्ताव की व्याख्या मात्र है। वह न उससे अधिक की माग करता है न उससे बेहतर ही है। आशा है आपने जो मुद्दे उठाये हैं इस पत्र के द्वारा उन सबका यथेष्ट उत्तर मिल गया होगा।

यदि आप इससे कुछ अधिक जानना चाहते हो तो अवश्य लिखिए।

भवदीय
मो० क० गाधी

श्री जे० जी० लेथवेट
वाइसराय के निजी मत्री

५८

भाई रामेश्वरदास

तुमारा पत्र मिल गया था। रुपये के बारे मे भी बछराज कपनी से पता मिल गया है। एक लाख तक तो ग्राम उद्योग सघ मे जायगा। निजी खच के लिये जा देते हो सो तो अलग है ही।

तयार नही है और यदि काग्रेस पद ग्रहण करने से इन्कार करती रही तो वह ६३ (अ) धारा लागू करने की तयारी कर रही है।

बापू को इन तयारियो से परेशान होने की जरूरत नही, क्योकि वसी स्थिति उत्पन्न होने पर सरकार जो कुछ करेगी घबराहट मे करेगी। मैं यह बात स्वीकार करने को तयार नही हू कि सरकार यह नही चाहती कि काग्रेस पद ग्रहण करे। वास्तव म मेरी तो यह धारणा है कि सरकार न केवल यही चाहती है कि काग्रेस पद ग्रहण करे बल्कि यदि मन्त्रि मडलो म उपयुक्त लोग लिये गये तो गवनरो का पूर्ण सहयोग भी उपलब्ध रहेगा। वास्तव मे सरकारी क्षेत्रो मे यह धारणा व्याप्त है कि काग्रेस पद ग्रहण करने का इच्छुक नही है वह तो शासन विधान को भग करवाना चाहती है इसीलिए दुनिया भर के बहानो म काम ले रही है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि अविश्वास की भावना दोनो ओर काम कर रही है। अत मेरी अब भी यही राय है कि जब जबकि लार्ड जेटलड की स्पीच के द्वारा हम इच्छित वस्तु की प्राप्ति हो गई है नाता तोडना एक चूक ही होगी। मैंने बापू के निर्णयो की उपादेयता के बारे म आज तक सशय नही किया पर इस मामले म मुझे सशय है इसीलिए यह सब लिख रहा हू।

मैं काग्रेसवादी नही हू और काग्रेस मे मेरी कोई हैसियत भी नही है पर मैं यह सब बताना अपना कर्त्तव्य समझता हू। आशा है बापू स्थिति पर पुर्नविचार करेंगे।

सप्रेम

घनश्यामदास

श्री महादेवभाइ देसाई

५७

तीथल, बलसाड

२६ मई १९३७

प्रिय श्री लेथवेट

आपने मुझे लिखा यह ठीक ही किया। मेरे बाद के वक्तव्यो से मेरी नीति मे कोई फर्क नहीं पडा है। बर्खास्तगीवाला फार्मूला तो इस प्रश्न का तोड है कि यदि शासन विधान म गवनर के विशेषाधिकार की धारा बनी रहती है तो यह मान ही लिया गया है कि ऐसी परिस्थिति आ सकती है जबकि गवनर का हस्त

क्षप जरूरी हो जाएगा और उसे हस्तक्षेप करना पडेगा। मैंने तो कहा ही है कि मैं ऐसे मंत्रि मंडल की कल्पना नहीं करता जिसे विधान-सभा के अविश्वास प्रस्ताव के बिना हटाया ही न जा सके, पर मैं किसी ऐसी स्थिति की भी कल्पना कर सकता हूं जब गवर्नर और मंत्रि मंडल में मतभेद उत्पन्न हो जाए और तब-विवेक के द्वारा वह मतभेद दूर करना असम्भव प्रतीत हो। मैंने स्वेच्छापूर्वक त्यागपत्र पर बर्खास्तगी को इसलिए तरजीह दी है कि मैं मंत्रियों को बर्खास्त करने की जिम्मेदारी गवर्नरों के कंधे पर रखना चाहता हूं। वैसा करने से छेड़छाड़ की आशंका दूर हो जाएगी, और उस पार्टी के लिए जो ब्रिटिश साम्राज्यवाद की शासन प्रणाली तथा शासन विधान की विरोधी है शासन-कार्य निभाने का काम आसान हो जाएगा। अब यदि बर्खास्तगी और लार्ड जेटलैंड ने जो कहा है उसमें सचमुच अधिक अंतर नहीं है तो कांग्रेस से झुकने को कहने के बजाय सरकार के लिए वह बचा खुचा अंतर भी दूर करना श्रेयस्कर होगा। यह प्रमाणित करने के लिए कि मेरी मूल स्थिति में कोई अन्तर नहीं पड़ा है मैं अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के मूल प्रस्ताव में जो उचित आश्वासन पाया गया है उसकी पूर्ति से ही संतुष्ट हो जाऊंगा। कार्यकारिणी का हाल का प्रस्ताव वास्तव में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रस्ताव की व्याख्या मात्र है। वह न उससे अधिक की मांग करता है न उससे बेहतर ही है। आशा है आपने जो मुद्दे उठाए हैं, इस पत्र के द्वारा उन सबका यथेष्ट उत्तर मिल गया होगा।

यदि आप इसमें कुछ अधिक जानना चाहते हों तो अवश्य लिखिए।

भवदीय,
मो० क० गांधी

श्री जे० जी० लेथवट,
वाइसराय के निजी मंत्री

५८

भाई रामेश्वरदास

तुमारा खत मिल गया था। [illegible] के बारे में भी [illegible] गया है। एक लाख तक तो ग्राम-उद्योग-संघ में आएगा। [illegible] देते हो सो तो अलग है ही।

ब्रजमोहन के मार्फत मे कोई गोरे सेवको के लिये कार्गो बोट म इग्लड की टीकट लेता था। अब तो वह नही है। कलकत्ता किसको लिखू ? अथवा तुम ही लिखकर पूछोगे कि किसी कार्गो बोट म एक इग्रेजी बहन को भेज सकते हैं क्या ?

बापु के आशीर्वाद

२६ ५ ३७
सेगाव वर्धा

५६

भाई घनश्यामदास

मेरा दाहिना हाथ आराम मागता है इसलिये आजकल सिर्फ सोमवार को ही दाहिने हाथ से लिखता हू। बाकी दिनो मैं लिखवाता हू। बायें हाथ स लिखने म काफी समय जाता है।

परमश्वरी के बारे म मैंने जो अभिप्राय बाध लिया है वह उसके अनुकूल प्रस्ताव बनाकर परमेश्वरी ने भेज दिया है। इसमे अगर आपत्ति न समझी जाय तो दस्तखत करके मुझको भेज दीजिये। अत म क्या परिणाम आवेगा, वह तो कोई नही जानता हू। परमेश्वरी को अपनी शक्ति बताने का बड़ा मौका मिलता है। और वह उसे मिलना चाहिये। जमनालालजी के दस्तखत तो ले लिये है।

पारनेरकर अब वहा पहुच गया होगा। पडया को जब कहा तब खच लूगा।

दिल्ली के हरिजन निवास के खच के बारे मे और सेंटल आफिस के खच के बारे म जो आवश्यक कमी है मानी जाय उसे करने से विलम्ब क्या किया जाय ? हा इतना ह सही कि ठक्कर बापा को जो नही जचेगा वह हम नही कर सकेंगे। इन सब बातो के लिये दिल्ली जाने के समय वर्धा होकर जाना उचित समझा जाय तो ऐसा किया जाय।

बापू के आशीर्वाद

७ ६ ३७

६०

६ जून १६३७

प्रिय महादेवभाई,

वेनिस मे मैंने बापू की "न्यूज क्रानिकल" के सवाददाता के साथ हुई मुलाकात का विवरण देखा, इससे मेरी गलतफहमी पूरी तरह दूर हुई है। जैसा कि मैंने तीथल म बताया था लोगो मे यह धारणा पैदा हो रही थी कि बापू कोई नयी चीज की माग कर रहे हैं। देखता हू कि लिटन ने इस बाबत टिप्पणी की है, और उसका असर पडेगा, इसमे मुझे सदेह नही है।

मुझे यह देखकर सतोष हुआ है कि जिन लाइनो पर बापू ने "न्यूज क्रानिकल" से बात की है ठीक उन्ही लाइनो पर मैंने वाइसराय को तथा लन्दन के मित्रो को बापू का विचार समझाया था। मैंने इस बात पर जोर दिया था कि बापू हृदय से चाहते है कि काग्रेस पद ग्रहण करे। यह जोरदार प्रतिपादन करने के बाद मुझे डर लगने लगा था कि कही वसी बात कहकर मैंने बापू की विचारधारा को गलत ढग से तो पेश नही किया, पर जब न्यूज क्रानिकल म उनकी भेंट वार्ता पढी तो मुझे मानसिक शाति प्राप्त हुई।

मैं बर्खास्तगी की खूबी को अब भली प्रकार से हृदयगम करने म समथ हुआ हू और अब मुझे इस बार म कोई सदेह नही रह गया है कि इससे गवनरो को मनमानी करने की पूरी छट नही रहेगी। केवल एक बात को लेकर मेरी शका बनी हुई है कि क्या इन सारी बातो के बाद अब नाता तोडना वाछनीय है ? मैं जानता हू कि बर्खास्तगी की माग पेश करके वह ब्रिटेन की नीयत परखना चाहते है, पर बापू को बता देना कि इस विषय म मेरे अपने विचार चाहे जो हो मुझे लदन म जब कभी और जहा कही अवसर मिलेगा मैं उनके विचार बडे अधिकारियो के सामने उसी रूप म पेश करने में कोई कोताही नहीं करूगा।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

६१

१६ जून १९३७

प्रिय महादेवभाई

मैं यहा मिल्ला के साथ बातचीत कर रहा हू और उनके साथ वार्तालाप के दौरान मैंने यह पाया कि यह सब अविश्वास की भावना का ही दुष्परिणाम है। स्थिति को लेकर किसी प्रकार का मौलिक मतभेद नही है। मुझे यही प्रतीत होता है कि मैं दोना पक्षो के विचारा की ऐसी व्याख्या कर पाऊगा कि वह दोना को ग्राह्य हो। फलत मैंने जो मसौदा बनाया वह कुछ-कुछ इस प्रकार है

> यदि गवनर और उसके मत्री मे किसी विषय पर गभीर मतभेद उठ खडा हो भले ही उस मतभेद का विषय गवनर के विशेषाधिकारो की परिधि म आता हो तो वह और मत्री पहले बातचीत के द्वारा समझौते की भरसक कोशिश करेंगे पर यदि वसा सम्भव प्रतीत न हो और गवनर के लिए मत्री की सलाह की अवमानना अनिवाय हो जाए, तो वह मत्री को लिखित सूचना देगा कि खास तौर मे इस मामले मे वह उसकी सलाह नहीं मान सकेगा यदि मत्री त्यागपत्र दे ता दे। वसी स्थिति मे मत्री गवनर की सूचना को त्यागपत्र के आह्वान के रूप मे ग्रहण करेगा।

मेरा विचार है कि इस सुझाव को भारत सचिव के सामने अपना व्यक्तिगत सुझाव कहकर पश करू। मैं यह बात बिलकुल स्पष्ट कर दूगा कि मुझे यह सुझाव पेश करन का न तो बापू न न किसी अन्य व्यक्ति न ही अधिकार दिया है। पर तो भी मैं यह जानना चाहूगा कि इसस बापू की बात पूरी होती है या नही। मुझे लगा कि होता है और इसलिए उसे भारत-सचिव को देना मुझे उचित जचा। पर यदि बापू इस सुझाव को सतोषप्रद न समझें तो मैं चाहूगा कि इस पत्र के पहुचत ही तुम मुझे समुद्री तार दे दो। यह फार्मूला तयार करने म मेरा मुख्य उद्देश्य यही रहा है कि मत्रि मडल की बर्खास्तगी का उत्तरदायित्व गवनर पर रखा जाये। मैंने यह मसौदा तयार करन म यही उद्देश्य सामने रखा है।

इस वक्तव्य म कोई सार नही है कि लाड हैलिफक्स पारस्परिक सम्पक क खिलाफ हैं। यह मैं स्वय अपनी जानकारी क आधार पर कह सकता हू। इस विषय पर तुम्हें विस्तार स बाद म लिखूगा।

मैं समझता हू कायकारिणी की बठक जल्दी ही होनेवाली है। यहा की पोजीशन निराशा सूचक कदापि नही है और जब तक मुझे यह न लगने लगे कि यहा कुछ होने जानेवाला नही है तब तक कायकारिणी को अपने द्वार

बन्द करनेवाला कोई काम नही करना चाहिए। यहा लोग इसके लिए आतुर हैं कि काग्रेस पद-ग्रहण करे। यदि यहा बापू के बर्खास्तगीवाले मुद्दे को स्वीकार करने मे थोडा-बहुत सकोच है, तो केवल इसी कारण कि इस बात को लेकर समझौता करने का क्या परिणाम निकलेगा। अभी तक मुझे यहा बापू के बारे मे किसी भी प्रकार की गलतफहमी की झलक नही मिली है। यहा १९३५ म जो वातावरण था अब उससे बिलकुल भिन्न है। ये लोग बापू के अविश्वास को समझते हैं, पर साथ ही यह भी कहते हैं "वह एक बार पद ग्रहण करके देखें तो कि हम किस हद तक सहायता करने को प्रस्तुत हैं। मैं बापू के दृष्टिकोण का यथेष्ट प्रतिनिधित्व कर रहा हू और मैंने देखा है कि इन लोगों को बापू की दलील का जवाब देना कठिन लग रहा है। अतएव जब तक द्वार इस ओर से बन्द न किया जाए तब तक उसे खुला रखना ही ठीक रहेगा। मुझे यकीन है कि द्वार बद करने की नौबत नही आयगी।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

६२

१८ जून, १९३७

प्रिय महादेवभाई

मैं अब तक दो बार लार्ड लोदियन से और एक बार लार्ड हैलिफक्स से मिल चुका हू। आज फाइण्डलेटर स्टीवार्ट से देर तक बातचीत हुई। ये लोग सचमुच चाहते हैं कि काग्रेस पद ग्रहण करे, और सम्भवत वाइसराय की स्पीच भी काफी मेल मिलापवाली होगी। वह मेल मिलाप-वार्ता तो होगी पर उससे बापू की बर्खास्तगीवाली माग पूरी नही होगी। जब मैंने सर फाइण्डलेटर स्टीवार्ट से बात की तो लम्बे चौडे विचार विमर्श के बाद उसने यह स्वीकार किया कि अभी तक उसे बापू के रुख को इतनी स्पष्टता के साथ नही समझाया गया था। उसने कहा

कि वह इस बारे म सहमत नही है कि बर्खास्तगी त्यागपत्र की अपेक्षा श्रेयस्कर है, पर साथ ही उसने यह भी कहा कि य दोनो ही माग गवनर के लिए खुले रहने चाहिए। तिसपर भी उसने यह मान लिया कि बर्खास्तगीवाली बात को मा यता दने से काग्रस को तकनीकी सुविधा प्राप्त होगी। उसने कहा, 'हम प्रत्येक बार जनता के सामने अपराधिया के रूप म क्यो हाजिर हा ?' मैंने इसका समुचित उत्तर दिया। पर उसने कहा, अगर आप लोगो का यह खयाल हो कि गवनर त्यागपत्रवाली स्थिति मे मनमाने ढग से आचरण करेगा, और बर्खास्तगीवाली स्थिति मे अधिक सतकता से काम लेगा ता यह आपकी भूल है।" मैंन कहा कि यदि यह मान भी लिया जाये कि बापू गलती पर हैं तो भी सारा सवाल इस बात का है कि क्या एकमात्र इस बात पर आप लोग नाता तोड दगे ? यदि वे सचमुच चाहते हागे कि काग्रेस पद-ग्रहण कर, तो वे एकमात्र इस बात को लेकर नाता नही तोडेंग। इसके बाद मैंने उस अपनेवाला फामूला दिया पर यह स्पष्ट कर दिया गया कि मैंने इस बारे म बापू स सलाह मशवरा नहीं किया है यह सोलह आने मरा ही विचार है। अब वह लाड जेटलड से बात करेगा और मेरा फामूला उनके सामने रखेगा।

मैंने यह भी सुझाया कि कोइ वक्तव्य दने से पहले लाड लिनलिथगो को यह पता लगा लेना चाहिए कि उसकी बापू के दिमाग म क्या प्रतिक्रिया होगी। मैंने समझौते की उपादेयता समझाते हुए कहा कि एकतरफा बयान ऐसे लगते है मानो उन्हे काग्रेस के मुह पर दे मारा हो। उसने सिद्धान्त के रूप म बात स्वीकार की पर इस पर खेद प्रकट किया कि बातचीत की प्रणाली को अभी तक अपनाया नही जा सका। उसका कहना था कि अब इस मामले मे बहुत देर हो गई है पर उसने आशा व्यक्त की कि वाइसराय की स्पीच बापू को सतुष्ट कर सकेगी। सम्भव है अगल हफ्ते लाड जेटलड से मिलना हो। दो बातो के बार मे मरी स्पष्ट धारणा है। पहली बात तो यह है कि मैं अभी तक आशा लगाये बठा हू, और दूसरी यह कि इन सारी प्रस मुलाकातो के बावजूद य लाग अभी तक नही समझ पाये हैं कि बापू का दिमाग किस दिशा मे काम कर रहा है। जब कभी मैंने कोइ बात छेडी, व वह उठे अच्छा ! हम ता यह पहली बार ही सुन रहे हैं पर आपने यह बता दिया तो सब-कुछ स्पष्ट हा गया। उन्होन हरिजन म बापू क शपथ विषयक लेख का नही पढा था और उनका ध्यान उसकी ओर आकर्षित किया गया तो उन्हें प्रसन्नता मिश्रित आश्चय हुआ कि बापू की ऐसी विचारधारा है। उनको यह भी भ्राति रही है कि बापू ने जो रुख अपनाया है वह दक्षिणपथियो और वामपथिया—दोना को सतुष्ट करने के हेतु से अपनाया है। मैंने इस बारे म भी

उनकी भ्रांति का निवारण किया। मैंने उन्हें मुठभेड करने और अन्त करने तथा तोड फोड करने मे जो भेद है वह भी समझाया। वे यह समझ बैठे थे कि दोनो एक ही चीज हैं। अत मेरी आशा बनी हुई है कि जो कुछ होगा अच्छे के लिए ही होगा हालाकि यह सम्भव है कि वाइसराय की स्पीच उतनी सतोषजनक प्रमाणित न हो जितनी बापू चाहते है पर जैसा कुछ जनमत है और यह जनमत हमारे अनुकूल ही है उसे देखते हुए मुझे इस बारे मे सदेह नही रह जाता कि बापू वाइसराय की स्पीच पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करेंगे।

एक तरह से अग्रेजो का मानस कुछ हठीला होता है और धीमे धीमे सक्रिय होता है। कभी कभी ये लोग मौके बमौके बडा भोंडा काम कर बैठते है पर इतना सच होते हुए भी मुझे इसमे तनिक भी सदेह नही है कि ब्रिटिश राजनेताओ की और जन साधारण की यह हार्दिक कामना है कि काग्रेस पद ग्रहण करे।

भूलाभाई आजकल यही हैं मैं उनसे सम्पर्क बनाए हुए हू।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

६३

२३ जून १६३७

प्रिय महादेवभाई,

मैं अब तक लार्ड हैलिफक्स, लार्ड लोदियन, सर फाइण्डलेटर स्टीवार्ट और लार्ड जेटलैंड से मिल चुका हू। इस प्रकार यह पहला दौर पूरा हुआ। यहा से विदा होने से पहले हो सकता है कि इन लोगो से एक बार फिर मिलू। आज रात को सर फाइण्डलेटर स्टीवार्ट को खाने पर बुलाया है। इस अवसर पर भूलाभाई भी मौजूद रहेंगे। भारत-सचिव से जो जो बातें हुई उनका ब्योरा इस डाक से जा रहा है। इसी दिशा मे मैंने अन्य लोगो से भी बात की थी। अभी तक कोई नतीजा नही निकला है।

लाड जेटलड ने बडी सहानुभूति दरसाई, बडी सहृदयता बरती और शिष्टता स पेश आये। इन लोगो को काग्रेस के रवये से कुछ क्षोभ हुआ है। ये लोग हर प्रकार की सहायता करने की तत्परता तो प्रकट करते है पर निश्चित रूप से यह नही बताते कि उन्हे बर्खास्तगीवाला फामूला क्यो ग्राह्य नही है। अभी तक इस फामूले की काट म कोई जबदस्त दलील पेश नही की गई है, और जा दलीले पश की गइ उनका मैंने समुचित उत्तर दिया है। पर सारी बाता का निचोड यही है कि खुद इन लोगो म भरोसे की भावना का अभाव है। वसे भी ब्रिटिश मानस मथर गति से क्रियाशील होता है और उसमे चेतना उत्पन्न करना सहज नही है। इन लोगो की नेकनीयती के विषय म मुझे कोई सदेह नही है। या आमफहम आदमी की धारणा तो यही है कि अब तो भारत को स्वराज्य मिल ही गया, अब यह सब बात का बतगड क्या ? उच्चतर क्षेत्रा म भी यही धारणा व्याप्त है कि इस शासन विधान के माध्यम से भारत अपन लक्ष्य स्थान तक पहुच सकेगा। उनके विचार म इग्लड का पीछे हटने का सिलसिला शुरू हो गया है और अब उसक पूरे तौर स हटने म अधिक देर नहा लगेगी।

वाइसराय ने अपनी स्पीच मे जो कुछ कहा है यहा के लागो की लगभग वसी ही विचारधारा है। यह स्पीच किस ढग से दी गई और कसा रुख अपनाया गया, यह इन लोगा का समझाना असम्भव है। पर मैं यह स्वीकार करता हू कि वाइसराय ने जो-कुछ कहा है वह वास्तव मे भारत सचिव की दूसरी स्पीच का सशोधित रूप मात्र है, इसलिए शायद उसस बापू की माग की पूर्ति नही होती होगी। मेरे लिए केवल इतना ही करने को रह जाता है कि जब कभी अवसर मिलता है, मैं बापू के दृष्टिकोण का पेश करने से नही चूकता हू। उधर बापू को भी इस बात को ध्यान म रखना चाहिए कि ब्रिटिश मानस बेहद आलसी है अग्रज जाति का स्वभाव किसी हद तक हठीला भी होता है। लाड हैलिफक्स और लाड लाेदियन दानो ही मदद कर रहे हैं पर अतिम निणय तो लाड जेटलड के और बचा-खुचा सर फाइण्डलटर स्टीवाट क हाथ म है।

मुझे यह ज्ञात नही है कि मेरे फामूले के बारे मे बापू का क्या विचार है, इसलिए फिलहाल मैं उसीको पश करन म लगा हुआ हू। मैंने यह स्पष्ट रूप से कह दिया है कि इस फार्मूले के द्वारा बापू को किसी भी रूप म वचनबद्ध नही समझना चाहिए। यदि फामूला इडिया आफिस को ग्राह्य हो तो मैं उसे बापू के पास उनकी राय जानन क लिए भेज दूगा। पर ये लोग इस बार म अपनी काई निश्चित राय नहा देंग सदेह की गुजाइश नही है। मैंने सर फाइण्ड्लेटर स्टीवाट

से कोई विकल्प पश करन को कहा, तो वह बोला कि उसने भरसक कोशिश की पर विफल रहा। लाड जेटलड को तो फामूला कतई पसन्द नही आया।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

६४

सेगाव वर्धा
२५ ६ ३७

भाई घनश्यामदास

मैं क्या लिखू ? मेरी बुद्धि एक ही तरह काम कर सकती है। मुझे मालूम नही कि मैं कस मदद दे सकू ? जिस बात म मैं अनजान हू उसमे क्या अभिप्राय कायम करू ? इसलिये मैं तो इतना ही कहूगा जो भारतवष के लिये हितावह समझा जाय उस करो। भले काग्रेसवालो का अभिप्राय कस भी हो। इतना विश्वास रक्खो कि जो हितावह होगा उसे काग्रेस न कबूल करना ही होगा। यदि कबूल नही होगा तो काग्रेस की प्रतिष्ठा घट जायगी। काग्रेस के पास प्रतिष्ठा के सिवाय कोई धन नही, हा उसकी प्रतिष्ठा करोडा गरीबा की सम्मति पर निभर है। इसलिये भारतवष का हित का अथ एक ही होता है। करोडो का आर्थिक, बौद्धिक और नतिक हित। यह मैंने कोई नई बात नहीं लिखी। कोई वक्त ऐसा सिध्दातिक बातें किसी मित्र स सुनते हैं तब असर होता है।

मेरी तबियत खासी है ऐसा माना जाय। थोडी दुबलता है, वह निकल जायगी। स्थानातर करने की आवश्यकता नही है। सरहद जाना हागा ता स्थानातर हा ही जायेगी। वहा की आबोहवा तो अच्छी है ही। फलादि काफी मिलत हैं।

तुम्हारा शरीर अच्छा बन रहा हागा। आपरशन ने खासी मदद दी होगी।

बापु के आशीर्वाद

६५

२५ जून, १९३७

प्रिय महादेवभाई

मैं हार मानता हू बापू के फामूले की स्वीकृति प्राप्त करने मे मेरी कोशिशें नाकाम होती दिखाई देती है। बापू की बात मानने की न अनिच्छा है, न इस बात को लेकर कोई कठोरता ही दिखाई गई है। पर इन लोगो की अपनी कठिनाइया है पहली बात तो यह है कि ये लाग खुले तौर पर स्वीकार तो नही करते हैं पर मन ही मन समझ गये है कि बर्खास्तगी से काग्रेस का तकनीकी तौर से अधिक सुविधा रहेगी—क्योकि एकमात्र बर्खास्तगी का माग खुले रहने से हस्तक्षेप की सम्भावना बहुत कुछ घट जायेगी। य लोग तो यह बात स्वीकार नही करत कि कभी हस्तक्षेप की नौबत आयेगी। उनके माग म जो कठिनाइया हैं वह फामूले के प्रति अरुचि मदबुद्धि और पार्लियामट को लेकर उत्पन्न हुई हैं। अत जिस प्रकार मैं बापू को तीथल म राजी करने म असमथ रहा उसी प्रकार इन लोगो को समझाने म भी असफल रहा हू।

परसो रात मैंने फाइण्डलेटर स्टीवाट और भूलाभाई को भोजन के लिए बुलाया था। दोनो पूरे तीन घटे बात करते रहे। कल भूलाभाई हैलिफक्स और लोदियन से मिले और लम्बी चौडी बाते हुइ। क्या कुछ कहा गया सुना गया वह भूलाभाई खद ही तुम्हे लिख भेजेंगे। शायद वह भी यही कहेंगे कि इन लागो की हार्दिक अभिलाषा है कि काग्रेस पद ग्रहण करे।

जहा तक मैं समझ पाया हू मैं ता नही समझता कि गवनर लोग अब हस्तक्षेप करने की बात सोचेंगे। फाइण्डलेटर स्टीवाट न खुद कहा कि जहा उसे पहले हस्तक्षप की आशका नही थी वहा अब इतन स्पष्टीकरण के बाद उसे दस गुना यकीन हो गया है कि हस्तक्षेप नही किया जायगा। स्वय मेरा यह विश्वास हो चला है कि लाड लिनलिथगो की स्पीच क बाद स हस्तक्षेप की आशका पूरी तरह मिट जानी चाहिए। जब दानो ओर से मामले का इतना स्पष्टीकरण हो चुका है तो अब काग्रेस नाता तोडने की बात सोचे यह बात मुझे कुछ कम जचती है। इन लोगो न शब्दो के द्वारा आश्वासन भले ही न दिया हो माग की भावना के आगे तो सिर झुका ही दिया।

किसी-न किसी प्रकार पिछले दो वर्षों म मुझे यह प्रतीति होती आ रही है कि १९२२ और १९३० म लोहा लेना भले ही आवश्यक रहा हो पर अब लोहा

लेने की कोई जरूरत नही है उसके बगैर ही शासन विधान और मैत्री के रास्ते हम अपना उद्देश्य ब्रिटेन स पूरा करा सकते हैं। पर मत्री का नाता तभी जोडा जा सकता है जब पारस्परिक सम्पक स्थापित हो। जब तक हम एक-दूसर के प्रति विरोध की भावना से अनुप्राणित रहगे पारस्परिक अविश्वास बना रहेगा। स्वय बापू मत्री का नाता जोडने को उत्सुक है और यह नाता जोडन का इस समय केवल एक ही माग है शासन विधान को कार्यान्वित किया जाए। हमे शासन काय म अनुभव की आवश्यकता है साथ ही हमे अपनी विचारधारा को भी एक नया मोड देना होगा। अब तक यह विचारधारा सघष की भावना से पूण रही है अब हमे रचनात्मक कायक्रम को हाथ मे लेना होगा। कम-स-कम मेरी यही धारणा है।

यह कहा जा सकता है कि यदि बात साधारण सी थी तो सरकार ने उसे मान क्यों नही लिया ? पर यह दलील जितनी जोरदार लगती है, उतनी वास्तव म है नही। एक बार नाता टूटा कि ये सारी दलीलें भुला दी जायेंगी। बाकी रहेगी केवल एक चीज—अविश्वास और उसस उत्पन्न सघष। तब हमारे अन्दर जिस कोटि की अनगल विचारधारा जोर पकड रही है जब वह बलवती होगी और हम उस घडी को टालन की भले ही कोशिश करें सीधी कारवाई अनिवाय हो जायेगी।

मैं यह सब फिर से इसलिए लिख रहा हू कि जब यह पत्र वहा पहुचेगा आप सब लोग वर्धा मे अगले कदम की बात सोचने म लगे होग। मैंने भूलाभाई से भी कहा है। हैलिफक्स के साथ भेंट करके आए तो कुछ ढीले दिखाई पडे। यहा इन महारथियो स बातचीत करके पता लगाया है कि यद्यपि इन लोगो ने हमारी माग को खुल्लमखुल्ला मान्यता नही दी है, पर इनका रुख हद दर्जे का सहानुभूतिपूण रहा है और हमारी आशकाओ के औचित्य को इन्होने मन ही मन अवश्य माना है। मैं अपन मिशन म सफल तो नही हुआ पर कम स-कम मैंन इन लोगो को प्रभावित अवश्य किया है। अब बापू मेरी स्थिति का जायजा लें और अन्तिम निणय पर आय। इधर म तो अपनी बात लोगो को समझान म लगा ही हुआ हू, परिणाम जो भी हो। कल लॅसबरी से और आज सध्या को टाइम्स क सम्पादक जाफ्री डासन स मिलना है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

६६

श्रीहरि

रामेश्वरदास बिडला

ता० २६ ६-१९३७

चि० लक्ष्मीनिवास

पू० महात्माजी का आया हुआ पत्र इसके साथ भेजता हू। वे एक इगलिश औरत का कारगो बोट से विलायत भेजना चाहते हैं। मतलब कारगो बोट म नि शुल्क टिकिट भाई ब्रिजमोहन ले देता है। इसलिये महात्माजी ने पुछवाया है कि क्या बन्दोबस्त हो सकता है? सो तुम कारगो स्टीमर म बन्दोबस्त करके पू० महात्माजी का उत्तर दे देना। अपने जिन स्टीमरो मे ज्यूट जाता है, उन्ही स बन्दोबस्त हो सकेगा। अगर थोडा बहुत भाडा लगकर के हो, तो भी करके महात्माजी को लिख देना। अथवा नक्की करने के पहिले जिस ढग से हो वैसा लिख देना। मैंने उनको लिख दिया है कि चि० लक्ष्मीनिवास आपको सीधा जवाब दे देगा सो भूल नही करना।

उनसे पूछ लेना कि कौन-सी तारीख का जानेवाली है?

बाबाजी[1]

[1] रामेश्वरदास बिडला

६७

मगनवाडी

वर्धा

२८ जून, १९३७

प्रिय लक्ष्मीनिवासजी

एक बड़ी गलती हो गई है। आपका पत्र आया था कि आदमी पिलानी न भेजा जाय। उसम लिखा नही था कि मशीन न भेजी जाय। मैं आपस पूछनेवाला था कि मशीन भेजें या न भेजें? यह लिखनेवाला था ही इतने म खबर आयी कि आदमी मशीन के साथ पिलानी भेजा गया है। अब मेरी गलती मे से मुझे

बचा लीजिय।

रामेश्वरदासजी ने कारगो बोट पर एक महिला को 'फ्री पैसेज' दिलाने क बारे मे लिखा होगा। उसकी जाच करके मुझे जवाब लिखियेगा।

आपका
महादेव देसाई

६८

हवाई डाक से

ग्रासवेनर हाउस
पार्क लेन
लन्दन डब्ल्यू० १
३० जून १९३७

प्रिय महादेवभाई,

तुम्हें अन्तिम पत्र लिखने के बाद इधर मैं 'टाइम्स' के डासन, 'न्यूज क्रानिकल' के सर वाल्टर लिटन मे तथा लैंसबरी स मिला हू। कल रात लार्ड जटलैंड के यहा फिर भोजन कर रहा हू। पर यह सहभोज है जो भारतीय व्यापार मंडल के सम्मान म दिया जा रहा है इसलिए मैं स्वय नही जानता कि उस अवसर पर बातचीत करने का मौका मिलेगा या नही। डासन वाल्टर लिटन और लैंसबरी इंडिया आफिसवालो से मिलेंगे तथा उन्हे काग्रेस का साथ लेने की नितान्त आवश्यकता जतलाएगे, ५ तारीख के बाद ही कुछ अधिक बता सकूगा क्योकि तब तक बापू अपना निर्णय ले चुके होगे। मैं तो अब भी यही आशा लगाये बैठा हू कि बापू वाइसराय की स्पीच को स्वीकार करेंगे।

मुझसे अभी तक निश्चयपूर्वक यह किसीने नही कहा है कि ये लोग बर्खास्तगी वाले फार्मूले की अवमानना करेंगे। इसस मैं इस नतीजे पर पहुचा हू कि हो सकता है ये लोग यह चाहते हो कि इस मामले पर गवर्नर और मत्री आपस म ही बातचीत कर लें। यह भी हो सकता है कि ये लोग फार्मूले को मान लें पर मैं निश्चित रूप स नही जानता कि ये लोग ऐसा करेंगे ही। पर हम वाइसराय की स्पीच स्वीकार करें या ये लोग हमारी बर्खास्तगीवाली माग स्वीकार करें मुझे जिस

बात की सबस अधिक चिन्ता है वह यह है कि "क्या यहा तक यात्रा पूरी करने के बाद अब नाता तोडना वाछनीय है?' पर क्या ठीक रहेगा इसका निणय एकमात्र बापू ही कर सकते हैं।

मैंने लाड हैलिफक्स से बराबर सम्पक बनाए रखा है। मैं उनसे आय दिन मिलता तो नहीं हू पर जब कभी कोई बात मेरे दिमाग म उठती है उन्हें लिख भेजता हू। मैंने उनसे पूछा है कि क्या उनके लिए बापू को व्यक्तिगत रूप स लिखना ठीक नहीं रहेगा? वह देहात म चले गय हैं इसलिए यदि वह वापसी डाक मे उत्तर देना चाहते भी तो दने म असमथ रहते। पर उन्होंने लिखकर बताया है कि मैंने भूलाभाई देसाई क द्वारा उनक पास सदेश भेजा है। उन्होंने वह सन्देश मिस्टर गाधी तक पहुचाने का वचन दिया है। वह सदेशा यही है कि व्यक्तिगत रूप से (भारत-सचिव के सहयोगी के नाते नहीं) मेरी समझ म यही बात आती है कि यह शासन विधान जो अधिकार प्रदान कर रहा है यदि काग्रेस उसे ग्रहण करने म चूकी तो बहुत बडी गलती करगी। मैंने मिस्टर गाधी को यह भी स्मरण कराया है कि किस प्रकार १९३१ म श्री एमसन के साथ मिल जुलकर काम किया था। ऐसा मैंने यह जताने के लिए किया कि नयी परिस्थितियो म आई०सी०एस० का अमला किस भावना के साथ कायरत होगा।'

उन्होंने मुझसे यह भी पूछा कि क्या मैं उनस फिर भेंट करना चाहता हू मैंने कहा कि ५ तारीख से पहले भेंट करना उनके समय को नष्ट करना मात्र होगा। बस मामला यहीं तक पहुचा है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

६९

प्रिय घनश्यामदासजी,

आज बापूजी ने बर्खास्तगी (डिस्मिसल) के प्रश्न पर एक पत्र लिखवाया है उसकी एक नकल भेज रहा हू।

आपकी यात्रा कुशल हो।

आपका
महादेव

७०

वक्तव्य

[मेरे इस मसौदे को महात्माजी ने देख लिया था और उसम परिवतन-परिवद्धन किया था। यह फेडरेशन के वक्तव्य के रूप मे जारी किया जानेवाला था।]

हमने प्रधान मत्री के वक्तव्य पर बडे ध्यान से विचार किया है और हम यह मानकर कि जो नया विधान प्रस्तुत है वह साइमन कमीशन की रिपोट और भारत सरकार की विधान-सम्ब धी घोषणा से बेहतर है स्वागत करते हैं। फिर भी हमे यह कई बातो म अस्पष्ट और कई दिशाओ मे अपूण लगता है। फलस्वरूप इसका सम्पूण मम ग्रहण करने म हम अपने आपको असमथ पाते हैं।

हमारा यह निश्चित मत है कि इस समय भारत करो के असह्य भार से कराह रहा है और जब तक देश की उत्पादन क्षमता मे यथेष्ट वद्धि नही होगी, तब तक उसमे शिक्षा और सफाई के लिए आवश्यक धन-सग्रह करने के निमित्त और अधिक

इतनी चिंतनीय बना दी है कि किसी भी नय शासन विधान का प्रारम्भ शासन सम्बन्धी व्यय म भारी कमी करके करो के भार को हल्का करने स होना अत्यत आवश्यक है। इस वस्तुस्थिति का ध्यान मे रखते हुए हम यह कहने म तनिक भी सकोच नही है कि जो ११ सूत्र महात्माजी ने रखे हैं एकमात्र उनके आधार पर तयार की गई सुधार-योजना के द्वारा ही देश की उत्पादन शक्ति बढ सकती है और उसकी दरिद्रता का निवारण हो सकता है। कोई भी शासन विधान उस समय तक अपनी उद्देश्य सिद्धि म सफल रहेगा जब तक सरकार इन ग्यारह मुद्दो को कार्यान्वित करने की क्षमता नही जतलाती।

यह फेडरशन पूण औपनिवेशिक स्वराज्य क दर्जे के स्वायत्त शासन मे निष्ठा रखते हुए अतरिम काल के लिए सरक्षणो और निग्रहो की व्यवस्था पर विचार करने को तयार है। पर फडरेशन की यह धारणा है कि प्रधान मत्री ने सरक्षणो और निग्रहो को जो रूप देने की बात सोची है यदि उसम पर्याप्त सशोधन नही किया गया तो उन्हे अमल मे लाने के फलस्वरूप सरकार इन्ही सरक्षणो और निग्रहो को स्थायी रूप देने के लिए कर सग्रह करने की एजेंसी मात्र बनकर रह जायेगी और इस प्रकार केन्द्र म उत्तरदायित्वपूण शासन स्थापित करने का उद्देश्य ही नष्ट हो जाएगा।

जहा हम एक ओर सरकार तथा उसका प्रतिनिधित्व करनेवाले व्यक्तियो के विचाराथ लोकमत प्रस्तुत कर रहे हैं वहा दूसरी ओर हम महात्मा गाधी तथा काग्रेस को भी यह सुझाव देना चाहते कि अब समय आ गया है अब उन्हें सम्मान पूण समझौते की सम्भावनाओ की खोज म लगना चाहिए। हम चाहते हैं कि वे हमारी इस धारणा को ग्रहण करें कि प्रधान मत्री के वक्तव्य मे सशोधन की सम्भावना का अभाव नहीं है। हमने उन्हें यह सुझाव दिया ही है और हम उनसे अनुरोध भी करते हैं कि यदि उचित सशोधन की बात पर विचार विमश करने का अवसर उपस्थित हो तो वे उस अवसर का उपयोग करें। हम महात्मा गाधी तथा काग्रेस को आश्वासन देते हैं कि भारतीय व्यापारी समाज को, जिसका यह फेडरेशन प्रतिनिधित्व करता है ऐसा कोई भी शासन ग्राह्य नही होगा, जिसम सुधारों को कार्यान्वित करने की समुचित व्यवस्था की गारण्टी नही रहेगी। पर यह हम स्पष्ट रूप से देख रहे हैं कि जबतक दमन-नीति का अत करके समस्त राजनतिक बदियो को रिहा नही किया जायेगा तथा दमन की नीति अमल मे लाने से पहले की स्थिति म वापस नही लौटा जाएगा, तबतक काग्रस का सहयोग असम्भवप्राय सिद्ध होगा। इसलिए हमारा सरकार स आग्रह है कि अब जबकि उसने राजनतिक नेताओ को रिहा कर दिया है उसे ऊपर लिखे सुझावो के अनु

रूप आचरण करके सदभावना का संकेत देना चाहिए।

केन्द्र और प्रान्तो की आय लगभग १७५ करोड रुपये है। इस धन राशि का लगभग आधा अश संरक्षणा और निग्रहो के लिए निकाल दिया जाएगा अर्थात

५५ करोड सेना के साज-समाज के लिए

१५ करोड लिये गये ऋणो पर ब्याज आदि के लिए

७ करोड पेंशनो के लिए तथा

१० करोड अमले के वेतन आदि के लिए

योग ८७ करोड

अब केवल ८८ करोड शेष रहे जो ऐसे विभागो म खर्च होगे जिनमे मित व्ययिता की बहुत की कम गुंजाइश है और एसी स्थिति मे महात्मा गाधी क ११ सूत्री कायक्रम की आंशिक पूर्ति करना भी सभव नही लगता। पर हम सब इस कायक्रम पर आशा लगाये बठे हैं और इसे कार्यान्वित करने के फलस्वरूप आय म ४५ करोड की कमी हो जाएगी। अत प्रधान मंत्री ने अपने वक्तव्य मे जिन निग्रहो की कल्पना की है यदि उनम आमूल सशोधन नही हुआ, तो क्या नयी सरकार अपना कार्यारम्भ ऐसे घाटे से आरम्भ करेगी, जिससे निकट भविष्य म त्राण पाना असम्भव सा हो जाएगा।

पर जिस प्रकार क विचार विमश के लिए निमन्त्रण मिला है हम तो नही समझते कि सरक्षणा और निग्रहो के सशोधन की चर्चा परिधि से बाहर रखी जाएगी। प्रधान मंत्री का वक्तव्य इस रूप म अस्पष्ट है कि वह केवल रूप रेखा मात्र है। उन्होने जिन निग्रहो की बात कही है वह यदि उनका अन्तिम निणय है तब तो प्रगति की बहुत कम गुजाइश रह जाती है, पर यदि उनम सशोधनो की और आमूल सशोधनो की गुजाइश है जसी कि हमारी धारणा है तो मामले की गहराई म जाने की जो अपीलें की गई हैं वे व्यथ नही जाएगी तथा विचार विमश सम्भव होगा, और एसे परिणाम निकलेंगे जिन पर आगे का दारोमदार है।

हमारी राय म जो विचार विमश हो वह निम्नलिखित मुद्दो पर हो ताकि समस्या का सतोषप्रद हल निकाला जा सके

१) सेना के लि २० करोड स अधिक धन राशि निश्चित न की जाए।

२) भारत की ऋण सबधी स्थिति का ध्यान म रखते हुए आर्थिक सरक्षणा की व्यवस्था रहे और प्रस्तावित रिजव बक पर जनता का सोलह आने नियन्त्रण रहे तथा

३) अल्पसख्यक जातियो और वर्गों की रक्षा की व्यवस्था रहे।

हम काग्रेस तथा महात्मा गाधी के सामने यह सुझाव रखना अपना कर्त्तव्य समझते हैं कि सम्भावनाओ की खोज करने का समय आ पहुचा है। हमारा विश्वास है कि अपनी सकीर्णताओ के बावजूद प्रधान मत्री का वक्तव्य वैसे समझौते की सम्भावनाए प्रस्तुत करता है और हमारी धारणा है कि उस वक्तव्य मे जिस सहयोग की अपील की गई है उसकी उपेक्षा करना वाछनीय नही है। हम महात्मा गाधी और काग्रेस को आश्वासन देते है कि एसा कोई भी शासन विधान भारत के व्यापारी समाज को जिसका फेडरेशन प्रतिनिधित्व करता है, ग्राह्य नही होगा जिसके द्वारा महात्मा गाधी की ११ सूत्री सुधार योजना की पूर्ति के लिए आवश्यक आर्थिक नियत्रण की व्यवस्था न रखी गई हो।

पर हम इस बात से पूर्णतया अवगत हैं कि जब तक केन्द्रीय सरकार शाति पूर्ण वातावरण पैदा करने की भावना से प्रेरित होकर दमन नीति का अत नही करेगी और सारे-के सारे राजनैतिक बन्दियो को रिहा नही करेगी तबतक कुछ भी करने मे असमर्थ रहेगी। पारस्परिक सहयोग का प्रश्न तो तभी उठेगा जब उसके लिए अनुकूल वातावरण मौजूद होगा और विचार विमर्श भी तभी सफल होगा।